अनुक्रमणिका,

द्वितीय भाग.

(महाराणा दूसरे अमरसिंहसे महाराणा दूसरे जगतसिंहके अख़ीर तक).

विषय. — पृष्ठांक.

महाराणा अमरसिंह दूसरे,
दसवां प्रकरण - ७२९ - ९२८.

महाराणाकी गद्दीनशीनी ... . ७२९ - ७३०

डूंगरपुर, बांसवाड़ा व प्रतापगढ़ पर फ़ौजकशी, पुर मांडल वग़ैरह पर्गनोंसे शाही थानेदारोंका निकाला जाना, और अजमेरके सूबहदारका काग़ज़ महाराणाके नाम, तथा पुर मांडल वग़ैरह पर्गनोंका हाल ... ७३० - ७३१

मांडलगढ़के टोंकी बाबत काग़ज़ात ७३१ - ७३३

किसी बादशाही सर्दारकी याददाश्त, एक सर्दारकी राय मेवाड़की बाबत, और असदख़ांका ख़त नव्वाब बहरहमन्दख़ांके नाम ... ७३३ - ७३५

असदख़ां वज़ीरका ख़त और बादशाही नौकर कायस्थ केशवदासकी अर्ज़ी महाराणाके नाम ... ७३५ - ७३६

असदख़ांका ख़त शक्तावत कुशलसिंहके नाम, और एक ख़त महाराणाके नाम .... ७३६ - ७३७

बादशाह आलमगीरके नामकी अर्ज़ीका मुसव्वदह, बादशाहके वज़ीरकी याददाश्त, वज़ीरका ख़त महाराणाके नाम, अजमेरके वक़ायानिगारकी याददाश्त, और किसी बादशाही सर्दारका ख़त सय्यद हुसैनके नाम ७३८ - ७३९

महाराणाका ख़त किसी शाहज़ादहके नाम, और मेवाड़ वकीलकी दर्ख़्वास्त असदख़ांके नाम ... ७३९ - ७४

जमइयत और रामपुराकी बाबत वज़ीरके ख़त महाराणाके नाम, बादशाही सर्दार और वज़ीरके काग़ज़ ईडर तथा मेवाड़के मुआमलेमें ... ... ७४१ - ७४३

महाराणाके नाम बादशाहज़ादह शाह आलमका ख़ास दस्तख़ती निशान ... ... ७४३ - ७४

चित्तौड़की बाबत फ़ज़ाइलख़ांका ख़त असदख़ांके नाम और असदख़ांका फ़ज़ाइलख़ांके नाम, वज़ीरका ख़त महाराणाकी बाबत अहमदाबादके सूबेदारके नाम, और किसी बादशाही नौकरकी अर्ज़ी महाराणाके नाम .... ७४४ - ७४६

वज़ीरका जवाबी ख़त जमइयत और कर्ण व जुझारकी शिकायतके बारेमें, और सामानकी रसीद महाराणाके नाम .... ७४६ - ७४७

बांसवाड़ा और रामपुराकी बाबत ख़त .. .. ७४७ - ७४८

जमइयत और सिरोही वग़ैरहकी बाबतके काग़ज़ात .... ७४८ - ७५२

विषय.	पृष्ठांक.
...या, महरू व पीसांगणका हाल	७५२ – ७५४
...ाह व शाही वज़ीर तथा ...ों वगैरहके फ़ार्सी काग़ज़ोंपर	७५४ – ७६२
...ड़ व मारवाड़का मुआमला, ...र महाराजा अजीतसिंहके काग़ज़	७६२ – ७६६
...धपुरपर अजीतसिंहका कृवज़ह, ...र आंबेर व जोधपुरपर शाही ...ती	७६६ – ७६८
...धपुर व जयपुर वालोंके ख़त ...हाराणाके नाम, और दोनों महा-...जाओंका उदयपुर आकर मुला-...ात व अहदनामह करना, और ...हाराणाको बादशाह बनानेकी ...ाह	...७६८ – ७७२
...दारशाहके निशान ... ...म ....महाराणाके ...ाराणाके	७७३ – ७७६
...ख़त शाहज़ादह और ...फुद्दौलहके नाम	७७७ – ७७८
...ठौड़ व कछवाहोंकी कामयाबी, और फ़ौज ख़र्चकी बाबत् प्रजापर महाराणाकी ताकीद	७७८ – ७८०
महाराणाके दस्तूर और इरादे, और असदख़ांका ख़त महाराणाके नाम	७८० – ७८१
मेवाड़के वकीलोंकी कोशिश, और महाराणाके नाम काग़ज़	७८१ – ७८९
महाराणाका देहान्त, और मुल्की इन्तिज़ाम	७८९ – ७९०
जोधपुरकी तवारीख़	७९० – ९१८
मारवाड़का जुग़्राफ़ियह	७९० – ७९५
राठौड़ोंका प्राचीन इतिहास, और कन्नौजके राठौड़ोंका हाल मए वंशावली वगैरहके	७९५ – ७९८
राठौड़ोंका मारवाड़में आना, उनका दक्षिणसे तअल्लुक़, और राठौड़ोंकी पुरानी हालत	७९८ – ८०२
राव चूंडाको मंडोवर मिलना	८०३ – ८०४
राव कान्ह, राव रणमल्ल, राव जोधा, राव सांतल, राव सूजा, और राव गांगाका हाल	८०४ – ८०८
राव मालदेव	८०८ – ८१३
राव चन्द्रसेन	८१३ – ८१४
राजा उदयसिंह (मोटाराजा)	८१... – ८१६
राजा ...सूरसिंह	८१६ – ...१८
राजा गजसिंह	८१९ – ८२...
महाराजा जशवन्तसिंह अव्वल	८२१ – ८२८
महाराजा अजीतसिंह	८२८ – ८४३
महाराजा अभयसिंह	८४३ – ८४९
महाराजा रामसिंह	८४९ – ८५०
महाराजा बख़्तसिंह व विजयसिंह	८५१ – ८५८
महाराजा भीमसिंह	८५८ – ८६०
महाराजा मानसिंह	८६० – ८७४
महाराजा तख़्तसिंह	८७५ – ८७९
महाराजा जशवन्तसिंह दूसरे	८८० – ८८२
जोधपुरके बड़े अहल्कारों और जागीरदार सर्दारोंका नक़्शह	८८२ – ८८६
गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके साथ जोधपुरके अह्दनामे	८८६ – ९१८
शाहआलम बहादुरशाह का हाल	६१८ – ६३५
प्रकरण सारांश कविता	६३५ – ६३६

अफ्सरोंको इनआम, इक्राम, और ख़िताब देकर राज़ी करलिया. तहव्वुरख़ांको सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब देकर अमीरुल्उमरा बनाया; और जो लोग शाहज़ादहसे बर्ख़िलाफ़ थे, उन्हें क़ैद किया.

विक्रमी १७३७ माघ कृष्ण १२ [हि० १०९१ ता० २६ ज़िल्हिज = ई० १६८१ ता० १७ जैन्युअरी] को वक़ाये निगारोंकी अर्ज़ियोंसे आलमगीरने अक्बरका सारा हाल सुना, इस अचानक और भयानक फ़सादके उठने व अपने प्यारे बेटेके बाग़ी होनेसे बादशाहके दिलपर रंज और ख़ौफ़ छागया; क्योंकि तीस हज़ार सवार राठौड़ और कई हज़ार सीसोदिये व बादशाही नौकर मिलाकर ७०००० फ़ौजसे ज़ियादह उसके पास होगई थी. अक्बरने तख़्तनशीन होकर खुत्बा और सिक्का अपने नामका जारी करदिया; क़ाज़ी ख़्वुल्ला और मुहम्मद आकिल व शेख़ तय्यब, अमरोहेके मीर गुलाम मुहम्मद, चारों आदमियोंने इस कामके करनेको मज्हबी फ़त्वा दिया. आलमगीरने अपने प्यारे बेटेका, मुक़ाबलेके लिये आना सुनकर बहरामन्दख़ां तोपख़ानहके दारोगाको बुलाकर हुक्म दिया, कि लश्करके चारों तरफ़ तोपख़ानहके मोर्चे जमादो.

ख़फ़ीख़ां लिखता है, कि उस वक़ बादशाहके पास क़रीबन् आठ सौ सवारोंकी फ़ौज होगी. घाटोंकी हिफ़ाज़तके लिये आदमी तईनात किये, और महलोंके पासकी घाटियोंपर भी मोर्चे जमादिये. ×हाफ़िज़ मुहम्मद अमीनख़ां अहमदाबादके सूबहदार और दूसरे सूबेदारोंके नाम फ़र्मान भेजगये, कि अपने अपने इलाक़ेका बन्दोबस्त रक्खें.× विक्रमी माघ शुक्ल १ [हि० ता० २९ ज़िल्हिज = ई० ता० २० जैन्युअरी] को बादशाहने शिकारके लिये सवारी की, लौटते वक़ तमाम मोर्चोंको मुलाहज़ह किया; और वज़ीर असदख़ांको हुक्म हुआ, कि हमेशह मोर्चोंकी निगरानी रक्खे. मआसिरेआलमगीरीमें ख़फ़ीख़ांके बर्ख़िलाफ़ बादशाहके पास दस हज़ार सवार मौजूद होना लिखा है. हमारे विचारसे गिर्दनवाहके थानोंपरके आदमी एकट्ठे होगये होंगे.

शाहज़ादह अक्बरके वकीलोंको शजाअतख़ां और बादशाह क़ुलीख़ांके वकीलों समेत बीटलीके क़िलेपर क़ैद किया. शिहाबुद्दीनख़ांको बादशाहने पहिलेसे ही राजपूतोंको सज़ा देनेके लिये सिरोहीकी तरफ़ भेजा था, शाहज़ादह अक्बरने उसे भी अपनेमें मिलानेके लिये मीरख़ांको भेजकर बुलवाया; लेकिन् वह नहीं आया, क्योंकि उसने सोचा होगा, कि शाहज़ादह अक्बर आसानीसे नहीं जीत सक्ता, इस सबबसे कि- अव्वल तो बादशाहका सामना, दूसरे तीनों शाहज़ादे मौजूद हैं, उनकी

लड़ाई. यह सोचने बाद मीरख़ांको भी समझाकर अपने साथ लिया, और दो दिनमें अजमेर पहुंचा, जिसके एवज़ ख़िलअ़त वग़ैरह इज़्ज़त मिली. उस वक़ हामिदख़ां भी बादशाहके पास आया, जब कि बादशाहको एक एक आदमी फ़िरिश्ता सा मालूम होता था. बादशाह दिलसे बड़ा मज्बूत था, हरदम शाहज़ादहके लिये यही कहता, कि बहादुरने अच्छा मौक़ा पाया है; अब जल्दी क्यों नहीं आता ?

असदख़ां और मुहम्मद अमीनख़ां गिर्दनवाहकी गिर्दावरी और संभाल रखते थे, हिम्मतख़ां बीमार होजानेसे अजमेरकी हिफ़ाज़तके लिये रक्खागया. शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़म उदयपुरके पास उदयसागर तालाबसे तीन दिनमें ८० कोस ज़मीन तैकरके विक्रमी १७३७ माघ शुक्क ६ [हि० १०९२ ता० ४ मुहर्रम = ई० १६८१ ता० २५ जैन्युअरी] को अजमेर पहुंचा. ख़फ़ीख़ांने लिखा है, कि बादशाहको मुअ़ज़्ज़मकी तरफ़से भी अन्देशा होगया था, इसलिये हुक्म दिया, कि तोपख़ानहका मुंह मुअ़ज़्ज़मके लश्करकी तरफ़ फेरदो. शाहज़ादहको भी कहला दिया कि नेकनियतीसे आया है, तो अपने दोनों बेटोंको लेकर अकेला चलाआवे. मुअ़ज़्ज़म ख़ैरख़्वाह ही था, मगर अपने बेटे मुइज़्ज़ुद्दीन और अ़ज़ीमुश्शानके हाथोंपर रूमाल लपेटकर बापकी ख़िझतमें हाज़िर होगया. ख़फ़ीख़ां शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मके साथ दस हज़ार सवार लिखता है, और मुस्तइदख़ां मआसिरेआ़लमगीरीमें एक हज़ार सवार होना बताता है, लेकिन् हमारी रायमें मआसिरेआ़लमगीरीका लिखना ठीक मालूम होता है, क्योंकि तीन दिनमें अस्सी कोस दस हज़ार सवार नहीं पहुंच सक्ते. अगर कोई कहे, कि जैसे एक हज़ार सवार गये, वैसे ही दस हज़ार सवार गये, तो यह जवाब है- कि अव्वल तो दस हज़ार घोड़े एकसे नहीं होसक्ते, कि तीन दिन तक बराबर एकसा धावा करें; दूसरे एक हज़ार सवार मांडल वग़ैरह थानोंसे बदलते हुए भी पहुंच सक्ते हैं, और दस हज़ारका इस तरह पहुंचना आसान नहीं; तीसरे उदयसागरसे दस हज़ार सवार शाहज़ादहके साथ गये हों, तो भी थकते थकाते अजमेर पहुंचने तक उनमेंसे एक हज़ार सवार पहुंचे होंगे. शिहाबुद्दीनख़ां गिर्दावरने बादशाहके पास ख़बर भेजी, कि अक्बरकी फ़ौज कुड़कीमें ठहरी हुई है, इसके सुन्तेही आ़लमगीरने अपने बख़्शियोंको हुक्म दिया, कि फ़ौज तय्यार हो; उस वक़ हरावल, गिर्दावर और अस्ल फ़ौज सब सोलह हज़ार सवार थे. बादशाहको फिर मुख़्बिरोंने ख़बर दी, कि शाहज़ादह अक्बर लड़ाईके लिये आगे बढ़ा है, लेकिन् उसकी फ़ौजके सर्दार भागते जाते हैं.

विक्रमी माघ शुक्क ७ [हि० ता० ५ मुहर्रम = ई० ता० २६ जैन्युअरी] को कमालुद्दीनख़ां वग़ैरह सर्दार बादशाही फ़ौजमें आमिले. इसी दिन बादशाही

फ़ौज आगे बढ़ी, और देवराई गांवमें ठहरी; उधरसे शाहज़ादह अक्बरकी फ़ौज भी सरकती आती थी, बादशाही फ़ौज वहां ठहरी रही. इसी दिन डेढ़ पहर रात गये बादशाह इशा (रात) की नमाज़ पढ़कर शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़म समेत बैठे थे, उस वक़ अ़र्ज़ हुई, कि शाहज़ादह अक्बरकी फ़ौजसे तहव्वुरख़ां हुज़ूरकी ख़िद्मतमें हाज़िर हुआ है, हुक्म दिया, कि उसे हथियार वग़ैरह यहां हाज़िर कियाजावे. तहव्वुरख़ांने हथियार खोलनेसे इन्कार किया, यह सुन्ते ही आलमगीरने तलवार मियानसे निकाली, और झुंभलाकर कहा, कि "उस नालायक़को हथियार समेत आने दो." शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मने अर्दलीके लोगोंको इशारा कर दिया, कि उसे आते ही मार डालना. लुत्फुल्लाने हुक्मके मुवाफ़िक़ तहव्वुरख़ांसे कहा; वह घबरा कर वापस जाने लगा, और डेरोंकी रस्सीमें पैर उलझनेसे गिरा; गिरते ही गुर्ज़बर्दारोंने चारों तरफ़से आकर टुकड़े टुकड़े कर डाला. यह ख़बर शाहज़ादह अक्बरके लश्करमें पहुंची, जिससे फ़ौज डरकर बिखरी. विक्रमी माघ शुक्ल ८ [हि० ता० ६ मुहर्रम =ई० ता० २८ जेन्युअरी] को शाहज़ादह अक्बर, जो फ़ौज समेत बादशाही फ़ौजसे डेढ़ कोसपर ठहरा हुआ था, औरत बच्चोंको वहीं छोड़कर भाग गया.

ख़फ़ीख़ांने मुन्तख़बुल्लुबाबमें लिखा है, कि बादशाहने चालाकीसे एक जअ़ली फ़र्मान शाहज़ादह मुहम्मद अक्बरके नाम इस ढंगसे लिख भेजा, जो राजपूतोंके हाथ लग गया, उसमें यह लिखा था- कि "ऐ मेरे प्यारे शाहज़ादह तू मेरी हिदायत के मुवाफ़िक़ इन नालायक़ राजपूतोंको खूब धोखा देकर लाया है, लेकिन् अब इनको अपनी हरावलमें करना चाहिये, जो दोनों तरफ़से क़त्ल किये जावें." इस फ़र्मानके देखनेसे राजपूतोंको शक् पैदा होगया, और वे शाहज़ादहका साथ छोड़कर चलदिये. हमारे क़ियाससे भी आलमगीरने ऐसा किया हो, तो तअ़ज्जुब नहीं, क्योंकि वह चालाक और फ़रेबी था. शाहज़ादहके भाग जानेकी ख़बर पाकर फ़र्राशख़ानहके दारोग़ा मुहम्मद अ़लीख़ांने उसके कुल कारख़ानह व सामानपर क़ब्ज़ा करलिया, और दर्बारख़ां नाज़िर, शाहज़ादह अक्बरके बेटे नीकोसियर व मुहम्मद अस्ग़र और सफ़िय्यतुन्निसा व ज़किय्यतुन्निसा और नजीबतुन्निसा लड़कियां और सलीमहबानू बेगम वग़ैरहको बादशाहके पास लेआया. शिहाबुद्दीनख़ां, जो शाहज़ादहका पीछा करनेको गया था, उसके सलाहकारोंको मारकर लौट आया. बादशाहने अक्बरका पीछा करनेके लिये शाहज़ादह शाहआलम, क़िलीचख़ां, ख़ानेज़मां, नागोरके राव इन्द्रसिंह, आंबेरके महाराजा रामसिंह और राजा सुजानसिंह वग़ैरहको भेजा; शाहज़ादह शाहआलम बहादुरको पचास

हज़ार अशर्फ़ी, उसके दूसरे बेटे मुइज़्ज़ुद्दीनको दो लाख रुपया, अज़ीमुद्दीनको तीन हज़ार अशर्फ़ी, और दूसरे साथियोंको पचास हज़ार अशर्फ़ी देकर बिदा किया.

विक्रमी माघ शुक्क ९ [हिज्री ता० ७ मुहर्रम = ई० ता० २९ जेन्युअरी] को बादशाह वापस अजमेर आये, और विक्रमी माघ शुक्क ११ [हिज्री ता० ९ मुहर्रम = ई० ता० ३१ जेन्युअरी] को सुना, कि राजपूतोंने थानेदारको मारकर मांडलगढ़का क़िला लेलिया. शाहज़ादह मुहम्मद अक्बरके सलाहकार, जो बादशाही दर्बारमें क़ैद होकर आये, उन्हें नीचे लिखे मुवाफ़िक़ सज़ा मिली :—

क़ाज़ी ख़ूबुल्ला, मुहम्मद आक़िल, शैख़ तय्यब, और मीर ग़ुलाम मुहम्मद अमरोहे वालेको, जिन्होंने कि बादशाहपर चढ़ाई करनेका मज़्हबी हुक्म दिया था, बीटलीगढ़के क़िलेमें भेजदिया; इनके सिवाय औरोंको भी क़ैद वग़ैरहकी सज़ा हुई, और आलमगीरकी बड़ी शाहज़ादी ज़ेबुन्निसा बेगमकी लिखावटें मुहम्मद अक्बरके नामपर ज़ाहिर होनेसे उसका सारा माल अस्बाब छीनने बाद चार लाख रुपये सालाना, जो मिलता था, ज़ब्त करके उसको सलीम गढ़में भेजदिया.

विक्रमी माघ शुक्क १५ [हिज्री ता० १३ मुहर्रम = ई० ता० ४ फ़ेब्रुअरी] को बादशाहसे अर्ज़ हुआ, कि शाहज़ादह मुहम्मद अक्बर तो सांचौर पहुंचगया, और शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़म उसका पीछा करता हुआ जालोरको गया है. फिर उसी दिन ख़बर मिली, कि महाराणा जयसिंहके प्रधान साह दयालदासने शाहज़ादह आज़मकी फ़ौजपर रातके वक़ छापा मारना चाहा. शाहज़ादहने यह ख़बर मिलने पर फ़ौरन् दिलावरख़ांको उसके मुक़ाबलेके लिये भेजा, और दयालदास [illegible] भी लड़नेको तय्यार होगया, बहुतसे आदमी मारेगये; आख़िर दयाल[illegible]स अपनी औरत को मारकर चलदिया, और उसका सब सामान बाद[illegible]शाही मुलाज़िमोंके हाथ आया किलीचख़ां शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मसे बग़ैर पूछे [illegible]दशाहकी ख़िद्मतमें चलाआया; इसलिये उसकी ड्योढ़ी बन्द कीगई.

इन्हीं दिनोंमें शाहज़ादह अ[illegible]ज़मने महाराणा जयसिंहके पास महाराणा कर्णसिंहके पोते और गरीबदासके बे[illegible]टे महाराज श्यामसिंहको मेल करादेनेके मन्शासे भेजा. श्यामसिंह, बादशाही मुल[illegible]ज़िम, जो दिलेरख़ांकी फ़ौजमें था, महाराणासे आमिला, और अर्ज़ की, कि दि[illegible]लेरख़ांकी मारिफ़त सुलहका पैग़ाम भेजा जावे, तो यक़ीन है कि सुलह हो जायगी; क्[illegible]योंकि शाहज़ादह अक्बरके बखेड़े और बर्सातके आजानेसे इस वक़ बादशाह भी सुल[illegible]हके ख़्वाहिश]मन्द हैं. महाराणाके दिलपर श्यामसिंहके कहनेका असर होगया; इसलिये कि यह [illegible]भी तक्लीफ़की हालतोंमें थे; इस तौरपर दोनों तरफ़से लड़ाई बन्द हुई.

महाराणा जयसिंहने अपने मुसाहिब कोठारियाके रावत् रुक्माङ्गद, सलूंबर व पारसौलीके चहुवान राव केसरीसिंह, बावलके रावत् घासीराम शक्तावत वग़ैरह को शाहज़ादह मुहम्मद आज़म, दिलेरख़ां, हसनअ़लीख़ां वग़ैरहकी सलाहके मुवाफ़िक़ अजमेरमें बादशाहके पास भेजा. इन्होंने वहां पहुंचकर सुलहके बारेमें बातचीत की. बादशाहको भी सुलह मंजूर थी, उसने एक फ़र्मान भेजा; जिसका तर्जमा यह है :-

आ़लमगीरके फ़र्मानका तर्जमा.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम.

ब फ़र्मान आ़लीशान, मुहयुद्दीन मुहम्मद औरंगज़ेब बहादुर, आ़लमगीर, बादशाह ग़ाज़ी

निशान आ़लीशान, बादशाहज़ादह, मुहम्मद मुअ़ज़्ज़म

जो अ़र्ज़ी कि राव केसरीसिंह, रुक्माङ्गद और घासीरामके हाथ भेजी थी, बुजुर्ग दर्गाहमें पहुंची; उससे ताबेदारी, ख़िद्मतगारी और नेकनियती और मज़्बूत इक़्रारके इरादे मालूम हुए. जो वह वफ़ादार ख़ान्दानके सर्दार निहायत ख़ैरख़्वाही

نشان شاهزادهٔ محمد معظم شاه عالم از طرف شهنشاه عالمگیر
بنام رانا جی سنگه *

بسم الله الرحمن الرحيم *

به فرمان عالي شان ابوالمظفر محی الدین محمد اورنگ زیب بهادر عالمگیر بادشاه * غازي *

نشان عالی شان بادشاهزادهٔ شاه عالم * محمد معظم *

زبدهٔ دولت خواهان عقیدت کیش - خلاصهٔ مخلصان خیر اندیش - نتیجهٔ دودمان وفا جوئي - نخبهٔ خاندان رضا جوئی - سلالهٔ دودمان مشان -
مورد عنایات بیکران بادشاهی - ومهبط تفقدات بی پایان حضرت ظل (الهی) رانا جی سنگه -

और सफ़ाई ज़ाहिर करके बड़े हुक्मोंके मुवाफ़िक़ कार्रवाई क़ुबूल करेंगे, तो हम भी उस ख़यालके साथ, जो उस ख़ान्दानके मर्ज़ी ढूंढनेवालेकी बाबत हमारे दिलमें है, और उसके क़ुसूरोंकी मुआ़फ़ीकी तरफ़ इरादह पैदा करता है, निहायत मिहर्बानीसे फ़र्मान मए पंजे मुबारकके निशानके, और मन्सब व टीका इनायत होनेकी दर्ख़्वास्त करेंगे.

और उस उम्दा ख़ैरख़्वाहकी दूसरी अ़र्ज़ोंपर भी ख़याल किया जावेगा. जिस वक़्त वह नेक इरादहवाला ख़ैरख़्वाह शाहज़ादहकी ख़िद्मतमें हाज़िर होकर सलामके दस्तूर अदा करेगा, जो हज़रत शाहजहांकी शाहज़ादगीके दिनोंमें गोगूंदा मक़ामपर ज़ाहिर हुए थे, तब उस मिहर्बानियोंकी लायक़के साथ वही इनायत बरती जायगी, जो पहिले राणा अमरसिंहके साथ कीगई थी. उस ख़ैरख़्वाहके लिये उसकी अ़र्ज़के मुवाफ़िक़ तसल्ली और इत्मीनानकी नज़रसे फ़र्मान आ़लीशान भिजवाया गया. ता० १४ सफ़र सन् २४ जुलूस. हिज्री १०९२ ता० १४ सफ़र [वि० १७३७ फाल्गुन शुक्ल १५ = ई० १६८१ ता० ५ मार्च.]

مستمال بافضال روزافزون عالی متعالی شاهی بوده معلوم نماید - عرضه داشتے که مصحوب تهور
شعاران راو کیسری سنگه و رکهمگد و گهاسی رام ارسال داشته بودند - بحساب عالمیان مآب رسید -
اطاعت و انقیاد و خدمتگاری و خلوص عبودیت و رسوخ عهد و پیمان موکد بوضوح می انجامید - چون
آن نتیجهٔ دودمان وفاجوئی اظهار کمال عقیدت و خلوص ارادت نموده - انچه بفرمائیم بتقدیم برساند
واز روے اخلاص در اتمام و انصرام آن کار کوشش نماید - از امر عالی متعالی تجاوز ننماید
لهذا ما هم از روے عنایتے که با آن نخبهٔ خاندان رضاجوئی داریم درباب استعفاے تقصیرات آن
مورد عنایات بیکران بادشاهی و عطاے فرمان والاشان مزین بنقش پنجهٔ مبارک مقدس مجلی
و مرحمت منصب و تیکه و عنایات بادشاهی به آن سزاوار الطاف نمایان چنانکه سابق شده و دیگر
ملتمسات معروضهٔ آن زبدهٔ دولتخواهان عقیدت کیش التماس نمائیم - و هرگاه آن خلاصهٔ مخلصان
خیراندیش بملازمت عالی شرف اندوز گردند - و آداب - که بخدمت حضرت فردوس آشیانی
در ایام بادشاهزادگی در گوگنده بتقدیم رسانده بود - و مراعات که فردوس آشیانی نسبت برانا
امر سنگه فرموده بودند - شامل حال آن زبدهٔ دولتخواهان عقیدت کیش باشد - فرمان عالیشان را
بموجب التماس آن مورد مراحم بیکران بجهت مزید اطمینان آن سزاوار الطاف شایان درخواست
نمودیم * چهاردهم شهر صفر ختم بالخیر والظفر - سنه بیست و چهار جلوس والا زینت نگارش یافت *

(مطابق سنه ۱۰۹۲ هجري)

यह सब लोग अजमेरसे उदयपुर आये, इन दिनों शाहज़ादह अक्बर राठौड़ोंके साथ मारवाड़में फिरता था; शाहज़ादह मुअज़्ज़म भी उसकी गिरिफ़्तारी व मुक़ाबलेको दिलसे टालता था. शाहज़ादह आज़मने एक निशान महाराणा जयसिंहको विक्रमी १७३८ वैशाख कृष्ण १० [हि० १०९२ ता० २४ रबीउल्अव्वल = ई० १६८१ ता० १४ एप्रिल] को इस मत्लबसे लिख भेजा, कि शाहज़ादह अक्बर गुजरातसे पहाड़ोंमें होकर देसूरीके घाटेकी तरफ़ आता है, उसे पकड़ लेना, और मौक़ा हो, तो मारडालना; लेकिन् अक्बरके साथ महाराणाके सर्दार रावत् रत्नसिंह चूंडावत कृष्णावत और मारवाड़के राठौड़ दुर्गदास, सोनंग मए जमइयतके थे. अक्बरका इरादह महाराणासे मिलनेका था, लेकिन् महाराणाने सर्दारोंको कहला भेजा, कि बाग़ी शाहज़ादहको किसी हीलेसे मत लाओ, और ज़ाबितेके साथ दक्षिणकी तरफ़ पहुंचा दो, क्योंकि सुलहका पैग़ाम होरहा था.

ऊपर लिखे हुए सर्दारोंने शाहज़ादह अक्बरसे कहा, कि आप बादशाह होगये, इस लिये मुलाक़ात नहीं होसक्ती; तब जमइयत समेत भोमटके पहाड़ोंमें होते हुए डूंगरपुर पहुंचे, वहांके रावल जशवन्तसिंहने बड़े शिष्टाचारसे मिहमानी करके महाराणाकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ सर्वन व राज पीपलांके रास्तेसे शाहज़ादहको दक्षिण पहुंचाया. वहां राजा शिवाके बेटे शम्भा घोंसलाने बड़ी ख़ातिरके साथ राहेड़ीके क़िलेमें शाहज़ादहको ठहराया.

महाराणा जयसिंहने शाहज़ादह आज़मके पास सुलहका संदेसा भेजा था, आलमगीर बादशाहको शम्भा और अक्बरके एक होजानेसे बड़ा डर पैदा हुआ, ख़ासकर इसी सबबसे बादशाहने जल्द सुलह मंजूर करली. शाहज़ादह आज़म चित्तौड़के क़िलेमें ठहरा हुआ था, राजसमुद्र तालाबके उत्तरी किनारेपर मोरचणा और पशूंधकी चौरस ज़मीनमें मुलाक़ात करना क़रार पाया. तब एक ख़रीता दिलेरख़ांने महाराणाके नाम लिख भेजा, जिसका तर्जमा यह हैः–

दिलेरख़ांके ख़तका तर्जमा. (फ़ार्सी नक़्ल नोटमें देखो.)

बाद मामूली अल्क़ाबके,

शौक़ और दोस्तीकी बातें ज़ाहिर करनेके बाद लिखा जाता है, कि इन

दिनोंमें बहादुर ज़ात गोपीनाथ परिहार और सांवलदास पंचोलीके निशान करने पर बहादुरी की निशानी चन्द्रसेन झाला (१), जैत झाला (२), सांवलदास राठौड़ (३), रावत केसरीसिंह शक्तावत (४), केसरीसिंह चहुवान (५), और उन दोनों (६) पहिले ज़िक्र किये हुओंको फ़त्हमन्द दर्गाहमें भेजा था. जहां तक हो सका, उस बलन्द ख़ान्दानकी भलाई और बिहतरीके वास्ते अर्ज़ किया गया. ज़िक्र किये हुए लोगोंने इक़ार कीहुई बातें और बुज़ुर्ग ख़िद्मतमें उस दोस्तके आनेका वक्त़ लिख दिया.

उस लिखावटकी नक़्ल उन लोगोंने आपके पास भेजदी है, जिससे पूरी कैफ़ियत मालूम होगी. इन इक़ारोंके मुवाफ़िक़ ख़ास दस्तख़तसे एक मिहर्बानीका निशान और अमीरीके दरजे हसनअलीख़ां बहादुर आलमगीरशाहीकी लिखावटें पीछेसे पहुंचेंगी. मुलाक़ातके लिये सिर्फ़ चारही दिन बाक़ी हैं, इस दोस्तके काग़ज़

---

(१) सादड़ीका. (२) देलवाड़ेका. (३) बदनोरका. (४) बान्सीका. (५) सलूंबर व पारसोलीका.

(६) परिहार पासवान (१), सांवलदास पंचोली अहल्कार (२).

نقل خط نواب دلیرخان همراهی اعظم شاه بنام رانا جے سنگه
سنه ۲۶ جلوس عالمگیری *

امارت پناه - شوکت وحشمت دستگاه - ابهت وشهامت
منزلت - رفیع الشان سموالمکان مشمول عنایات

والای اعلی حضرت خاقان خدیوگیهان باشد - بعد از شرح مراسم شوق واختصاص مشهود گردانیده مے آید - که دریولا که بعد نشان نمودن عزت وتهور دستگاهان گوپی ناتهه پرهار وسانولداس پنچولی - رفعت وشجاعت دستگاهیں چندرسین جهاله وجیت جهاله وسانولداس راتهور وراوت کیسری سنگه سکتاوت وراوکیسری سنگه چوهان - وبام برده را بجناب نصرت انتساب

पहुंचनेपर, जो जल्दीमें लिखा गया है, वह बलन्द ख़ान्दान कूच ब कूच रवानह हों, एक घड़ीकी देर न करें; जिस तरहपर कि क़रार पाया है, बलन्द ख़िद्मतमें हाज़िर होकर ख़ैर और ख़ूबीके साथ रुख़्सत हों. इस दोस्तको, जो आपके देखनेके लिये शौक़मन्द है, आपके मिलनेसे ख़ुशी हासिल होगी; ज़ियादह कैफ़ियत चन्द्रसेन वग़ैरहके लिखनेसे मालूम होगी. ज़ियादह शौक़के सिवा क्या लिखा जावे. ख़ुशीके दिन हमेशह रहें.

महाराणा जयसिंहको बादशाह आलमगीरकी दग़ाबाज़ीका डर था, इस लिये दिलेरख़ांसे बात चीत करके तसल्ली की, कि मेरे जाहिल राजपूत बिल्कुल नहीं मानते, और बादशाही लश्करसे दग़ा होना बतलाकर मुझे भी शाहज़ादहसे मिलनेमें रोकते हैं; इसलिये इनकी भी तसल्ली होना ज़रूर है. महाराज श्यामसिंहने दिलेरख़ांसे कहा, कि आपके दोनों बेटे महाराणाके लश्करमें भेज दिये जावें, और जब महाराणा मुलाक़ात करके वापस जावेंगे, उन दोनोंको लौटा देंगे; दिलेरख़ांने ख़ुशीसे दोनों बेटोंको थोड़े आदमियों समेत महाराज श्यामसिंहके साथ भेज दिया.

महाराणा जयसिंह दिलेरख़ांके दोनों बेटोंको कई सर्दारोंकी निगरानीमें रख-कर विक्रमी १७३८ आषाढ़ शुक्ल ९ [हि० १०९२ ता० ७ जमादियुस्सानी = ई० १६८१ ता० २५ जून] को शाहज़ादह आज़मकी मुलाक़ातके लिये पहाड़ोंसे निकले,

---

عالی فرمان شده بود - درانچه خود نوشته آن رفیع منزلت بوده بعرض عالی رسانیده مقرر نموده -
مومی الیهم که از قرار مقدمات و ساعت رسیدن ایشان بشرف ملازمت فیض منقبت عالی
نوشته بودند - نقل آن مشار الیهم اطلاع داشته اند - کیفیت از ان معلوم خواهد گردید - و نشان
مرحمت عنوان مزین بدستخط عالی مطابق قرارداد حال و نوشتجات بندهٔ درگاه و امارت پناه
حسن علیخان بهادر عالمگیرشاهی متعاقب میرسد - چون درساعت معین چار روز باقیست
بمجرد رسیدن این رقیمة الوداد که عجالتاً نوشته شد - آن علوشان کوچ بکوچ درنزدیکی بیایند -
و توقف یکساعت نکنند - که بنحوی که قرار یافته بملازمت عالی مستفیض شده بمبارکی و خوبی
رخصت گردند - دوستان را که مشتاق ایشان ام بدیدن آن شوکت منزلت خورسندی
حاصل گردد - دیگر کیفیت از نوشتهٔ چندرسین وغیره معلوم خواهد شد * زیاده بجز شوق چه نگارد -
ایام شادمانی دایماباد فقط *

—*(*)*—

उनके साथ सादड़ीका झाला राज चन्द्रसेन, बेदलाका राव सबलसिंह चहुवान, बीज्जो-लियांका पंवार राव बैरीशाल, महाराणा जगत्सिंहके पोते अरिसिंहका बेटा भगवन्तसिंह, चहुवान केसरीसिंह, बड़ापल्लीवाल ब्राह्मण पुरोहित ग़रीबदास, मेड़तिया राठौड़ ठाकुर सांवलदास वग़ैरह सर्दार थे; और राजसमुद्रकी प्रशस्तिके अनुसार सात हज़ार सवार, दस हज़ार पैदल; और कर्नेल् टॉड व दूसरी राजपूतानहकी ख्यातिकी पोथियोंमें सोलह हज़ार सवार, चालीस हज़ार पैदल, हज़ारों भील, मीने, मेर वग़ैरह हथियारबन्द पहाड़ियोंपर और हज़ारों रऋय्यतके लोग भी जल्सा देखनेके लिये होना लिखा है. आस पासकी पहाड़ियोंपर एक लाख आदमियोंकी भीड़ भाड़ थी. महाराणा शाही लश्करके नज़्दीक पहुंचे, उस वक्त शाहज़ादहकी तरफ़से दिलेरख़ां और हसनअलीख़ां व रतलामका राजा भीमसिंह राठौड़, हाड़ा किशोरसिंह पेश्वाई करके डेरोंमें ले गये. मुस्तइदख़ां मआसिरे आलमगीरीमें लिखता है - कि "महाराणा को बाईं तरफ़ बिठाकर ख़िल्अत, जड़ाऊ तलवार, जम्धर, फूलकटारा, घोड़ा, हाथी, सोने, चांदीके सामान समेत, और उनके सर्दारोंको भी ख़िल्अत, चालीस घोड़े, दस जड़ाऊ जम्धर देकर रुख़्सत दी."

राजसमुद्रकी प्रशस्तिके २३ सर्गके ५३ वें श्लोकमें लिखा है, कि शाहज़ादह आज़मने एक मस्त हाथी, अठ्ठाईस घोड़े, सोने चांदीके सामान समेत, और ५० अदद ज़ेवर देकर विदा किया.

हमको पुराने दफ़्तर मेंसे शाहज़ादह आज़मके निशानका हिन्दी खुलासह उसी वक्तका लिखाहुआ मिला है, जिसकी नक़्ल यहां लिखीजाती है :-

कागज़की नक़्ल.

"निशान १ एक शाहज़ादह आज़मजीका महाराणा जयसिंहजीके नाम विक्रमी १७३८ श्रावण कृष्ण ६, गांव घाटीके मक़ाम आया- तीनों परगनोंकी बाबत तुमने लिखा, दिलेरख़ां और हसनअलीख़ांकी मारिफ़त अर्ज़ हुज़ूरमें गुज़रानी; जिसपर यह बात क़ुबूल हुई, कि तुम तालाबपर आय हाज़िर होना; दाम ४० लाख छूट हुआ, ३ तीन किरोड़ दाममेंसे. असवार हज़ारकी चाकरी मुआफ़, दीवार (क़िला) नहीं बनवाना, और बादशाही चोर राठौड़ वग़ैरह अपनी हदमें नहीं राखना."

इस कागज़का यह मतलब होगा, कि गांव घाटीमें महाराणाके डेरे थे, मुला-क़ातकी तारीख़से १२ दिन बाद फ़र्मान आनेकी तारीख़ लिखी है; शायद रियासतके दफ़्तरमें यह कागज़ उस दिन सौंपा गया होगा, और तीन किरोड़ दाम, जो लिखे-

गये हैं, फ़ौज खर्च, या नज्ञानह होगा; उसमें से चालीस लाख दाम मुआफ़ किये हैं. दीवार नहीं बनानेसे, चित्तौड़ वगैरह क़िलोंकी मरम्मत नहीं करानेका मत्लब होगा; हज़ार सवारकी नौकरी, जो बादशाह जहांगीरके वक्तसे दक्षिणकी तरफ़ मुक़र्रर हुई थी, शायद वह मुआफ़ हुई हो; राठौड़ोंपर बादशाही नाराज़गी थी, इस से उनको न रखनेका हुक्म है.

अफ़सोस है, कि अस्ल फ़र्मान नहीं मिला, वर्ना सारा मत्लब खुल जाता. मालूम होता है, कि मांडलगढ़, मांडल, पुर और बदनौरके पर्गने दिलाने और जिज़्या मुआफ़ करवानेका वादा शाहज़ादहने किया होगा; जो गद्दीनशीनीके वक्त बादशाही फ़र्मान आया है, उसका खुलासह आगे लिखेंगे, जिससे ज़ाहिर होगा. इस लड़ाईके बारेमें कर्नेल टॉडने लिखा है, कि सूरसिंह सीसोदिया और नरहर भट्ट बादशाहकी ख़िद्मतमें गये, और नीचे लिखीहुई दर्ख्वास्त पेश की :-

अर्ज़ी.
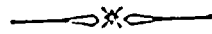
हुज़ूरकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ रानाने हम फ़िद्वियोंको हुज़ूरकी ख़िद्मतमें वह तहरीर पेश करनेके लिये, जो नीचे दर्ज है, भेजा है. उम्मेद है, कि हुज़ूर इन दर्ख्वास्तोंको मंज़ूर फ़र्मावेंगे; और जो कुछ इसके बाद पद्मसिंह दर्ख्वास्त करेगा, उसको भी क़बूल होनेका दरजा बख्शा जावे-

१ चित्तौड़ मए तमाम उन ज़िलोंके, जो पहिले उसकी आबादीके वक्तमें उसके शामिल थे, वापस करें.

२ मन्दिर और हिन्दुओंके इबादतख़ानोंकी जगह, जो मस्जिदें बनाई गई हैं, आगेको इस तरह न बनवाई जावें.

३ मदद, जो राना बादशाहतको देता आया है, हमेशह देता रहेगा, उसमें कोई नई बात, या नया हुक्म न बढ़ाया जावे.

राजा जशवन्तके बेटे या रिश्तहदार, जब अपने कामोंके लायक़ हों, उनका मुल्क वापस दिया जावे; और छोटी छोटी दर्ख्वास्तोंको अदब रोकता है.

आपकी बादशाहत और नसीबका सितारा हमेशह चमकता रहे (१).

अर्ज़ी

फ़िद्वियान सूरसिंह व

नरहर भट्ट.
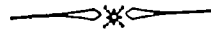
यह अर्ज़ी कर्नेल टॉडकी किताबसे नक़्ल कीगई है, परन्तु कर्नेल टॉडने श्यामसिंहको, जो बीकानेर वाला लिखा है, वह ग़लत है; क्योंकि मआसिरेआलमगीरी और आलमगीरनामह वग़ैरह फ़ार्सी तवारीख़ोंमें भी दूसरी लड़ाइयोंके मौक़ेपर श्यामसिंहको सीसोदिया लिखा है; और राजसमुद्रकी प्रशस्तिमें, जो कि उसी समयकी खुदी हुई है, २३ वें सर्गके ३२ वें श्लोकमें यह दर्ज है, कि कर्णसिंहके दूसरे पुत्र ग़रीबदास थे, जिनके बेटे श्यामसिंहने बादशाही लश्करसे आकर सुलहकी बात चीत की.

शाहज़ादहकी मुलाक़ात होनेके बाद महाराणा, दिलेरख़ांके डेरेमें मिलनेको गये; वहां दिलेरख़ांने महाराणासे कहा, कि आपके राजपूत जाहिल और बेवकूफ़ हैं, कि मेरे दो लड़कोंको बे एतिबारीके सबब आपके एवज़ अपने पास रक्खा; अगर आपसे दग़ा कीजाती, और मेरे बेटे मारे जाते, तो हम लोगोंकी ज़िन्दगी बादशाही बन्दगीके लिये ही है; लेकिन् आपके मारे जानेसे, जो आपकी रियासतको नुक्सान पहुंचता, उसका हर्गिज़ बदला न होता; इस लिये बादशाही ख़ान्दान और नौकरोंकी ज़बानका एतिबार रखना चाहिये. महाराणाने जवाब दिया, कि वैकुंठवासी महाराणा राजसिंहजी काकाजीके (२) याने आप के भरोसे छोड़ गये हैं. इस तरह दोस्तानह बातें होनेके बाद दिलेरख़ांने अपनी तरफ़से रईसानह दस्तूरके मुवाफ़िक़ महाराणाको कपड़ेके ९ थान, जड़ाऊ तलवार, ढाल, बर्छी, ९ घोड़े, एक हाथी; और महाराणाके कुंवरके लिये कपड़ेके तीन थान, जड़ाऊ ख़ंजर, ज़ड़ाऊ उर्बसी, ज़ड़ाऊ बाज़ूबन्द, और दो घोड़े देकर बिदा किया.

---

(१) कर्नेल टॉड इस दर्ख्वास्तको महाराणा राजसिंहकी तरफ़से बादशाह आलमगीरके पास अजमेरमें पेश करना लिखते हैं, शायद शाहज़ादहकी सलाहके मूजिब अजमेरमें पेश हुई हो, तो तअज्जुब नहीं; लेकिन् हमारे क़ियाससे महाराणा राजसिंहके वक्तमें सुलहका पैग़ाम भेजना बिल्कुल ग़लत है; यह दर्ख्वास्त महाराणा जयसिंहके समयमें ही गई होगी.

(२) काकाजी, यानी बापका भाई, इससे यह मुराद है, कि दिलेरखांको महाराणा राजसिंह का दोस्त क़रार देकर यह शब्द कहा.

महाराणाके कुंवरके लिये मआसिरेआलमगीरीमें ऊपर लिखी चीज़ोंका देना लिखा है, लेकिन् जब कभी महाराणा और शाहज़ादोंकी मुलाक़ात हुई है, उस वक्त महाराणाके पाटवी महाराजकुमार साथ नहीं गये, और यह दिलेरखांकी मुलाक़ात उसी वक्त हुई मालूम होती है, जब महाराणा शाहज़ादहसे मुलाक़ात करके लौटे, तो शाहज़ादहकी मुलाक़ातमें कुंवरका कुछ भी ज़िक्र नहीं है; इससे मालूम होता है, कि दोस्तीके तरीक़ेसे दिलेरखांने महाराजकुमारके वास्ते ऊपर लिखी हुई चीज़ें भेजदी होंगी.

महाराणा उदयपुर आये, और शाहज़ादह आज़म अपने बेटे बेदारबख़्त और दिलेरखां वगैरह समेत रवानह होकर विक्रमी १७३८ श्रावण शुक्ल ६ [हि० १०९२ ता० ४ रजब = ई० १६८१ ता० २३ जुलाई] को बादशाह आलमगीरकी ख़िद्मत में अजमेर हाज़िर हुआ.

हमको एक अस्ल ख़ानगी कागज़ उसी सुलहके वक्तका मिला है, जिसकी हरएक क़लमपर शाहज़ादह मुहम्मद आज़मकी सहीहका स्वाद ص ख़ास दस्तख़ती मौजूद है. इस कागज़के देखनेसे सब लोग समझलेंगे, कि उक्त शाहज़ादहने बादशाहत मिलनेकी उम्मेदपर महाराणासे कैसे कैसे इक़ार किये थे; उस अस्ल कागज़का तर्जमा नीचे लिखाजाता हैः-

यादृदाश्त.

जिस वक्त खैरख्वाहोंके मन्शाकी मुवाफ़िक़ शाहज़ादह आलीजाह आज़मशाह तख़्तपर जुलूस फ़र्मावें, तो राना, नीचे लिखी हुई इनायतोंका उम्मेदवार है-

स्वाद-

(१) जो पर्गने पांच हज़ारी ज़ात और पांच हज़ार सवारकी बाबत बरतरफ़ होगये हैं, फिर बहाल किये जावें; तफ़्सील- फूलिया, मांडलगढ़, बदनौर, बसार, गयासपुर, परधां, डूंगरपुर.

स्वाद-

(२) जिस वक्त हज़रत खुदाके साये मुबारक तख़्तपर जुलूस करें, तो सिवाय पांच हज़ारी ज़ात पांच हज़ार सवारके, हज़ारी ज़ात और हज़ार सवार दो अस्पा सिह अस्पाकी तरक़्क़ी फ़ौरन् दी जावे.

स्वाद-

(३) सिन्सिनी (जाटोंकी एक गढ़ीका नाम है) फ़तह होनेमें कोशिश करनेकी बाबत हज़ारी ज़ातकी तरक़्क़ी हो.

स्वाद-

(४) तीन किरोड़ दाम इनआमकी बाबत हमको कहीं जागीर नहीं मिली, उनमेंसे फ़र्मानके मुवाफ़िक़ दो किरोड़ दाम दक्षिणमें बतलाये गये हैं, और एक किरोड़ दामके एवज़में पर्गनह सिरोही इनायत हो.

स्वाद-

(५) खुदाकी मिहर्बानियोंसे उम्मेद कीजाती है, कि जिस वक्त हज़रत शाहज़ादह, खैरख्वाहोंकी ख्वाहिशके मुवाफ़िक़ तख़्तपर जुलूस करें, और इस तावेदारसे उम्दह खैरख्वाही ज़ाहिर हो, तो सिवाय ऊपर ज़िक्र किये हुए मन्सबके नीचे लिखेहुए पर्गने इनायत किये जावें; तफ़्सील- ईडर, खेड़ी, मांडल, जहाज़पुर, मसऊदा इलाक़ह मन्दसौर, खैराबाद, टौंक, सावर, टोड़ा, मसऊदा, मालपुरा, वग़ैरह.

स्वाद-

(६) यह तावेदार उम्मेदवार है, कि सात हज़ारी ज़ात व सात हज़ार सवारका फ़र्मान इनायत हो.

स्वाद-

(७) इक़ारी फ़र्मान मए पंजेके निशानके ख़ास मुहर और दस्तख़तसे इस मज़्मूनका इनायत हो, कि जिज़्यह तमाम हिन्दुस्तानसे मुआफ़ न हो, तो हमारे मुल्कसे न लिया जावे; दक्षिणमें हमारी तरफ़से हज़ार सवारकी नौकरी मौकूफ़ कीजावे.

स्वाद

(८) चचा और भाई और इज़्ज़तदार नौकर, जो यहांसे रंजीदह होकर हुज़ूरमें जायें, तो उनपर कुछ तवज्जुह न की जावे.

स्वाद-

(९) देवलिया, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, सिरोही, वग़ैरहके ज़मींदार, जो अपने इलाक़ोंपर मौजूद हैं, हुज़ूरमें हाज़िर होनेपर कुछ दरजा न पावें.

स्वाद-

(१०) हमारी जमइयत कामको तय्यार है, इसके सिवाय दूसरे राजपूत और ज़मींदारोंकी जमइयत भी मेरे बुलानेपर आजावे, और उनके लिये मुनासिब अर्ज़ मंज़ूर कीजावे.

स्वाद-

(११) जो मन्सबदार और ज़मींदार शाहज़ादह आलीजाहके तावेदार हों, उनके नाम लिखकर मुझे इनायत होवें; उनके सिवाय जो तावेदारी न करें, मैं उनसे कुवूल कराऊंगा; इस खैरख्वाहीमें किसी इलाकेका नुक्सान हो, तो मुआफ़ फ़र्मावें.

इस फ़ार्सी काग़ज़की एक एक क़लमके ऊपर शाहज़ादहके हाथका " स्वाद ص " लिखा हुआ है, जिससे सहीहका मत्लब है; यानी मंज़ूर किया गया.

ईश्वरकी कुद्रत देखना चाहिये ! कि जिस बादशाहतकी उम्मेदमें एक शाहज़ादह मारा फिरता है, उसीपर दूसरा इरादह रखता है. यह इक्रार ख़ानगीमें महाराणा और शाहज़ादहके हुए थे. उसने अपने बापके पास जानेके बाद इस रियासतकी हिमायतके लिये कोशिश करनेमें कमी न रक्खी होगी, लेकिन् बादशाह आलमगीर पूरा मत्लबी, शक्की और चालाक था, जिसके सामने मुश्किलसे पैंठ होती थी. शाहज़ादह आज़मका इस ख़ानगी इक्रारसे यह मत्लब होगा, कि शाहज़ादह मुहम्मद अक्बरके बाग़ी होते वक्त बड़ा शाहज़ादह मुअज़्ज़म अजमेरमें अपने बापके पास पहुंच गया था, जिससे बादशाहकी मिहर्बानी उसपर ज़ियादह हुई. आज़मने बिचारा, कि मैं भी अपना मत्लब बनाऊं; क्यों कि आलमगीरके मरने बाद बहादुरशाह बादशाह बननेका सामान कर रहा है.

आज़मने अपने बापसे लड़ाई और सुलहका सारा हाल अर्ज़ किया, जिसपर बादशाहने फ़ौज ख़र्चमेंसे एक लाख रुपया छोड़कर महाराणाको चार पर्गने देदिये, और जिज़्यह मुआफ़ किया; और हज़ार सवारों की नौकरीके बारेमें कुछ ज़िक्र नहीं है. बादशाहने शाहज़ादह कामबख़्शके बख़्शी मुहम्मद नईमको मस्नद नशीनीका दस्तूर और फ़र्मान देकर उदयपुरकी तरफ़ रवानह किया; उस फ़र्मानका मज्मून उसी वक्तका लिखा हुआ हमें मिला है, जिसकी नक्ल यह है:-

फ़र्मानके मज्मूनकी नक्ल.

फ़र्मान एक, राणाजी जयसिंहजी टीले बिराज्या, जब बादशाह औरंगज़ेब जीकी तरफ़से टीला आया- हाथी १, कटारी जड़ाऊ १, घोड़ा आया; और राणाजीका ख़िताब पंज हज़ारी मन्सब, एक किरोड़ बीस लाख दामकी जगह

मुबारकपुर, मांडल, मांडलगढ़, बदनौरके पर्गने इनायत किये; जिसके रुपये साल एकके तो एक लाख देने, दूसरे सालके लाख २ देने; दाम जगह तीनके एक किरोड़ बीस लाख, १ मांडलगढ़, २ पुरमांडल, ३ बदनौर, तीनों महाल तुम्हारेमें ज़ियादह थे, सो सर्कारसे तुमको बख़्शे.

बरस दोमें लाख तीन लेना, जिस पीछे लेना नहीं. सन् २४ जुलूस (१) १२ रजब.

इस फ़र्मानके खुलासहसे जो बातें टपकती हैं, ये हैंः- शाहज़ादह मुहम्मद आज़मने तीन किरोड़ दाम फ़ौज ख़र्चके लेने ठहराकर चालीस लाख दाम छूट किये, और दो किरोड़ साठ लाख दाम बाक़ी रहे, जिनमेंसे बादशाहने बाक़ी छोड़कर एक किरोड़ बीस लाख दाम लेने रक्खे, और ऊपर लिखेहुए पर्गने इनायत किये; लेकिन् एक हज़ार सवारोंकी नौकरी और जिज़्यहका मुआफ़ करना शाहज़ादहके इक़ार मूजिब फ़र्मानमें नहीं लिखा, जिससे साबित होता है, कि बादशाहको यह दोनों बातें नागुवार थीं; उदयपुरके वकीलोंने शाहज़ादह मुहम्मद आज़मको अपना इक़ार पूरा करने को कहा होगा, तब शाहज़ादहके अर्ज़ करनेपर बादशाहने हज़ार सवारकी नौकरी बहाल रखकर जिज़्यह छोड़नेके लिये इजाज़त देने बाद शाहज़ादहसे निशान लिखवाया होगा, जिसका खुलासह यह हैः-

निशान शाहज़ादह आज़मशाहजीका
महाराणाजी श्रीजयसिंहजीके
नाम.

अर्ज़ी तुम्हारी आई, सो पर्गनह तुमको बख़्शा, सो तुमको मालूम रहे. अ-सवार हज़ार एक, चाकरीमें भेजना; और जिज़्यह तुमको छूट है. ता० २४ शहर शअ्बान.

आलमगीरका फ़र्मान विक्रमी १७३८ श्रावण शुक्ल १४ [हि० १०९१, २४ जुलूस ता० १२ रजब = ई० १६८१ ता० २९ जुलाई] का लिखा, और निशान शाहज़ादह मुहम्मद आज़मका विक्रमी १७३८ प्रथम आश्विन कृष्ण १० [हि० १०९२ ता० २४ शअ्बान = ई० १६८१ ता० ८ सेप्टेम्बर] का है, इनके खुलासहसे

(१) वि० १७३८ श्रावण शुक्ल १४ [हि० १०९१ ता० १२ रजब = ई० १६८१ ता० २९ जुलाई]

समझ सक्ते हैं, कि बादशाह आलमगीरने किस रोब दाबके साथ उदयपुरपर चढ़ाई की थी, और सुलह किस तरह दबकर की; दबनेका सबब हम नहीं लिख सक्ते, ज़ाहिरा मालूम होता है, कि शाहज़ादह मुहम्मद अक्बरकी बग़ावत और उसके मरहटोंसे मिलनेका दबाव हुआ होगा, क्यौंकि खुद आलमगीरने उदयपुरकी सुलहके बाद जल्द दक्षिणकी तरफ़ कूच किया था. इस सुलहका दूसरा सबब यह होगा, कि ढाई वर्ष तक बादशाहने आप आकर लड़ाई की, तोभी राजपूतोंकी ताक़त न घटी, और इस लड़ाईमें ख़र्चके सिवाय कुछ भी फ़ायदह नहीं हुआ.

महाराणा जयसिंह और उनके भाई भीमसिंहका हाल.

महाराणा राजसिंहके बेटोंका ज़िक्र तो हम ऊपर लिख आये हैं, लेकिन् जानना चाहिये कि विक्रमी १७१० [हि० १०६३ = ई० १६५३] में जब महाराणी पुंवारके गर्भसे महाराणा जयसिंहका जन्म हुआ, उसी वक्त महाराणी चहुवानके गर्भसे महाराज भीमसिंह भी जन्मे. इन दोनों कुंवरोंकी बधाई यानी खुशख़बरी देनेवाले लोग महाराणा राजसिंहके पास पहुंचे; महाराणा सो रहे थे, कुंवर जयसिंहके जन्मकी ख़बर देनेवाला महाराणाके पैरोंकी तरफ़, और भीमसिंहकी खुशख़बरी सुनानेवाला सिरानेकी तरफ़ बैठ गया. जब महाराणा उठे, तो पहिले पैरकी तरफ़ नज़र गई; उस आदमीने उठकर अर्ज़ की, कि महाराणी पुंवारके गर्भसे महाराज कुमारका जन्म हुआ है; फिर सिरानेकी तरफ़से दूसरेने आकर अर्ज़ की, कि महाराणी चहुवानके गर्भसे महाराज कुमारका जन्म पहिले हुआ है. तब महाराणाने फ़र्माया, कि हमको जिसकी पहिले ख़बर मिली, वह बड़ा, और जिसकी पीछे मिली, वह छोटा है.

उस वक्त इस बातपर ज़ियादह विचार नहीं किया गया, क्यौंकि इनसे बड़े दो राजकुमार, सुल्तानसिंह और सर्दारसिंह मौजूद थे. महाराज कुमार जयसिंहको बड़ा और भीमसिंहको छोटा समझते रहे. जब सुल्तानसिंह और सर्दारसिंह दोनों बड़े राजकुमार गुज़र गये, तब महाराणाने अपनी ज़बानके लिहाज़से कहा, कि जयसिंह पाटवी रहे, इसपर भीमसिंहने कुछ उज्ज्र न किया, परन्तु जब महाराणाका देहान्त होगया, और जयसिंह गद्दीपर बैठे, तो वह मौक़ा लड़ाईका था, पर भीमसिंह महाराणाके हुक्मके मुवाफ़िक़ लड़ाई झगड़ोंमें बहादुरी दिखाते रहे. भीमसिंहको अपने बड़प्पनका ख़याल ज़रूर था, इस लिये सुलह होनेके बाद वह बादशाह आलमगीरके पास विक्रमी १७३८ भाद्रपद शुक्ल १४ [हि० १०९२ ता० १३ शश्रबान = ई० १६८१ ता० २९ ऑगस्ट] को अजमेर पहुंचे. बादशाहने राजाका पद और कुछ मन्सब दिया, जो उनके मरनेके वक्त पांच हज़ारी तक पहुंचा था. आलमगीर बड़ा चालाक था, उसने

आपसमें बखेड़ा डालनेका ज़रीआ समझा होगा. उसी दिन भीमसिंहके साथ शाहज़ादह कामबख़्शका बख़्शी मुहम्मद नईम, जो महाराणा जयसिंहकी गद्दी नशीनीका दस्तूर लेकर गया था, बादशाही हुजूरमें पहुंचा. महाराणाने उसको ४००० रुपये, और १९ थान कपड़ेके, दो घोड़े और चार ऊंट दिये थे; वे उसने बादशाहको पेश किये; बादशाहने उसीको बख़्श दिये. इन दिनों दक्षिणमें मरहटोंने बड़ा फ़साद मचाया, और अक्बर भी उनके शामिल होगया; इस सबबसे बादशाहने अपना ही जाना जुरूर समझकर विक्रमी १७३८ आश्विन शुक्ल ७ [हि० १०९२ ता० ५ रमज़ान = ई० १६८१ ता० २० सेप्टेम्बर] को जंगी फ़ौज समेत अजमेरसे चलकर देवराई गांवमें मक़ाम किया, और वहांसे आश्विन शुक्ल ८ [हि० ता० ६ रमज़ान = ई० ता० २१ सेप्टेम्बर] को बड़े शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मके बेटे अ़ज़ीमुश्शानको जुम्दतुल्मुल्क असदख़ां वज़ीरके साथ अजमेरको भेजा, कि वहांका बन्दोबस्त रक्खे; और उनके मातह्त एतिक़ादख़ां, कमालुद्दीनख़ां, राजा भीमसिंह राजसिंहोत, कुंवर समेत और मर्हमतख़ां वगैरहको ख़िल्अ़त, जवाहिर, घोड़े और हाथी देकर मुक़र्रर किया. इनायतख़ां अजमेरके फ़ौज्दार और सय्यद यूसुफ़ बुख़ारी बीटलीगढ़के क़िलेदारको भी ख़िल्अ़त देकर अजमेर भेजा.

विक्रमी आश्विन शुक्ल ९ [हिज्री ता० ७ रमज़ान = ई० ता० २२ सेप्टेम्बर] को बादशाहने ख़बर पाई, कि प्रथम आश्विन शुक्ल ५ [हिज्री ता० ३ रमज़ान = ई० ता० १८ सेप्टेम्बर] को दिल्लीमें उसकी बहिन जहांआराबानू बेगमने इन्तिक़ाल किया.

विक्रमी कार्तिक शुक्ल १४ [हिज्री ता० १२ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २६ नोवेम्बर] को बादशाह बुर्हानपुर पहुंचा. दूसरे ही दिन ख़बर मिली, कि मेड़तेमें तीन हज़ार राठौड़ लड़ाईके लिये तय्यार थे, उनपर एतिक़ादख़ांने हम्ला किया, और दोनों तरफ़के बहादुरोंने बड़ी दिलेरी दिखलाई; ५०० राठौड़ोंके साथ सोनंग (१) और उसका भाई अजबसिंह, सांवलदास, बिहारीदास और

(१) जोधपुरके इतिहासमें सोनंगकी बाबत इस तरह लिखा है, कि थोड़ी लड़ाई होने बाद भीमसिंह राजसिंहोतकी मारिफ़त बीच बिचाव होनेपर सोनंग अजमेर जाते वक़्त पूंजलोते गांवमें मौतसे मरगया, और उसका भाई अजबसिंह, रामसिंह करणवलुवोत, सबलसिंह खानावत, नाहरखां, हरीसिंह महेशदासोत, गोपीनाथ, सादूल, कुशलसिंह, अर्जुन गोपीनाथोत, घासीराम, अनोपसिंह राठौड़, तीन चारणों समेत १४ आदमी एतिबारख़ां (एतिक़ादख़ां) से लड़कर मारे गये.

गोकुलदास वगैरह अच्छी तरह लड़कर मारे गये; बाकी सब भाग गये. इस लड़ाईमें सर्दार तरीन् शेर अफ़्ग़न वगैरह घायल हुए; और बहुतसे सर्दार व सिपाही मारे गये.

विक्रमी १७३८ माघ शुक्ल १२ [हिज्री १०९३ ता० १० सफ़र = ई० १६८२ ता० २० फ़ेब्रुअरी] को बादशाहने सुना, कि पुर, मांडल वगैरह पर्गनों से मारवाड़ी राठौड़ माल अस्वाब लूट लेगये. विक्रमी १७३८ फाल्गुन शुक्ल ३ [हिज्री १०९३ ता० १ रबीउल् अव्वल = ई० १६८२ ता० १३ मार्च] को बुर्हानपुर से बादशाह औरंगाबादकी तरफ़ चला, और विक्रमी चैत्र कृष्ण १० [हिज्री ता० २३ रबीउल् अव्वल = ई० ता० ३ एप्रिल] को वहां पहुंचा.

विक्रमी १७३९ चैत्र कृष्ण ८ [हिज्री १०९४ ता० २२ रबीउल् अव्वल = ई० १६८३ ता० २१ मार्च] को पुर, मांडलके पर्गनहके फ़ौज्दार, कृष्णगढ़के राजा मानसिंह रूपसिहोतको बादशाहने बदनौरके पर्गनहकी फ़ौज्दारी राजा दलपत बुंदेलेसे उतारकर दी. इससे मालूम होता है, कि ऊपर लिखी हुई हज़ार सवारोंकी नौकरी और जिज़्यहका मुआफ़ होना शाहज़ादह आज़मसे ठहरा था; बादशाहने टालाटूली की; और उक्त शाहज़ादहने जिज़्यह मुआफ़ करके हज़ार सवार तलब किये; इसपर महाराणा जयसिंहने सवारोंके भेजनेमें देर की; जिससे पुर, मांडल, और बदनौरके पर्गने महाराणाके कब्जेमें नहीं आये. इन्हीं दिनोंमें शाहज़ादह आज़म का निशान महाराणाके नाम आया, उससे भी यही साबित होता है, कि हज़ार सवार नहीं भेजनेके सबब तीनों पर्गने ख़ालिसेमें मिलालिये गये थे.

शाहज़ादह मुहम्मद आज़मका निशान, जो सूबे दक्षिण औरंगाबादसे आया था, उसका तर्जमा मए फ़ार्सी नक्लके नीचे लिखाजाता है. मालूम होता है, कि उस वक्त बादशाहको फ़ौजी सिपाहियोंकी बहुत ज़रूरत थी.

शाहज़ादह आज़मके निशानका तर्जमा.

बाद मामूली अल्क़ाबके,

बादशाही मिहर्बानियोंमें शामिल होकर जाने, कि इन दिनोंमें हुक्म दिया गया है, कि उस उम्दह सर्दारको लिखा जावे, कि हमेशह एक हज़ार सवार उस सर्दारके, दक्षिणमें नौकरी करते रहे हैं– इस ख़यालसे, कि बाज़े पर्गने जिज़्यहके तौरपर उससे लेलिये थे, एक हज़ार सवारकी हाज़िरी मुआफ़ फ़र्मादी गई थी. अब ज़ब्त की-हुई जागीरें मिहर्बानीके साथ वापस इनायत की जाती हैं. लिखी हुई जमइयत पुराने

दस्तूरके मुवाफ़िक़ नौकरीपर हाज़िर रहे. इस वास्ते लिखाजाता है, कि वह तावेदारीका ख़याल रखनेवाला इस बुज़ुर्ग मिहर्बानीकी क़द्र जानकर बड़े शुक्रके साथ एक हज़ार उम्दह सवार अपने किसी रिश्तहदार या एतिबारी नौकरके साथ इस वक़्में, जब कि बुज़ुर्ग फ़त्हमन्द लश्कर फ़सादी नालायक़ोंके सज़ा देने और क़त्ल करनेमें उनके बद कामोंके एवज़ मश्गूल है, जहां तक होसके, जल्द भेजे; इस मुआमलेमें बिल्कुल सुस्ती, ग़फ़लत, काहिली, देर रवा न रक्खे; इस कार्रवाईको बड़ी तारीफ़के लायक़ तावेदारी जतलानेका मौक़ा समझे, जिसके एवज़में बड़े फ़ायदे हैं. २४ शऋ्बानकी रात, सन् २७ जुलूस आलमगीरी - मुताबिक़ विक्रमी १७४१ द्वितीय श्रावण कृष्ण १० [हिज्री १०९५ ता० २४ शऋ्बान = ई० १६८४ ता० ७ ऑगस्ट].

سمت ۱۷۴۱ نشان اعظم شاه بنام رانا جي سنگه *

باسمه سبحانه

پادشاهی

زبدهٔ نیکخواهان عقیدت کیش - خلاصهٔ هواخواهان ارادت اندیش -
نتیجهٔ دودمان وفاخوئی - نخبهٔ خاندان رضاجوئی - سلالهٔ عبودیت
منشان عبودیت اطوار - نقاوهٔ اخلاصمندان اطاعت شعار - شایستهٔ الطاف
واحسان بیکران - سزاوار نوازش واعطاف نمایان - مطیع الاسلام
رانا جی سنگه - مشمول عواطف بوده بدانند - که حسب الحکم مقدس معلی
صادر شد که در آن زبدة الامثال جمعیت
یکهزار سوار آن خلاصة الاشباه در رکن پرگنهائی
که بعنوان جزیه از گرفته بودیم قید نموده بودیم موقوف
فرموده بودیم - چون محال ماخوذه بمقتضای عطای باز
باو مرحمت شده - باید جمعیت مرقومه بدستور قدیم بخدمت
مامور قیام نماید - لهذا مرقوم میگردد که باید آن اخلاص اندیش
قدر این عنایت والا شناخته در ادای شکر این موهبت کبری یکهزار سوار
خوش اسپه بسرکردگی یکی از اقربا یا نوکر عمدهٔ معتمد خود درین وقت
که رایات جاه وجلال بتادیب وگوشمال وقتل واستیصال بدنهادان
اینطرف که عن قریب بسزای اعمال نکوهیده وافعال ناپسندیدهٔ
خویش رسیده نیست ونابود مطلق خواهند شد متوجه است - سرعت
هرچه تمامتر وتعجیل هرچه شتابتر بحضور ساطع النور مقدس

महाराणा जयसिंह अपनी नाम्वरीके वास्ते एक बड़ा भारी तालाब बनवाना विचारकर मौक़ेकी तालाश करने लगे; और इसी वर्षमें दो तालाबोंकी नींव डाली; एक तो उदयपुरसे उत्तर डेढ़ मीलकी दूरीपर, जिसे 'देवाली' का तालाब कहते हैं, मोतीमहलसे नीमच माताके पहाड़ तक लम्बा बनवाया; और दूसरा उदयपुरसे पांच मील उत्तरको वायु कोणकी तरफ़ झुकता हुआ थूर गांवमें, जिनमेंसे पहिला तो मौजूद है, और दूसरा फूटगया; लेकिन् इन तालाबोंके बनवानेसे महाराणाका दिल खुश नहीं हुआ, क्योंकि इनके पिता महाराणा राजसिंहने बड़ा भारी 'राजसमुद्र' नाम तालाब बनवाया था, और यह उससे भी बड़ा बनवानेका इरादह रखते थे. इसालिये विक्रमी १७४४ [हिज्री १०९८ = ई० १६८७] को ऊपर लिखे दोनों तालाबोंकी प्रतिष्ठा की, और इसी संवत् में उदयपुरसे १८ कोस दक्षिण अग्नि कोणको झुकते हुए 'जयसमुद्र' तालाबकी नींव डाली.

इस तालाबका बन्द दो पहाड़ोंके बीच अग्नि और वायु कोणको झुकता हुआ १२५४ फुट लंबा, १०५ फुट ऊपरसे चौड़ा बांधा गया है, जिसकी पिछली दीवार ९८ फुट ऊंची और उससे भीतरकी दीवार १२ फुट ज़ियादह ऊंची है; दोनों तरफ़की दीवारें और सीढ़ियां बनवाकर पानी रोका गया था; लेकिन् दोनों दीवारोंका बीच, ख़ानगी झगड़ोंके सबब ख़ाली रह गया था, जिसे महाराजाधिराज महाराणा श्रीसज्जनसिंहने लाखों रुपये लगवाकर मिट्टीसे भरवाया, इसका ज़िक्र हम आगे करेंगे. इस तालाबमें छोटे नदी नाले तो बहुत गिरते हैं, लेकिन् बड़ी नदियां गोमती, झामरी, रूपारेल, और बगार जिनको रोककर बन्द बांधा गया था, दूर दूरसे पानी लाकर तालाबको भरती हैं. बन्दकी सीढ़ियोंपर सिफ़ेद पत्थरके हाथी बने हैं, और बन्दके दोनों तरफ़ दो बारहदरी हैं. पूर्वके पहाड़पर तिः मन्ज़िले गुम्बज़दार महल हैं, और महलोंकी ड्योढ़ीके साम्हने बड़ी बारहदरी है. इन सबकी मरम्मत महाराणा सज्जनसिंहने करवाई. इन्हीं महलों के दक्षिणी बाजू बहुतसे मकानोंके खंडहर पड़े हैं, जिन्हें ज़नानह महल बतलाते हैं. इस तालाबका बन्द सिफ़ेद पत्थरका बनाहुआ है; जो राजनगरके पत्थर से दूसरे दरजेका है. इस बन्दके पीछे और पूर्वी पहाड़के नीचे महाराणा जयसिंहने एक शहर बसाकर उसका नाम 'जयनगर' रक्खा था, लेकिन् वह अब नहीं रहा; सिर्फ़ दो महलोंके गुम्बज़ और एक सिफ़ेद पत्थरकी बावड़ी बे मरम्मत पड़ी है. इस तालाबके पानीमें दस गांव- चीबोड़ा, नामला, भटवाड़ा गामड़ी, सेमाल, पाटण, कोटड़ा, घाटी, संगावली और सलाव डूबे हैं; पानी कम होनेपर बाज़े गावोंके खंडहर नज़र आते हैं. जब यह गांव डूब गये, तो किनारेपर आबादी हुई. तालाबसे दक्षिणमें छोटासा गांव सौ घरकी बस्तीका 'वीरपुरा' आबाद है, यह गांव

कुरावड़ रावत रत्नसिंहकी जागीरमें था, जिसके बदलेमें महाराजाधिराज महाराणा श्री सज्जनसिंहने दूसरे गांव देकर उसे ख़ालिसेमें मिलालिया; और पहिले जो इस ज़िले का हाकिम सराड़े गांवकी पालमें रहता था, उसको यहां रखकर सद्र मक़ाम बनाया.

बन्दके ऊपरसे यह तालाब एक बड़ी नदीकी तरह भराहुआ मालूम होता है, और महलोंसे भी सारा तालाब नहीं दीखता; इसीसे महाराणा जयसिंहने तालाब के भीतर निकले हुए पहाड़पर महल बनवाये थे, जो अबतक मौजूद हैं, जिन्हें लोग रूठी राणीके महल बतलाते हैं. यह बात लोगोंने झूठ मश्हूर करदी है, कि एक महाराणी नाराज़ होगई थी, जिसके लिये यह महल बनवाये गये थे.

कर्नेल टॉडने भी ऐसे क़िस्से सुनकर अपनी किताबमें ज़ियादह दर्ज करदिये हैं. उन महलोंसे कुल तालाबकी सैर अच्छी तरह नज़र आती है; और इसीलिये वे महाराणाने बनवाये मालूम होते हैं. इस तालाबके बीचमें दो पहाड़ भी आगये हैं, जिनमें किसानोंके दो चार घर मवेशी समेत रहते और वहीं खेती बाड़ी करते हैं. जब उन लोगोंको बाहर आनेकी ज़ुरूरत होती है, तो भेला (१) पर बैठकर चले आते हैं.

विक्रमी १७४८ ज्येष्ठ शुक्ल ५ [हिज्री ११०२ ता० ३ रमज़ान = ई० १६९१ ता० २ जून] को 'जयसमुद्र' तालाबकी प्रतिष्ठा हुई, और महाराणा सोनेकी तुला विराजे. इस तालाबके बन्दपर महाराणा जयसिंहने एक बहुत अच्छे खुदवां काम (नक़ाशी) का मन्दिर बनवाना शुरू किया था, लेकिन् वह अधूरा रहगया. इस तालाबमें पूर्वकी पहाड़ियोंको काटकर दो तीन पानीके निकास बनाये गये हैं, वर्षाऋतुके लिये यह बड़ी बहारका मक़ाम है. यह तालाब, जो बड़े पहाड़ों और भीलोंके देशसे दूर, और शहरके पास होता, तो हर एक आदमी आसानीसे देख सक्ता; लेकिन् जिस ज़मानहमें यह बना है, हर एकका जाना बड़ा कठिन था, जिसमें अब पहिलीसी दिक़्क़तें नहीं रहीं, फिर भी तय्यारीके साथ सफ़र करना पड़ता है. इसकी बराबरीका दूसरा तालाब हिन्दुस्तान भरमें नहीं है; बल्कि दुन्यामें भी कुद्रती झीलोंके सिवाय किसी आदमीका बनवाया हुआ न होगा; क्योंकि होता, तो मश्हूर होता. यूरोपिअन मुसाफ़िरोंकी ज़बानी भी यही सुनागया है, कि दुन्यामें आदमीका बनाया हुआ इससे बढ़कर कोई तालाब नहीं है. इस तालाबका हाल उस ज़िलेके जोगी लोग, जो गीत गाने और भीख मांगनेमें बयान करते हैं, इस तरह पर है:-

---

(१) भेला बहुतसी लकड़ियोंको बराबर बांधकर बनाया जाता है, जो नावका काम देता है.

गीतोंका मुख्तसर मत्लव.

"महाराणा जयसिंहके वक्में अलीगढ़का पूर्व्या चहुवान राजपूत लालसिंहका बेटा गुलालसिंह जीविकाकी तलाशमें चित्तौड़ आया, महाराणाने मगराके ज़िलेमें १ बम्बोरा, २ सियाड़, ३ मांडकला, ४ बोरी, चार गांव उसको जागीरमें दिये.

कुछ दिनों बाद महाराणाने नाहर मगरेमें शिकारके वक्त एक सूअरका पीछा किया, परन्तु वह केवड़ेके दरख्तोंमेंसे निकलकर चांद घाटीमें नज़रसे छिपगया, थोड़े दिन बाद वीरपुराके पटैल डांगी अमराने उसी सूअरकी ख़बर दर्बारमें मालूम कराई, महाराणा जयसिंह अपने सर्दारों समेत वीरपुरे आये, और सर्दारोंने पहाड़ोंके ढालमें सूअरको मारकर महाराणाके नज़्र किया. इस शिकारकी गोट (खुशीका खाना) खाते वक्त रत्न और लाल पंचोलियोंने अर्ज़ किया, कि छप्पन और मेवलकी आबादीके वास्ते ढेबरका बांधना मुनासिब है, इसपर महाराणाने कहा, कि यह बात नहीं हो सक्ती, क्यौंकि वह कई बार टूट चुका है; तब गुलालसिंह चहुवानने राय दी, कि बरवाड़ाकी खानसे मज़्बूत पत्थर और लुहारियाकी खानसे लोहा निकाला जावे, और कारीगर मज्दूर मालवेसे बुलाये जावें. यह बात मन्जूर होकर काम जारी हुआ, और प्रमार राजपूत संभालपर मुकर्रर हुए.

इस जगह गोमती नदी बहती थी, जिसमें जांबेरी वगैरह भी रूपारेल समेत मिलगई, और इस नाकेका नाम ढेबर था, यह बात इस तरह मश्हूर है– कि एक ढेबा पटैल नाम कोई शख्स गब्नकी इल्लतमें मारा गया, जिससे इस जगहका नाम ढेबर हुआ. गुलालसिंह चहुवानने प्रमार राजपूतोंके (जो तालाबके कामकी संभालपर मुकर्रर थे) गब्नकी बाबत शिकायत की, महाराणाने प्रमारोंको मौकूफ़ करके गुलालसिंहको मुकर्रर करदिया. इसने मज़्दूरोंसे एक एक रुपया मांगा, इस सबबसे वह लोग फ़र्यादी हुए, और गुलालसिंह जिला-वतन (देश बाहर) कियागया. वह, डूंगरपुरके रावलके पास चला गया, जो उसका बहनोई था, कुछ दिनों पीछे कटूनीके प्रमारोंके हाथसे मुक़ाबलेमें मारा गया."

विक्रमी १७४२ पौष शुक्ल १५ [हि० १०९७ ता० १४ सफ़र = ई० १६८६ ता० ९ जैन्युअरी] में हातिम नाम एक शख्सको, जो पहिले उदयपुरके महाराणाका नौकर था, बादशाहने भीमके टोडेका फ़ौज्दार बनाकर वहां भेजा; हमें यह पता नहीं लगा, कि हातिम कौन था, और क्यौं बादशाहके पास चला गया. यह अहवाल मआसिरेआलमगीरीसे नक्ल किया गया है.

शाहज़ादह आज़म और दिलेरखांके इक़ार मूजिब पुर मांडल, बदनौर वगैरह पर्गने क़ब्ज़ेमें नहीं आये, और न हज़ार सवारकी नौकरी मुआफ़ हुई; महाराणाने भी सवारोंको नौकरीपर नहीं भेजा; और बादशाहने, जो जिज़्यह

छोड़ा, और सुलह की, वह शाहज़ादह मुहम्मद अक्बरकी बग़ावत, और दक्षिण के फ़सादोंकी बदौलत थी. दूसरे राजपूतोंका फ़साद, जिसमें कि ढाई वर्ष तक खुद वादशाह लड़ा, तिसपर भी नहीं मिटा; और बिना मिटाये छोड़कर जाना भी ठीक न था; इससे और सब शर्तें मन्ज़ूर करके एक हज़ार सवार नौकरीमें भेज देना मुहम्मद आज़मसे लिखवा दिया; पर महाराणाने इसपर अमल नहीं किया, जिससे तीनों पर्गनोंपर क़ब्ज़ा नहीं हुआ. क़ब्ज़ा न होनेके सबब एक किरोड़ बीस लाख दाम यानी तीन लाख रुपये फ़ौज खर्चके महाराणाने नहीं दिये; और इसको एक अर्सा भी गुज़र गया था. वादशाह आलमगीर दक्षिणकी लड़ाइयों में ऐसे फंसे, कि निकलना कठिन हुआ. महाराणा जयसिंहने विचारा, कि एक हज़ार सवारोंकी जमइयत दक्षिणमें भेजी जाय, तो २५ रु० माहवारी फ़ी सवारके हिसावसे एक हज़ार सवारके तीन लाख रुपये होते हैं, और पुर मांडल, बदनौर के पर्गनोंके क़ब्ज़ेमें न आनेसे भी रियासतका नुक्सान है; इसलिये जिज़्यहके एक लाख रुपये दे देने ठीक हैं, लेकिन् तीनों पर्गने अपने क़ब्ज़ेमें करलेना चाहिये, जिज़्यह आगे पीछे भी मुआफ़ हो सक्ता है, वर्ना कुल हिन्दुस्तानके शामिल हम भी हैं. इस तरह सोच विचारकर लिख भेजा, उसके जवाबमें विक्रमी १७४७ आषाढ़ शुक्ल ११ [हिज्री ११०१ ता० ९ शव्वाल = ई० १६९० ता० १८ जुलाई] को एक फ़र्मान आया, जिसका तर्जमा मए नक़्ल यह है :-

फ़र्मानका तर्जमा.

पाक और बुज़ुर्ग खुदाके नामसे शुरू किया जाता है-

मुहरकी नक़्ल-

अबुज़्ज़फ़र, मुहयुद्दीन, मुहम्मद औरंगज़ेब बहादुर, आलमगीर वादशाह ग़ाज़ी.

अमीर तीमूरका बेटा.
मीराँ शाहका बेटा.
मुहम्मद शाहका बेटा.
अबूसईद शाहका बेटा.
उमर शेख़ शाहका बेटा
बाबर बादशाहका बेटा.
हुमायूं बादशाहका बेटा.
अक्बर बादशाहका बेटा.
जहांगीर बादशाहका बेटा
शाहजहां बादशाहका बेटा.

तुग़्राकी नक़्ल-

फ़र्मान, अबुज़्ज़फ़र, मुहयुद्दीन, मुहम्मद औरंगज़ेब बहादुर, आलमगीर वादशाह ग़ाज़ी.

वाद मामूली अल्क़ावके-

बादशाही मिहर्बानियोंसे इज़्ज़तदार और खुश होकर मालूम करे, कि जो अर्ज़ी इन दिनोंमें बलन्द दर्गाहमें भेजी थी, फ़ायदह बरूशनेवाली, पाक, साफ़ निगाहमें गुज़री; मालूम हुआ, कि वह उ़म्दह राजा इक़्रार करता है, कि अगर बुज़ुर्ग दर्गाहसे पर्गने पुर और बदनौर उसको बरूश दिये जावें, तो इन दोनों जागीरोंके एवज़ हर बरस लाख रुपया नक़्द जिज़्यहकी बाबत चार क़िस्तमें सूबह अजमेरके सर्कारी ख़ज़ानहमें दाख़िल करता रहे; और माल ज़ामिनी पेश करे.

इस वास्ते निहायत बुज़ुर्गी और पर्वरिशके रास्तहसे उस उ़म्दह सर्दारको एक हज़ार सवारकी तरक़्क़ी और अस्सी लाख दाम इनआम इनायत करनेसे, जिसके अस्ल और तरक़्क़ीके पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार, और हज़ार सवार दो अस्पा, और दो किरोड़ दाम इनआम होते हैं, सर्बलन्दी बरूशकर दोनों जागीरें तरक़्क़ी

فرمان عالمگیر بادشاه بنام راناجی سنگه - بابت جزیه وغیره *

الله

باسمه سبحانه وتعالشانه

نقل مهر-

* ابن * امیر تیمور * صاحب * قران *

* ابن * میران * شاه *

* ابن * شاهجهان * بادشاه *

* ابن * جهانگیر * بادشاه *

ابن سلطان * محمد * شاه

* ابن * سلطان ابو سعید شاه *

* ابن * اکبر * بادشاه *

* ابن * عمرشیخ * شاه *

* ابن * بابر * بادشاه

* ابن * همایون * بادشاه *

* ۱۰۷۹ * عالمگیر بادشاه * الدین محمد محی ۱۲ * ابوالظفر *

نقل طغرا-

فرمان عالی شان
ابوالظفر محی الدین
محمد اورنگ زیب
بهادر عالمگیر بادشاه
غازی

عمدة راجهای دولتخواه - زبدهٔ مشهوران بلا اشتباه - خلاصة الاماثل والاقران - نقاوة النظائر والاخوان - مورد مراحم بیکران - سزاوار عنایت واحسان - مطیع الاسلام راناجی سنگه بنوازش پادشاهی مفتخر و مباهی بوده بداند - که عرضه داشتی که درین ایام فیروزی انضمام بعتبهٔ سپهر احتشام ارسال داشته بود از نظر انور اطهر فیض گستر گذشت - و در پیشگاه خلافت و جهانبانی بظهور پیوست که آن زبدة الاماثل تعهد نموده که اگر از درگاه ارفع فضل وکرم پرگنهٔ پور وبدنور باو مرحمت شود - عوض این دومحل هرسال

तन्ख़ाह और इन्आममें दीजाती हैं; ख़िल्अ़त और हाथी इनायत किये जानेसे इज़्ज़त बख़्शी जाती है. मुनासिब है, कि हमारी बड़ी उम्दह मिहर्बानियोंका शुक्र अदा करके अपने इक़ारके मुवाफ़िक़ माल ज़ामिनी अजमेरके दीवानके पास पेश करे, और हर बरस जिज़्यहका एक लाख रुपया मुक़र्रर कीहुई क़िस्तोंसे सूबेके सर्कारी ख़ज़ानहमें अदा करता रहे; इस मुआमलेमें सख़्त ताकीद जाने; हमारी बुज़ुर्ग ज़बर्दस्त दर्गाहमें ख़ैरख़्वाही और ताबेदारीको हमारी मिहर्बानियोंकी ज़ियादती और अपनी उम्मेदोंकी बिहतरीका सबब समझे. ९ शव्वाल सन् ३४ जुलूस को लिखा गया. [हिज्री ११०१ = ता० ९ शव्वाल वि० १७४७ आषाढ़ शुक्ल ११ = ई० १६९० ता० १८ जुलाई].

मारिफ़त उम्दह वज़ीर, बलन्द ख़ान्दान, ज़ुब्दतुलमुल्क मदारुल्महाम, असदख़ांकी.

असदख़ां
बन्दए बादशाह
आलमगीर
ग़ाज़ी.

مبلغ یک لک روپیه بابت جزیه بچهار قسط داخل خزانهٔ عامرهٔ صوبهٔ اجمیر کند و ما ضامن
شدیم بنابرین از روی قدردانی و بنده نوازی ... بموجب اضافه هزار سوار و عنایت
منصب ... که اصل و اضافه پنجهزاری ذات و پنجهزار سوار هزار سوار دو اسپه سه اسپه
بانعام یافته سربلندی بخشیده و محال مسطور در تنخواه اضافه و انعام مرحمت فرموده
بعنایت خلعت و فیل بین الاقران سرمایهٔ امتیاز عطا فرمودیم باید که شکر و سپاس عواطف و مراحم
فراوان اشرف اعلی بتقدیم رسانیده مطابق تعهد خویش مرضامن ... اجمیر ...
حوالی مبلغ یک لک روپیه جزیه باقساط مقرره بخزانهٔ عامرهٔ صوبهٔ مذکوره واصل میساخته
باشد درین باب قدغن شدید دانسته و رسوخ ارادت و بندگی درگاه عظمت و جلال ثمرهٔ مزید
احسان و افضال و صون و بهبود حال و مآل خویشتن شناسد تحریراً نهم شوال سال سی و چهارم از جلوس
والا نگارش یافت *

بموافقهٔ عمدت و نقابت پناه شرافت و نجابت دستگاه عمدهٔ وزرای رفیع شان
زبدهٔ امرای بلندمکان ناظم مناظم ملک و مال ناهج مناهج دولت و اقبال ...
... جملة الملک مدار المهام ... *

हमको इस वातका पुस्तह पता नहीं मिला- कि वदनौरका पर्गनह कव मेवाड़से निकलकर वादशाही कब्जेमें चला गया, जो महाराणा उदयसिंह ओर प्रतापसिंहके वक्तसे जयमल्ल मेड़तिया ओर उसकी ओलादकी जागीरमें आज तक वहाल है; ओर इस पर्गनेके छूटनेके वाद ठाकुर सांवलदास मेड़तिया वगैरह वदनोरके जागीरदारोंको उसके एवज़ मेवाड़से कोनसा पर्गनह मिला; अलवत्ता लड़ाइयोंके वक्त मेवाड़के कुल जागीरदार पहाड़ोंमें रहते थे. लेकिन् सुलह होनेके वाद फिर अपनी जागीरें पाते रहे. अलवत्ता पट्टेके गांव ज़ुरूर वदलते रहते थे, तो भी वाज़ वड़े वड़े जागीरदारोंके खास ठिकाने कम वदले गये हैं. कई लोगोंकी ज़वानी सुना, कि विजयपुरका पर्गनह वदनोर वालोंकी जागीरमें रहा है, जो कि अव शक्तावतोंकी जागीरमें है.

अव हम वह हाल लिखते हैं, जिससे महाराणा जयसिंह व उनके वलीअ़हद अमरसिंहके वीचमें नाइत्तिफ़ाक़ी हुई-

महाराणा जयसिंहने अमरसिंहका विवाह, ओर शादियोंके सिवाय, जयसलमेरके रावल सवलसिंहकी पोतीके साथ करवाया था. कुंवर अमरसिंह भटियानीपर ज़ियादह मिहर्वान थे; कुंवर कुंवरपदेके महलमें रहते थे, जहां कि अव शंभूनिवास वना हुआ है; ओर उन्होंने भटियानीजीके लिये अपने महलोंके पास ही जुदा महल वनवाया; जहां कि अव रूपनगरकी व महारमहानीकी हवेली है. यह वात महाराणाको नागुवार हुई; क्योंकि क़दीमसे दस्तूर है- कि राजकुमारका ज़नानह भी महाराणाके ज़नानख़ानहमें ही रहता है, जुदा नहीं रह सक्ता. महाराणाने मना किया, लेकिन् कुंवरने कुछ ख़याल नहीं किया. भटियानीजीको शरावका शौक़ था, इससे कुंवर अमरसिंहको भी उसकी चाट लगाई; उस वक्त सीसोदियोंमें शराव पीनेकी क़सम ओर मनाई थी, यहां तक कि एक वात ऐसे मशहूर है जिसको वाज़े लोग कहते हैं- कि यह वात महाराणा राहपकी है, वाज़े इनसे भी पहिलेकी वतलाते हैं, वह इस तरहपर है:-

" किसी गोहिलोत वंशके राजाको सख़्त वीमारी हुई, तव हकीमोंने कहा, कि शराव पीनेसे यह वीमारी दूर हो सक्ती है; महाराजाने साफ़ इन्कार किया. (१) हकीमोंने किसी दवाके शामिल शराव मिलाकर पिलादी. जव महाराजा तन्दुरुस्त हुए, तो तवीवोंने अ़र्ज़ की, कि देखिये, शराव भी क्या उ़म्दह चीज़ है !

---

(१) इस पर्हेज़का यह सवव था, कि कुल राजपूत क़ौमें शुरूसे शराव नहीं पीती थीं, ओर पिछले ज़मानहमें वाम मार्ग फैल जानेसे राजपूतानहके राजपूत लोगोंने इसका पीना शुरू किया, लेकिन् चित्तौड़के राजाओंने वही दस्तूर जारी रक्खा, जो वंश परंपरासे चला आता था.

जिससे आपकी बीमारी जाती रही. महाराजाने हैरतमें आकर कहा- कि मैंने कभी शराब नहीं पी, तुम यह कैसे कहते हो! हकीमोंने अर्ज़ किया, कि हमारा कुसूर मुआफ़ हो, हमने दवाईमें मिलाकर दी थी; तब महाराजाने हकीमोंको तो रुख़्सत किया, और सीसा मंगवाकर आगपर रखवाया; लोगोंने जाना- कि किसी कामके वास्ते रखाया है, जब वह गलगया, तब महाराजाने मुहमें डाल लिया, जिससे उनका देहान्त होगया. इसी वक्से मेवाड़के राजा सीसोदिये कहलाये. सीसा नाम सीसा और व्याकरण की रीतिसे (उद) धातुका अर्थ पीना है, दोनोंके मिलनेसे सीसोद शब्द हुआ."
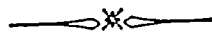
आख़िरकार महाराणा जयसिंह और कुंवरमें नाइत्तिफ़ाक़ी बढ़ी, महाराजकुमार के मुंह तो शराब लग गई, जिसके मुंह यह लग जाती है, उसको इसकी जुदाई जानकी जुदाईसे भी ज़ियादह सख़्त हो जाती है. इन्हीं दिनोंमें महाराणाका जय-समुद्रकी तरफ़ जाना हो गया, और दोनों तरफ़से आपसमें रंज बढ़ता गया. राज-पूतानहमें आम रिवाज है, कि बापके जीते बेटा सिफ़ेद पगड़ी सिरपर नहीं बांधता, इन्हों (कुंवर अमरसिंह) ने आप सिफ़ेद पगड़ी बांधी, और अपने बेटे संग्रामसिंह को भी बंधवाकर महाराणाके पास जयसमुद्र पहुंचे, महाराणाने नाराज़ होकर हुक्म दिया, कि तुम अभी उदयपुर चले जाओ. कुंवर उदयपुर आये, आपसमें विरोधकी आग भड़क ही रही थी, कि ईंधनके समान और एक बात हुई, कि उदय-पुरमें एक कायस्थ कंकजीकी औरतसे महाराणाकी दोस्ती थी; इससे कंकजीका दरजा बढ़ाया गया. कुंवरने शहरमें एक मस्त हाथी छुड़वा दिया, जिसने दो आदमी जानसे मारडाले, और दो चार घर गिरा दिये. यह ख़बर बड़े तूलके साथ कायस्थ कंकजीने जयसमुद्र महाराणाके पास लिख भेजी. महाराणाने राजकुमारको बहुतसी लानत मलामतके साथ लिखा, कि तुम हमारी रअ़य्यतको मारते व तक्लीफ़ देते हो, निकाले जाओगे. राजकुमार आधी रातके वक्त घोड़ेपर सवार होकर कंकजीके मकान पर आये; नीचे खड़े होकर आवाज़ दी, कंकजीने झरोखेसे सलामकरके जवाब दिया. राजकुमारने गुस्सेमें कहा, कि मैं ग़रीब राजपूत हूं, इस शहरमें रहने दोगे, या नहीं? और ख़बर नहीं रक्खोगे तो ठीक नहीं होगा. कंकजीने कहा, कि हमारे मालिक महाराणा जयसिंह मौजूद हैं, हम इन टेढ़ी बातोंसे नहीं डरते. तब वह बोले, कि भला, तुम होश्यार रहना, तुमको तो सज़ा देदूंगा. यह कहकर राजकुमार महलों आये, और कंकजीकी औरतने तुहमत और शिकायत आमेज़ एक अर्ज़ी

महाराणाके पास लिख भेजी. वे उस अर्ज़ीको देखते ही आग बबूला होगये, और फ़ौज लेकर उदयपुरकी तरफ़ रवानह हुए. यह ख़बर पाकर राजकुमार भाग निकले, महाराणाने पीछा किया, वे क़िले चित्तोड़पर जा चढ़े. उनके साथ सलूंबर व पारसोलीका राव केसरीसिंह चहुवान, महाराज सूरतसिंह, बान्सीका रावत् गंगदास शक्तावत, कोठारियेका रावत् उदयभान चहुवान, देलवाड़ेका राज सज्जा झाला, बाठर्डेका रावत् महासिंह सारंगदेवोत और रावत् अनोपसिंह वग़ैरह बहुतसे थे. जब महाराणा चित्तोड़की तलहटीमें पहुंचे, तो राजकुमार क़िले चित्तौड़से सूर्य पोलके रास्ते निकल भागे, उस वक़्त सूर्यपोलके खुरेसे उतरते वक़्त पत्थरकी चिकनावटके सबब महाराज सूरतसिंह घोड़ेसे गिरा, और जबड़ी टूट जानेसे बेहोश होगया; तब चहुवान राव केसरीसिंह पट्टी बांधकर उस तक्लीफ़के वक़्में भी उसको राजकुमारके साथ लेगया. राजकुमार बूंदी पहुंचे, और महाराणा उदयपुर वापस आये; राजकुमारके बूंदी जानेका यह सबब था, कि बूंदीके राव राजा शत्रुसालकी छोटी बेटी गंगाकुंवरीका विवाह शत्रुसालके बेटे राव राजा भावसिंहने महाराणा जयसिंहसे किया था, और महाराणी हाड़ी गंगाकुंवरीके गर्भसे राजकुमार अमरसिंह जन्मे थे; इसीसे उक्त राजकुमार अपनी ननिहाल (बूंदी) मददके लिये गये, लेकिन् वहांके राव राजा अनिरुद्धसिंह तो बादशाही नौकरीमें थे; और उनके पुत्र बुद्धसिंह बालक थे, तो भी रावराजाकी रानी (बुद्धसिंहकी मा नाथावत) ने एक लाख रुपया और हज़ार सवार मददको दिये. राजकुमार अमरसिंहने बूंदीके नागर रघुरामसे पचास हज़ार रुपये उधार लिये. उनके पास सब मिलकर बीस हज़ार सवार होगये थे. बूंदीसे कूच करके मेवाड़में अमल जमाते हुए उदयपुरसे पूर्वकी तरफ़ आठ कोसके फ़ासिलेपर नाहरमगरेके क़रीब कर्णपुर गांवमें आठहरे.

यह ख़बर सुनकर महाराणाको बड़ी फ़िक्र हुई; क्योंकि मेवाड़के अक्सर सर्दार राजकुमारसे जामिले थे, और फ़ौज भी मुक़ाबला करनेके लायक़ न रही सात घड़ी रात गये खाना खाकर महाराणा उदयपुरसे भागे, और पहाड़ोंमें कठाड़ गांव पहुंचे. महाराणाके आनेकी ख़बर सुनकर वहांका जागीरदार ग़रीबदास मांजावत गांव छोड़ भागा, दूसरे दिन महाराणा कुंभलगढ़के पास कैलवाड़ेमें पहुंचे; वहांका क़िलेदार साह रूपचन्द देपुरा ज़रूरतके मुवाफ़िक़ सब सामान लेकर महाराणासे आमिला, फिर घाणेरावमें पहुंचे, वहांका जागीरदार ठाकुर गोपीनाथ भी राजकुमार के पास जानेको तय्यार हो रहा था; उसकी मा महाराणा उदयसिंहके बेटे शक्तिसिंहकी औलादमेंसे थी, शक्तिसिंहका बेटा बल्लू, जो महाराणा अमरसिंहके साम्हने

ऊंटालेके क़िलेके दर्वाज़ेपर मारा गया था; उसके पुत्र कम्माके बेटे सुजानसिंह शक्तावतकी बेटी थी. इस संबन्धसे महाराणा उसके पास चलेगये, और राजकुमारका व अपना सब हाल कह सुनाया. उन्होंने गोपीनाथको भी भीतर बुलाया; उसने पहिले अपने अरमान और महाराणाकी तरफ़से बेफ़ायदह नाराज़गी रहनेके झगड़े कहे, लेकिन् उसकी माने समझाकर कहा, कि अपने मालिकसे जुदा होना दोनों लोकसे अलग होनेके समान है, और ख़ैरख़्वाह नौकरोंका मालिकके कामपर मर मिटना भी जीते रहनेके बराबर है. तुम्हारे बुज़ुर्गोंने मालिककी कभी बदख़्वाही नहीं की, अगर महाराणाका बड़ा प्रताप है, तो राजकुमारकी बग़ावत जल्दी दूर होगी, और तुम्हारी बड़ी इज़्ज़त बढ़ेगी; और जो मारे भी गये, तो सामधर्मियों की गिन्तीमें रहोगे. यह दुन्या नापायदार है, इसमें पायदार नाम रखना चाहिये.

इस तरह माताकी नसीहत सुनकर महाराणासे अर्ज़ की, कि अब हुज़ूर बेफ़िक्र रहें, और नौकरोंकी नौकरी देखें; उस वक़्त किसी शाइरने कहा है– "राण जतन कर राखिया गाढै गोपीनाथ". गोपीनाथने बाप बेटोंकी लड़ाईका हाल और महाराणाकी मददको आनेके लिये महाराजा अजीतसिंह और राठौड़ दुर्गदासको लिख भेजा; और महाराणाने साह रूपचन्दको कुंभलगढ़से ख़ज़ानह लानेको वापस भेजा, रूपचन्द ख़ज़ानह लेकर क़िलेसे निकला ही था, कि राजकुमारकी फ़ौज आपहुंची, तब उसने यह तद्बीर की, कि ख़ज़ानहकी देगें तो आस पास छिपा दीं, और लकड़ियां इकट्ठी कराकर जानवरों की हड्डियां जलाईं, आप अपने तमाम आदमियों समेत भेष बदलकर एक तरफ़ जा बैठा, राजकुमारकी फ़ौज चितासी जलती देखकर मुर्देको जलाना ख़याल करने से किनारा करगई; रूपचन्द ख़ज़ानह लेकर घाणेराव आया; महाराणाने उसकी बड़ी ख़ातिर की.

महाराणाके साथ उदयपुरसे ही उनका मामा राव बैरीशाल पंवार बीझोलियां वाला और बीरू महासहाणी मौजूद थे; पर रास्तह भूलकर केवड़ेकी नालमें होते हुए छप्पन बागड़की तरफ़ जा निकले, और साह रूपचन्दके बेटे सिंहाने डूंगरपुरकी राह ली. महाराणाको यह भी शक था, कि राजकुमारसे सिंहा जा मिला; इस सबबसे सदा कोतवालको उसके पीछे कुछ फ़ौज देकर भेज दिया, और यह भी कह दिया, कि अगर सिंहा इधर आवे, तो ले आना, और राज कुमारके पास जानेका इरादह रखता हो, तो मार डालना. सदा कोतवालने डूंगरपुरके पास ही सिंहाको जा घेरा, वह साथ हो लिया, और राव बैरीशाल पंवार, बीरू महासहाणी, सिंहा और सदा कोतवाल चारों घाणेरावमें

महाराणाके पास हाज़िर हुए. महाराणाने फ़र्माया, कि देपुरा महाजन क़दीमी ख़ैरख़्वाह हैं, इनके बड़े हमेशह ख़ैरख़्वाह रहे हैं. इतने ही में दुर्गदास कुल मारवाड़के राठौड़ोंको लेकर हाज़िर हुआ, जिसके साथ तीस हज़ार सवार थे. भोमटके भोमिया, मेरवाड़ाके मेर, और मेवाड़की लड़ाकू क़ौमोंके हज़ारों लोग घाणेरावमें इकट्ठे होगये. लिखाहै- कि उस वक़ महाराणाके पास पचास हज़ार आदमियोंकी भीड़भाड़ थी, और सवार, पैदल, सबको मदद ख़र्चमें तेतीस हज़ार रुपये रोज़ दिये जाते थे.

आठ दिन बाद महाराणाने नाडोलके जंगलमें फ़ौजकी हाज़िरी ली, और देवसूरी घाटेके नीचे आकर मक़ाम किया. मेवाड़के बड़े उमरावोंमेंसे बीझोलियांका राव वैरीशाल पंवार, चावंडका रावत् कांधल रत्नसिंहोत कृष्णावत चूंडावत, घाणेरावका ठाकुर गोपीनाथ मेड़तिया और डोडिया ठाकुर हटीसिंह (१) के अलावह दूसरे या तीसरे दरजेके राजपूत जागीरदार दस हज़ार सवार थे.

राजकुमार अमरसिंहने अपनी बीस हज़ार हाड़ा और सीसोदियोंकी फ़ौज समेत उदयपुरमें जा क़ब्ज़ा किया, गद्दीपर बैठनेके बाद सब सर्दारोंने नज़्रें दीं; लेकिन् घाणेरावमें महाराणाके पास फ़ौज इकट्ठी होना सुनकर राजकुमार भी अपनी जमइयत समेत उदयपुरसे चले, और राजनगर होते हुए जीलवाड़े पहुंचे. उस वक़ महाराणाके साथी सर्दारोंमेंसे राठौड़ ठाकुर गोपीनाथ व डोडिया ठाकुर हटीसिंह वगैरहने अर्ज़की, कि अगर हुक्म हो, तो एक बार फिर राजकुमारको समझावें; क्योंकि आपसमें कट मरनेसे मेवाड़ और मारवाड़की बहादुरीमें फ़र्क़ आजायगा, जिससे मुसल्मानोंको फ़ायदह पहुंचेगा. दूसरे- अपने पुत्रको आप मारडालें, तो भी अफ़्सोस आपहीको होगा; तीसरे- हम राजपूतोंका आपसमें मारा जाना एक हाथसे दूसरे हाथको काटना है. आख़िर इस तरहकी बातें सुनकर महाराणाने फ़र्माया- कि जो तुम लोगोंकी सलाह हो, वह मुझे भी मंज़ूर है. तब इन्हीं सब सलाहकारोंने जैसी, कि बातें महाराणासे अर्ज़की थीं, वही सब राजकुमारको जीलवाड़ेमें लिख भेजीं, राजकुमारके सर्दारोंने भी उसी लिखा-वटके मुवाफ़िक़ सलाहदी, जैसी कि सलाहकारोंने महाराणाको दी थी. राजकुमारने भी इस सुलहको मंज़ूर किया, और यह इक़ार हुआ, कि राजकुमार तीन लाख रुपयेकी जागीर लेकर राजनगरमें रहें, इनके पट्टेमें रियासती दस्तन्दाज़ी न हो; और इसी तरह राजकुमार रियासती, माली व मुल्की काममें दख़्ल न दें.

---

(१) यह कुंवारियाका जागीरदार था, इसी ख़ान्दानमें अब सर्दारगढ़के ठाकुर मनोहरसिंह

ठाकुर गोपीनाथ और डोडिया ठाकुर हटीसिंह, राव केसरीसिंह वग़ैरह तरफ़ैनके सर्दारोंने राजकुमारको महाराणा जयसिंहके पास लाकर हाज़िर किया, राजकुमारने कुसूरकी मुआफ़ी चाही, और नज़्र दी. महाराणाने उनका कुसूर मुआफ़ किया, फिर कुंवरने अपने कुल सर्दारोंकी नज़्रें करवाईं; उनका कुसूर भी मुआफ़ किया गया. राजकुमार राजनगरमें रहे, और महाराणा जयसिंह उदयपुर पधारे; लेकिन् दोनोंके दिलोंमें गुबार भरा रहा. महाराणाके पास ठाकुर गोपीनाथ मुसाहिब, दामोदरदास भटनागर कायस्थ प्रधान, और राजकुमारके पास राजनगरमें चहुवान राव केसरीसिंह मुसाहिब और गोवर्धनदास भटनागर कायस्थ सहीहके कामवाला (१) प्रधान था.

महाराणाके पास चावंडका चूंडावत कृष्णावत रावत् कांधल भी रहता था, जिसके दादा रघुनाथसिंहसे महाराणा राजसिंहने सलूंबर छीनकर राव केसरीसिंह चहुवानको जागीरमें दे दिया था; इसी सबबसे रावत् रघुनाथसिंह उदयपुरकी हाज़िरी छोड़कर लाहौरमें बादशाह आलमगीरके पास पहुंचा, और उसको बादशाहने मन्सब दिया, जिसका हाल महाराणा राजसिंहके बयानमें पूरा पूरा लिखा गया है.

रावत् रघुनाथसिंहका बेटा रत्नसिंह, जो अपने बापके मरने बाद बादशाही नौकरी छोड़कर वापस चलाआया, उसे महाराणा राजसिंहने सलूंबरके एवज़ चावंडका पट्टा दिया, जो उदयपुरसे दक्षिण तरफ़ जयसमुद्रके पास है. रावत् रत्नसिंहने महाराणा राजसिंह व बादशाह आलमगीरकी लड़ाइयोंमें बड़ी बड़ी कारगुज़ारी दिखलाई थी; लेकिन् सलूंबर उसको नहीं मिला, और उसके देहान्त होनेके बाद रावत् कांधलने बाप बेटोंकी लड़ाईके वक्त महाराणा जयसिंहकी खैरख्वाही की, और ठाकुर गोपीनाथ व राव वैरीशाल कांधलके मददगार थे; इस मौक़ेपर महाराणासे अर्ज़ हुई- कि राव केसरीसिंह चहुवानको मारडाला जावे, तो राजकुमार की ताक़त टूटे. तब कांधलने कहा, कि मेरी क़दीमी जागीर सलूंबर मुझे मिले, तो मैं उसको मार सक्ता हूं. महाराणाने सलूंबर देनेका इक़ार किया, और खास रुक्क़ा लिखकर केसरीसिंहको राजनगरसे उदयपुर बुलाया. केसरीसिंह राजकुमार से रुख़्सत लेकर बे खटके चला आया, दो एक दिन तो गोपीनाथ, कांधल वग़ैरह के साथ महाराणासे सलाह मश्वरा करता रहा, एक दिन महाराणाने फ़र्माया, कि बादशाह आलमगीरने पेश्तर जिज़्यह मुआफ़ करके पुर, मांडल, बदनौरके

(१) सहीहके काम वाला उदयपुरकी रियासतमें, वह कहाता है, जो पट्टे पर्वाने वग़ैरह खास काग़ज़ात महाराणाकी तरफ़के लिखता है; और जिनकी पेशानीपर महाराणा खास दस्तख़तोंसे "सही [illegible]" के दो अक्षर लिखते हैं.

पर्गने भी देदेनेका इक़ार किया था, लेकिन् पर्गने नहीं दिये; और मुआफ़ कीहुई हज़ार सवारकी चाकरी भी लेना चाहा, तब लाचार पर्गने लेनेके वास्ते जिज़्यह कुबूल किया. अब इस बारेमें क्या करना चाहिये ? इस बातको रावत् कांधल, केसरीसिंह और गोपीनाथ विचारकर अर्ज़ करें.

तब उन दोनोंने केसरीसिंहसे कहा, कि थूरके तालावपर बड़ी बहारकी जगह है, कल दिनभर वहीं ठहरकर सलाह करेंगे; इस बात चीतके लिये कांधल और केसरीसिंह तो वहां पहुंचे, पर गोपीनाथ नहीं गया. कांधलने केसरीसिंहसे कहा, कि आओ ! हम आपसमें सलाह करें, थोड़ी देरमें गोपीनाथ भी आजायगा. दोनों सर्दारोंने राजपूतोंको दूर करदिया, केसरीसिंह अफ़ीम खाता था, इससे बाज़ वक़्त पीनक और बाज़ वक़्त होश्यारीमें बातें करने लगा, उस वक़्त कांधलने कमरसे कटार निकालकर केसरीसिंहकी छातीमें मारा, और कहा, कि महाराणा तुमसे नाराज़ हैं ! केसरीसिंहने उसी जांकन्दनीकी हालतमें एक हाथसे कांधलकी कमर पकड़कर दूसरेसे कटार निकाला, और अपने क़ातिलकी छातीमें मारकर कहा, कि महाराणा खुश आपसे भी नहीं हैं ! आख़िरकार दोनों सर्दार जहानको छोड़गये. दोनों तरफ़के राजपूत लड़नेको तय्यार हुए, लेकिन् महाराणाके आदमी जा पहुंचे, और हर एकके मालिककी लाश तरफ़ैनके सुपुर्द कीगई.

उस वक़्त किसी चारण शाइरने मारवाड़ी भाषामें, ये दोहे कहे थेः–

दोहा.

पंथी जाय संदेसड़ा राण अगा कहिया ।
चूंडो ने चंदवारियो रण भेला रहिया ॥ १ ॥
केहर कांधल मारवे रही सदा लग रीत ।
कांधल केहर मारियो रीत किना विपरीत ॥ २ ॥
कांधल केहर मारने दियो मुछारां हथ्थ ।
चूंडा चहुवाणा चली सतियां हेकण सथ्थ ॥ ३ ॥

१ – दोहेमें शाइरीका तर्ज़ है, कि किसी मुसाफ़िरने महाराणासे जाकर कहा, कि चूंडावत और चन्दवारिया चहुवान, दोनों एक जगह मारे गये.

२ – केहर नाम शेरका और कांधल नाम बैलका है, जो इन दोनों मर्दोंके नाम थे; एक तर्ज़से शाइरका क़ौल है, जिससे राव केसरीसिंहकी बहादुरी ज़ियादह

और कांधलकी कम निकलती है. इससे इस दोहेका यह मत्लब है– कि शेरका बैलको मारना क़दीमी रिवाज है, लेकिन् बैलने जो शेरको मारा, यह बात क़दीमके बर्ख़िलाफ़ हुई.

३– कांधलने केसरीसिंहको मारकर मूछोंपर हाथ तो पेश्तर फेरा, लेकिन् सती होनेको दोनोंकी औरतें साथ गईं.

इन दोनों सर्दारोंके मारे जाने बाद रावत् कांधल चूंडावतके बेटे केसरीसिंहको बुलाकर महाराणाने अपने क़ौलके मुवाफ़िक़ सलूंबरका पट्टा दिया, और चहुवान राव केसरीसिंहके बेटे नाहरसिंहके क़ब्ज़ेमें पारसोली रही, जो अबतक उसकी औलाद की जागीरमें चली आती है. यह ख़बर राजनगरमें राजकुमारको मिली, केसरीसिंहका मारा जाना निहायत नागुवार गुज़रा, लेकिन् लाचारीके सबब सब्र करना पड़ा, क्योंकि उनकी फ़ौजी ताक़त कम होगई थी; बूंदीकी फ़ौज तो बूंदी गई, और मेवाड़के सर्दारोंने महाराणासे जाकर कुसूरकी मुआफ़ी मांग ली थी. हमको दो मुसव्वदे उसी ज़मानेके लिखेहुए, बादशाह आलमगीरके वज़ीर असदख़ांके नाम, राजकुमार अमरसिंहकी तरफ़से मिले; जिनका तर्जमा नीचे लिखते हैं:–

पहिला ख़त.

सर्दारी और वज़ीरीकी मस्नद आपकी मुबारक ज़ातसे हमेशह रौनक़दार रहे– मुलाक़ातका शौक़ ज़ाहिर करनेके बाद, जो बड़ी खुशियोंका सबब है, आपकी पाक तबीअ़तपर ज़ाहिर किया जाता है, कि इन दिनोंमें बहादुरीकी निशानी कुशलसिंह सीसोदिया कुछ कामोंके वास्ते आपकी ख़िद्मतमें भेजा गया. आपकी बड़ी नेक-नियतीसे यह उम्मेद है– कि जो कुछ ज़िक्र कियाहुआ आदमी मेरे कामोंके वास्ते ज़बानी अ़र्ज़ करे, उसके पूरा होनेमें आप पूरी तवज्जुह फ़र्मावें; और जो काम व मुआ़मला मेरे तअ़ल्लुक़का हो, बिला शुब्हा लिख भेजें. खुदाकी मिहर्बानीसे अच्छी तरहपर तै किया जावेगा; और सिवाय शौक़के क्या लिखा जावे. पिछले काम अच्छी तरह तमाम हों.

दूसरा ख़त.

सर्दारी और बलन्द दरजेके लाइक़, हमेशह बुज़ुर्ग मिहर्बानियोंके शामिल रहें; मुलाक़ातका शौक़ ज़ाहिर करनेके बाद बुज़ुर्ग तबीअ़तपर मालूम हो, कि बहादुर

ज़ात कुशलसिंह सीसोदियाको हुजूर शहनशाहकी दर्गाह और नव्वाव कुदसियह वेगम की ड्योढ़ीकी तरफ़ वाज़े कामोंकी अर्ज़ करनेको भेजा गया है, यकीन है, कि ज़िक्र किया हुआ वहादुर कुल अहवालको मुफ़स्सल ज़वानी वयान करेगा, आपकी वुज़ुर्ग दोस्ती और नेकदिलीसे उम्मेद है, कि उन हक़ीक़तोंको, जो लिखा हुआ आदमी आपकी ख़िद्मतमें ज़ाहिर करे, जनाव नव्वाव कुदसियह वेगमकी वुज़ुर्ग ख़िद्मतमें अर्ज़ करदें, और मेरी अर्ज़ीको पाक नज़रसे गुज़ारें; हर तरहपर मेरे काममें ऐसी कोशिश करें, कि नव्वाव कुदसियह वेगम पूरी तवज्जुह फ़र्मावें. जो काम कि यहांके तअल्लुक़के हों, वह लिख भेजें, ज़ियादह शौक़के सिवा क्या लिखा जावे.

इन दोनों काग़ज़ोंका मत्लव व कुशलसिंहके भेजनेका सवव मालूम नहीं है, लेकिन् महाराणा और राजकुमारके आपसकी नाइत्तिफ़ाक़ीके सिवाय और कोई अम्र नहीं जाना जाता, जो राजकुमार और वादशाही दर्वारसे सम्वन्ध रखता हो; कुशलसिंह सीसोदिया, जिसको राजकुमारने वज़ीरि आज़मकी मारिफ़त वादशाही दर्वारमें भेजा, उसकी यह कैफ़ियत है, कि महाराणा उदयसिंहका छोटा वेटा शक्तिसिंह, उसका अचलदास, उसका नरहरदास, उसका विजयसिंह और इसका कुशलसिंह शक्तावत था, जिसकी औलादमें अव विजयपुरका ठाकुर है; इसी कुशलसिंहको राजकुमारने शाही दर्वारमें भेजा था. ऐसा मालूम होता है, कि कुंवरके लिखनेपर वादशाही मुलाज़िमोंने कुछ ध्यान नहीं दिया, और वह मौक़ा भी ऐसा ही था; अगर दक्षिणी लड़ाइयोंमें वादशाह न फंसा होता, तो ज़रूर इस आपसकी फूटसे वह अपना मत्लव निकालता.

इन दोनों वाप वेटोंकी लड़ाईका ख़ातिमह विक्रमी १७४९ [हिज्री ११०३ = ई० १६९२] में हुआ, और उसी वक़ से राजकुमार राजनगर, और महाराणा उदयपुरमें रहते थे. महाराणा जयसिंहका भाई भीमसिंह अजमेरमें वादशाह के पास चलागया था, जहां उसे राजाका ख़िताव मिला- यह सब हाल ऊपर लिख आये हैं. उसने वादशाहकी तरफ़से लड़ाइयोंमें बड़ी बड़ी वहादुरी दिखलाई, और इज़्ज़त भी वहुत पाई, लेकिन् विक्रमी १७५२ श्रावण कृष्ण १४ [हिज्री ११०६ ता० २८ ज़िल्हिज = ई० १६९५ ता० ९ ऑगस्ट] को उसका देहान्त होगया. इस भीमसिंहके वारह वेटे थे, १ अजवसिंह, २ सूरजमल्ल, ३ सौभाग्यसिंह, ४ ग्युमानसिंह, ५ पृथ्वीसिंह, ६ अर्जुनसिंह, ७ विजयसिंह, ८ ज़ोरावरसिंह, ९ कीर्तिसिंह.

१० रत्नसिंह, ११ कृष्णसिंह, और १२ भगवानसिंह. बादशाहने बनेड़ेका पर्गनह कई दूसरे पर्गनों समेत भीमसिंहको जागीरमें दिया था; दूसरे पर्गने तो और मुल्कों में से मिले थे, सो इनकी औलादके क़ब्ज़ेमें नहीं रहे; लेकिन् मेवाड़के मातहत बनेड़ा अबतक उनकी औलादकी जागीरमें है. भीमसिंहके मरने बाद बड़ा बेटा अजबसिंह बापकी गादीपर बैठा.

महाराणा जयसिंहने अपनी राजकुमारी उम्मेदकुंवर बाईकी शादी बूंदीके राव राजा बुद्धसिंहसे करनेके लिये पुरोहित संतोषराम व श्रीकृष्ण ज्योतिषीको भेजा; इन दोनोंने बूंदी पहुंचकर राव राजा बुद्धसिंहने नारियल झेलाया. फिर वहांसे कोटाके [illegible]व रामसिंहके पास गये, और उनके कुंवर भीमसिंह को महा[illegible] छोटी बाईकी सगाईका नारियल दिया. इसके बाद दोनों उदयपुर [illegible] लौटे, और बूंदी व कोटासे बरात सजकर आई. विक्रमी १७५२ फाल्गुण कृष्ण ९ [हिज्री ११०७ ता० २३ रजब = ई० १६९६ ता० २६ फ़ेब्रुअरी] को दोनों राजाओंका विवाह बड़ी धूम धामसे हुआ. इसके बाद राजकुमार और महाराणा जयसिंहमें दोबारह नाइत्तिफ़ाक़ी हुई; इस लिये महाराजा अजीतसिंह को महाराणाने बुलाया; वे उस वक्त कोटकोलरकी तरफ़ चढ़ाईमें थे. जोधपुरकी तवारीख़में लिखा है– कि बादशाही मुलाज़िम लश्करीख़ांसे अजीतसिंहका मुक़ाबला हुआ, ८० आदमी ख़ान्के काम आये, और वह भाग गया. तब अजीतसिंह उदयपुर आये.

विक्रमी १७५३ आषाढ़ कृष्ण ८ [हिज्री ११०७ ता० २२ ज़िल्क़ाद = ई० १६९६ ता० २२ जून] को महाराणा जयसिंहने अपने छोटे भाई, गजसिंहकी बेटीकी शादी महाराजा अजीतसिंहके साथ करदी; और ९ हाथी, १५० घोड़े वगैरह बहुतसा दहेज़ दिया. इसके बाद आपसकी नाइत्तिफ़ाक़ी मिटाकर महाराजा मारवाड़को चले गये; और राजकुमार राजनगर व महाराणा उदयपुरमें रहे. इसके सिवा इन महाराणाका लिखने लायक़ तारीख़ी हाल नहीं मिला.

इनका छोटा क़द, गोरा रंग, बड़ी आंखें, और चौड़ी पेशानी थी. जवानीमें इन्होंने महाराणा राजसिंहके साम्हने तो बड़ी बड़ी बीरताके काम किये थे, लेकिन् राज्य मिलने बाद पूरे अय्याश होगये; और राजकुमारके बखेड़ेके सबब मुल्की इन्तिज़ाम भी ढीला पड़गया था; दोनों तरफ़के आदमी रअ्य्यतको लूटते थे. इस वक्त आलमगीर बादशाह दक्षिणी लड़ाईयोंमें फंसा हुआ था, वर्नह मेवाड़की हालत और भी बिगड़ती.

इन महाराणाके बड़े राजकुमार अमरसिंह, बूंदीके हाड़ा राव शत्रुसालके दोहिते; दूसरे प्रतापसिंह, जिनकी औलाद बावलासके जागीरदार हैं; तीसरे उम्मेद-सिंह, जिनकी सन्तानमें कारोईके मालिक हैं; चौथे तख़्तसिंह; और दो बेटियां थीं– अनूपकुंवर, दूसरी कृष्णकुंवर; और एक ख़वासके बेटे नारायणदास, व दो बेटियां सूरजकुंवर और उम्मेदकुंवर नामकी थीं.

महाराणा जयसिंहका जन्म विक्रमी १७१० पौष कृष्ण ११ [हिज्री १०६४ ता० २५ मुहर्रम = ई० १६५३ ता० १६ डिसेम्बर] को, और देहान्त विक्रमी १७५५ आश्विन कृष्ण १४ [हिज्री १११० ता० २८ रबीउल् अव्वल = ई० १६९८ ता० ५ ऑक्टोबर] को हुआ.

बादशाह आलमगीरकी मृत्यु तो महाराणा २– अमरसिंहके समयमें हुई, परन्तु उसके राज्य करनेका अहद बहुतसा इन महाराणाके अख़ीर समय तक गुज़र चुका; इसलिये उसका हाल इसी जगह लिखा जाता है–

यह बादशाह हिज्री १०२७ ता० १५ ज़िल्क़ाद [विक्रमी १६७५ मार्गशीर्ष कृष्ण १ = ई० १६१८ ता० ४ नोवेम्बर] रविवार को हमीदहबानू मुम्ताज़ महल बेगमके पेटसे पैदा हुआ, इस बेगमकी चौदह औलादमेंसे वह छठा था, इसकी शाहज़ादगीका हाल, तो बादशाह शाहजहांकी तवारीख़में लिखा गया है, अब दाराशिकोहपर समूनगरकी लड़ाईमें फ़तह पाकर आगरेमें पहुंचनेसे पिछला हाल बयान किया जाता है–

जब जहांआरा बेगमने आगरा क़िलेके बाहर आकर औरंगज़ेब और मुरादको समझाया, और कुछ असर न हुआ; शाहजहां भी औरंगज़ेबको बुलाता रहा, लेकिन् वह मारडालनेके ख़ौफ़से भीतर नहीं गया, और अपने बेटे मुहम्मद सुल्तानको भेजकर हिज्री १०६८ ता० ११ रमज़ान [विक्रमी १७१५ ज्येष्ठ शुक्ल १३ = ई० १६५८ ता० १४ जून] को शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया. और ता० १७ रमज़ान [विक्रमी आशाढ़ कृष्ण ३ = ई० ता० २० जून] को क़िलेमें भी अपना बन्दोबस्त करके बादशाह शाहजहां को नज़र क़ैदी बनाया. उस वक़्त शाहजहांने अपने पोते मुहम्मद सुल्तानको कहलाया, कि मैं कुरआनकी क़सम खाकर कहता हूं, कि अगर तू ईमान्दारीसे मेरी फ़र्मांबर्दारी करे, तो मैं तुझको हिन्दुस्तानका बादशाह बनादूं, लेकिन् उसने इस बातको कुबूल न किया.

मिस्टर बर्नियर फ़रांसीसीकी राय है, कि वह ऐसा करता, तो ज़ुरूर हिन्दुस्तानका बादशाह होजाता, क्योंकि शाहजहांसे कुल शाही मुलाज़िम मुहब्बत रखते थे, औरंगज़ेबको छोड़कर शाहजहांके शरीक होजाते, लेकिन् हमारी राय बर्नियरके बर्ख़िलाफ़ है, अव्वल तो औरंगज़ेब फ़त्हयाब, और दारा ख़राब होगया था; जिससे औरंगज़ेबके दबाव व ख़ौफ़से कोई मुलाज़िम शाहजहांका साथ न देता; अगर साथ भी देता, और औरंगज़ेब व मुराद बर्बाद होते, तो भी शाहजहांकी मुहब्बत दारापर ज़ियादह थी; इसके सिवाय उसकी मददगार जहांआरा थी, कि जिसने बादशाहको मोमकी पुतली बना रक्खा था; कभी दाराशिकोहके बर्ख़िलाफ़ मुहम्मद सुल्तानको वलीअ़हद न होने देती; मुहम्मद सुल्तान ज़लील होकर माराजाता, या क़ैद होता.

हिज्री ता० २२ रमज़ान [वि० आषाढ़ कृष्ण ८ = ई० ता० २५ जून] को शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तान और फ़ाज़िलख़ां ख़ानसामांको आगरे में शाहजहांकी निगरानीपर छोड़कर औरंगज़ेबने दाराशिकोहका पीछा किया, और अपने भाई मुरादको ज़ाहिर तौरपर बादशाह कहकर छब्बीस लाख रुपये, २३० घोड़े मुबारकबादीके साथ नज़्र किये. हि० ता० आख़िर रमज़ान [वि० आषाढ़ शुक्ल १ = ई० ता० ३ जुलाई] को महाराणा राजसिंहके कुंवर सुल्तानसिंह व भाई अरिसिंह, इस फ़त्हकी मुबारकबाद देनेको सलीमपुर मक़ामपर पहुंचे, जिनको उ़म्दह ख़िल्अ़त, मोतियोंकी कंठी, सर्पेच और जड़ाऊ छोगा इनायत किया; और महाराणा राजसिंहके लिये बेश क़ीमत सर्पेच दिया.

हिज्री ता० ४ शव्वाल [वि० आषाढ़ शुक्ल ५ = ई० ता० ७ जुलाई] को मक़ाम मथुरामें औरंगज़ेबने अपने भाई शाहज़ादह मुरादको अपने डेरेमें

बुलाकर शराब पिलाने बाद गिरिफ्तार करलिया; और उसके साथियोंको धमकी, इन्आम व इक्रामसे ताबेदार बनाया, और मुरादको हाथीपर डालकर सलीमगढ़में भेजदिया. आंबेरका मिर्ज़ा राजा जयसिंह अव्वल कछवाहा और दिलेरखां भी शाहज़ादह सुलैमां शिकोहसे अलहदह होकर औरंगज़ेबसे आमिले. बर्नियर लिखता है, कि "औरंगज़ेबने राजा जयसिंहको बड़ी खुशामदसे राज़ी किया, और उसको बाबाजी कहकर पुकारने लगा".

हिज्री ता० १९ शव्वाल [वि० श्रावण कृष्ण ५ = ई० ता० २० जुलाई] को औरंगज़ेब दिल्लीके बाहर शालामार बाग़में पहुंचा, और दाराशिकोह मए दस हज़ार सवारोंके लाहौरकी तरफ़ चला गया; औरंगज़ेबने पीछा किया, दाराशिकोह लाहौरमें भी न ठहरकर ठठ्ठेहकी तरफ़ रवानह हुआ; औरंगज़ेबने उसके पीछे सफ़शिकनखां और उदयभान राठौड़ वगैरहको भेजा. दाराशिकोह भक्खरसे सक्खर होकर ठठ्ठे पहुंचा, पर वहां भी न रहसका. हिज्री १०६९ ता० २६ सफ़र [वि० १७१५ मार्गशीर्ष कृष्ण १२ = ई० १६५८ ता० २२ नोवेम्बर] को गुजरातकी तरफ़ रवानह हुआ. वहांसे कच्छके इलाकेमें गया, जहांके राजाने अपनी बेटी सिपिहरशिकोहको ब्याहदी; उसकी मददसे दारा अहमदाबाद पहुंचा, जहांके हाकिम शहबाज़खांने दस कोस तक पेश्वाई करके शहरकी हुकूमत, और दस लाख रुपया नक़्द पेश किया. इस मक़ामपर दाराशिकोहके पास बाईस हज़ार सवार और कुछ तोपखानह एकट्ठा होगया था.

औरंगज़ेबने ठठ्ठेसे अपने सर्दारोंको पीछा बुला लिया, और आप लाहौरसे दिल्लीकी तरफ़ रवानह हुआ; क्योंकि उसको बंगालेकी तरफ़से शुजाअ्के आनेका खटका था. लाहौरके रास्तेमें जिन सर्दारोंको इन्आम और मन्सब दिये, उनकी फ़िहरिस्त नीचे लिखी जाती है :–

१ – जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंहको, (जिसे राजा जयसिंह आंबेरवालेने तसल्ली देकर बुला लिया था), १ हाथी, १ हथनी मए सामानके, और जड़ाऊ तलवार, मोतियोंकी कंठी, जड़ाऊ जम्धर और दो लाख पचास हज़ारकी जागीर दी.

२ – महेशदास राठौड़को (जिसकी औलादमें रतलामके राजा हैं) १ घोड़ा.

३ – बीकानेरके राव कर्णसिंहके बेटे केसरीसिंहको, मीनाकारीके साज़की तलवार.

४ – शुभकरण बुंदेलेको हाथी.

५ – राजा टोडरमल्लको खिल्अत.

६ – भगवन्तसिंह हाड़ा, बूंदीके राव शत्रुशालके बेटेको ढाई हज़ारी ज़ात मन्सब.

७- राठौड़ रामसिंह रोटलाके बेटे शेरसिंहको एक हज़ारी ज़ात, हज़ार सवारका मन्सब.

८- राजा शिवराम गौड़के बेटे सूरजमल्लको सात सौ ज़ात सात सौ सवारकी तरक़ीसे एक हज़ारी ज़ात और आठ सौ सवारका मन्सब दिया.

हिज्री ता० १० ज़िल्हिज [वि० १७१६ भाद्रपद शुक्ल १२ = ई० १६५९ ता० २९ ऑगस्ट] को ईदके जश्नपर बहुतसे उमराव सर्दारोंको ख़िल्अ़त और इन्आ़म दिये.

९- महाराणा राजसिंहको एक हज़ारी ज़ात, हज़ार सवार और दो अस्पह सिह अस्पहकी तरक़ीसे छः हज़ारी ज़ात, छः हज़ार सवार, और एक हज़ार सवार दो अस्पह सिह अस्पहका मन्सब देकर पांच लाख रुपयेकी जागीर इन्आ़ममें लिख भेजी.

१०- आंबेरवाले राजा जयसिंहके कुंवर रामसिंहको जड़ाऊ धुकधुकी.

११- जम्बूके राजा सारंगधरको उसके पहाड़ी मुल्ककी ज़मींदारी, झन्डा और निशान दिया.

१२- राठौड़ रघुनाथसिंहको डेढ़ हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवारका मन्सब दिया.

१३- राजा राजरूपको जम्धर, घोड़ा.

१४- राजा मानसिंह ग्वालियर वालेको ख़िल्अ़त, हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवारका मन्सब और जड़ाऊ धुकधुकी.

१५- वीरमदेव सीसोदियाको ख़िल्अ़त.

१६- अमरसिंह कछवाहे नरवरीको डेढ़ हज़ारी ज़ात, हज़ार सवारका मन्सब.

१७- बांधूके राजा कल्यानसिंहको हज़ारी ज़ात पांच सौ सवारका मन्सब दिया.

हिज्री १०७० ता० २३ सफ़र [विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ९ = ई० ता० ८ नोवेम्बर] को शालामार बाग़में पहुंचकर औरंगज़ेबने नीचे लिखे सर्दारोंको इन्आ़म दिया,

महाराजा जशवन्तसिंहको, जिसे बादशाह दिल्लीकी हिफ़ाज़तपर छोड़ गया था, ख़िल्अ़त दिया. इस्लामख़ां, भावसिंह हाड़ा, राजा जयसिंहके बेटे कीर्तिसिंह, गिरधरदास गौड़, सबलसिंह सीसोदिया, नरबद हाड़ाके बेटे जगत्सिंह, सूरजमल्ल मनोहरदास गौड़ वगैरह, जो हाज़िर हुए, उनको ख़िल्अ़त दिये; और बूंदीके राव भावसिंह हाड़ाने पांच हाथी नज़ किये. सर्मोरके राजा सौभाग्यप्रकाशको ख़िल्अ़त, मोतियोंका चौकड़ा, घोड़ा, जड़ाऊ ख़ंजर और मोतियोंकी कंठी देकर रुख़्सत दी.

ग्वालियरके राजा मानसिंहको सर्पेच बख़्शा. उस वक्त शाहज़ादह शुजाअ्के पटने से इलाहाबादकी तरफ़ बढ़नेकी ख़बर सुनकर औरंगज़ेबने शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तान और जुल्फ़िक़ारख़ांको फ़र्मान भेजा, और आगरेसे बढ़नेका हुक्म दिया; फिर अपने पास से भी नीचे लिखे सर्दारोंको रवानह कियाः-

राजा अनिरुद्धसिंह गोड़, बूंदीका राव भावसिंह हाड़ा, गिरधरदास गोड़, जगत्सिंह हाड़ा, वीरमदेव सीसोदिया, अलीकुलीख़ां वगैरह-

पीछेसे ख़ुद आलमगीर भी रवानह होकर मक़ाम कोड़ामें अपने शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तानकी फ़ौजमें जा मिला, मीरजुम्ला इसी मक़ामपर दक्षिणसे आ गया; हिजी ता० १९ रबीउ़स्सानी [वि० माघ कृष्ण ५ = ई० १६६० ता० २ जैन्युअरी] को शाहज़ादह शुजाअ्से लड़ाईके लिये फ़ौजकी तर्तीब की गई, जो क़रीब ९०००० नव्वे हज़ारके थी; शुजाअ्की फ़ौजसे मुक़ाबला किया गया, लेकिन् रात पड़जानेके सबब दोनों तरफ़के बहादुर अपने अपने डेरोंमें लौट गये.

इसी रातको जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंहने, जो औरंगज़ेबकी दहिनी फ़ौजका अफ़्सर था, बादशाही आदमियोंपर हम्ला कर दिया, जिसकी इत्तिला शुजाअ्को भी देदी थी, लेकिन् वह शर्तके मुवाफ़िक़ नहीं आया. औरंगज़ेबने अपनी बिगड़ी हुई फ़ौजको बड़ी दिलेरीके साथ दुरुस्त किया, और महाराजा जशवन्तसिंहका पीछा न करके फ़ज्रको शुजाअ्से लड़नेके लिये तय्यारी की; मुक़ाबला होनेपर शुजाअ् भाग गया, और औरंगज़ेबने फ़त्ह पाई.

औरंगज़ेब अपने शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तान और मीर जुमलाको वहां छोड़कर आप आगरेकी तरफ़ रवानह हुआ; महाराजा जशवन्तसिंह जोधपुर पहुंच गया, और दाराशिकोहसे मिलावट करके औरंगज़ेबसे लड़नेकी फ़िक्रमें लगा; तब आंबेरके राजा जयसिंहने महाराजा जशवन्तसिंहको लिख भेजा, कि हुआ सो हुआ, अब चुप रहना चाहिये. दाराशिकोह महाराजा जशवन्तसिंहके भरोसे पर अजमेर आया, लेकिन् महाराजा किनारा कर गया, और औरंगज़ेब आ पहुंचा.

इसी सालके हि० ता० २७ जमादियुस्सानी [वि० चैत्र कृष्ण १३ = ई० १६६० ता० ९ मार्च] को अजमेरमें औरंगज़ेब और दाराशिकोहसे मुक़ाबला हुआ, विचारा दारा हारकर भागा; उसकी मुसीबतका हाल बर्नियर अपनी किताबमें लिखा है, जो उस वक्त अजमेरसे अहमदाबाद तक उसके

 साथ था.

औरंगज़ेबने महाराजा जशवन्तसिंहको ख़िल्अ़त भेजकर सात हज़ारी मन्सब और अहमदाबादकी सूबहदारी देने बाद लिखा, कि यह वहां जाकर खुद बन्दोबस्त करे, और अपने बेटेको यहां भेज दे; फिर बादशाह दिल्ली चला आया.

हिज्री १०६९ ता० २४ रमज़ान [वि० १७१६ आषाढ़ कृष्ण १० = ई० १६५९ ता० १४ जून] को औरंगज़ेबने तख़्तनशीनीका पहिला जश्न करके अपना लक़ब "अबुल्मुज़फ़्फ़र मुहयुद्दीन मुहम्मद औरंगज़ेब बहादुर, आलमगीर बादशाह ग़ाज़ी", रक्खा; और सिक्कह व खुत्बह अपने नामका जारी करके सिक्कहमें यह शिअ्र खुदवायाः–

सिक्कः ज़द दर जहां चु बद्रिमुनीर,
शाह औरंगज़ेब आलमगीर.

سکه زد در جهان چو بدر منیر *
شاه اورنگ زیب عالمگیر *

यानी औरंगज़ेब आलमगीर बादशाहने दुन्यामें रौशन चांदकी तरह अपना सिक्कह जमाया.

शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तान और मीर जुम्लाने शुजाअ़्को बंगालेकी तरफ़ निकालकर बहुतसा इलाक़ा दबा लिया, लेकिन् मुहम्मद सुल्तान और मीर जुम्लामें बिगाड़ होनेसे आलमगीरने कुछ ताना लिख भेजा, जिससे शाहज़ादह नाराज़ होकर अपने चचा शुजाअ़्से जामिला, और शुजाअ़्ने अपनी बेटी उसको व्याह दी; लेकिन् उसको आलमगीरका भेजा हुआ जानकर शुजाअ़् हमेशह होश्यार रहता था. इससे रंजीदह होकर मुहम्मद सुल्तान फिर मीर जुम्लाके पास भाग आया, और आलमगीरने उसे कैदी बनाकर सलीमगढ़के क़िलेमें भेज दिया. दूसरी तरफ़ बिचारा दारा मुसीबतका मारा अहमदाबाद पहुंचा, जो शहरमें नहीं घुसने पाया; इससे लाचार भागकर कच्छके इलाकेमें आया, जहांका राजा कुछ सहारा देना चहाता था, पर आंबेरके राजा जयसिंहके लिखनेसे किनारा कर गया. फिर वह सिंधके जंगलोंमें आफ़तें उठाता हुआ एक लुटेरे पठान सर्दार मलिक जीवनके पास दादरमें पहुंचा; क्योंकि मलिक जीवनको जब शाहजहांने हाथीके पैरसे मारडालनेका हुक्म दिया था, तो दाराशिकोहने ही बचाया था; परंतु उस नालाइक़ पठानने उसका उलटा एवज़ दिया, कि वह दाराको सिपिहरशिकोह समेत गिरिफ़्तार करके दिल्लीमें आलमगीरके पास लेगया; जब लाहौरी दर्वाज़ेसे चांदनी चौकके रास्तह दाराशिकोह शहरमें घुमाया गया, तो उस वक़्तका हाल मिस्टर बर्नियर लिखता है, कि मैं एक अच्छे घोड़ेपर

सवार था, और दो ख़िदमतगारों समेत देखता था, कि दाराशिकोहकी मुहब्बतसे तमाम रअ़य्यत मलिक जीवनको गालियां देती थी, दाराकी मुसीबतपर कमाल रंजके साथ सब लोग चिल्लाते थे, जिनकी गालियों और शोरसे एक दूसरेकी बात नहीं सुन सक्ता था.

बर्नियर और ख़फ़ीख़ां दोनों लिखते हैं, कि उस वक्त मलिक जीवनपर लोग पत्थर और नादोंका कीचड़ व पाख़ानह, पेशाब वग़ैरह फैंकते थे; लेकिन् उस शाहज़ादहको क़ैदसे छुड़ानेकी कोशिशके एवज़ यह शोर और फ़साद दाराकी मौतका जल्दी सबब हुआ, कि उसे ख़िज़्राबाद बाग़में क़ैद किये जानेबाद नज़रबेग चेलेके हाथसे मरवाडाला. आलमगीरने उसका सिर मंगवाकर देखा, और दिखावेके लिये रोया; इसके बाद सिपिहर शिकोहको क़ैद करके ग्वालियरके क़िलेमें भेज दिया, और मलिक जीवनको इन्आम देकर घरकी रुख़्सत दी; लेकिन् लुटेरोंने उसका माल अस्बाब लूटकर रास्तेमें ही मारडाला. दाराशिकोहका बड़ा बेटा सुलैमांशिकोह श्रीनगरके राजा पृथ्वीसिंहके पास जारहा, जहां हिमालयकी सख़्त झाड़ियोंमें आलमगीरकी फ़ौजका कुछ क़ाबू न चला, लेकिन् आंबेरके राजा जयसिंहके लिखनेसे राजा पृथ्वीसिंहने उसे पकड़वा दिया. इस शाहज़ादहको भी बादशाहने क़ैद करके ग्वालियरके क़िलेमें भेजा. शुजाअ़के पीछे मीर जुम्ला लगा हुआ था, वह शाहज़ादह अपने कुटम्ब समेत अराकानके राजा त्सान्डाथो धम्मा (१) के पास किश्तियोंमें सवार होकर जा पहुंचा. लफ्टिनेण्ट कर्नेल अलेकज़ेण्डर डऊ अपनी किताबकी तीसरी जिल्दके ३४८ वें पृष्ठमें लिखते हैं, कि शाहज़ादह शुजाअ़ १५०० सवारोंके साथ ढाकेसे ब्रह्मपुत्रको उतरकर आसाम और त्रिपुराके जंगल छानता हुआ अराकानमें पहुंचा; लेकिन् बर्नियर, जार्ज फ़ार्स्टर और फ़ाइचकी रायसे किश्तियोंके रास्ते जाना सहीह मालूम होता है; अराकानके राजाने शुजाअ़की बेटीसे शादी करना चाहा, जिससे नाराज़ होकर शाहज़ादहने उस ज़िलेके बहुतसे मुसल्मानोंको मिलाकर राजापर हम्ला करनेका इरादह किया, लेकिन् इस भेदके खुलजानेसे शुजाअ़ मारा गया, और अराकानके राजाने ज़बर्दस्तीसे शाहज़ादीके साथ विवाह करलिया, जिसपर शुजाअ़के शाहज़ादोंने दोबारा फ़साद उठाना चाहा, इन सबके सिर कुल्हाड़ोंसे काटेगये; लेकिन् दिल्ली और आगरेमें

---

(१) इस राजाका नाम ब्रिटिश ब्रह्माके चीफ़ कमिश्नर लेफ़्टिनेण्ट कर्नेल एलबर्ट फ़ाइचने अपनी ब्रह्माके मुल्ककी तवारीख़की पहिली जिल्दके ६३ वें पृष्ठके नोटमें लिखा है. फ़ाइच साहिबने भी दूसरा बयान तो बर्नियरकी किताबसे ही लिया है, लेकिन् इस राजाका नाम बर्नियरको नहीं मिला था; उन्होंने दर्याफ़्त करके लिखा है.

इस बातकी ख़बर न मिलनसे शुजाअ्के हिन्दुस्तानमें आनेकी झूठी अफ्वाहें वर्षोंतक उड़ती रहीं.

हिज्री १०७० ता० २५ जमादियुल अव्वल [विक्रमी १७१६ फाल्गुण कृष्ण ११ = ई० १६६० ता० ६ फ़ेब्रुअरी] को शायस्तहख़ां, अमीरुल उमरा, बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ शिवा भोंसलाको दबानेके लिये औरंगाबादसे चढ़ा, क्योंकि शिवा ने अहमदनगरके कई ज़िलोंमें कब्ज़ा करलिया था, क़िला सूपा घेरागया; लेकिन् शिवा पहिलेसे निकल गया था, शायस्तहख़ांने कब्ज़ा करके जादवरावको क़िलेदार बनाया. फिर बारामतीके क़िलेको जा दबाया, और नीरा नदीके तीरपर राजगढ़के ज़िलोंको बर्बाद करता हुआ शेवापुरके पास पहुंचा, जहां महाराजा रायसिंह भीमसिंहोतसे रसद लानेपर मरहटी फ़ौजका मुक़ाबला हुआ, सर्फ़राज़ख़ां फ़ौज लेकर मददको पहुंच गया, जिससे महाराजाने फ़त्ह पाई.

जब कि औरंगज़ेब दक्षिणसे फ़ौज लेकर महाराजा जशवन्तसिंहके मुक़ाबलेपर नर्मदाकी तरफ़ चला, उस वक्त बीकानेरका राव कर्णसिंह अलहदह होकर अपने वतन चला गया था, और शाहज़ादोंकी लड़ाईमें किसीका शरीक नहीं हुआ; उसपर फ़ुर्सत पाकर आलमगीरने अपने सर्दार अमीरख़ांको फ़ौज समेत भेजा, जो उसको हिज्री १०७१ ता० ४ रबीउस्सानी [वि० १७१७ मार्गशीर्ष शुक्ल ६ = ई० १६६० ता० ९ डिसेम्बर] को बादशाही दर्गाहमें ले आया, और उसके क़ुसूर मुआफ़ होकर कुछ अर्से बाद तीन हज़ारी ज़ात व दो हज़ार सवारका मन्सब दिया गया, और दक्षिण जानेका हुक्म हुआ. इसी वर्षमें आंबेरके राजा जयसिंह कछवाहेको सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब और पांच लाखकी जागीर दी; उसने उन्नीस घोड़े और कुछ जड़ाऊ हथियार नज्र किये. इन्हीं दिनोंमें चंपत बुंदेलेने लूट मार शुरू की, जिसको राजा सुजानसिंह बुंदेलेके राजपूतोंने मार डाला, और उसका सिर बादशाहके पास भेजदिया.

इसी वर्षमें शाहज़ादह मुहम्मद मुअज़्ज़मकी शादी कृष्णगढ़के राजा रूपसिंहकी दूसरी बेटीके साथ हुई, और दक्षिणमें एक घाटीसे निकलती हुई बादशाही फ़ौजपर तीन हज़ार सवार मरहटोंने हम्ला किया, लेकिन् बूंदीके राव भावसिंह हाड़ाने बड़ी बहादुरीके साथ रोका. फिर तलकोकनपर कब्ज़ा करके लड़ता भिड़ता हिज्री ता० २२ शव्वाल [वि० १७१८ आषाढ़ कृष्ण ८ = ई० १६६१ ता० २० जून] को क़िले चाकनाके पास जा पहुंचा; इस क़िलेको ५६ दिनकी लड़ाईके

बाद हिज्री ता० १७ ज़िल्हिज [वि० भाद्रपद कृष्ण ३ = ई० ता० १३ ऑगस्ट] को फ़त्ह किया. बादशाही फ़ौजके २६८ अफ्सर व सिपाही मारे गये, और ६०० ज़रूमी हुए. इस लड़ाईमें बूंदीके राव भावसिंह हाड़ा, टोडाके राजा रायसिंह सीसोदिया, विजयसिंह (१) सीसोदिया, जो उदयपुरकी फ़ौजका अफ्सर था, वीरमदेव (२) सीसोदियाने बड़ी बहादुरी दिखलाई. क़िला परिन्दा भी लेलिया गया.

हिज्री १०७२ ता० ५ जमादियुल अव्वल [वि० १७१८ पौष शुक्ल ७ = ई० १६६१ ता० २८ डिसेम्बर] को बादशाही फ़र्मान पाकर महाराजा जशवन्तसिंह अहमदाबादसे, दक्षिणमें शायस्तहख़ांके पास पहुंचा, और उसीके साथ शहर पूनामें आगया. बादशाह सख़्त बीमार होगया था, बड़ी मुश्किलसे आराम हुआ. बादशाही हुक्मसे जूनागढ़के फ़ौज्दार कुतुबुद्दीनख़ांने जामनगरके रायसिंहपर चढ़ाई की, जो कि अपने भतीजे शत्रुशालको क़ैद करके राजका मालिक बनगया था. मुक़ाबला होनेपर रायसिंह अपने बेटों और राजपूतों समेत बहादुरीसे लड़कर मारा गया, और शत्रुशालको जामनगरकी हुकूमत मिली. इसी वर्षमें बादशाह पंजाब होकर कश्मीरकी सैरको गये.

हिज्री १०७३ ता० शुरू रमज़ान [वि० १७२० चैत्र शुक्ल ३ = ई० १६६३ ता० १० एप्रिल] को शिवा मरहटा एक आदमीको दुल्हा बनाकर बरातके बहानेसे शहर पूनामें आगया, और रातके वक्त शायस्तहख़ांके मकानमें पहुंचकर कई आदमियोंको जानसे मारा, और शायस्तहख़ांको ज़रूमी किया; उसका बेटा अबुलफ़त्हख़ां भी क़त्ल हुआ. और शिवा जीता जागता निकल गया. ख़फ़ीख़ां अपनी किताबमें लिखता है, कि मेरा बाप उस वक्त शायस्तहख़ांके पास मौजूद था. इस फ़सादके होनेसे आलमगीरने नाराज़ होकर शायस्तहख़ांको बंगालेकी सूबेदारीपर भेजदिया, और दक्षिणकी सूबेदारी शाहज़ादह मुअज़्ज़मको देकर उस तरफ़ भेजा, शिवाने दक्षिणमें बड़ा ग़द्र मचाकर सूरतको लूट लिया. इन्हीं दिनोंमें मीर जुम्ला अमीरुल उमराका इन्तिक़ाल होगया, जिससे आलमगीर ज़ाहिरा रंजीदह और दिलमें खुश हुआ, क्योंकि उसको ज़ियादह बढ़ा

---

(१) इसकी औलादमें अब धरियावदके रावत मेवाड़के दूसरे दरजेके सर्दारोंमें हैं.

(२) महाराणा अव्वल अमरसिंहका पोता, सूरजमल्लका बेटा शाहपुरा वाले सुजानसिंह का भाई, बादशाही तीन हज़ारी मन्सबदार जागीरदार था.

हुआ नौकर पसन्द नहीं था. इस बहादुर मीर जुम्लाने आसामके बड़े विकट मुल्कको बहुत होश्यारी और बहादुरीके साथ फ़त्ह किया था. इस देशमें मुहम्मद तुग़्लक़ दिल्लीके अगले बादशाहने बड़ी भारी फ़ौज भेजी थी; लेकिन् एक भी आदमी जीता वापस नहीं आया. आ़लमगीर नामह किताबमें आसामका जुग़्राफ़ियह उस ज़मानेका लिखा हुआ अच्छा जानकर पाठक लोगोंके देखनेको इस जगह दर्ज किया जाता है.

आसामकी फ़त्ह और वहांकी कैफ़ियत.

जब कि शाहजहांकी बीमारीके सबब शाहज़ादोंमें लड़ाइयां हुईं, और मुल्कमें अन्तरी फैली, तो कूचबिहारके राजा पेमनारायण और आसामके राजा जयध्वजसिंहने बंगालेका सरहदी बादशाही इलाक़ह लूट लिया. इसलिये मुअ़ज़्ज़मखां, ख़ान ख़ानां (मीर जुम्ला) को शाहज़ादह शुजाअ़के अराकानमें भागजाने बाद बादशाह आ़लमगीरने हुक्म दिया, कि इन दोनोंको आगे बढ़कर पूरी सज़ा दे; ख़ान ख़ानां हिज्री १०७२ ता० १८ रबीउ़ल्अव्वल [वि० १७१८ मार्गशीर्ष-कृष्ण ४ = ई० १६६१ ता० ११ नोवेम्बर] को कूच करके बहुत जल्द कूचबिहारमें दाख़िल हुआ, और शहरको फ़त्ह करके उसका आ़लमगीरनगर नाम रक्खा. हिज्री ता० २८ रबीउ़ल्अव्वल [वि० मार्गशीर्ष कृष्ण १४ = ई० ता० २१ नोवेम्बर] को घोड़ा घाटसे चलकर पांच महीनेके अ़र्सेमें दुश्मनोंसे लड़ता तक्लीफ़ें उठाता हुआ, हि० ता० ६ शअ़्बान [वि० १७१९ चैत्र शुक्ल ८ = ई० १६६२ ता० २८ मार्च] को आसामकी राजधानी कड़ गांवमें जा पहुंचा.

राजा भागकर उत्तरी पहाड़ोंमें जा छिपा, और वहांसे सुलहकी दर्ख़्वास्त की, जो मन्ज़ूर न हुई. ख़ान ख़ानांकी तरफ़से हर जगह इन्तिज़ामके वास्ते थाने बिठा दिये गये, लेकिन् बर्सात आनेपर बड़ी तक्लीफ़ हुई; आसामियोंने हम्ला करके कई बादशाही थानोंको उठा दिया. लाचार ख़ान ख़ानांने तीन चार मज़बूत मक़ामों

पर फ़ौज रखकर वर्सातके दिन पूरे किये. मौसमके दुरुस्त होनेपर बादशाही फ़ौज ने आसामियोंको हर तरफ़ मार भगाया. ख़ानख़ानांका इरादह था, कि बहुत दिनों तक वहां रहकर तमाम इलाक़ह ज़ब्त करले, लेकिन् फ़ौजवालोंने तक्लीफ़ोंके सबब ख़ानख़ानांको वहां छोड़कर बंगालेकी तरफ़ लौट आना चाहा, इस लिये ख़ानख़ानांने मुनासिब समझकर आसामियोंकी तरफ़से सुलहकी दर्ख़्वास्त हिज्री १०७३ ता० ५ जमादियुल आख़र [विक्रमी १७१९ पौष शुक्ल ७ = ई० १६६३ ता० १७ जैन्युअरी] को मन्ज़ूर करली; दो पर्गने बादशाही ख़ालिसेमें रक्खे गये, दो हज़ार २००० तोले सोना, एक लाख अठाईस हज़ार रुपया नक्द, एक सौ बीस हाथी और राजाकी लड़की लेकर ख़ानख़ानांने बंगालेकी तरफ़ कूच किया; लक्खूगढ़, कजली वग़ैरह मक़ामातकी तरफ़से होता हुआ; हिज्री १०७३ ता० २ रमज़ान [विक्रमी १७२० चैत्र शुक्ल ४ = ई० १६६३ ता० ११ एप्रिल] को ख़िज़्रपुर मक़ामपर वापस आया, जहां सिल (क्षई रोग) की बीमारीसे सख़्त तक्लीफ़ उठाकर मरगया.

इस फ़त्हका हाल बहुत मुख़्तसर यहां लिखागया है, अगर आलमगीरनामह से कुल तर्जमा किया जाता, तो बेफ़ायदह न होता; लेकिन् हमको इतना लिखना कुछ ज़ुरूर नहीं था, इसलिये थोड़ासा नोट लिखकर ख़ाली जुग्राफ़ियह दर्ज किया है, जिसको पढ़कर सय्याह लोग फ़ायदह उठावें.

मुल्क आसामका जुग्राफ़ियह.

(सन् १०७३ हिज्री.)

मुल्क आसाम बंगालेसे उत्तर और पूर्वकी तरफ़ आबाद है, और ब्रह्मपुत्र नदी, जो हिमालयके पहाड़ोंकी उत्तर तरफ़से निकलकर चीनके मुल्कमें होती हुई आसामके बीच बहकर सुन्दरबनके पास गंगामें मिलती है, उसके उत्तर तरफ़ आसामका जितना देश आबाद है, वह 'उत्तरगोल' कहा जाता है; और दक्षिणी तरफ़का मुल्क 'दक्षिणगोल' के नामसे मश्हूर है. उत्तर गोलकी आख़िरी हद चीनकी तरफ़ 'मरीस ज़मी' क़ौमके पहाड़ों तक, और शुरू हिन्दुस्तानकी तरफ़ गो[illegible] है. दक्षिणगोलकी पूर्वी आख़िरी हद सदिया गांव तक, और इसका शुरू श्रीनगरके पहाड़ोंसे मिला हुआ है; उत्तरगोलके उत्तरी पहाड़ 'दोला' व '[illegible]' नामसे

बोले जाते हैं, और दक्षिणगोलके दक्षिणी पहाड़ 'नामरूप' के नामसे जाने जाते हैं, जो कड़गांवसे ४ मंज़िलकी दूरीपर है.

नामरूपके (१) पहाड़ोंके लोग 'नांग' कहलाते हैं, जो कड़गांवके राजाके मातहत नहीं हैं; और एक दूसरी 'दफ़्ला' क़ौम है, जो राजा जयध्वजसिंहको बिल्कुल नहीं मानती. वे बाज़े वक्त नज़्दीकी इलाक़ोंको लूट भी लेते हैं.

यह मुल्क दो सौ कोस जरीबी लम्बा गिना जाता है, और चौड़ाई पचास कोसके क़रीब होगी. गोहाटीसे कड़गांवका बीच ७५ कोस, और कड़गांवसे 'खता' का शहर 'आवा' १५ मन्ज़िलपर है, जिसमें पांच मन्ज़िल सख्त पहाड़ी, और जंगल दस मंज़िलसे कुछ कम है. उत्तरीय हिस्सह बिल्कुल पहाड़ी है. बहुतसी नदियां दक्षिण गोलसे निकलकर ब्रह्मपुत्रमें गिरती हैं. इन सब नदियोंमें से बड़ी नदीका नाम 'धनक' है, वह 'लक्खूगढ़' के पास ब्रह्मपुत्रसे मिलती है. इन दोनों नदियोंके बीचकी ज़मीन क़रीब पचास कोसके सर्सब्ज़ और आबाद है. वहांकी आब व हवा भी अच्छी है, और इस अच्छे ज़िलेकी आख़िरी हदपर बड़ाभारी जंगल हाथियोंके चरनेका है, जहांसे हाथी पकड़े जाते हैं. हाथियोंके चरनेको और भी कई जंगल हैं, और वहांसे भी हाथी गिरिफ्तार किये जाते हैं. तख़मीनन ५०० सौ, या छः सौ हाथी साल भरमें पकड़े जासक्ते हैं.

कड़गांवकी तरफ़ 'धनक' नदीके किनारेकी ज़मीन बहुत आबाद और फल फूल वाली है, यह उम्दह ज़मीन 'सेमलगढ़' से कड़गांव तक पचास कोस होगी. इस इलाक़ेमें किसानी घरोंके आसपास फल फूल और मेवेदार दरख़्त बाग़की तरह नज़र आते हैं. इस तरफ़ बर्सातके दिनोंमें पानी बहुत फैलजानेसे एक बन्दके तौर सेमलगढ़से कड़गांव तक एक ऊंचा रास्तह बनाया गया है, जिसके दोनों तरफ़ बांस वग़ैरहके दरख़्त लगा दिये हैं. वहांके ख़ास मेवे आम, नारंगी, कटहल, तुरंज, नींबू, केला, अनन्नास और एक मेवा 'पनियाला' आंवलेकी क़िस्मसे है, जिसका मज़ा आलूचेके मुवाफ़िक़ होता है; नारियल व कालीमिर्च वग़ैरह मुसालहके दरख़्त भी बहुत हैं. वहांके सुर्ख़ सियाह और सिफ़ेद रंगके गन्ने बहुत मीठे और मज़ेदार होते हैं. सोंठमें रेशे नहीं होते, नागरबेलके पान भी बहुत होते हैं. घास वग़ैरह व नाजकी क़िस्म उस मुल्कमें बहुत अच्छी होती है, वहांकी ज़मीन इन चीज़ोंको ज़ियादह ताक़त देती है, और कड़गांवके आस पास जंगली अनार व ज़र्द आलू भी होते हैं. इस देशकी उम्दह पैदावारकी चीजें चांवल और उड़द हैं, और

(१) शायद इसका सहीह नाम कामरूप होगा, जो हिन्दुस्तानमें जादू वग़ैरहके बाबत ख़ास जगह मश्हूर है;

मसूर, गेंहू, जौ नहीं होता; रेशम अव्वल दरजेका तय्यार होता है; लेकिन् वे लोग अपनी ज़रूरतके सिवाय नहीं बनाते. मख़मल और 'टाटबन्द' कपड़े (१) वहां अच्छे होते हैं.

नमकको यह लोग ज़ियादह चाहते हैं, लेकिन् वहां इसकी पैदाइश बहुत कम है, थोड़ासा पहाड़ोंकी जड़ोंमें बनता है, जो कड़वा और ख़राब होता है; ज़ियादह कड़वा और ख़राब नमक केलोंके दरख़्तोंसे बनाते हैं; और जहां 'नांग' क़ौम आबाद है, वहां 'अगर' की लकड़ी बहुत होती है. वे लोग इस लकड़ीको नमक के बदलेमें आसामियोंको देते हैं, यह नांग लोग आदमियतसे ख़ारिज नंगे धड़ंगे रहते हैं, कुत्ता, बिल्ली, सांप, चूहा, चींटी, टिड्डी वगैरह, जो मिले, खालेते हैं. 'नामरूप' 'सदिया' और लक्खूगढ़के पहाड़ोंमें भी पानीमें डूबनेवाला 'अगर' पैदा होता है, और कस्तूरी वाले हिरन भी उन पहाड़ोंमें बहुत होते हैं. इस मुल्कमें उत्तरगोलकी ज़मीन अच्छी आबाद है, जिसमें काली मिर्च और खाने पीनेकी चीज़ें दक्षिण गोल से ज़ियादह होती हैं. दक्षिण गोलकी तरफ़ दुश्वार गुज़ार पहाड़ व जंगल ज़ियादह हैं; इस लिये वहांके राजा लोगोंने दक्षिण गोलमें अपनी राजधानी मुक़र्रर की है; उत्तर गोलमें ब्रह्मपुत्र और उत्तरी पहाड़ोंके बीचकी चौड़ी ज़मीन् कमसे कम पन्द्रह कोस, ज़ियादहसे ज़ियादह पैंतालीस कोस अर्ज़में सर्द और बर्फ़दार है.

उत्तरगोलके पहाड़ी आदमी तन्दुरुस्त और बदनके मज्बूत व शक्लके रोब्दार होते हैं, और सर्द मुल्कके निवासियोंकी तरह उनके भी रंग सुर्ख़ी माइल सिफ़ेद होते हैं; क़िले जमधर और गोहाटीकी तरफ़ भी पहाड़ी इलाक़ा है, जिसको ट्रंगका ज़िला कहते हैं. इन कई पहाड़ोंके रहने वाले शक्ल सूरतमें एकसे होते हैं, बाज़ोंकी पहिचान ख़ान्दानी लफ़्ज़ोंसे होती है. इन पहाड़ोंमें कस्तूरी वाले हिरन और छोटे घोड़े यानी टांगन भी पाये जाते हैं. वहांकी नदियोंका बालू धोनेसे सोना, चांदी निकलता है. बाज़ोंके क़ौलसे बारह हज़ार, और बाज़ोंके कलामसे २०००० आसामी रेता धोकर सोना, चांदी, निकालनेमें लगे रहते हैं; और फ़ी आदमी एक तोलह सोना सालानह राजाको देना पड़ता है.

उमूमन आसामके लोग ख़राब तरीक़े वाले और बे मज़्हब हैं, तबीअतकी ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ खाने पीनेमें रोक टोक नहीं, और किसीके हाथकी चीज़ खानेमें परहेज़

---

(१) 'टाटबन्द' एक क़िस्मका रेशमी कपड़ा है, जिससे ख़ेमे और क़नातें बनाई जाती हैं

नहीं रखते; सिवाय आदमीके मांसके और किसी जानदारका गोश्त नहीं छोड़ते; मरे हुए जानवरोंको भी खा लेते हैं; घी उनको बिल्कुल नहीं मिलता, और उसके देखनेसे भी नफ़्त करते हैं; बल्कि उसकी खुश्बूसे घबराते हैं. औरतोंमें पर्देकी रस्म राजासे ग़रीब तक किसीमें नहीं, और वहांके लोग चार या पांच औरतोंसे शादी करते हैं; औरतोंको बेचना, मोल लेना, बदलना, उनका आम रिवाज है. सिर, डाढ़ी, और मूंछ मुंड़वाते और नहीं मुंड़वाने वालेसे नफ़्त व हिक़ारत करते हैं, ज़बान उनकी बंगालीसे जुदी है. मज़्बूती, ज़बर्दस्ती, दिलेरी व बेख़ौफ़ी उनकी सूरतसे टपकती है; बहुतसी आदतें चौपाये और जंगली जानवरोंसे मिलती हैं, लड़ाई करने वाले और बड़े मिहनती व मक्कार और फ़सादी होते हैं; रहमदिली, सचाई, मुहब्बत, शर्म और नेक ख़ियाल उस क़ौममें नहीं होती. एक टाट सिरपर और लुंगी कमरमें लपेटते हैं; और एक चादर कंधेपर भी रखते हैं. सिवाय इसके जूता वगैरह हिफ़ाज़तकी चीज़ कुछ भी नहीं रखते. चूने पत्थरका काम सिवाय कड़गांवके दर्वाज़े व मन्दिरोंके किसी जगह नहीं है.

अमीर ग़रीब कुल अपने घरोंको लकड़ी, बांस और घाससे बनाते हैं. राजा और अमीर लोग आदमियोंके कंधेपर तख़्तसवार चलते हैं; और दूसरे आदमी डोलियोंमें. चौपाये जानवरोंमें घोड़ा, ऊंट, गधा वहां बिल्कुल नहीं होता; बाहरसे लेजानेमें गधेको ज़ियादह पसन्द करते हैं; और ऊंटको देखकर बड़ा तअज्जुब करते हैं. घोड़ेसे बहुत डरते हैं, अगर एक सवार १०० हथियारबन्द आसामियोंपर हम्ला करे, तो जान बचाकर भागें, या हथियार डालकर क़ैद होनेको तय्यार हों. पैदल सिपाही उनसे दो चन्द हों, तो भी ख़ौफ़ नहीं रखते; उस देशमें सबसे पुरानी दो क़ौमें हैं- एक 'आसामी' दूसरी 'कलतानी', कलतानी ज़ियादह इज़्ज़तदार समझे जाते हैं, लेकिन् लड़ाई, सख़्ती और मज़्बूतीमें आसामी ज़ियादह मश्हूर हैं. छः सात हज़ार आसामी सिपाही हथियार बांधे राजाके महलोंकी चौकीदारीपर हमेशह तय्यार रहते हैं, और राजाका भी आसामियोंपर भरोसा ज़ियादह है.

इस मुल्कके आदमियोंके शस्त्र ढाल, तलवार, बन्दूक़, तीर, बर्छा और बांस हैं. क़िले और किश्तियोंमें तोपें व राम चंगियें भी बहुत हैं; इस फ़नमें वह होश्यार हैं. राजा, उसके सर्दार व हाकिम लोग मरते हैं, तो उनको एक तहखा-नह खोदकर उसके अन्दर रखते हैं; लेकिन् उसी तहख़ानहमें उस अमीरके साथ

शादी कीहुई औरतें, और घरमें डाली हुई पासवानें, नौकर, हाथी और खाने पीने व सोने बैठने और खुशीकी चीज़ें सोने चांदी वगैरहकी, और रौशनी व बहुतसा तेल उसी गड्ढेमें रखकर उस तहखानहकी छतको मज्बूत लकड़ियोंसे पाट देते हैं; वे लोग समझते हैं, कि यह सब सामान उस मुर्देको दूसरी दुन्यामें मिलेगा. कई तहखानों को मीर जुम्लाकी फ़ौजके सिपाहियोंने खोद डाला, जिसमेंसे ९०००० रु० का सोना चांदी मिला था. शहर 'कड़गांव' के चार दर्वाज़े पत्थर और चूनेसे बने हैं, हरएक दर्वाज़ेसे राजाके महल तीन कोसके फ़ासिलेपर हैं; शहरके गिर्द बांस और लकड़ियोंसे दीवार बनाई गई है; शहरके अन्दर भी बर्सातमें चलनेके लिये ऊंची सड़कें बनी हुई हैं; हर एक घरके बाहर एक बगीचा और खेत होता है; इसीसे इस शहरका घेरा बहुत बड़ा है. राजाके महल 'दीखू' नदीके किनारेपर हैं, जो शहरके अन्दर बहती है; हर एक जगह छोटे छोटे बाज़ार हैं, जिनमें पान बेचने वाले बैठते हैं, दूसरे व्यापारियोंकी दूकानें वहां नहीं होतीं; क्योंकि वहांके अमीर ग़रीब खाने पीनेका सामान साल भरके लिये एक दम इकट्ठा करलेते हैं, और राजाके महलों के गिर्द एक ऊंची सड़क बनाकर किनारोंपर बांस लगाये गये हैं, जिसके गिर्द ख़न्दक़ है, जो हमेशह पानीसे भरी रहती है; इस सड़कका घेरा एक कोस और चौदह जरीबका है. राजाके रहनेके मकान लकड़ी, बांस और घाससे बहुत ऊंचे बनाये गये हैं; एक दीवानखानह, जिसकी लंबाई १५० गज़, और चौड़ाई ४० गज़ है, उसमें ६८ थम्बे लगे हैं; हर एक थम्बेका घेरा चार गज़का है; बाज़ जगह इस मकान में चूनेकी घुटाई भी बहुत साफ़ कीगई है- लिखा है, कि बारह हज़ार मज्दूर और ३००० खातियोंने इस दीवानखानहको दो वर्षमें तय्यार किया था.

राजाकी सवारीके वक्त ढोल और झांज बजाया जाता है; इस बादशाहका लक़ब 'स्वर्गी' (बिहिश्ती) वहां वाले बोलते हैं, जिसका यह मत्लब है, कि उनके ख़यालके मुवाफ़िक़ उस राजाके बुज़ुर्ग स्वर्गवासियोंपर हुकूमत करते थे, उनमेंसे एक सोनेकी सीढ़ी लगाकर सैर करनेको इस ज़मीनपर उतरा, और उसको यहां रहना पसन्द आया, जिसकी औलाद यहांपर राज करने लगी; उसी वंशमें यह राजा 'जयध्वजसिंह' है. ऐसे ऐसे मग़रूर करनेके लिये ख़याली क़िस्से वहां बहुत जारी हैं. हमने यह अजीब हाल दो सौ बीस वर्ष पेश्तरका पाठकोंके पढ़नेको लिखा है.
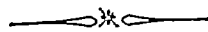
हिज्री १०७४ मुहर्रम [वि० १७२० श्रावण = ई० १६६३ ऑगस्ट] में बादशाह कश्मीरकी सैरसे दिल्लीकी तरफ़ वापस लौटा, और ईरानके शाह अब्बास के नाम ख़त और सात लाख रुपयेका सामान तर्बियतख़ांके हाथ भेजा; क्योंकि ईरानकी

तरफ़से भी एक एलची बहुतसे तुहफ़े लाया था. इसीतरह मुस्तफ़ाखां एलची बनाकर तूरानको भेजा गया. दक्षिणके मुल्कमें महाराजा जशवन्तसिंहसे बादशाहकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ काम न हुए; इसलिये उसे वापस बुलाकर आंबेरके राजा जयसिंहको दिलेरखां, दाऊदखां, राजा रायसिंह सीसोदिया, कुबादखां, राजा सुजानसिंह बुंदेला वग़ैरह समेत चौदह हज़ार फ़ौज देकर दक्षिणकी तरफ़ रवानह किया. कृष्णगढ़के राजा रूपसिंहकी बेटी से मुहम्मद मुअ़ज़्ज़मके एक लड़का पैदा हुआ, जिसका नाम मुहम्मद अ़ज़ीम रक्खा गया.

हिज्री १०७५ शव्वाल [विक्रमी १७२२ वैशाख = ई० १६६५ एप्रिल] को दक्षिणमें राजा जयसिंह और दिलेरखांने शिवा मरहटेपर चढ़ाई करके बहुतसे क़िले, पूरन्धर और रुद्रमाल वग़ैरह दबा लिये. शिवाने लाचार होकर ताबेदारी इख़्तियारकी; तेईस क़िले बादशाही आदमियोंको हवाले करके वे हथियार राजासे मिलनेको चला आया; राजाने दिलेरखांके पास भेज दिया, और सब हाल बादशाहके हुज़ूरमें लिखकर उसके नाम मिहर्बानीका फ़र्मान मंगा लिया. फिर राजा जयसिंहने बीजापुरका इलाक़ह लूटना शुरू किया; इस सबबसे कि आदिलशाहने आलमगीरके हुज़ूरमें मामूली तुहफ़े नहीं भेजे थे, और कुछ शिवाको मदद दी थी. बर्सात आजानेके सबब बादशाही फ़ौजोंने अपने इलाक़हमें आकर आराम लिया.

हिज्री १०७६ [विक्रमी १७२२ = ई० १६६५] में कश्मीरके सूबेदार सैफ़खांने छोटे तिब्बतके रईस मुरादखांकी मददसे बड़े तिब्बतके जागीरदार 'दलदल नमजल' पर फ़त्ह पाकर उस मुल्कमें बादशाहके नामका ख़ुत्बह और सिक्कह जारी किया.

हिज्री ता० ७ रजब [विक्रमी पौष शुक्ल ९ = ई० १६६६ ता० २५ जैन्युअरी] को शाहज़ादह मुहम्मद मुअ़ज़्ज़म दक्षिणसे हाज़िर हुआ. हिज्री ता० २६ रजब [विक्रमी माघ कृष्ण १३ = ई० ता० १४ फ़ैब्रुअरी] को शाहजहां, जो आगरेके क़िलेमें अपने दिन काटता था, पेशाब बन्द होनेकी बीमारीसे गुज़र (१) गया; उसको उसकी बेटी जहांआरा बेगमके कहनेसे रुअ़्द अन्दाज़खां वग़ैरह लोगोंने मुम्ताज़ महलके मक्बरहमें दफ़्न कर दिया. इस मौक़ेपर आलमगीर दिल्लीकी तरफ़ था, अपने बापके जीते जी शर्मके मारे उसके साम्हने नहीं गया. इन्हीं दिनोंमें बंगालेके सूबेदारने चाटगांवका क़िला अराकानके इलाक़हमेंसे फ़त्ह करलिया, इस लड़ाईमें कप्तान मूर वग़ैरह फ़रंगियोंने, जो सौदागरी सामान जहाज़ोंपर लाये थे, बादशाही फ़ौजको मदद दी; और इन्आ़म पाया.

---

(१) शाहजहांने इकत्तीस वर्ष बादशाहत की थी, और आठ वर्ष नज़रबन्द रहकर ७५ वर्षसे ज़ियादह उम्रमें इन्तिक़ाल किया.

हिज्री १०७६ ता० १ शव्वाल [विक्रमी १७२३ चैत्र शुक्ल ३ = ई० १६६६ ता० ७ एप्रिल] को मिर्ज़ा राजा जयसिंहने शिवा मरहटेको दक्षिणसे आगरे भेज दिया, लेकिन् बादशाही दर्बारमें उसको पांच हज़ारी मन्सबदारोंकी लैनमें खड़ा करदिया, जिससे वह रंजीदह होकर चालाकीके साथ बादशाही पहरेमें से निकल भागा. आलमगीरनामह और मआसिरेआलमगीरी किताबोंमें लिखा है, कि उसपर बिल्कुल पहरा न था, बादशाही खौफ़से भेष बदलकर अपने बेटे शम्भा समेत निकल गया.

हिज्री १०७७ सफ़र [विक्रमी १७२३ श्रावण शुक्ल = ई० १६६६ ऑगस्ट] में तर्बियतखांकी अर्ज़ीसे, जो एलचीगरीपर ईरान भेजा गया था, मालूम हुआ, कि ईरानका बादशाह अब्बास काबुलपर चढ़ाई करना चाहता है; इसलिये शाहज़ादह मुहम्मद मुअज़्ज़मको महाराजा जशवन्तसिंह वगैरह समेत बीस हज़ार फ़ौज और तोपखानह देकर उस तरफ़ रवानह किया. तर्बियतखांको ईरानसे वापस आनेपर एलचीगरीमें नालायक़ समझकर नज़र बन्द करदिया. इन दिनोंमें राजा जयसिंहने शिवाके दामाद नेतूको क़ैद करके बादशाही दर्गाहमें भेज दिया, जो मुसल्मान होकर कई वर्ष बाद फिर दक्षिणको भाग गया. हिज्री १०७७ ता० १० रमज़ान [विक्रमी १७२३ फाल्गुण शुक्ल १२ = ई० १६६७ ता० ७ मार्च] को शाहज़ादह कामबख़्श पैदा हुआ. इन दिनोंमें शाहज़ादह मुअज़्ज़म दक्षिणकी सूबेदारीपर भेजा गया, जिसके साथ महाराजा जशवन्तसिंह, राजा रायसिंह सीसोदिया और सफ़्शिकनखां तईनात किये गये, और राजा जयसिंहको दक्षिणसे वापस आनेका हुक्म भेजा गया. इस वर्षमें यूसुफ़ज़ई क़ौमके पठान लोगोंने पेशावरकी तरफ़ लूट मार शुरू की, अटकके फ़ौज्दार कामिलखांने हम्ला करके उनको पहाड़ोंमें भगा दिया.

हिज्री १०७८ ता० २८ मुहर्रम [विक्रमी १७२४ श्रावण कृष्ण १४ = ई० १६६७ ता० २० जुलाई] को आंबेरका मिर्ज़ा राजा जयसिंह दिल्लीको आता हुआ बुर्हानपुरमें मरगया. उसके बेटे रामसिंहको राजाका ख़िताब और चार हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब दिया गया. इन्हीं दिनोंमें बीकानेरके राव करणपर, जो दक्षिणमें तईनात था, बादशाहने नाराज़ होकर बीकानेरकी रियासत उसके बेटे अनूपसिंहको दे दी. काश्गरका बादशाह अब्दुल्लाहखां अपने बेटे बुलबरसखांसे शिकस्त खाकर हिन्दुस्तानमें चला आया, जिसका आलमगीर बादशाहने ख़ातिरदारीके साथ रोज़ीना मुक़र्रर कर दिया. इन दिनोंमें अर्ज़ हुआ, कि आसामी लोगोंने बंगालेकी सर्हद गोहाटी मक़ामपर आकर लूट मार शुरू की है. इसपर आंबेरका

राजा रामसिंह, नुस्रतखां, केसरीसिंह भुरटिया, रघुनाथसिंह मेड़तिया, वीरमदेव सीसोदिया सहित उस तरफ़ भेजा गया.

हिज्री १०७८ शव्वाल [विक्रमी १७२५ चैत्र शुक्ल = ई० १६६८ मार्च] को महावतखां अहमदाबादसे बदलकर काबुलकी सूबेदारीपर भेजा गया. इन दिनोंमें हुक्म दिया गया, कि नाचने गाने वाले सलामीके सिवाय अपना काम छोड़दें. हिज्री ८ शव्वाल [विक्रमी चैत्र शुक्ल १० = ई० २२ मार्च] को काश्गरका ख़ारिज बादशाह, जाफ़रखां वज़ीरके साथ दर्बारमें आया, तख़्तवाले कटहरेके पास आकर बैठ गया, थोड़ी देर बाद आलमगीर बादशाह महलसरासे निकले; अब्दुल्लाह शाह उनकी तरफ़ चला, थोड़ी दूरसे झुककर सलाम किया; आलमगीर बादशाहने सीने तक हाथ उठाया, और पास पहुंचनेपर हाथ मिलाया; मामूली मिज़ाजपुर्सीकी बातें होकर रुख़्सत दी गई. हिज्री पहिली ज़िल्हिज [विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल ३ = ई० ता० १५ मई] को आसामके राजाकी बेटी दो लाख रुपये सिहरके साथ शाहज़ादह आज़मको ब्याह दी गई.

हिज्री १०७९ [विक्रमी १७२५ = ई० १६६८] में इलाहाबाद और अवधके सूबेदारोंको हुक्म भेजा गया, कि जो लोग लावारिस बच्चोंको हीजड़ा बनाकर बेचते हैं, वे गिरिफ़्तार कर जन्म क़ैद रक्खे जावें. इसी वर्षसे सालगिरहका वज़्न याने तुलादानकी रस्म मौकूफ़ कीगई. हि० ता० १० शअ्बान [वि० पौष शुक्ल १२ = ई० १६६९ ता० १५ जैन्युअरी] को मुहम्मद आज़मकी शादी दाराशिकोहकी बेटी जहांज़ेब बानूके साथ कीगई. इसी वर्षमें हुक्म दिया गया, कि मुसल्मान लोग ज़र्दोज़ीका लिबास न पहनें– बनारस ठट्ठा और मुल्तानमें ब्राह्मण लोग अपनी किताबें, जो हिन्दू और मुसल्मानोंको पढ़ाते थे, उनकी कार्रवाई रोक दी गई. गवय्ये लोगोंका सलामको आना मौकूफ़ हुआ.

हिज्री १०७९ ता० २१ ज़िल्हिज [विक्रमी १७२६ ज्येष्ठ कृष्ण ७ = ई० १६६९ ता० २२ मई] को मथुराका फ़ौज्दार अब्दुन्नबीखां फ़सादियोंके मुक़ाबलेपर गोलीसे मारा गया; मथुरामें मन्दिरकी जगह बड़ी मस्जिद इसीकी बनवाई हुई है. इसके एवज़ सफ़्शिकनखांको वहां भेजा, और वीरमदेव सीसोदियाको उसका मददगार बनाया. मुल्क माचीनका एलची अब्दुलवह्हाब हाज़िर हुआ, उसे ख़िल्अ़त दिया गया. हिज्री १०८० मुहर्रम [विक्रमी १७२६ ज्येष्ठ शुक्ल = ई० १६६९ जून] में रघुनाथसिंह सीसोदियाको, जो महाराणासे जुदा होकर हुज़ूरमें आया, एक

हज़ारी ज़ात और तीन सौ सवारका मन्सब दिया गया. आंबेरका राजा रामसिंह पांच हज़ारी किया गया. काशी विश्वनाथका मन्दिर तोड़ दिया गया. इस वर्षमें अनाजका भाव यह था:- सूखदास चांवल १४ सेर, गेहूं ३५ सेर, चना एक मन दो सेर, घी ४ सेर. इसी सन् हिज्री ता० २ जमादियुल् अव्वल [विक्रमी आश्विन शुक्ल ४ = ई० ता० २९ सेप्टेम्बर] को गिरधरदास सीसोदिया (१) दिल्लीमें लाहौरी दर्वाज़ेके पास यक्काताज़खांसे लड़कर मारा गया, और उसका पोता घासीराम ज़ख़्मी हुआ. यक्काताज़खांके भी पांच ज़ख़्म लगे, और भी कई आदमी घायल हुए. हिज्री ता० १ शअ्बान [विक्रमी पौष शुक्ल ३ = ई० ता० २५ डिसेम्बर] को बादशाहसे अर्ज़ हुआ, कि कृष्णगढ़के राजा रूपसिंहकी बेटीसे मुहम्मद मुअ़ज़्ज़म के लड़का पैदा हुआ; हुक्म दिया, कि उसका नाम 'दौलतअफ़्ज़ा' रक्खा जावे. हिज्री रमज़ान [विक्रमी माघ शुक्ल = ई० १६७० जैन्युअरी] में केशवरायका मन्दिर, जो राजा नरसिंहदेव बुंदेलेने जहांगीरके वक्त मथुरामें छत्तीस लाख रुपयेकी लागतसे बनवाया था, बादशाहके हुक्मसे तोड़ दिया गया. हिज्री ता० २८ ज़िल्हिज [विक्रमी १७२७ ज्येष्ठ कृष्ण १४ = ई० १६७० ता० १९ मई] को शाहज़ादी बद्रुन्निसा बेगमके मरनेकी ख़बर मिली, जो शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मकी सगी बहिन थी. हिज्री ता० २५ ज़िल्हिज [विक्रमी १७२७ ज्येष्ठ कृष्ण ११ = ई० १६७० ता० १६ मई] को जाफ़रखां वज़ीर मर गया.

हिज्री १०८१ ता० २७ रबीउ़ल अव्वल [विक्रमी १७२७ भाद्रपद कृष्ण १३ = ई० १६७० ता० १४ ऑगस्ट] को शाहज़ादह मुहम्मद आज़मकी बीबी जहांज़ेबबानू बेगमके पेटसे शाहज़ादह पैदा हुआ, जिसका नाम बेदारबख़्त रक्खा गया. हिज्री ता० २७ जमादियुस्सानी [वि० मार्गशीर्ष कृष्ण १३ = ई० ता० ११ नोवेम्बर] को शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मकी बीबी नूरुन्निसा बेगमके पेटसे एक शाहज़ादह पैदा होनेकी ख़बर मिली, उसका नाम रफ़ीउ़श्शान रक्खा गया. हिज्री ता० २५ रजब [विक्रमी पौष कृष्ण ११ = ई० ता० ८ डिसेम्बर] को काबुलके सूबेदार महाबतखां व बीकानेरके राजा अनोपसिंह वग़ैरहको ख़िल्अ़त, घोड़े देकर दक्षिणकी तरफ़ भेजा. हिज्री १०८२ ता० २२ मुहर्रम [विक्रमी १७२८ ज्येष्ठ कृष्ण ८ = ई० १६७१ ता० १ जून] को जोधपुरका महाराजा जशवन्तसिंह

---

(१) यह शक्तावत वंशका सर्दार था, जिसकी औलादमें बावलके रावत, जावदके पर्गने और सेंधियाके इलाक़ेमें टांकेदार हैं.

जम्रोदकी थानेदारीपर भेजा गया, इसी सन् और संवत्के हिज्री ता० १७ जमादियुल अव्वल [विक्रमी आश्विन कृष्ण ३ = ई० ता० २२ सेप्टेम्बर] को बादशाहकी सगी बहिन 'रौशन आरा' मर गई; बादशाहको यह बहुत प्यारी थी. इसी वर्षकी ता० २६ शश्रबान [विक्रमी पौष कृष्ण १२ = ई० ता० २८ डिसेम्बर] को शाहजादह मुअज़्ज़मके बेटा हुआ, और जवांबख़्त नाम रक्खा गया. हिज्री ता० २६ ज़ीक़ाद [विक्रमी चैत्र कृष्ण १२ = ई० १६७२ ता० २५ मार्च] को "सत्य नामी" मज़्हबको मानने वाले लोगोंने बग़ावत की, जिसके दूर करनेके लिये रश्रद्अन्दाज़्की फ़ौज और तोपख़ानह समेत नारनौलकी तरफ़ भेजकर फ़साद मिटाया गया; इस झगड़ेमें दोनों तरफ़के बहुतसे आदमी मारे गये.

हिज्री १०८३ [विक्रमी १७२९ = ई० १६७२] में ख़ैबरके पठानोंने बल्वा किया, सूबेदार मुहम्मद अमीनख़ां शिकस्त खाकर पिशावरको भागा, बहादुरख़ां कूका दक्षिणकी सूबहदारीपर भेजा गया, और उसको ख़ानेजहां बहादुर ख़िताब दिया गया. हिज्री ता० १० ज़िल्हिज [विक्रमी १७३० चैत्र शुक्ल १२ = ई० १६७३ ता० ३१ मार्च] को बादशाह ईदकी नमाज़ पढ़कर वापस आते थे, कि एक दीवाने आदमीने लकड़ी फेंकमारी, जो तख़्तमें लगकर बादशाहके पांवोंमें गिरी; गुर्ज़बर्दारों ने उसे पकड़कर हाज़िर किया; बादशाहने हुक्म दिया, कि छोड़ दिया जावे.

राजा रायसिंह, सीसोदियाके मरनेपर उसके बेटे मानसिंह, महासिंह, अनोपसिंह, हाज़िर हुए; तीनोंको ख़िल्अ़त दियेगये. हिज्री १०८४ [विक्रमी १७३० = ई० १६७३] में कीर्तिसिंह कछवाहा दक्षिणमें मरगया. हिज्री १०८५ ता० ११ मुहर्रम [विक्रमी १७३१ चैत्र शुक्ल १३ = ई० १६७४ ता० १९ एप्रिल] को बादशाहने हसन अब्दालके पठानोंका फ़साद मिटानेके लिये कूच किया. हिज्री ता० १ शव्वाल [विक्रमी पौष शुक्ल २ = ई० ता० ३० डिसेम्बर] को बादशाहने अपने १८ वें जुलूसपर शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तानको, जो क़ैदसे छूटगया था, बीस हज़ारी ज़ात और दस हज़ार सवारका मन्सब व कंठी और ख़िल्अ़त दिया. राणा राजसिंहको ख़िल्अ़त और फ़र्मान भेजा गया.

हिज्री १०८६ ता० ९ जमादियुल अव्वल [विक्रमी १७३२ श्रावण शुक्ल ११ = ई० १६७५ ता० ३ ऑगस्ट] को मुहम्मद आज़मके एक बेटा पैदा हुआ, जिसका नाम 'सिकन्दर शान' रक्खा गया. इन दिनोंमें मक्कहसे अब्दुल्लाहख़ां काश्ग़रीके मर जानेकी ख़बर आई. बादशाही सर्कार और शाहज़ादोंके ज्योतिषियोंसे मुचल्का लिया गया, कि नये वर्षकी यंत्री (ज़ायचह) न बनावें. फिर बादशाह हसन

अब्दालका फ़साद मिटाकर दिल्लीको रवानह हुआ. हिज्री १०८७ ता० २२ रबीउ़स्सानी [विक्रमी १७३३ प्रथम श्रावण कृष्ण ८ = ई० १६७६ ता० ४ जुलाई] को राजा रामसिंह कछवाहा आसामसे आया. हिज्री ता० १२ जमादियुल अव्वल [विक्रमी प्रथम श्रावण शुक्ल १३ = ई० ता० २४ जुलाई] को मुहम्मद सुल्तानके शाहज़ादह मसऊ़दबख़्श पैदा हुआ. हिज्री ता० १० शअ़्बान [विक्रमी आश्विन शुक्ल १२ = ई० ता० २० ऑक्टोबर] को जाफ़रख़ां वज़ीरके मरजानेपर असदख़ां मीर बख़्शीको विज़ारतका उ़हदह दिया गया- हिज्री ता० १७ शअ़्बान [विक्रमी कार्तिक कृष्ण ३ = ई० ता० २७ ऑक्टोबर] को बादशाहज़ादह मुहम्मद मुअ़ज़्ज़म ख़ज़ानह, तोपख़ानह और सर्दारों समेत काबुलको भेजा गया; उस वक्त बादशाहने इन्आ़म इक्रामके सिवाय उसको 'शाहआ़लम बहादुर' का ख़िताब भी दिया, जो उसके बादशाह होनेपर जारी रहा. हि० ता० २१ शअ़्बान [विक्रमी कार्तिक कृष्ण ७ = ई० ता० ३१ ऑक्टोबर] को बादशाह जामिअ़् मस्जिदसे घोड़ेपर सवार होकर वापस आते थे, रास्तेमें एक आदमी तलवार निकालकर पास आगया, गुर्ज़बर्दारोंने मारना चाहा, पर बादशाहने रोका, और उसे रणथम्भोरके क़िले में आठ आने रोज़ मुक़र्रर करके भिजवा दिया. हि० ता० २७ शअ़्बान [विक्रमी कार्तिक कृष्ण १३ = ई० ता० ६ नोवेम्बर] को एक पानी भरने वालेने मस्जिद की सीढ़ियोंपर बादशाहके बराबर आकर सलाम कहा, बादशाहके हुक्मसे कोतवालीमें क़ैद हुआ. हिज्री ता० ७ शव्वाल [विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ९ = ई० ता० १५ डिसेम्बर] को बड़ा शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तान मरगया, जिसकी उ़म्र अड़तीस वर्ष और दो महीनेकी थी. हिज्री ता० २४ ज़िल्हिज [विक्रमी फाल्गुण कृष्ण १० = ई० १६७७ ता० २७ फ़ेब्रुअरी] को शाहज़ादह शाहआ़लम बहादुरके बेटा पैदा हुआ, जिसका नाम 'मुहम्मद हुमायूं' रक्खा गया.

हिज्री १०८८ ता० २१ रबीउ़ल् अव्वल [विक्रमी १७३४ ज्येष्ठ कृष्ण ७ = ई० १६७७ ता० २४ मई] को दक्षिणके सूबेदार ख़ानेजहां बहादुरने क़िला नलदुर्ग फ़त्ह कर लिया; और इस वर्षमें हुक्म हुआ, कि जुलूसका जश्न मौक़ूफ़ किया जावे, और किसीकी नज़्र न ली जावे; चांदीकी दावातके एवज़ चीनी और पत्थरकी दवातें काममें लाई जावें. हिज्री १०८९ [विक्रमी १७३५ = ई० १६७८] में कीर्तिसिंहकी बेटी शाहज़ादह मुहम्मद अज़ीमको ब्याही गई. मुहम्मद शफ़ीअ़ख़ां दीवान बंगालेके लिखनेसे मालूम हुआ, कि शायस्तहख़ां अमीरुल उमराने सर्कारी एक किरोड़ बत्तीस लाख रुपया ग़बन कर लिया; उसके लिये हुक्म दिया, कि अमीरुल उमराके नाम बाक़ी लिखकर वुसूल किये जायं. हिज्री ता० ६ ज़िल्क़ाद

[विक्रमी पौष शुक्ल ८ = ई० ता० २१ डिसेम्बर] को जम्रोदका थानेदार महाराजा जश्वन्तसिंह मरगया. जोधपुरपर खालिसा भेजा गया. हिज्री १०९० ता० १८ मुहर्रम [विक्रमी १७३५ चैत्र कृष्ण ४ = ई० १६७९ ता० १ मार्च] को बादशाह अजमेर आये, और बीस दिन बाद लौट गये. इसी वक्त तमाम मुल्कसे जिज़्यह लेनेका हुक्म जारी किया गया, जिससे आम हिन्दुओंमें नाराज़गी फैली. हिज्री ता० ७ शअ्बान [विक्रमी १७३६ भाद्रपद शुक्ल ९ = ई० १६७९ ता० १५ सेप्टेम्बर] को बादशाह दोबारह अजमेर आया, और हिज्री ता० ७ ज़िल्क़ाद [विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ९ = ई० ता० १३ डिसेम्बर] को उदयपुरकी तरफ़ रवानह हुआ. हिज्री ता० ७ रमजान विक्रमी १७३६ आश्विन शुक्ल ९ = ई० १६७९ ता० १५ ऑक्टोबर] को शाहज़ादह आज़मके कीर्तिसिंह (१) की बेटीसे एक लड़का पैदा हुआ, जिसका नाम 'सुल्तान मुहम्मद करीम' रक्खा गया. हिज्री १०९१ ता० ७ जमादियुल आख़र [विक्रमी १७३७ आषाढ़ शुक्ल ९ = ई० १६८० ता० ७ जुलाई.] को बादशाहसे अर्ज़ हुआ, कि शिवा घोंसला हिज्री ता० २४ रबीउ़स्सानी [विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण १० = ई० ता० २५ मई] को मरगया. हिज्री १०९२ ता० २४ रजब [विक्रमी १७३८ श्रावण कृष्ण १० = ई० १६८१ ता० १० ऑगस्ट] को मुहम्मद कामबख़्शकी शादी मनोहरपुरके राव अमरसिंहकी बेटी कल्याणकुंवरके साथ हुई.

हमने इस मक़ामपर उस हालको छोड़ दिया है, कि "जोधपुरके महाराजा जश्वन्तसिंहके जम्रोदपर मरने बाद उनके दोनों पुत्र अजीतसिंह और दलथम्भन लाहौरमें पैदा हुए, फिर दिल्लीमें जाकर सोनंग व दुर्गदास वगैरह अजीतसिंहको ले निकले, और जश्वन्तसिंहकी रानियां कई सर्दारों समेत दिल्लीमें मारी गईं; मारवाड़में राठौड़ोंका फ़साद उठा, और उसके दबानेको बादशाही फ़ौजें आईं; यह सब अहवाल जोधपुरकी तवारीख़में लिखा जायगा. इसके सिवाय हिन्दुस्तानपर बादशाहका जिज़्यह लगाना, महाराणा राजसिंहका कठोर पत्र पहुंचनेपर उदयपुरकी तरफ़ चढ़ाई करना, महाराणा राजसिंहसे लड़ाइयोंका होना, व महाराणाके देहान्त बाद जयसिंहका गद्दीनशीन होना, बादशाहके शाहज़ादह अक्बरका बाग़ी होना, और मेवाड़की लड़ाइयोंका सुल्हके साथ ख़ातिमह करना वगैरह" जो महाराणा राजसिंह और जयसिंहके इतिहासमें लिखा गया है. इस लिये अब दक्षिणकी चढ़ाइयोंका ज़िक्र लिखा जाता है.

(१) कीर्तिसिंह आंबेरके महाराजा जयसिंह कछवाहेका छोटा बेटा था.

बादशाह आलमगीर हिज्री १०९२ ता० ५ रमज़ान [विक्रमी १७३८ भाद्रपद शुक्ल ७ = ई० १६८१ ता० २० सेप्टेम्बर] को अजमेरसे कूच करके हिज्री १०९३ ता० २३ रबीउ़ल अव्वल [विक्रमी चैत्र कृष्ण ९ = ई० १६८२ ता० ३ मार्च] को औरंगाबाद पहुंचे. हिज्री ता० १८ जमादियुल आख़र [विक्रमी १७३९ आषाढ़ कृष्ण ४ = ई० १६८२ ता० २६ मई] को बादशाहने शाहज़ादह आज़मको उसके बेटे बेदारबख़्त समेत बीजापुरकी तरफ़ रवानह किया. शाहज़ादह अक्बर शम्भासे बिगाड़ होजानेके सबब किश्तियोंमें सवार होकर ईरानकी तरफ़ रवानह हुआ. इमाम मस्क़तने उसे गिरिफ़्तार करके अपना मत्लब निकालनेके लिये आलमगीरके हवाले करना चाहा; लेकिन् ईरानके बादशाहका हुक्म पहुंचनेसे शाहज़ादहको उसने ईरान भेज दिया. ईरानके सुलैमान् शाह सफ़वीने शाहज़ादहकी बहुत ख़ातिर की, और कई वर्षों तक उसी देशमें रहने बाद हिरातके इलाक़हमें उसका देहान्त होगया.

इन्हीं दिनोंमें बादशाहने जशवन्तराव दक्षिणीको मरहटी फ़ौजका अफ़्सर बनाकर चार हज़ारी ज़ात और सवारके मन्सबसे लड़ाईके लिये तय्यार किया. हिज्री ता० २० जमादियुल आख़र [विक्रमी आषाढ़ कृष्ण ६ = ई० ता० २८ मई] को कान्हू दक्षिणी आलमगीरके पास चला आया, उसे बादशाहने पांच हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब देकर अपना मुलाज़िम बना लिया. हि० ता० ५ रमज़ान [विक्रमी भाद्रपद शुक्ल ७ = ई० ता० ११ ऑगस्ट] को बादशाहने मरहटोंपर ज़ियादह ग़ालिब करनेके लिये दन्दाराजपुर व जज़ीरेके हबशी याक़ूतख़ां और ख़ैरियतख़ांके लिये ख़िल्अ़त भेजा. हिज्री ता० ६ शव्वाल [वि० आश्विन शुक्ल ८ = ई० ता० ११ सेप्टेम्बर] को शाहज़ादह बहादुरशाहके बेटे मुइज़्ज़ुद्दीनको ख़िल्अ़त मोतियोंकी कंठी, घोड़ा और आठ हज़ारी ज़ात व छः हज़ार सवारका मन्सब देकर अहमदनगर भेजा.

हि० १०९४ ता० ११ शअ़्बान [विक्रमी १७४० श्रावण शुक्ल १२ = ई० १६८३ ता० ६ ऑगस्ट] को शिवा घोंसलाका मुन्शी क़ाज़ी हैदर बादशाहके पास हाज़िर हो गया, जिसको दो हज़ारी मन्सब, ख़िल्अ़त और दस हज़ार रुपया नक़्द दिया गया. इन्हीं दिनोंमें दिलेरख़ां अफ़्ग़ान ज़ियादह बीमार होकर मर गया. हि० ता० ३ शव्वाल [विक्रमी आश्विन शुक्ल ५ = ई० ता० २७ सेप्टेम्बर] को बादशाहने बड़े शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मको सांप गांवकी तरफ़ भेजा, और क़िला फ़त्ह हुआ, शाहज़ादह रामदरेकी घाटियोंमें जा घुसा; रसदकी यहांतक कमी

हुई, कि आदमियोंकी आंखोंमें आए और जानवरोंके हड्डियां बाक़ी थीं. बादशाही हुक्मसे सूरतके हाकिमने कुछ सामान पहुंचाया, लेकिन् गुज़ारा न होनेसे शाहज़ादह घबराकर अहमदनगरकी तरफ़ वापस चला आया. हि॰ ता॰ ३ ज़िल्हिज [वि॰ मार्गशीर्ष शुक्ल ५ = ई॰ २५ नोवेम्बर] को बादशाह अहमदनगर दाख़िल हुए. त्रिपुरा नदी और आश्तीकी तरफ़ हिज्री १०९५ ता॰ ९ मुहर्रम [विक्रमी १७४० पौष शुक्ल ११ = ई॰ १६८३ ता॰ ३० डिसेम्बर] को रूहुल्लाहख़ां और बहरामन्दख़ांको दक्षिणियोंपर भेजा, शिहाबुद्दीनख़ांने भी दक्षिणियोंपर कई हम्ले किये, और फ़त्ह पाई, जिससे बादशाहने उसको हिज्री ता॰ १५ मुहर्रम [वि॰ माघ कृष्ण १ = ई॰ १६८४ ता॰ ५ जैन्युअरी] को मुहम्मद ग़ाज़ियुद्दीनख़ां बहादुरका ख़िताब और उसके साथियोंमेंसे मुहम्मद आरिफ़को, मुजाहिदख़ां, मुहम्मद सादिक़ ख़ोस्तीको, सादिक़ख़ांका ख़िताब दिया. दतियाके राजा दलपत बुंदेले और उद्योतसिंह भदौरियाको ख़िल्अ़त, घोड़ा और हाथी बख़्शा गया.

गोलकुंडेके बादशाह अबुल हसनने जाफ़रख़ांको अपना एलची बनाकर बादशाहके पास भेजा, जो कि पहिले शाहज़ादह अक्बरका नौकर था, और जिसको अबुल हसनने ऐनुल्मुल्कका ख़िताब दिया था; आलमगीरने नाराज़ होकर उसे क़ैद करदिया, और कहा, कि अबुल हसन हमारी मस्ख़री करता है ! शम्भाकी दो औरतें, एक लड़की, तीन लौंडियां गिरिफ्तार होकर बहादुरगढ़में रक्खी गई. हिज्री १०९६ ता॰ २६ सफ़र [विक्रमी १७४१ माघ कृष्ण १२ = ई॰ १६८५ ता॰ ३ फ़ेब्रुअरी] को बादशाहने सुना, कि मरहटोंका नामी क़िला 'राहेड़ी' ग़ाज़ियुद्दीनख़ांने फ़त्ह करलिया, जिसपर ग़ाज़ियुद्दीनख़ांको फ़ीरोज़जंगका ख़िताब और नेज़ा, नक़्क़ारह दिया गया; उसके साथियों मेंसे १५० आदमियोंको ख़िल्अ़त बख़्शे गये. इसी सनकी हिज्री ता॰ १५ रबीउ़ल अव्वल [वि॰ फाल्गुण कृष्ण १ = ई॰ ता॰ २१ फ़ेब्रुअरी] को ख़वासोंका दारोग़ा बख़्तावरख़ां, जो एक आलिम आदमी था, मरगया. हिज्री १०९६ ता॰ २ जमादियुल अव्वल [विक्रमी १७४२ चैत्र शुक्ल ४ = ई॰ १६८५ ता॰ ७ एप्रिल] को बादशाही फ़ौजने बीजापुरको जा घेरा.

इन्हीं दिनोंमें हैदराबादके बादशाह अबुल हसनका फ़र्मान उसके वकीलोंके पास इस मज़्मूनका पकड़ा गया, कि " तुमको जो कोतवालीमें क़ैद कर रक्खा है, इसकी कुछ फ़िक्र मत करो, जल्दी बदला लिया जायगा; और आज तक हज़रत आलमगीरकी बुज़ुर्गीका ख़याल रक्खा गया, लेकिन् हज़रतने मुझको भी बीजापुरके सिकन्दरकी तरह लावारिस बच्चा समझकर दबाया है, तो लाचार हिम्मत करनी पड़ी; अब

शम्भा राजा भी बहुतसी फ़ौज लेकर फैल जायगा, और ख़लीलुल्लाहख़ांको चालीस हज़ार सवार देकर मुक़ाबलेको भेजताहूं, देखें! हज़रत कहां कहां मुक़ाबला करते फिरेंगे". यह काग़ज़ बादशाहके पास पेश हुआ, जिसपर उसने अपने बड़े शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मको जंगी फ़ौजके साथ हैदराबाद गोलकुंडेके मुहासरेको रवानह किया.

ख़फ़ीख़ां अपनी तवारीख़ 'मुन्तख़बुल्लुबाब' में लिखता है, कि पेश्तर राजा रामसिंह कछवाहे और ख़ानेजहां बहादुरको उसके बेटों समेत रवानह किया था, और शाहज़ादहको पीछे, लेकिन् सबसे पहिले आलमगीरने हैदराबादपर चढ़ाईका बहाना ढूंढ़नेके लिये जेलख़ानहके दारोग़ा मिर्ज़ा मुहम्मदको, जो बड़ा बोलने वाला था, अबुल हसन कुतुबुलमुल्कके पास इस मत्लबसे भेजा, कि उसके पास, जो बहुत बड़े क़ीमती हीरे हैं, वे बादशाही हुज़ूरमें भेज देवे; मिर्ज़ा मुहम्मदको आलमगीरने ख़ानगी हिदायत करदी थी, कि हम तुमको पत्थरके टुकड़ोंके लिये नहीं भेजते हैं, मुल्कगीरीके मत्लबसे भेजे जातेहो. जब यह शख़्स हैदराबादमें पहुंचा, तो अबुल हसन बहुत ख़ातिरके साथ पेश आया, कुल जवाहिर उसके साम्हने रख दिये, और कहा, कि हमने अच्छे अच्छे जवाहिर पेश्तर बड़े हज़रत (शाहजहां) के वक़्में भेज दिये थे; अब इनके सिवाय और नहीं हैं. आख़िरकार मिर्ज़ा मुहम्मद बहुत सख़्त कलामीसे पेश आया; तब अबुल हसनने कहा, कि हम भी एक इलाक़ेके बादशाह हैं, इस तरहकी सख़्त कलामीका बर्ताव न होना चाहिये. तब मिर्ज़ा मुहम्मदने कहा, कि बादशाहका ख़िताब अपने नामपर आपको रखना ज़ेबा नहीं है; जिसपर अबुल हसनने कहा कि अगर हम 'बादशाह' न कहलावें, तो हज़रत 'शाहन्शाह' किस तरह होसक्ते हैं. इस कलामसे मिर्ज़ा मज़्कूर ला जवाब होगया. ख़फ़ीख़ां लिखता है, कि यह सब बातें मैंने मिर्ज़ासे सुनकर लिखी हैं. दूसरा- आलमगीरने यह क़ुसूर क़ाइम किया, कि मादनापंत पंडितको विज़ारत देकर मुसलमानोंपर ज़ुल्म रवा रक्खा है.

इस तरह अबुल हसनने आलमगीरकी चढ़ाई रोकनेका कुछ और इलाज न देखा, तो लाचार इब्राहीमख़ांको ख़लीलुल्लाहख़ांका ख़िताब देकर शैख़ मिन्हाज और रुस्तम राव समेत चालीस हज़ार सवारके साथ शाहज़ादह शाहआलमसे मुक़ाबला करनेको भेजा. इस मुक़ाबलेमें आलमगीरकी फ़ौज घिर गई थी, लेकिन् आंबेरके राजा रामसिंहका मस्त हाथी मुक़ाबिल किया गया, जिससे दक्षिणी फ़ौजको लाचार होकर हटना पडा; और ख़्वाजह अबुलमकारिमने क़िला सीरम फ़त्ह कर लिया; परंतु

अबुल हसनके वज़ीर मादनापंतने दस हज़ार सवार अपनी फ़ौजकी मददके लिये और भेज दिये, जिससे दोबारह लड़ाई शुरू होकर तीन दिन तक सख़्त हम्ले हुए; आलमगीरकी फ़ौजके हिम्मतख़ां बहादुर, सय्यद अब्दुल्लाख़ां, कृष्णगढ़का राजा मानसिंह राठौड़ और सआदतख़ां ज़ख़्मी हुए, आख़िरमें दक्षिणी भाग निकले; लेकिन् ख़बरनवीसोंने बादशाहको लिख भेजा, कि दुश्मनोंका पीछा नहीं किया गया; जिसपर आलमगीरने इन्आमके बदले उलहना लिख भेजा, जिससे फ़ौजी अफ्सरोंके दिल टूट गये. शाहज़ादह मुअज़्ज़मने सुलह करना चाहा, और ख़लीलुल्लाहख़ां भी मंजूर करता था, लेकिन् रुस्तम राव वग़ैरहने नहीं माना, और लड़ने लगे; आख़िरकार दक्षिणी फ़ौज भागकर हैदराबाद गई, शाहज़ादहने पीछा किया; इस शिकस्तकी तुहमत रुस्तम रावने ख़लीलुल्लाहख़ांपर रक्खी, जिससे वह तीस चालीस हज़ार फ़ौज समेत शाहज़ादहसे आमिला. अबुल हसन हैदराबाद छोड़कर गोलकुंडेके क़िलेमें जा छिपा, और शाहज़ादह मुअज़्ज़मने उस शहरपर क़ब्ज़ा करलिया.

शाहज़ादहने अपनी नेक आदतके मुवाफ़िक़ इस बातपर अबुल हसनके पास सुलहका पैग़ाम भेजा, कि मादनापंत और आकना पंडित वज़ीरोंको क़ैद करके हमारे पास भेज दो, सीरम व रामगीरका इलाक़ह बादशाही क़ब्ज़ेमें दे दो, और मामूली नज़्रानेके सिवाय एक किरोड़ बीस लाख रुपया देकर अपने क़ुसूरोंकी मुआफ़ी चाहो; जिसपर अबुल हसनने सब बातें मंजूर करके दोनों वज़ीरोंको देना नहीं चाहा; लेकिन् पहिले बादशाह अब्दुल्लाह क़ुतुबुलमुल्ककी औरतोंने उन दोनों पंडितोंको मरवा डाला. इससे फ़साद दूर हुआ. यह सुनकर आलमगीरने शाहज़ादहको बुला लिया. यह सुलह आलमगीरकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ नहीं थी, क्यौं कि वह हैदराबादकी रियासतको ज़ब्त करना चाहता था.

इन्हीं दिनोंमें बीजापुरको शाहज़ादह आज़म घेरे हुए था, परंतु क़िले वालोंके हम्ले और रसदकी कमी व बीमारी वग़ैरह होनेसे निहायत तक्लीफ़ थी, जिससे सब सर्दारोंने मुक़ाबला छोड़ देनेकी सलाह दी; लेकिन् शाहज़ादहने अपनी जवांमर्दीसे क़ुबूल नहीं किया. यह सुनकर आलमगीरने रसदकी मदद देकर शाहज़ादहके पास ग़ाज़ियुद्दीनको भेजा, और शिवाके दामाद अचलाको हिज्री १०९७ ता० १६ रबीउ़लअव्वल [विक्रमी १७४२ फाल्गुण कृष्ण २ = ई० १६८६ ता० ९ फ़ेब्रुअरी] को पांच हज़ारी ज़ात और दो हज़ार सवारका मन्सब, नेज़ा, नक़ारह और हाथी दिया; क्यौं कि यह शम्भासे लड़कर आया था. इसके बाद बादशाह ख़ुद

बड़ी फ़ौजके साथ हि० ता० १४ शअ़्‌बान [विक्रमी १७४३ आषाढ़ शुक्ल १५ = ई० १६८६ ता० ६ जुलाई] को बीजापुर जा पहुंचे, और बीकानेरके राव अनोपसिंहने भी हाज़िर होकर ख़िल्अ़त पाया. हि० ता० ११ शव्वाल [विक्रमी भाद्रपद शुक्ल १३ = ई० ता० १ सेप्टेम्बर] को महाराणा जयसिंहका छोटा भाई भीमसिंह बादशाहके पास पहुंचा.

अचानक हादिसह.

अब हम कुछ बयान उस सख़्त हादिसहका करते हैं, जो कि इस तवारीख़के यहां तक पहुंचनेपर विक्रमी १९४१ मार्गशीर्ष कृष्ण १३ [हि० १३०२ ता० २७ मुहर्रम = ई० १८८४ ता० १५ नोवेम्बर] को हमारे ऊपर पड़ा. महाराजा धिराज महाराणा श्री सज्जनसिंहकी बीमारीके सबब, जो जोधपुर तशरीफ़ ले गये थे, उनके ज़ियादह बीमार होनेकी ख़बर सुनकर कर्नेल चार्ल्स वाल्टर साहिब रेज़िडेएट बहादुर मेवाड़की सलाहके मुवाफ़िक़ उक्त तारीख़के दिन मुझको भी जोधपुर जाना पड़ा. इसी दिनसे तवारीख़का काम बन्द रहा, और मैं जल्द श्री महाराजा धिराजको लेकर उदयपुर आया. हाय! सद अफ़्सोस, कि विक्रमी १९४१ पौष शुक्ल ६ [हिज्री १३०२ ता०४ रबीउ़लअव्वल = ई० १८८४ ता० २३ डिसेम्बर] को रातके बारह बजे इस तवारीख़के क़द्रदान उक्त महाराजा धिराजका देहान्त हो गया, और मेरे ख़याल व उनकी क़द्रदानीके औज्का चिराग़ एक दम गुल हो गया. आजकी तारीख़ यानी विक्रमी माघ कृष्ण ९ [हिज्री ता० २३ रबीउ़ल-अव्वल = ई० १८८५ ता० १० जैन्युअरी] तक, इस किताबका मुसव्वदा अंधेरेमें पड़ा रहा. आज फिर उनके जा नशीन महाराजा धिराज महाराणा फ़त्हसिंहकी आज्ञाके अनुसार इसको शुरू करता हूं; अगर ज़िन्दगी रही, तो मैं इस नागहानी बलाका हाल महाराजा धिराज महाराणा श्री सज्जनसिंहके वृत्तान्तमें मुफ़स्सल लिखूंगा.

अभी तक इस हालके लिखनेकी ताक़त मेरी ज़बानमें नहीं है, ज़ियादह अफ़्सोस इस बातका है, कि उन क़द्रदानने इस कामको किस ज़ोर शोरके साथ शुरू करवाया था, इसे पूरा न देख सके, और उनकी ज़िन्दगी पूरी होगई.

अब जहां तक दममें दम है, मैं उनके इरादेको पूरा करूंगा, क्योंकि हमारे वर्तमान स्वामी भी उनके इरादेको पूरा करनेमें दिली मददके साथ हुक्म देते हैं.

अब फिर आलमगीर बादशाहका बाक़ी हाल लिखा जाता है-

हिज्री १०९७ ता० ४ ज़िल्क़ाद [विक्रमी १७४३ आश्विन शुक्ल ६ = ई० १६८६ ता० २४ सेप्टेम्बर] को बीजापुरका क़िला फ़त्ह हुआ, और सिकन्दर-अली आदिलशाह, आलमगीरके पास लाया गया; वह ख़ास ख़िल्अ़त, जड़ाऊ ख़न्जर, फूलकटारा, मोतियोंकी कंठी, 'सिकन्दरअलीख़ां' का ख़िताब और एक लाख रुपया सालाना गुज़ारेके लिये पाकर नज़र क़ैदके तौर शाही डेरोंके पास रक्खा गया. सिकन्दरअलीके सर्दार अब्दुर्रऊफ़ख़ां व शिर्ज़हख़ां बादशाहके पास लाये गये, और ख़िल्अ़त, तलवार, जड़ाऊ ख़न्जर, मोतियोंकी कंठी, घोड़ा, हाथी, छः हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब और दिलेरख़ां व रुस्तमख़ांका ख़िताब दिया गया; इसके सिवाय अपने वज़ीर और सर्दारोंको भी बहुतसा इन्आ़म इक्राम दिया. हिज्री ता० १७ ज़िल्क़ाद [विक्रमी कार्तिक कृष्ण ३ = ई० ता० ७ ऑक्टोबर] को बादशाहने सिकन्दरअली बीजापुरीको बुलाकर हीरेका सिर्पेच और बैठनेकी इजाज़त दी; रूहुल्लाहख़ांको बीजापुरकी सूबेदारी और बीकानेरके राजा अनोपसिंहको सक्खरकी फ़ौज्दारी दी, और आप हि० ता० २२ ज़िल्हिज [विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ८ = ई० ता० ९ नोवेम्बर] को बीजापुरसे चला, ४ दिन बाद शिवाके बेटे शम्भाकी फ़ौज, जो मंगलवेढ़ेकी तरफ़ फिरती थी, उसकी सज़ाके लिये एतिक़ादख़ांको भेजा.

बादशाह हिज्री ता० २५ ज़िल्हिज [विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ११ = ई० ता० १२ नोवेम्बर] को शोलापुर दाख़िल हुए. अब आलमगीरको हैदराबाद छीननेकी फ़िक्र हुई. बीजापुरकी लड़ाईमें शिहाबुद्दीनख़ांको "ग़ाज़ियुद्दीनख़ां बहादुर, फ़ीरोज़जंग, फ़र्ज़न्द औरंग," का ख़िताब दिया गया, जो उदयपुरकी लड़ाईमें हसनअलीख़ांकी ख़बर लेनेके वास्ते पहाड़ोंमें भेजा गया था, और उसी वक़्से इसकी तरक़्क़ी शुरू हुई, होते होते इस दरजेको पहुंचा, कि उसीकी औलादमें अब निज़ाम हैदराबाद हैं, जो हिन्दुस्तानी रईसोंमें बड़े रईस गिने जाते हैं. उसको बादशाहने हैदराबादका मातह्त क़िला इब्राहीमगढ़ लेनेके लिये फ़ौज समेत नीचे लिखे सर्दार साथ देकर रवानह किया. दिलेरख़ां, शिर्ज़हख़ां बीजापुरी,

जमशेदख़ां, मालूजी घोरपड़ा मरहटा, रामपुरेका राव गोपालसिंह चंद्रावत, कोटेका हाड़ा किशोरसिंह, कमालुद्दीनख़ां, शिवसिंह, सफ़्शिकनख़ां, दतियाका राव दलपंत बुंदेला, आक़ा अलीख़ां, अब्दुलक़ादिरख़ां, जहांगीरकुलीख़ां, उद्योतसिंह भदौरिया, सर्वराहख़ां चेला वग़ैरह. इन सबको इन्आम, इक्राम, ख़िल्अ़त वग़ैरह मिले थे.

बादशाहने कुतुबुल मुल्कपर चढ़ाई करनेका यह बहानह निकाला, कि उसने हिन्दुओंके हाथसे ग़रीबोंको तक्लीफ़ पहुंचाई, और एक लाख होन (यानी पांच लाख रुपये) शम्भाके पास इस मत्लबसे भेजे, कि अपनी फ़ौजकी दुरुस्ती करके बादशाही लोगोंसे छेड़ छाड़ करे. हमारी समझ और मआसिरे आलमगीरी व मुन्तख़बुल्लुबाब वग़ैरह किताबोंसे भी यही पाया जाता है, कि कोई तुहमत रखकर रियासत छीन लेनी चाही.

हिज्री १०९८ ता० २९ मुहर्रम [विक्रमी १७४३ पौष कृष्ण ३० = ई० १६८६ ता० १५ डिसेम्बर] को बादशाह गुलबर्गाकी तरफ़ चला, बिचारे अबुल-हसनने बहुतसे नज़ाने और तुहफ़े वग़ैरह भेजकर हर तरह लाचारियां कीं, लेकिन् आलमगीरने एक न सुनी. ग़ाज़ियुद्दीनख़ां फ़ीरोज़जंगने इब्राहीमगढ़का क़िला फ़त्ह कर लिया. हिज्री ता० २४ रबीउ़लअव्वल [विक्रमी फाल्गुण कृष्ण १० = ई० १६८७ ता० ७ फ़ेब्रुअरी] को बादशाहने गोलकुंडेसे एक कोसके फ़ासिले-पर क़ियाम किया. ग़ाज़ियुद्दीनख़ांका बाप क़िलीचख़ां गोलकुंडेके दर्वाज़े तक पहुंचा, वहां कन्धेमें गोली लगी, जिससे तीन रोज़ बाद मरगया; (उसने अपने ख़ूनसे उस ज़मीनको सींचा, जिसकी औलाद अब वहां राज्य करती है) आलमगीर लड़ाईमें मश्ग़ूल था, और अकाल, मरी व हथियारोंसे हज़ारों आदमी मरते थे, क़िले वालोंसे मिलावटके शुब्हेपर शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मको बादशाहने क़ैद कर दिया. शाहज़ादह का कोई क़ुसूर नहीं था, सिर्फ़ अपनी नेक आदतके मुवाफ़िक़ वह सुलह चाहता था.

शाहज़ादह आज़म बादशाहके पास आगया, जिसकी तद्बीरसे क़िलेके लोगोंने मिलकर बादशाही मुलाज़िमोंको क़िलेमें बुलाया, और अबुल हसनको गिरिफ़्तार करा दिया. उसी दिनसे दक्षिणी बादशाहतका नाम व निशान दूर हुआ; इस बातसे आलमगीर बहुत ख़ुश हुआ होगा; कि हिमालयसे रामेश्वर तक और बल्ख़ व बदख़्शांसे कड़गांव (आसाम) तक हिन्दुस्तानमें मुग़लियह ख़ान्दानकी हुकूमतका डंका बजने लगा; लेकिन् इन ताक़तों (रियासतों) के टूट जानेसे मरहटोंने ग़ल्बह करके मुग़ल बादशाहोंको बेपरका परिन्दा बना दिया, और खसोट

व छीना झपटीसे कुल हिन्दुस्तानियोंका नाकमें दम करदिया. बादशाह आ-लमगीरने शाहज़ादह मुहम्मद आज़मको बिलगांव, और ग़ाज़ियुद्दीनख़ां फ़ीरोज़जंगको आदूनीकी तरफ़ रवानह किया. यह दोनों क़िले, जो हवशी और मरहटोंके क़ब्ज़ेमें थे, फ़त्ह कर लियेगये; आदूनीके मसऊद हबशीको सात हज़ारी मन्सब देना चाहा, परन्तु उसने नौकरी करनेसे इन्कार किया.

हिजी ११०० ता० १ जमादियुलअव्वल [विक्रमी १७४५ फाल्गुण शुक्ल ३ = ई० १६८८ ता० २२ फ़ेब्रुअरी] को शैख़ निज़ाम हैदराबादी, जिसे आलमगीरने मुक़र्रबख़ांका ख़िताब दिया था, बड़ी जमइयतके साथ पर्नालेकी तरफ़ भेजा गया; उसको मुख़बिरोंने ख़बर दी, कि शम्भा पर्नालेसे खेलनाके क़िलेकी तरफ़ बैरागियोंका फ़साद मिटानेको गया है, और वहांसे संगमेश्वरको, जहां बान गंगाका तीर्थ समुद्रसे एक मंज़िल पर है, और जहां शम्भाके दीवान कलूशाने (जिसका नाम ख़फ़ीख़ां कवि कलश लिखता है, और हमको वही सहीह मालूम होता है) मकान और बाग़ बनवाये थे, गया; और मज़्हबी रस्में अदा करनेके बाद ऐश, इश्रत व शराब पीनेमें मशगूल है. यह सुनकर फ़ौजी क़ाफ़िलेको मुक़र्रब-ख़ांने कोलापुरके पास छोड़ा, और चुनेहुए सिपाहियोंको साथ लेकर ४५ कोसकी कठिन पहाड़ियोंमें बड़ी मुश्किलोंसे उस मकानके पास पहुंचा, जहां शम्भा था; उस वक्त दो हज़ार सवार और एक हज़ार पैदल उसके साथ थे.

शम्भाके नौकरोंने उसे ग़फ़लतकी नींदसे जागने और होश्यार होनेको कहा, कि बादशाही फ़ौज आपहुंची ! पर वह अय्याश शराबके नशेमें चूर था, जवाब दिया, कि यहां बादशाही फ़ौज नहीं आसक्ती, इन बद कलाम लोगों से कहदो, कि इस तरहकी झूठी ख़बर लायेंगे, तो ज़बान काटली जावेगी; वे बिचारे चुप हो रहे. मुक़र्रबख़ां चुने हुए सिपाहियों समेत आ पहुंचा; शम्भा और उसके वज़ीरके होश ख़ता हुए, लेकिन् तीन चार हज़ार सवार, जो वहां मौजूद थे, उन्हें लेकर मुक़ाबला किया, मुक़ाबलेके वक्त वज़ीर कवि कलशके तीर लगा, जिससे वह गिर पड़ा; बादशाही फ़ौजके हाथसे बहुतसे मरहटे मारे गये, मरहटी फ़ौज भागने लगी; आख़िर कवि कलश और शम्भा भी एक मकानमें जा छिपे. मुक़र्रबख़ांका बेटा इख़्लासख़ां दर्वाज़ेके भीतर घुस गया, शम्भाके दो तीन आदमी मुक़ाबलेसे पेश आये, वह मारे गये. इख़्लासख़ां मकानमें अपने साथियोंको लेकर, जहां शम्भा था, जा पहुंचा; और शम्भा व कवि कलशको पकड़ लिया. फिर शम्भाकी स्त्री व उसके बेटे साहू को २५ रिश्तेदारों समेत गिरिफ्तार किया;

और मुक़र्रबखांके पास शम्भाके बाल पकड़े हुए लाया. मुक़र्रबखांने हाथीपर डाल कर वहांसे कूच किया. बहुतसे मरहटे सर्दार गिरिफ्तार हुए. किसी मरहटे क़ौमके सर्दारने उसके छुड़ानेकी कोशिश नहीं की, क्योंकि शम्भाकी तेज़ मिज़ाजी से सब लोगोंका नाकमें दम था, और ज़ियादह इसका सबब कविकलश वज़ीर था.

मुक़र्रबखां बे खौफ़ शम्भाको लिये हुए सहीह सलामत हिज्री ११०० ता० ५ जमादियुल अव्वल [विक्रमी १७४५ फाल्गुण शुक्ल ७ = ई० १६८९ ता० २६ फ़ेब्रुअरी] को बादशाही लश्करके पास, जो बहादुरगढ़में था, आ पहुंचा. बादशाह आलमगीरको शम्भाकी गिरिफ्तारीसे जितनी खुशी हुई, उतनी बीजापुर और गोलकुंडेकी फ़त्हमें नहीं हुई थी. बादशाहने हुक्म दिया, कि हमीदुद्दीनखां लश्करका कोतवाल मुक़र्रबखांकी पेश्वाईको जावे, और शम्भा लुटेरेको बेड़ियां और हंसीका लिबास पहिनाकर ऊंटकी (१) सवारी पर फ़ौजमें लावे. लाखों आदमियोंकी भीड़ भाड़ शम्भाको देखनेके लिये इकट्ठी हुई थी. शम्भाके आगे आगे नक़ारे और नफ़ीरी बतौर हंसीके बजती थी.

बादशाह आलमगीरने आम दर्बार करके उसको अपने साम्हने बुलाया, जब वह आया, बादशाहने नमाज़ अदा की, और खुदाका शुक्र बजा लाया; शम्भाके प्रधान कविकलशने अपने मालिकको एक श्लोक सुनाया, जिसका यह मत्लब था, कि ए राजा देख ! तेरे प्रतापको, कि बादशाह तेरे साम्हने तख्तसे उतर गया. शम्भा और कविकलश दोनों मुसल्मानोंके पैग़म्बर व बादशाहको गाली देने लगे: बादशाहने मुसलमान होजानेपर जान बख़्शीका वादह किया, शम्भा बोला, कि अपनी बेटीके साथ शादी करदो, तो ऐसा होसक्ता है. (सच है मरता क्या नहीं करता) शम्भा चाहता था, कि किसी तरह मुझे जल्दी मरवा डालें. बादशाहने ज़बानें कटवाकर गर्म लोहेकी सलाखोंसे अन्धा करवा दिया. हिज्री ता० २९ जमादियुल अव्वल [विक्रमी चैत्र कृष्ण ३० = ई० ता० २१ मार्च] को उन दोनोंके सिर कटवाए गये, और शम्भाकी मा, औरतें और उसके बेटों साहू, मदनसिंह, उद्योतसिंहको इज़्ज़तसे असदखां वज़ीरके पास डेरोंमें रहनेकी इजाज़त मिली; सबको तसल्ली देकर मुनासिब तन्ख्वाहें करदीं; कुछ दिनोंके बाद साहूको सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब दिया, उस समय साहू नौ वर्षका था. शम्भाके छोटे भाई

(१) दक्षिणी लोग ऊंट और गधेकी सवारीको एकसा समझते हैं.

रामराजा व सन्ता वग़ैरह मरहटोंने बड़ा फ़साद मचाया, यहां तक कि आलमगीरको आख़िर वक़्त तक लड़ाईके लिये तय्यार रहना पड़ा.

हिज्री ११०१ ता० १५ मुहर्रम [विक्रमी १७४६ मार्गशीर्ष कृष्ण १ = ई० १६८९ ता० ३० ऑक्टोबर] को एतिक़ादख़ांने राहेड़ीके क़िलेको फ़त्ह किया, शम्भाका भाई रामराजा वहांसे भागा, उसके कुटम्बको बादशाही नौकरोंने क़ैद कर लिया, फिर एतिक़ादख़ांके आनेपर हिज्री ता० २० सफ़र [विक्रमी पौष कृष्ण ६ = ई० ता० ३ डिसेम्बर] को इस कारगुज़ारीके एवज़में एक हज़ारी ज़ात और सवारकी तरक़्क़ीसे तीन हज़ारी ज़ात और दो हज़ार सवारका मन्सब, ज़ुल्फ़िक़ारख़ांका ख़िताब, और इन्आ़म वग़ैरह दिया. हिज्री ११०२ शव्वाल [विक्रमी १७४८ आषाढ़ = ई० १६९१ जुलाई] में शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मकी मा 'नव्वाब बाई' के गुज़रनेकी ख़बर आई, इसी वर्षमें शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मको क़ैदसे छोड़ा. हिज्री ११०३ ता० ७ रबीउ़ल आख़र [विक्रमी १७४८ पौष शुक्ल ९ = ई० १६९१ ता० २९ डिसेम्बर] को मस्जिदमें एक आदमी तल्वार निकालकर बादशाहकी तरफ़ दौड़ा, सिपाहियोंने गिरिफ़्तार करके कोतवालके हवाले किया. हिज्री ता० १ ज़िल्क़ाद [विक्रमी १७४९ श्रावण शुक्ल ३ = ई० १६९२ ता० १७ जुलाई] को बख़्शियुल मुल्क रूहुल्लाहख़ांका देहान्त हुआ, उसके एवज़ बह्रहमन्दख़ां मीरबख़्शी, और मुख़्लिसख़ां दूसरा बख़्शी किया गया.

शाहज़ादह कामबख़्शको आलमगीरने क़ैद किया था, जिसका हाल इस तरहपर है :- हिज्री ११०४ ता० १ रमज़ान [विक्रमी १७५० वैशाख शुक्ल ३ = ई० १६९३ ता० ८ मई] को ज़ुम्दतुलमुल्क असदख़ां वज़ीरको हुक्म हुआ, कि बह्रहमन्दख़ां समेत शाहज़ादह कामबख़्शके साथ 'वाकनखेड़ा' का मुहासरह करे, लेकिन् फिर ज़ुल्फ़िक़ारख़ांके पास पहुंचनेका हुक्म होगया. रास्तह ही मेंसे शाहज़ादह और सर्दारोंमें नाइत्तिफ़ाक़ी होने लगी, 'जंजी' पहुंचनेपर लश्करख़ां वग़ैरहसे भी शाहज़ादहकी ज़ियादह नाराज़गी हुई, कई बादशाही नौकर मरहटे रामराजासे मेल करने लगे. यह ख़बर बादशाहके पास पहुंची, वहांसे हुक्म आया, कि वज़ीर असदख़ां शाहज़ादहको नज़रबन्द रक्खे, और दलपत बुंदेला उसका निगहबान रहे. शाहज़ादहने रामराजाके पास भाग जाना चाहा, परंतु ख़बर होजानेसे वज़ीर ने पक्का बन्दोबस्त कर दिया. इस आपसकी फूटसे मरहटोंने भी बड़े ज़ोर शोरके साथ हम्ले किये; इस्माईलख़ां घायल होनेसे मरहटोंका क़ैदी बना, और नुस्रतजंगने अपने थोड़े ही सवारोंसे बड़ी बहादुरीके साथ दुश्मनोंको रोका; उनकी एक हज़ार

घोड़ियां छीन लीं; नुस्रतजंग अपने बाप असदख़ांके पास पहुंचा, और शाहज़ादहको हिरासतके साथ बादशाहके पास लाये.

हिज्री ११०५ ता० २१ रजब [विक्रमी १७५० चैत्र कृष्ण ७ = ई० १६९४ ता० १७ मार्च] को शाहज़ादह आज़मके एक नौकर और बारहके एक सय्यदसे लड़ाई होगई, सय्यद मारा गया. कुल सय्यदोंने इत्तिफ़ाक़के साथ शाहज़ादहके लश्करमें जाकर उनके नौकर अमानुल्लाको घेर लिया, दोनों तरफ़से फ़सादकी सूरत हुई. अर्ज़ होनेपर बादशाहने हुक्म दिया, कि तोपखानहका दारोग़ा मुख़्तारख़ां मौक़ेपर जाकर सुलह करादे; लेकिन् उसकी कोशिशसे कुछ फ़ायदह न हुआ, दूसरे दिन तमाम सय्यद बादशाही कचहरीके दर्वाज़ेपर आ खड़े हुए; हुक्म दिया गया, क़ाज़ीके पास चले जायें, शर्अ़के मुवाफ़िक़ फ़ैसलह हो जायगा. इन लोगोंने जवाब दिया, कि हम क़ाज़ीको नहीं जानते, आप फ़ैसलह कर लेंगे. यह बात सुन्ते ही बादशाहको गुस्सह आया, और हुक्म दिया, कि जितने सय्यद ख़ास चौकी और अर्दलीमें नौकर हैं, सब मौक़ूफ़ किये जायें, और कभी दर्बारके आस पास न बैठने पायें; बहुतसोंने बादशाही सर्दारोंकी सिफ़ारिशसे कुसूर मुआफ़ कराये, और जिन्होंने फ़साद करना चाहा, वह तोपख़ानहसे उड़ा दिये गये. इससे मालूम होता है, कि आलमगीरको किसी क़ौमकी रिआयत न थी. हिज्री ता० १ शव्वाल [विक्रमी १७५१ ज्येष्ठ शुक्ल ३ = ई० १६९४ ता० २७ मई] को शायस्तहख़ां मर गया, उसके एवज़ ग्वालियरका फ़ौज्दार स्वालिहख़ां, फ़िदाईख़ांका ख़िताब पाकर आगरेका सूबेदार बनाया गया. हिज्री ११०६ ता० २७ सफ़र [विक्रमी १७५१ कार्तिक कृष्ण १३ = ई० १६९४ ता० १६ ऑक्टोबर] को बड़े शाहज़ादह मुअज़्ज़मका मन्सब चालीस हज़ारी ज़ात और चालीस हज़ार सवार किया गया. इसी दिन महाराणा राजसिंहका छोटा बेटा राजा भीम, जो पांच हज़ारी मन्सबदार था, बादशाही लश्करमें मरगया. हिज्री ११०७ ता० १ मुहर्रम [विक्रमी १७५२ श्रावण शुक्ल ३ = ई० १६९५ ता० १३ ऑगस्ट] को रूहुल्लाहख़ांकी बेटीसे मुहम्मद अज़ीमके एक बेटा रूहुलक़ुद्स पैदा हुआ; दूसरा- हि० ता० २२ मुहर्रम [विक्रमी भाद्रपद कृष्ण ८ = ई० ता० २ सेप्टेम्बर] को शाहज़ादह बेदारबख़्त बहादुरके मुख़्तारख़ांकी बेटीके पेटसे एक लड़का पैदा हुआ, जिसका नाम फ़ीरोज़बख़्त रक्खा गया. इसी सन्में सन्ता मरहटे से साम्हना करनेके लिये क़ासिमख़ां, ख़ानहज़ादख़ां, सफ़्शिकनख़ां, असालतख़ां,

मुरादख़ां वग़ैरह को भेजा, और कुछ मुक़ाबला होनेके बाद बादशाही सर्दार शिकस्त खाकर एक गढ़ीमें जा छिपे, गढ़ीकी रसद ख़त्म होनेपर क़ासिमख़ां, तो अफ़ीम न मिलनेसे मरगया, बाक़ियोंने बीस लाख रुपया और कुल माल अस्बाब देकर छुटकारा पाया. फिर बिसवापट्टनसे हिम्मतख़ांने सन्ताको आ दबाया, लेकिन् वह भी मारा गया, और उसका माल अस्बाब मरहटोंके क़ब्ज़ेमें आया.

हिज्री ११०९ ता० १९ जमादियुल अव्वल [विक्रमी १७५४ पौष कृष्ण ५ = ई० १६९७ ता० ३ डिसेम्बर] को ख़ानेजहां बहादुर मर गया. हिज्री जमादियुल आख़र [विक्रमी माघ = ई० १६९८ जैन्युअरी] में रामराजाका क़िला 'जंजी' जो कर्नाटक देशमें बड़ा मज़्बूत और मशहूर था, बादशाही फ़ौजने फ़त्ह कर लिया; रामराजा और सन्ता भाग गये, उनकी चार औरतें, तीन लड़के, दो लड़कियां और कई रिश्तेदार क़ैद किये गये. इसी सन्के हि० ता० २७ शव्वाल [विक्रमी १७५५ प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण १३ = ई० १६९८ ता० ९ मई] को अमीरख़ां काबुलका सूबेदार दुन्यासे उठ गया, और उसके एवज़ बड़ा शाहज़ादह "शाह आलम" काबुलकी सूबेदारीपर भेजा गया. इसी सन्की हि० ता० २० ज़िल्क़ाद [विक्रमी द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण ६ = ई० ता० १ जून] को दुर्गदास राठौड़ मुहम्मद अक्बरके बेटे बलन्दअख़्तर और एक बेटीको, जो अक्बरकी बग़ावतके वक़्से राठौड़ोंके पास थे, और जिन्हें उन्होंने बड़ी इज़्ज़तसे पाला था, अपने कुसूरकी मुआफ़ीका ज़रीआ समझकर साथ ले आया; गुजरातके सूबेदार शजाअतख़ांकी सिफ़ारिशसे बादशाही दर्बारमें हाज़िर हुआ. हाज़िरीके वक़ हाथ बंधे हुए थे, हुक्मके मुवाफ़िक़ खोल दिये गये, उसे तीन हज़ारी ज़ात और ढाई हज़ार सवारका मन्सब बख़्शा गया; और बलन्दअख़्तरको ख़िल्अ़त और सर्पेच वग़ैरह इनायत हुआ.

हिज्री १११० ता० १८ जमादियुल्आख़र [विक्रमी १७५५ पौष कृष्ण ४ = ई० १६९८ ता० २२ डिसेम्बर] को शाहज़ादह कामबख़्शका दिली ख़ैरख़्वाह नौकर, ख़्वाजह याक़ूत जो हमेशह नेक नसीहत दिया करता था, उसके एक दिन शाहज़ादहके बदमआश नौकरोंमेंसे किसीने एक तीर मारा, याक़ूतने हुज़ूरमें फ़र्याद की; बादशाहके हुक्मसे शाहज़ादहके पांच मोतबर आदमी क़ैद किये गये; उनमेंसे शाहज़ादहका धायभाई गुस्ताख़ीसे पेश आया, शाहज़ादहको हुक्म पहुंचा, कि धायभाईको लश्करसे निकाल दे, शाहज़ादहने मन्ज़ूर नहीं किया, और धायभाईकी व अपनी कमर एक दोपट्टेसे बांध ली, जब ज़बर्दस्ती छुड़ाने लगे, तो हमीदुद्दीनख़ांके हाथमें शाहज़ादहने एक कटार मारा, लेकिन् कटार छीन लिया गया.

आख़िरकार धायभाई कोतवालके पास क़ैद किया गया, और शाहज़ादहको भी ख़ैमहमें नज़र बन्द रक्खा; मन्सब, अस्बाब, कारख़ानह ज़ब्त हुआ. इन्हीं दिनोंमें सन्ता मरहटा भी मारा गया. हिज्री १११० ता० २९ ज़िल्हिज [विक्रमी १७५६ आषाढ़ कृष्ण ऽऽ = ई० १६९९ ता० २८ जून] को शाहज़ादह मुहम्मद कामबख़्श बीस हज़ारी मन्सबपर बहाल किया गया. उदयपुरसे महाराणा अमरसिंहके वकील एक हाथी, दो घोड़े, नौ तलवार, नौ चमड़ेके पाजामे (१) लेकर बादशाहके दर्बारमें पहुंचे, और सारा सामान नज़्र किया.

हिज्री ११११ ता० २२ मुहर्रम [विक्रमी श्रावण कृष्ण ८ = ई० ता० २० जुलाई] को महाराणा राजसिंहके छोटे बेटे इन्द्रसिंह और बहादुरसिंह बादशाहके पास गये, पहिलेको दो हज़ारी ज़ात, हज़ार सवार, दूसरेको हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवारका मन्सब बख़्शा गया. इन्हीं दिनोंमें बीकानेरका राजा स्वरूपसिंह अनोपसिंहोत बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ रामराजाके उन बाल बच्चोंको बादशाही लश्करमें ले आया, जो ज़ुल्फ़िक़ारख़ांकी गिरिफ़्तारीमें थे. इसके बाद मरहटोंका क़िला 'बसन्तगढ़' बादशाही फ़ौजके क़ब्ज़ेमें हिज्री ता० १२ जमादियुल आख़र [विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १३ = ई० ता० ६ डिसेम्बर] को आया. और हिज्री ता० आख़िर जमादियुल आख़र [विक्रमी पौष शुक्ल २ = ई० ता० २५ डिसेम्बर] को शाहज़ादह मुहम्मद अक्बरके दो नौकर कंधारसे अर्ज़ी लेकर आये, बादशाह आलमगीरने इनूआम इक्राम समेत लिख भेजा, कि तुम्हारे हिन्दुस्तानमें आजाने बाद क़ुसूरोंकी मुआफ़ीका हुक्म होसक्ता है. इस वक्त बादशाह आलमगीरको मरहटोंने दिक़ कर रक्खा था, फ़ार्सी तवारीख़ोंमें बादशाही फ़ौजकी ख़राबी व तक्लीफ़ोंका हाल नहीं लिखा और कहीं लिखा भी है, तो बहुत थोड़ा, इस वास्ते हम एक अस्ल काग़ज़की नक़्ल लिखते हैं, जो महाराणा अमरसिंहके वकीलोंने हिज्री ११११ ता० ८ रजब [विक्रमी पौष शुक्ल १० = ई० १७०० ता० २ जैन्युअरी] को बादशाही लश्कर मेंसे भेजा था.

---

(१) इस क़िस्मके पाजामे उसी ज़मानेके उदयपुरके तोशहख़ानहमें मौजूद हैं, जिनका ऊपर की तरफ़का घेरा इतना बड़ा है, कि पहिननेके बाद अच्छे जामेका नीचला हिस्सह उसमें समाजाय.

श्रीरामोजयति.

स्वस्तिश्री मन्मही मंडल मंडलीक अनीक पूजित चरण कमल अमल जशवितान विराजमान दिक चक्र वक्र शत्रु श्रेणी सरलकर प्रतापवर श्री ७ जी सलामति.

हुजूर थी पर्वानो अगहन सुदी १० (१) भोमेरो मोकल्यो वाइदे दिन १८ हसवुल हुक्मरा जावरो हस्ते तुकजमल्यो, जाट रामो पोस सुदी ६ रवो दिन २६ में पहुंच्यो, तस्लीम ३ करे माथे चढ़ावे लियो, हुक्म थो, उणीज दिन उमराव सब व भाई बेटा पुरोहित अमात्य समत्त थी चौकी चलावारी समत्त करे ताकीदरा पर्वानो मुहसल सुधा मोकलाणा; सो फ़ौज वेगी चलेगी, अर तीन ही परगणा (२) में थी काम्दार, थानादार हुजूर बुलावे, जागीरदाररो (३) अमल करायो, ने वां छुद्रां दरबार चाकरां थी अविधी कीवी, सो गई करे अजमेर उज्जैनरा सूवेदारां थी सांची सिपारस लिखावारो जतन कियो है. जाब लिख्यो, सो ये जतन राजनीति रीति तो हुजूर ही थी जु होंई, राज धर्म, मर्म, इशाहीज चाहिजे राज. अब इहांके समाचार या प्रकार हैं:- तलायांकी (४) चौकी नौसेरीखां साथ आरे करे, दोइ तीन बार गनीमां थी वाथां परे, चोपोवंद छुडावे मुजरे दिखाया, सो नवावजी तथा और ही सब लोग राजी व्हैने हुजूर हैं सब व्यौरो लिख्यो, सो कितरांकी तो नक़ल हुजूर मोकली है. यूं जानी थी, दिन दोइ चारमें काम सिद्ध हो आवै (५) इसामें दैव जोग थी धना जादौ घोड़ी हज़ार दस थी पोस सुदी २

---

(१) [हि० ११११ ता० ९ जमादियुलआख़र = ई० १६९९ ता० ३ डिसेम्बर].

(२) पुरमांडल, मांडलगढ़ और बदनौर.

(३) अजमेर इलाक़े जूनियांके राठौड़ सुजानसिंहके बेटे कृष्णसिंह, कर्णसिंह और जुझारसिंह का पूरा हाल महाराणा अमरसिंहके ज़िक्रमें लिखा जायगा.

(४) तलायाके मानी रातवाली चोर गारदके हैं.

(५) ऊपर लिखे तीनों पर्गने जो बादशाहने ख़ालिसेमें कर लिये थे, उनके पीछे मिलनेका उपाय.

गुरे हैं दिन पहर एक चढ़तां आवे बुनगाह (डेरे) घेरी, प्रातही श्रीजीरा सेवकां बुनगाह थी उत्तर दिसा सोलापुररी चौकी तीरे था, सो चोबदार मोकले कहावी, जो गनीमरी फ़ौज उणी आड़ी आवे है, थें उठे ही फ़ौजबंदी करे जतन राखजो, ने मिरज़ा मुहम्मद बकसी पण म्हारी फ़ौज थी थारा ऊपर सारू असवार २०० थी मोकलां हां; सो इणी आड़ी फ़ौज असवार से पांच पांचरी वार ३ तीन आवी, पण श्रीजीरा तेज अदब चूरे न सक्या; जदी यो मुंहंडो छोड़े पछि दिसा थी पातसाही नक़दी तोबखाने में धस्या, ने तोबखानों वालेने खासरा वज़ार, करणाटी बज़ार, रूहलाखां, तर्बियत-खांरो वज़ार लूटे हवेली उमरावांरी वाले पातसाही कोटने बेगमजीरी मिसल दिसी चाल्या, जैतासिंह कछवाहो, कीरतसिंहजी (१) रो पोतो असवार ५ थी आवे गंज तथा कोटरी वाट आवे आछो लरे मूंडो गनीमांरो फेरयो, नवाबजी (२) असवार ५० साठ थी बेगमजीरा दबाव थी निकस्या, दो पहर सुधी घणी खरी बुनगाह लूटे वाले, घणाखरा आछा लोग डावरा डावरी बंद करे तीजे पहर घणा खरा ऊंट घोड़ा, कपड़ो रुपैया ले कोस तीनपर जाय डेरो कियो; दादू मल्हार गनीम उमेदो उमरावहें खबर दीवी, जो सवारां ही दोनूं आड़ी थी धसे सराफो कसै हें डेरो वज़ार लूटे, कोट ऊपर चलावणी करां, इसामें जुलफ़िक़ार-खां बहादर, दलेलखां, दाऊदखां, रामसिंह हाड़ो, राव दलपत बुंदेलो असवार हज़ार चार पांच थी कोस बीसरो दोड्या आवे पहुंच्या; तदी गनीमरी फ़ौज़ अहटे कोस १० पर जाइ डेरा कीधा. लूट तो लाख पचीस तीसरी हुई लोगांरी, पर कोट वच्यो, इसी आज पहिली इणीरी पातसाहीमें कदी न हुई, एक तो श्रीजी रा चाकरांरी, एक कछवाहा ठाकुरांरी भलाई बेगमजी आदि मांडे, सगला उमरावां में हुई; ने पातसा हुजूर हें लिखानी है, पण या वात घणी सबली हुई, सो नजाणजे इणी पर नवाबजी थी कोई दिन उच मनाई व्हेने दर्बाररा कामरी कोई दिन बले खेंच व्है; पण श्री जीरी आड़ी थी तो भांति भांति अब घणी सूध जनानी; पछे इतनी भांति दौड़तां, उपाइ करतां, टको खरचतां ही श्री प्रभूजीरी आज्ञा है, ज्यूं होसी; अर पातसाहजी तो डीलां पधारे सितारोगढ़ घेरयो है, रारि व्है है, अर रामराजारी फ़ौज तो चारों आड़ी इसी धूम मांड़ी है, जो लिखतां बणे न है; बुरहाणपुर थी मांडे भागनगर सुधी सुचैन ताई घटी देखिजे प्रणाम काई व्हे जाइगा, दो तीन पहिली मोकल्यो थो, तहांतो काम उसा उसा ही हुआ है; यो पण उसो ही होतो दीसे है,

---

(१) कीर्तिसिंह आंबेरके महाराजा पहिले जयसिंहका छोटा बेटा था.

(२) जुम्दतुल मुल्क नव्वाब असदखां, वज़ीर.

पगे लागतां हासघाटिया पण अरज हुई है, अर श्री एकलिंगजी उणी राज्यरो सदा सहाइ करै ही है, और नवाबजी दर्बाररा कामरी ताकीदरो कागल बक्सी बहरामंदखांजी हैं बले. (फिर) लिखायो है, जणीरी नकल मोकली है, और ब्योरो होइ हे, सो वांसा थी अरज व्हेगो. राज और वकील जगरूप रात दिन सेवा रहे हैं, बाघमल लसकरमें चाकरी करें हैं, यांरी रियायत वास्ते बार बार अरज काई करे, सगला काम सकैकतो बेगा सिद्ध होसी; राज राठौड़ांरो ब्योरो लिख्यो, सो नवाबजी थी भली तरह अरज़ कियो, राजी हुवा है, हजूर हें भली तरह लिखसी. राज संवत् १७५६ पोस सुदी १० गुरे तीजा पहर सुधी लिखे तयार कियो जी.
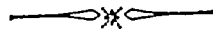
यह बुनगाहपर हम्ला इस्लामपुरीमें हुआ होगा, और 'बेगमजी' से मुराद आलमगीरकी बेटी ज़ीनतुन्निसा बेगमसे है. इस सब खटलेको वहां छोड़कर आप बादशाह मुरच वग़ैरह क़िलोंको फ़त्ह करता हुआ, इन दिनोंमें सितारागढ़को घेरे हुए था.

मआसिरे आलमगीरीके पृष्ठ ४०७ में जो हाल लिखा है, उसका तर्जमह नीचे लिखते हैंः-

"हिज्री ११११ ता०.५ जमादियुल अव्वल [विक्रमी १७५६ कार्तिक शुक्ल ७ = ई० १६९९ ता० ३१ ऑक्टोबर] को हज़रत शाहनशाह इस्लामपुरी मक़ामपर चार वर्ष ठहरकर आप भी बादशाही फ़ौजोंकी मददके वास्ते, जो हर तरफ़ दुश्मनों को क़ैद और क़त्ल करनेके लिये भेजी गई थीं, रवानह हुए. हुक्म दिया गया, कि मज़बूत क़िलेके गिर्द, जो पत्थर और चूनेसे ख़ास रहनेके वास्ते बनाया गया था, एक दूसरा कच्चा कोट ढाई कोस घेरेका बनाया जावे. यह वर्ष भरका काम पन्द्रह दिनमें पूरा करदिया गया. नव्वाब ज़ीनतुन्निसा बेगम और दूसरी महलकी ख़िझतगार औरतें व बहुतसा कारख़ानह वहां रख दिया गया. जुम्दतुलमुल्क मदारुल महाम असदख़ां मए मुनासिब फ़ौजके वहांकी हिफ़ाज़तके वास्ते मुक़र्रर किया गया. हज़रत यहांसे रवानह होकर बीस रोज़में मुर्तज़ाबाद उर्फ़ 'मुर्च' दाख़िल हुए". इस मक़ामपर धन्ना जादोंका जो बड़ा हम्ला हुआ, उसका किसी फ़ार्सी किताबमें ज़िक्र नहीं है. यह काग़ज़ लिखनेवाला श्री नाथद्वारा या कांकरौलीका रहनेवाला मालूम होता है, जिसने मेवाड़ी भाषामें अर्ज़ी लिखी है, परन्तु कहीं कहीं अपनी बोली व्रज भाषा और संस्कृतके शब्द लिखे हैं.

हिज्री ता॰ २० शअ्‌बान [विक्रमी १७५६ फाल्गुण कृष्ण ६ = ई॰ १७०० ता॰ १० फेब्रुअरी] को लाहौरकी सूबेदारी इब्राहीमख़ांसे उतारकर बड़े शाहज़ादह शाहआलमके नाम कीगई; और कश्मीरका सूबेदार फ़ाज़िलख़ां शाहज़ादहका नायब बनाया गया.

हिज्री ता॰ २५ रमज़ान [विक्रमी चैत्र कृष्ण ११ = ई॰ ता॰ १६ मार्च] को शम्भाके भाई और शिवाके दूसरे बेटे रामराजाके मरनेकी ख़बर आई; यह सुनकर बादशाह ख़ुश हुआ. थोड़े दिनों बाद रामराजाका पांच वर्षका बेटा, जो राजा बना था, मर गया; और इसीसे मरहटोंकी ताक़त कम हुई. हिज्री ता॰ ११ शव्वाल [विक्रमी १७५७ चैत्र शुक्ल १३ = ई॰ ता॰ २ एप्रिल] को आंबेरके राजा बिशनसिंहके इन्तिक़ाल होनेपर उसके बड़े बेटे विजयसिंहको (१) जयसिंह नाम देकर बापकी जागीरका मालिक बनाया; और उसके छोटे भाईका नाम विजयसिंह रखकर पांच सौ ज़ात, दो सौ सवारकी तरक़्क़ीसे डेढ़ हज़ारी ज़ात, हज़ार सवारका मन्सब दिया. सितारेका क़िला बादशाह आलमगीर घेरे हुए था, चार महीने अठारह दिनमें हिज्री ता॰ १४ ज़िल्क़ाद [विक्रमी वैशाख शुक्ल १५ = ई॰ ता॰ ४ मई] को फ़त्ह हुआ; और दूसरे दिन शाहज़ादह आज़मशाहने क़िलेके सर्दार सोभानको हाथ गर्दन बांधे बादशाहके साम्हने हाज़िर किया, उसके कुसूर मुआफ़ होकर पांच हज़ारी ज़ात दो हज़ार सवारका मन्सब, ख़िल्अ़त, कटार, घोड़ा, हाथी, नक़ारा, निशान और बीस हज़ार रुपया नक़्द बख़्शा गया. हिज्री १११२ ता॰ ३ मुहर्रम [विक्रमी आषाढ़ शुक्ल ५ = ई॰ ता॰ २२ जून] को परलीगढ़का क़िला फ़त्ह कर लिया. इस क़िलेको इब्राहीम आदिलशाहने हिज्री १०३५ [विक्रमी १६८३ = ई॰ १६२६] में बनवाया था, जो शिवा घोंसलाके क़ब्ज़ेमें आगया था. इसके कुछ दिनों पीछे ज़ुल्फ़िक़ारख़ां (२) जो धन्ना जादवका पीछा करनेको गया था, दाऊदख़ां, राव दलपत बुंदेला और राव रामसिंह हाड़ा समेत बादशाहके पास हाज़िर हुआ. हिज्री १११२ ता॰ १० शव्वाल [विक्रमी १७५७ फाल्गुण शुक्ल १२ = ई॰ १७०१ ता॰ २२ मार्च] को परनालेके क़िले और पवनगढ़को जा घेरा, बहुत दिनों

---

(१) यह वही जयसिंह है, जिसने जयपुर बसाया, और सवाई जयसिंहके नामसे मश्हूर है.

(२) यह ज़ुल्फ़िक़ारख़ां धन्ना जादवके हम्लेकरनेपर (जिसका हाल ऊपर लिखे काग़ज़से ज़ाहिर होता है) इस्लामपुरसे हिज्री ११११ रजब [विक्रमी १७५६ पौष = ई॰ १७०० जैन्युअरी] से पीछे लगा हुआ था.

तक मुहासरा रहनेके बाद हिज्री १११३ [विक्रमी १७५८ = ई० १७०१] में यह दोनों क़िले बादशाही क़ब्ज़ेमें आये. इसी तरहपर वरदांगढ़, नांदगीर, मन्दन, चंदन, वग़ैरह क़िलोंपर भी बादशाही दख़्ल होगया. हिज्री ता० ३ शअ्बान [विक्रमी पौष शुक्ल ५ = ई० ता० ५ डिसेम्बर] को असदख़ां वज़ीर 'अमीरुल-उमरा' का ख़िताब और चार हज़ार अशर्फ़ी पाकर खेलनाके क़िलेको घेरनेके लिये मुक़र्रर हुआ, जिसके साथ आंबेरका राजा जयसिंह कछवाहा, हमीदुद्दीनख़ां बहादुर, मुनइमख़ां व इख़्लासख़ां वग़ैरह किये गये; और बादशाह भी जा पहुंचे. बड़ी कोशिशोंके साथ मुक़ाबला करनेके बाद हिज्री १११४ ता० २२ मुहर्रम [विक्रमी १७५९ आषाढ़ कृष्ण ८ = ई० १७०२ ता० १८ जून] को यह क़िला फ़त्ह हुआ, और परशुराम मरहटा निकल गया. बादशाहने इस क़िलेका नाम "सख़्ख़रलना" (سخرلنا) (१) रक्खा, शाहज़ादह बेदारबख़्तकी कोशिशसे यह क़िला फ़त्ह हुआ, इस लिये उसको एक लाख रुपया इन्आम व फ़त्हुल्लाहख़ांको बहादुर आलमगीर शाहीका ख़िताब दिया.

हिज्री ता० २५ जमादियुल आख़र [विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ११ = ई० ता० १६ नोवेम्बर] को बहरहमन्दख़ां मीर बख़्शी गुज़र गया, उसकी जगह ज़ुल्फ़िक़ारख़ां नुस्रतजंगको मुक़र्रर किया. बादशाहकी बड़ी बेटी नव्वाब ज़ेबुन्निसाबेगमके मरनेकी ख़बर आई. इसके बाद शाहज़ादह आज़मशाहको, जो अहमदाबादका सूबेदार था, अजमेरकी सूबेदारी दी, और दस हज़ारकी तरक़्क़ीसे चालीस हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया. हिज्री ता० १८ शअ्बान [विक्रमी माघ कृष्ण ४ = ई० १७०३ ता० ७ जैन्युअरी] को क़िला कंदाना जा घेरा, और हिज्री ता० २ ज़िल्हिज [विक्रमी १७६० वैशाख शुक्ल ४ = ई० ता० २० एप्रिल] को फ़त्ह कर लिया. बादशाह वहांसे पूना पहुंचकर साढ़े छः महीनेके क़रीब ठहरे.

हिज्री १११५ शअ्बान [विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल = ई० डिसेम्बर] में शाहज़ादह मुहम्मद अक्बर, जिसका हाल ऊपर लिख आये हैं, ईरानकी सर्हदमें मर गया. हिज्री ता० २१ शव्वाल [विक्रमी फाल्गुण कृष्ण ७ = ई० १७०४ ता० २७

---

(१) यह शब्द अरबी भाषाका है, इस क़िलेके फ़त्हकी ख़बर आनेके वक़्त बादशाह क़ुर्आन का यही लफ़्ज़ पढ़ रहे थे, जिसका मत्लब यह है, "हमारे क़ब्ज़ेमें आया" इससे क़िलेका भी यही नाम रक्खा.

फ़ेब्रुअरी] को मरहटोंका क़िला राजगढ़, जो राजधानी और मज्बूत था, फ़त्ह हुआ; इसके बाद 'तोरना' का क़िला, जो राजगढ़से चार कोसके फ़ासिलेपर बड़ा मश्हूर था, बादशाही क़ब्ज़ेमें आया. शाहज़ादह मुहम्मद आज़मको अपने पास बादशाहने बुला लिया, अहमदाबादकी सूबेदारी इब्राहीमख़ांको और अजमेरकी ज़बर्दस्तख़ांको दी. राठौड़ दुर्गदास जो शाहज़ादह आज़मकी फ़ौजमेंसे भाग गया था, हाज़िर हुआ; उसे तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवारके मन्सबकी बहालीका हुक्म हुआ. ग़ाज़ियुद्दीन बहादुर फ़ीरोज़जंगको 'सिपहसालारी' का उहदा, सात हज़ारी ज़ात और दस हज़ार सवारका मन्सब दिया गया. शम्भाकी बेटी सिकन्दरशाहके बेटे मुहयुद्दीनको ब्याही गई; राजा साहूका ब्याह बहादुरजी मरहटेकी बेटीसे किया गया.

हिज्री १११७ ता० १४ मुहर्रम [विक्रमी १७६२ वैशाख शुक्ल १५ = ई० १७०५ ता० ८ मई] को बादशाहने बड़ी लड़ाईके बाद क़िला 'वाकनखेड़ा' पेदिया नायकसे ज़ब्त किया. हिज्री ता० १६ शव्वाल [विक्रमी फाल्गुण कृष्ण २ = ई० १७०६ ता० ३० जैन्युअरी] को बादशाह अहमदनगर पहुंचे; इसके बाद शाहजहांकी बेटी 'गौहरआरा' के मरनेकी ख़बर दिल्लीसे हिज्री ज़िल्हिज [विक्रमी १७६३ चैत्र शुक्ल = ई० १७०६ मार्च] में बादशाहको मिली. ज़ुल्फ़िक़ारख़ां नुस्रतजंगकी अर्ज़से मऊमेदानाका पर्गनह बूंदीके राव बुद्धसिंहसे छीनकर कोटाके राव रामसिंहको दिया गया. हिज्री १११८ ता० २८ ज़िल्क़ाद जुमेकी सुबह [विक्रमी फाल्गुण कृष्ण १४ = ई० १७०७ ता० ३ मार्च] को अहमदनगरमें बादशाह आलमगीरने इस दुन्यासे कूच किया, उसकी उम्र चांदके हिसाबसे ९१ वर्ष, तेरह दिनकी, और सूर्यके हिसाबसे ८८ वर्ष, ३ महीने, १४ दिनकी थी. ५० वर्ष, दो महीने, २७ दिन और सूर्यके हिसाबसे ४८ वर्ष ८ महीने २९ दिन बादशाहत की. औरंगाबादसे आठ कोस और दौलताबादसे तीन कोसपर दफ़्न हुआ, जिसका नाम 'खुल्दाबाद' रक्खा गया.

इस बादशाहकी आदतमें दग़ा और ख़ुद मत्लबी ज़ियादह थी, जैसा कि बरनियर लिखता है, कि शाहज़ादह मुरादको धोका देकर बादशाह बनानेका लालच दिया, और उसीको क़ैद करके मरवाया; बापको क़ैद किया, दाराशिकोहको मारा, शिवा घोंसलाको पहिले वचन देकर बुलाया, और क़ैद किया; अपने बड़े बेटे मुहम्मद सुल्तानको, जिसकी बहादुरीके सबब बादशाहत मिली, क़ैद किया; ग़ैर मज़्हबी लोगोंपर जिज़्यह (लागत-कर) जारी किया. हिन्दुओंके मन्दिरोंको

तुड़वाकर उसी मुसालहसे मस्जिदें बनवाईं; और मुसल्मानोंपर भी ज़कात (लागत) ढाई रुपया सैकड़ा लगाई. अक्बर बादशाहने फ़ौजके तीन हिस्से बनाये थे- सुन्नी, शीआ और राजपूत; इसने शीआ और राजपूतोंको कम्ज़ोर किया, लेकिन् सुन्नी भी दिलसे खुश न थे. तख़्तनशीनीके दस वर्ष बाद अपनी तवारीख़ लिखनेकी मनाई की, इस लिये कि कोई उसके ऐबोंको किताबोंमें न लिख देवे. गोलकुंडेकी बादशाहत लेनेके लिये हर तरहके बहाने ढूंढ़ता था, जैसा कि ख़फ़ीख़ां जाफ़रख़ां एलचीके भेजनेकी बाबत लिखता है, और जिसका बयान हम ऊपर कर आये हैं. यह सब बातें ख़फ़ीख़ांने उसी मिर्ज़ासे सुनकर लिखी हैं. इस बादशाहने हिज्री १०६९ ता० १५ जमादियुस्सानी [विक्रमी १७१५ चैत्र कृष्ण १ = ई० १६५९ ता० ८ मार्च] को अबुलहसन सूबेदार बनारसके नाम शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तानकी मारिफ़त जो फ़र्मान लिखा, उस अस्ल फ़र्मानकी नक्ल बाबू हरिश्चन्द्रने बादशाहदर्पणके २३ वें पृष्ठमें लिखी है, जिसका आशय यहां लिखा जाता है.

फ़र्मानका आशय.

कुर्आनमें लिखा है, कि पुराने मन्दिरको नहीं गिराना, और नये नहीं बनाने देना. ऐसा सुना गया है, कि बनारसके ब्राह्मणोंको लोग दुःख देते हैं; इस हेतु यह आज्ञा दी जाती है, कि आगेसे कोई हिन्दुओंके स्थानोंको न छेड़े, और ब्राह्मणोंको निर्विघ्न पाठ पूजा करने दे, इत्यादि- १५ जमादियुस्सानी हिज्री १०६९.

इसके बाद हिज्री १०७७ [विक्रमी १७२३ = ई० १६६६] को बनारसमें काशी विश्वेश्वरका मन्दिर तोड़कर मस्जिद बनवाई, उसमेंके लेखकी नक्ल भी बाबू हरिश्चन्द्रने उक्त पुस्तकमें लिखी है, जो कि ऊपरके फ़र्मानके विरुद्ध है; उसका आशय यह है:-

आशय.

मुसल्मानी धर्मके स्वामी (इत्यादि) औरंगज़ेब बादशाहकी आज्ञासे देव मन्दिरके देवताओंके सिर तोड़कर यह मस्जिद बनवाई गई, इत्यादि; १०७७ हिज्री.

इस लिखनेसे यह मत्लब है, कि यह बादशाह खुद मत्लबी और बड़ा चालाक था. इन बुराइयोंके सिवाय वह बहुत लिखा पढ़ा, आलिम और होश्यार था; चाल चलनमें परहेज़गार था. अपने इरादे और एतिक़ादमें बहुत पक्का था, तअस्सुब रखनेपर भी मज़्हबी लोगोंको बेफ़ायदह इन्आम और जागीरें नहीं देता था; ज़ाती बहादुरी भी रखता था, मरते दम तक लड़ाइयोंमें मस्रूफ़ रहा. अपनी ज़ातके सिवाय दूसरोंपर उसे कुछ भरोसह न था, ऐसेही शुब्हेके सबब मुहम्मद मुअ़ज़्ज़मको अर्से तक क़ैद रक्खा. रअ़य्यतके इन्साफ़में किसी क़ौम और अफ्सरकी रिआयत नहीं करता था; ख़फ़ीख़ां वग़ैरहने लिखा है, कि "एक दक्षिणी बुढ़ियाने बादशाहसे फ़र्याद की, कि आपका फ़ौज्दार, जो टैक्स मांगता है, मुझको उसके देनेकी ताक़त नहीं है; इसपर बादशाहने फ़ौज्दारकी बदली करदी, बुढ़ियाने दोबारह आकर शिकायत की, कि नया फ़ौज्दार पहिलेसे भी ज़ियादह महसूल मांगता है; बादशाहने इस दफ़ा सूबेदार तकको मौकूफ़ कर दिया; लेकिन् बुढ़ियाने फिर तीसरी बार भी ज़ियादती महसूलकी शिकायत की; तब बादशाहने तंग होकर फ़र्माया, कि मेरे पास जो आदमी थे, उनको बदल दिया, नये आदमी कहांसे लाऊं ! अब तू ख़ुदासे दुआ कर, कि वह कोई नया बादशाह बदल दे, जिससे रअ़य्यतको आराम मिले".

आलमगीर बादशाहकी औलाद.

१- बादशाह ज़ादह मुहम्मद सुल्तान हिज्री १०४९ ता० ४ रमज़ान [विक्रमी १६९६ पौष शुक्ल ६ = ई० १६३९ ता० ३१ डिसेम्बर] को पैदा हुआ. यह कुर्आनका हाफ़िज़ और अ़रबी, फ़ार्सी, तुर्की, किताबोंके *लिखने* पढ़नेमें होश्यार था; अपने बापके हम्राह रहकर अक्सर लड़ाइयोंमें *बहादुरीके साथ* लड़ा *था.* बादशाहके सन् २१ जुलूस = हि० १०८८ शव्वाल [*वि०* १७३४ मार्गशीर्ष *शुक्ल* = ई० १६७७ डिसेम्बर] में गुज़र गया.

२- बादशाह ज़ादह मुहम्मद मुअ़ज़्ज़म '*शाहआलम बहादुर शाह*' हिज्री १... आख़िर रजब [विक्रमी १७०० आश्विन शुक्ल २ = ई० १६४३ ता० १५ औ... को पैदा हुआ. इसने छोटी उम्रमें *कुर्आन हिफ़्ज़ किया,* और कई *तरह*... पढ़ना सीखा. अक्सर जवानीके *दिनोंमें इल्मी किताबें* पढ़ीं- *अ़र*...

तुर्की अच्छी तरह जानता था; कई तरहका ख़त जल्दी और उम्दा लिख सक्ता था, नमाज़, रोज़ेका पाबन्द था, फ़र्यादियोंके फ़ैसले बड़ी नर्मीके साथ सुनता था.

३- बादशाह ज़ादह मुहम्मद आज़मशाह, शाहनवाज़ख़ां सफ़वीकी बेटीसे हिज्री १०६३ ता० १२ शअ्बान [विक्रमी १७१० आषाढ़ शुक्ल १३ = ई० १६५३ ता० ८ जुलाई] को पैदा हुआ. निहायत तेज़ तबीअत और नेक आदत था, बादशाह इससे बड़े खुश थे. हिज्री १११९ ता० १८ रबीउल अव्वल [विक्रमी १७६४ आषाढ़ कृष्ण ४ = ई० १७०७ ता० १९ जून] को आलमगीर बादशाहके तीन महीने, बीस दिन बाद बहादुरशाहकी लड़ाईमें बहादुरीके साथ मारा गया.

४- बादशाह ज़ादह मुहम्मद अक्बर हिज्री १०६७ ता० १२ ज़िल्हिज [विक्रमी १७१४ भाद्रपद शुक्ल १३ = ई० १६५७ ता० २१ सेप्टेम्बर] को पैदा हुआ. यह बादशाहतका उम्मेदवार ईरानके मुल्कमें सन् ४८ जुलूस = हिज्री १११५ [वि० १७६० = ई० १७०३] में गुज़र गया.

५- बादशाह ज़ादह मुहम्मद कामबख़्श हिज्री १०७७ ता० १० रमज़ान [विक्रमी १७२३ फाल्गुण शुक्ल १२ = ई० १६६७ ता० ६ मार्च] को पैदा हुआ. यह भी कुर्आनका हाफ़िज़ था, और दूसरे भाइयोंकी निस्बत इल्मी किताबें ज़ियादह पढ़ा हुआ था; तुर्की ज़बान बहुत अच्छी जानता था. हिज्री १११९ ता० ३ ज़िल्क़ाद [विक्रमी १७६४ माघ शुक्ल ५ = ई० १७०८ ता० २७ जैन्युअरी] को बहादुरशाहसे लड़कर बड़ी बहादुरीके साथ मारा गया.

लड़कियें.

६- नव्वाब ज़ेबुन्निसाबेगम हिज्री १०४८ ता० १० शव्वाल [विक्रमी १६९५ माघ शुक्ल १२ = ई० १६३९ ता० १६ फ़ेब्रुअरी] को पैदा हुई, इसने कुर्आन हिफ़्ज़ करनेके एवज़में अपने बापसे तीस हज़ार अशर्फ़ी इन्आम पाई थी. यह अरबी, फ़ार्सी खूब जानती थी; हर तरहका ख़त लिख सक्ती थी, इसने बड़ा कुतुबख़ानह जमा किया था; बहुतसे आलिम, फ़ाज़िल इसके यहां नौकर थे. कई किताबें इसके नामपर बनाई गई हैं; यह बापके जीते जी हिज्री १११३ [विक्रमी १७५८ = ई० १७०१] में मर गई.

७- नव्वाब ज़ीनतुन्निसाबेगम हिज्री १०५३ ता० १ शअ्बान [विक्रमी १७००

आश्विन शुक्र ३ = ई० १६४३ ता० १६ ऑक्टोबर] को पैदा हुई; यह मज्हबी किताबें पढ़ी हुई थी, और बहुतोंको इससे फ़ायदह पहुंचता था.

८- नव्वाब बद्रुन्निसाबेगम हि० १०५७ ता० २९ शव्वाल [विक्रमी १७०४ मार्गशीर्ष कृष्ण ३० = ई० १६४७ ता० २८ नोवेम्बर] को पैदा हुई; यह भी कुर्आनकी हाफ़िज़ और मज्हबी किताबें पढ़ी हुई थी; हि० १०८१ ता० २८ ज़िल्क़ाद [विक्रमी १७२८ प्रथम वैशाख कृष्ण १४ = ई० १६७१ ता० ८ एप्रिल] को मर गई.

९- नव्वाब जुब्दतुन्निसाबेगम हि० १०६१ ता० २६ रमज़ान [विक्रमी १७०८ आश्विन कृष्ण १२ = ई० १६५१ ता० १२ सेप्टेम्बर] को पैदा हुई थी; यह भी नेक आदत, सुल्तान सिपिहरशिकोहकी बीबी थी; बापके मरनेके क़रीब ही मर गई, और इसके मरनेकी ख़बर बापको नहीं मिली.

१०- नव्वाब मिह्रुन्निसाबेगम हिज्री १०७२ ता० ३ सफ़र [विक्रमी १७१८ आश्विन शुक्र ५ = ई० १६६१ ता० २९ सेप्टेम्बर] को पैदा हुई; मुरादबख़्शके बेटे एज़द बख़्शकी बीबी थी, जो हिज्री १११६ [विक्रमी १७६१ = ई० १७०४] में इस दुन्यासे उठ गई.

बादशाह आलमगीरके वक़्में मुल्की मालगुज़ारीकी सालानह आमदनी २४०५६११४० से लेकर ३५६४१४३१० रु० तक थी (एडवर्ड टॉमसकी किताबके पृष्ठ ५४).
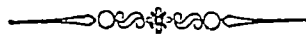
छन्द गीतिका.

दिल्लीश लै दल ईश कोप समान तोपन जालिका ॥
मेवार देश उजारकै बहुबार धप्पिय कालिका ॥
वह मेछ जुद्ध विरुद्धमें नृप राजसिंह प्रपात भो ॥
उदयाद्रिपैं जयसिंह रान विकाश कारक आत भो ॥ १ ॥
भट रानके मिल भेद भाव प्रकाश शाह कुमारतें ॥
अरु ताहि दिल्लिय ईशकैन मिलाय सेन शुमारतें ॥
औरंग मस्तरु अस्त अक्बर दिग्घ दुज्जन रानव्है ॥
करयुद्ध दिल्लिय ईशतें फिर संधि नीति समानव्है ॥ २ ॥
सुल्तान आजम रानकी भइ भेट खुर्रम रीति पैं ॥
दल गुप्त लेखनतें लग्यो सुल्तान दाग प्रतीतपैं ॥
नृपबंधु भीम असीम बिक्रम शाह सेवक होनकों ॥
अजमेधपत्तन गो तबैं दिल्लीश दक्खिन गोन कों ॥ ३ ॥
जयसिंह ताल विशाल को सबहाल विस्तरतें कह्यो ॥
जुवराज रान विरुद्ध कै नुकसान गेहन में लह्यो ॥
चहुवान केहर चुंड कांधल शूर युग्म कटारतें ॥
लर प्रान त्यागिय बैर भागिय कित्ति जागिय सारतें ॥ ४ ॥
जयसिंहको तन त्यागहोन बयान आलमगीर को ॥
इतिहास वीरविनोद खंड अखंड वीरन नीरको ॥
कविराज आशय रानसज्जन जान पूरण कैन को ॥
फतमाल शाशन को प्रकाशन हर्ष दासन कैन को ॥ ५ ॥

महाराणा जयसिंह- नवां
प्रकरण समाप्त.
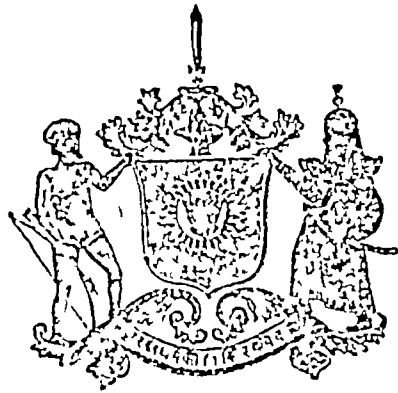
दसवां प्रकरण.

महाराणा दूसरे अमरसिंह.

जब महाराणा जयसिंहका देहान्त विक्रमी १७५५ आश्विन कृष्ण १४ [हिज्री १११० ता० २८ रबीउलअव्वल = ई० १६९८ ता० ५ ऑक्टोबर] को हुआ. और इस हालकी ख़बर राजनगरमें पहुंची; तब जुवराज उदयपुरकी तरफ़ रवानह होगये. जिस वक्त देबारीके घाटेमें पहुंचे, वहां प्रधान दामोदरदास पंचोली व दूसरे सर्दार, अहल्कार वगैरहने पेश्वाई की. उस वक्त इन महाराणाकी ख़वासीमें हाथीपर कायस्थ छीतर सहीहवाला बैठा था, कुल सर्दार, उमराव और अहल्कार अपने दरजेके मुवाफ़िक़ सवारीमें आगे पीछे होलिये, दो तीन डोरीके क़रीब सवारी चली होगी, कि सब सर्दारोंकी निगाह ख़वासीकी बैठकपर गई, तो छीतर कायस्थको देखा, और महाराणा जयसिंहका मुसाहिब व प्रधान दामोदरदास कायस्थ हाथीके आगे घोड़ेपर चढ़ा चलता था. इस रियासतमें दस्तूर है, कि महाराणा हाथीपर सवार हों, तो ख़वासीमें मुसाहिब बैठा करता है, इस तब्दीलीके होनेसे सब नौकरोंका दिल बिगड़ गया, सर्दारोंमेंसे एक एक दो दो सवारीसे अलहदह होकर ठहरते गये; दो चार डोरी आगे बढ़कर महाराणाने देखा, कि वही राजनगरसे आये हुए शाहज़ादगीके नौकर सवारीमें बाक़ी रहे हैं. तब छीतर कायस्थसे फ़र्माया, कि यह क्या सबब हुआ? उस ख़ैरख़्वाहने अर्ज़ की, कि इसका सबब ख़ास मेरा ख़वासीमें बैठना है. महाराणा

अमरसिंहने छीतरको घोड़ेपर सवार करके दामोदरदासको ख़वासीमें बिठा लिया, और कहा, कि मुझको ख़याल नहीं रहा; इसलिये ग़लतीसे तुम्हारा हतक हुआ; दामोदरदासने अदबसे सलाम किया. इस बातकी तसल्ली होते ही सब उमराव सर्दार सवारीके साथ हो लिये.

महाराणा जयसिंहके नौकरोंका संदेह जाता रहा, और इन महाराणा (अमरसिंह) ने उदयपुरमें आकर विक्रमी आश्विन शुक्ल ४ [हिज्री ता० २ रबीउस्सानी = ई० ता० १० ऑक्टोबर] को गद्दीनशीनीका दर्बार किया; सब बड़े छोटे नौकरोंने नज़्रें दिखलाईं. पुराने नौकरोंसे, जो पहिले नफ़्रत थी, वह ख़ातिरी व तसल्ली करके मिटा दी. सब रजवाड़ोंसे टीकेका दस्तूर आया; लेकिन् डूंगरपुरके रावल खुमानसिंह, बांसवाड़ेके रावल अजबसिंह, और देवलियाके रावत् प्रतापसिंहने हाज़िर होकर टीकेका दस्तूर पेश नहीं किया, इससे नाराज़ होकर महाराणाने तीनों ठिकानोंपर फ़ौज कशीका हुक्म दिया, और मांडलगढ़ वग़ैरह पर्गनोंमेंसे बादशाही थानेदारोंको (१) निकाल दिया, जिससे अजमेरके सूबहदार मिर्ज़ा सय्यद मुहम्मदका काग़ज़, हिन्दीमें थानह नन्दराय पर्गनह मांडलगढ़की बाबत लिखा आया था, उसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है:-

काग़ज़की नक़्ल.

सिध श्री सरब वोपमा सुभ सुथाने जोग महाराज धराज महाराजाजी समस्त जोगी लीखाइतं दारुल पैर हजरत अजमेर थी, मीर जी श्री सेद म्हेमुदजी केन दुआ (२) वांचजो जी, ईहां पेर सलाह है, तुम्हारी पैर सलाह चाहजे जी, अप्रची हाफिजबेग मन्सवदार तईनाथ हमारा महीना ३ तीनसे जमयेत असवार व पीयादान थे प्रगने नंदरायमें रहे थो, सो तुम्हारा लोगांने अमल न दियो, और सोखी की. ईं वास्ते हाफिजबेग उहां सूं ऊठी अजमेर आयो, सो ऊंका उठी आवामें

---

(१) यह तीनों पर्गने विक्रमी १७३६ [हिज्री १०९० = ई० १६७९] से बादशाही ख़ालिसेमें हो गये थे, इन महाराणाने कुंवरपदेमें बादशाही अहल्कारोंसे अपने नामपर ठेकेमें लिखवा लिये थे.

(२) इसमें ऐसे बाज़ बाज़ लफ़्ज़ सूबेदारने अपने बड़प्पनके साथ लिखे हैं, जिससे वह कोई मज़्हबी बुज़ुर्ग मुसल्मानोंका मालूम होता है.

बदनामी पूरी श्री महाराजाजी की हुई, और मैं महाराजाजीका ईपलास सेती या वात हजूरी कूं न लिपी, और अवे अलीबेगकूं साथी पत मुबारीकबादीके आप पासी षींदायो छे, सो गुमासतानके ताई ताकीद कीजे, जो ऊंके ताई प्रगनामें अमल वा दषल दे; और या बदनामी आपकूं हुई है, सो सुन्दर वकील कीधांसू हुई छे; अें पर पुदा न करे जे या बात हजुरीमें अरज पहुंचे, तो थाकूं पूरो ओलमो आवे, और सुन्दरने आपको जाहीर कियो हैज, वादशाही बंदोन कुं रजामंद कीया है, सो या बात झूठी कही छे; कोण सो कांम पातसाहजीको ईने कीयो, तीसु हम रजामंद हुवा, तीसु रजामंदी हमारी ईम हेज, प्रगने सुं हाथ षेचे और हमारा अमल वाकहे होय, और माहाराजभी ई बातकूं जाणो होज, हमारा भी कुली मुजरा हजुरमें ई ही वातसु है. प्रगनेमें अमल करां और तुम्हारा लोग दपल छोड़े न्ही छे, तीथेजे हमारे ताई हजुरी थी नुकसान पहुंचे, और महाराजी कु पुरी वदनामी आवे, तो या बात भली नहीं, और सुंदर वकील थे जु कछु हम कहां हां, सोतो आपकु वा कई कहे नही, और जु कछु महाराजी कहे सो वा हमसूं कहे न्ही. सो ई बात माहे मतलब वीचमें ही रहे हे, और आपस मांहे पेच होय है, और जे कोई कामका आदमी है, तीनसु तो मीले नहीं, और ऊपर ऊपर लोगानसु मीली करी काम अवतर करे हैं. सो श्री महाराज ई बातके ताई खातरमें लाय करी कयास करोगा जी, और वाजी वात अलीवेग सु जुबानी कही है, सो आपकु कहेगा जी, और घणा क्या लीखे. मी० आसोज सुदी १५ संवती १७५५ (१).
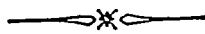
पर्गनह पुर मांडल, वदनौर और मांडलगढ़, तीनों बादशाह आलमगीरने फ़ौजकशीके वक़ ज़ब्त करलिये थे, और जिज़्यहके एवज़में यही पर्गने शुमार किये, जिसपर महाराणा जयसिंहने विक्रमी १७४७ [हि० ११०१ = ई० १६९०] में एक लाख रुपया जिज़्येका देना कुबूल करके पर्गने वापस लिये. इक़ार मुवाफ़िक़ रुपया जमा न होनेके सबब कुछ अर्से तक तो इन्तिज़ार अदा करनेका रहा होगा, लेकिन् न पहुंचनेके सबब फिर यह तीनों पर्गने बादशाहने ज़ब्त कर लिये थे. इसपर महाराणा जयसिंहके राजकुमार (अमरसिंह) ने अपने नामपर ठेकेमें करवा लिये, उस वक़्के दो काग़ज़ फ़ार्सीके हमको मिले हैं, जिनका तर्जमह यहां लिखते हैं:—

---

(१) [हिज्री १११० ता० १४ रबीउस्सानी = ई० १६९८ ता० २१ ऑक्टोबर].

मांडलगढ़के ठेकेकी बाबतके काग़ज़.

यह बयान इस बातका है, कि सूबे अजमेर ज़िले चित्तौड़का पर्गनह मांडलगढ़, शुरू फ़स्ल ख़रीफ़ सन् ११०३ फ़स्लीसे सन् ११०५ फ़स्ली तक तीन वर्षके ठेके का रुपया १०३००० की जमापर कुंवर अमरसिंहके नौकर महासिंह साहको बादशाही मुतसद्दियोंने दिया है. आसमानी और ज़मीनी आफ़तें और मुसीबतें क़हत वग़ैरह अगर ज़ाहिर हों, उनका लिहाज़ रक्खा जावेगा. सन् ११०४ में रु० ३५००० कूंता गया था, लेकिन् मेवाड़में क़हत रहनेके सबब अच्छी पैदा न हुई, कुंवरके नौकरने अपनी उम्दह कार्रवाईसे रअय्यतको दिलासा देकर बाज़ जगह खेती कराई, और रुपया १४००० महसूलका मिला; इस सबबसे गुमाश्तह क़हत सालीकी रिआयत चाहता है. यह काग़ज़ सूरत हालके तौरपर लिखा, जो वाक़िफ़ हो गवाही लिख दे.

दूसरा काग़ज़.

यह इस बातका बयान है, कि पर्गनह मांडलगढ़ ज़िले चित्तौड़ सूबा अजमेर का, शुरू ११०६ फ़स्लीसे ११०८ फ़० तक रु० १०६००० हुज़ूरी सिक्कहपर बड़े दरजेके सर्दार राना अमरसिंहके नौकर महासिंहको, जो मुकन्ददासका बेटा है, सर्कारी मुतसद्दियोंकी तरफ़से ठेकेमें दिया गया. यह शर्त है, कि मौसम कैसा ही क्यौं न रहे, और खुदा न करे, क़हतसाली भी क्यौं न हो, मामूली रुपया अदा करेगा. सन् ११०६ में फ़स्ल ख़रीफ़की बाबत रु० १४५०० तज्वीज़ हुआ था; तमाम मेवाड़में टिड्डी और क़हतकी कस्रतसे तज्वीज़ कीहुई जमाके मुवाफ़िक़ पैदावार न हुई; रानाके आदमीने अपनी नेक कार्रवाई और अच्छे चाल चलनसे पर्गनेकी रअय्यत को दिलासा देकर रु० ९५०० हर गांवसे तफ़्सीलवार वुसूल किया. इस सबबसे बड़े अमीर रानाके गुमाश्तहने क़हतसाली और टिड्डीके उज्रमें यह बयान सूरत हालके तौरपर लिख दिया, जो लोग इस बातसे ख़बर रखते हों, अपनी गवाही लिखदें; ताकि आदमियोंके साम्हने अच्छे और खुदाके नज़्दीक नेक समझे जायें.

इसके नीचे २०१ गांवोंकी तफ्सीलवार फ़िहरिस्त लिखी हुई है, उसको बसबब तवालतके लिखना मुनासिब न जाना; इन दोनों काग़ज़ोंपर क़ानूगो व चौधरियोंके दस्तख़त हिन्दीमें इस तरहपर आड़े लिखे हुए हैं:-

दसपत चौधरी रतनसी व चंदर भाण परगने मांडलगढ़रा इजारो स० ११०६ फ़स्ल ख़रीफ़में टीड्यांरे सबब क़हतसाली हुई, सो उणी फ़सलरा रु० ४५०० अपरे पैतालीस सौ पैदा हुवा, परगनारा गांव २०१ मधे, गाम ४३ ऊजड़ तथा दाखली बाक़ी गाम १५८ मधे पैदा हुवा.

दसपत कानोगो अगरचंद श्रीचंद मज़्मून ऐज़न.

इसी तरहके दस्तख़त दोनों काग़ज़ोंमें हैं, और क़ाज़ी इहसानुल्लाह व एक बादशाही नौकर महमूद दोनोंकी मुहरें हैं. जब इन महाराणाकी गद्दीनशीनी तक ठेकेका इक़ार पूरा होगया, तब बादशाही नौकरोंने फिर यह पर्गने अपने तहतमें लेने चाहे. अब उन बाज़े अस्ल काग़ज़ोंका तर्जमह नीचे लिखते हैं, जो इन महाराणाके वक्तके मिले, और लिखनेके लायक़ समझे.

१— किसी बादशाही सर्दारकी याद्दाश्त,
मेवाड़के मुआमले में.

सय्यद अब्दुल्लाहख़ांने लिखा, कि पर्गनह बदनौर और मांडलगढ़, जो चित्तौड़के ज़िलेमें है, गुज़रे हुए राणा जयसिंहके बेटे अमरसिंहने बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ सुजानसिंह राठौड़के बेटों करण और जुझारसिंहको ख़ाली करके सौंप दिया, शजाअत-ख़ांने भी जो अर्ज़ी बादशाही हुक्मके जवाबमें लिखी, उससे भी मालूम होता है, कि डूंगरपुरके जागीरदारने चित्तौड़ वग़ैरहकी बाबत, जो कुछ लिखा, उसमें कुछ सचाई नहीं है, और ज़मींदार नामके लिये मन्सबदार है, जिस क़द्र उसको अहमदाबाद आनेके लिये लिखा जाता है, उसका कुछ नतीजा नहीं निकलता.

दूसरे सर्दारकी राय.

शजाअतख़ां और सय्यद अब्दुल्लाख़ांके लिखनेसे अमरसिंहकी ताबेदा

होती है; इसलिये वादशाही मिह्र्वानियोंका उम्मेदवार है, कि मसूनद नशीनीका फ़र्मान और टीका उसके नाम भेज दिया जावे; अगर मन्शा हो, यह हुज़ूरी ख़ैरस्वाह पृथ्वीसिंह और रामरायके हाथ, जो अमरसिंहके नौकर हैं, और जो एक वर्षसे हुज़ूरमें पड़े हुए हैं, भेज दे; कि उनकी मिह्नत वे फ़ायदह न जावे; और हुक्म हो, तो जागीरदारकी भेजी हुई नज़्का सामान सर्कारी कारख़ानहमें पहुंचा दिया जावे.

(हुक्म लिखा गया).

इन वातोंके जवावमें पेन्सलसे ख़ास दस्तख़त होगये, कि इक़ारके मुवाफ़िक़ क़ाइम रहनेपर लिहाज़ रक्खा जावेगा. वज़ीरकी तरफ़से तस्दीक़ हुई– कि उदयपुरके जागीरदार अमरसिंहने लिखा है, कि वदनौर वग़ैरह तीन जागीरें सर्कारी ख़ालिसेमें शामिल करदी गईं, और एक हज़ार सवार हुज़ूरमें रवानह करदिये गये; करण और जुभारसिंह जागीरदार वदनौर और मांडलगढ़केने भी अपने दख़्ल पानेकी वावत लिख भेजा है. (हिज्री ११९० = वि० १७५५ = ई० १६९८).

२– नव्वाव जुम्दतुल्मुल्क असदख़ां वज़ीरका काग़ज़, जो मेवाड़के मुआमलोंकी वावत मार्गशीर्ष शुक्ल १२ को वख़्शियुल मुल्क नव्वाव वहरहमन्दख़ांके नाम लिखा.
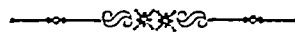
पोशीदह न रहे, कि वुज़ुर्ग ख़ान्दान अमरसिंह, राणा जयसिंहके वेटेकी लिखावटका खुलासह उस वड़े दरजेवाले वख़्शियुल्मुल्कके पास भेजा गया; ज़िक्र किये हुए जागीरदारने लिखा है, कि मैं वादशाही तावेदारी और ख़ैरख़्वाहीको अपने हर तरहके फ़ाइदोंका सवव जानता हूं, इस इक़ारमें हमेशह क़ाइम रहनेका इरादह रखता हूं. इन दिनोंमें मस्नद नशीनीकी रस्में अदा होती हैं, वादशाही मिह्र्वानियोंसे उम्मेद है, कि वुज़ुर्ग फ़र्मान मेरी सर्वलन्दीके लिये इनायत किया जावे. ज़िक्र किये हुए जागीरदारने वहुत शर्मिन्दगी उठाकर पूरा ख़ैरख़्वाहीका इरादह किया है. इसवास्ते वह कार्गुज़ार सर्दार वादशाही दर्गाहमें अर्ज़ी लिख भेजे, कि जागीरदारकी नज़्रें क़ुवूल करली जावें; और वादशाही मिह्र्वानीसे इज़्ज़त दीजावे. अगर वद क़िस्मतीसे कोई क़ुसूर ज़ाहिर होगा, तो उसकी सज़ाका वन्दोवस्त किया जावेगा. जो मुचल्का जागीरदारके नौकरों पृथ्वीसिंह वग़ैरहने लिखकर दिया है, भेजा जाता है; अगर हुक्म होगा, तो पृथ्वीसिंह वग़ैरह हज़ार सवार पहुंचने तक लश्करमें रहेगा; उसके हमाही ३०० सवारोंको तईनात करदिया है, कि लश्करके आगे तीन चार

कोस तक चौकीदारी करते रहें. यक़ीन, कि वह सर्दार मुनासिब वक्तमें अ़र्ज़ करके जवाबसे इत्तिला देंगे. (हि० १११० = वि० १७५५ = ई० १६९८).

३- वज़ीरका ख़त, महाराणा अमरसिंहके नाम.

हमेशह बादशाही इनायतोंमें शामिल रहकर खुश रहें, दोस्तीकी बातें ज़ाहिर करनेके बाद मालूम हो, कि उस दोस्तका पसन्दीदह ख़त पहुंचा, उसमें बयान है, कि बांसवाड़ा, देवलिया, डूंगरपुर और सिरोहीके जागीरदार मस्नद नशीनीके वक्त कुछ चीज़ें तुह्फ़के तौरपर क़दीमसे देते हैं; इन दिनोंमें खुमानसिंह डूंगरपुरका ज़मींदार इन्कार करता है. खुमानसिंहके लिखे हुएसे ऐसा अ़र्ज़ हुआ, कि उस दोस्तने ज़मींदारको पैग़ाम भेजा था, कि अगर शरीक बने, तो पर्गनह मालपुरा वग़ैरहको लूटकर चित्तौड़में क़ब्ज़ा करे, लेकिन् ज़मींदारने यह बात कुबूल न की. इसके बाद उस उ़म्दह सर्दारने अपने काका सूरतसिंहको ज़मींदारकी जागीर लूटनेको रवानह किया, लड़ाई होनेपर दोनों तरफ़के आदमी मारे गये. अब उस उ़म्दह भाईने दुबारा दूसरी फ़ौज भेजी है, यह बात बादशाही दर्गाहमें बहुत ख़राब मालूम हुई. इस मौक़ेपर इस दुन्याके ख़ैरख़्वाह (मैं) ने पृथ्वीसिंह और रामराय और बाघमल वग़ैरह उस दोस्तके नौकरोंकी अ़र्ज़के मुवाफ़िक़ हुज़ूरमें ज़ाहिर किया, कि डूंगरपुरके वकीलने जाली ख़त बना लिया है, उस दोस्तका मत्लब अ़र्ज़ कर दिया गया. बादशाही हुक्मसे इस मुक़द्दमेकी तहक़ीक़ातके वास्ते शुजाअ़तखांको लिखा गया है, कि अस्ल हाल दर्याफ़्त करके लिख भेजे, मुनासिब यही है, कि बादशाही मर्ज़ीके ख़िलाफ़ कोई काम न किया जावे; ज़ियादह कैफ़ियत जगरूप वकीलके लिखनेसे मालूम होगी. ता० १० सफ़र सन् ४३ जुलूस (हिज्री ११११ = विक्रमी १७५६ श्रावण शुक्ल १२ = ई० १६९९ ता० ९ ऑगस्ट).

४- किसी बादशाही नौकर, कायस्थ केशवदासकी
दर्ख़्वास्त महाराणा २ अमरसिंहकी
ख़िद्मतमें.

बिहिश्तके मानिन्द महफ़िलके बैठने वाले, और इन्साफ़के फ़र्शको [illegible] वाले, बख़्शिश और इहसान फैलाने वाले, बड़े ताज़्नवर, बलन्द दर्जे [illegible]

ख़िद्मतमें अ़र्ज़ करता है, कि इ़ज़्ज़तदार मिह्र्बानीका ख़त, जिसके हर एक हर्फ़ से नेक बख़्ती नज़र आती थी, होश्यार सर्दारख़ांके हाथ वुसूल होकर ख़ुशी और वुज़ुर्गी हासिल हुई, और जो बुज़ुर्ग काग़ज़ मए कपड़े और घोड़ेके नव्वाब साहिब के पास भेजा था, पहुंच गया; उससे नव्वाब साहिबको दिली ख़ुशी हासिल हुई; और दोनों तरफ़की मुहब्बत और दोस्तीने ताज़गी पाई. अगर ख़ुदाने चाहा, तो हर मौक़ेपर नव्वाब साहिब उन कामोंमें, जिनसे दीवान साहिब (१) का कोई फ़ायदह हो, ज़ुरूर कोशिश करते रहेंगे. ख़ैरख़्वाहीके ख़यालसे मैं अ़र्ज़ करता हूं, कि इन दिनोंमें प्रतापसिंह देवलियाके जागीरदार और बांसवाड़ा और डूंगरपुरके वकीलोंने हाज़िर होकर बयान किया है, कि उन बड़े ख़ान्दान वाले उ़म्दह राजाकी फ़ौजें, इनमेंसे हर एकके इ़लाक़ेमें जाकर सताती हैं. इस सबबसे, कि अभी हुज़ूरमेंसे टीका इ़नायत नहीं हुआ, फ़ौजोंकी तईनाती मौक़ूफ़ रक्खें, क्योंकि शुरूमें ही शिकायतकी बात अ़र्ज़ होना अच्छा नहीं है. (हि० ११११ = वि० १७५६ = ई० १६९९).

५– ख़त कुशलसिंह शक्तावतके नाम, जिसकी औलादमें विजयपुरका जागीरदार ठाकुर जवानसिंह है, यह असदख़ां वज़ीरका लिखा मालूम होता है.

बराबरी वालोंमें उ़म्दह बहादुर ख़ान्दान कुशलसिंह शक्तावत ख़ुश रहे, इन दिनोंमें बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ बख़्शियुल मुल्क मुख़्लिसख़ांजीका ख़त रावल खुमानसिंह डूंगरपुरके जागीरदारकी दर्ख़्वास्तपर शैख़ अ़ब्दुर्रऊफ़ गुर्ज़बर्दारके हाथ मेरे पास पहुंचा है; उसका पूरा मज़्मून बड़े दरजेवाले बुज़ुर्ग ख़ान्दान राणाजीको लिख भेजा है, उससे तमाम हक़ीक़त ज़ाहिर होगी.

गुर्ज़बर्दार, जो आपके लिये ताकीद करेगा, इस वास्ते मेरा काग़ज़ बहुत जल्द राणाजीको दिखलाने बाद उसका जवाब इस तौरपर, कि कोई शुब्हः न रहे, लेकर क़ासिदके हाथ भेज दें. उसके मुवाफ़िक़ बादशाही हुक्मकी तामील की जावे, राणाजीने मुझसे दोस्ती पैदा की है, और मैं भी उनकी बिहतरी चाहता हूं, इस वास्ते मेरी तरफ़से उन्हें कह दें, कि डूंगरपुरके जागीरदारको ज़ियादह दिक़ करना मुनासिब नहीं है; क्योंकि ज़मींदार मज़्कूरने बहुतसी बातें राणाजीकी बाबत बादशाही

(१) महाराणाका पद दीवान है.

दर्गाहमें अ़र्ज़ की हैं, जिनसे फ़ायदह नज़र नहीं आता. ज़ियादह क्या लिखा जावे. ता० ४ रबीउ़लअव्वल सन् ४३ जुलूस (हि० ११११ = विक्रमी १७५६ भाद्रपद शुक्ल ६ = ई० १६९९ ता० १ सेप्टेम्बर).

६- वज़ीर असदख़ांका ख़त महाराणा अमरसिंहके नाम.

बादशाही ख़ैरख़्वाहीके इरादे हमेशह उन दोस्तके दिलमें क़ाइम रहें- मालूम हो, कि इससे पहिले उन दोस्तने जिस क़द्र नज़्रका सामान मए दर्ख़्वास्तके बादशाही दर्गाहमें भेजा था, पेश होकर कुबूल किया गया था; और फ़र्मान लिखे जानेको भी हुक्म दिया था; इन दिनोंमें उन उ़म्दह सर्दारका तीर्थकी नियत से बूंदीकी तरफ़ जाना अ़र्ज़ हुआ, नज़्रकी चीज़ें उन दोस्तके आदमियोंको वापस करदी गईं; और फ़र्मानका लिखा जाना भी मुल्तवी रहा; ऐसा मुनासिब था, कि फ़र्मान और राणाका ख़िताब मिलनेपर शुक्र अदा करके तीर्थके वास्ते इजाज़त मांगते; बग़ैर हुक्म अपनी जगहसे निकलना पुराने दस्तूरके ख़िलाफ़ है; और उन दोस्तकी अ़क्लमन्दीसे निहायत दूर मालूम होता है.

इस लिये जो अ़र्ज़ी कि इन दिनोंमें बुज़ुर्ग दर्बारमें भेजी थी, बादशाहकी तबीअ़तको बर्ख़िलाफ़ देखकर पेश नहीं की, और जो काग़ज़ कि मुझको भेजा था दोस्तीके सबब उन दोस्तके वकीलसे लेकर मैंने पढ़ा, जिसमें इत्तिला थी, कि आप लौटकर वतन पहुंच गये हैं; अगर्चि आपकी ख़ैरख़्वाहीके इरादे मुझको पहिले ही से मालूम थे, जिनकी बाबत मैंने हुज़ूरमें अ़र्ज़ किया है; लेकिन् मुनासिब देखकर एक दूसरी बात लिखी जाती है, कि बदनौर वग़ैरह ३ पर्गनोंमें, जो कि जिज़्यहके एवज़ बादशाही नौकरोंको आपने सौंप दिये हैं, बिल्कुल दख़्ल न दें; ख़ालिसेके काम्दारोंको इन्तिज़ाम करनेमें कोई शिकायतका मौक़ा न मिले. ख़ैरख़्वाही और ताबेदारीकी बाबत एक अ़र्ज़ी भेजदें, जो मौक़ा देखकर हुज़ूरमें पेश की जावे, और जिससे साफ़ दिलीका ख़याल जम जावे; और उन दोस्तकी भेजी हुई नज़्रका सामान कुबूल फ़र्माया जावे. मैं दोस्तीका हक़ अदा करता हूं, चाहे वह पसन्द हो, या ना पसन्द. आइन्दह अपने फ़ाइदोंपर निगाह रखकर बादशाही मर्ज़ीके ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई न करें, और एक इक़ारनामह अपनी मुहरसे लिख भेजें. ता० २९ रबीउ़लअव्वल सन् ४३ जु० (हिज्री ११११ = विक्रमी १७५६ आश्विन कृष्ण ३० = ई० १६९९ ता० २५ सेप्टेम्बर).

७- एक अर्ज़ीका मुसव्वदह, जो आलमगीर बादशाहको भेजीगई. विक्रमी १७५६ कार्तिक शुक्ल ५ [हि० ११११ ता० ३ जमादियुल अव्वल = ई० १६९९ ता० २९ ऑक्टोबर].

ख़ैरस्वाह अर्ज़ करता है, कि इन दिनोंमें नव्वाब जुम्दतुलमुल्क मदारुल-महामका ख़त तावेदारके नाम इस मज़्मूनसे आया, कि बग़ैर हुज़ूरी हुक्मके तीर्थोंको जानेसे शर्मिन्दह होकर कभी बिला इत्तिला ऐसी कार्रवाई न करे; और तीनों पर्गने, जो उतार लिये गये हैं, उनमें दख़्ल न दे; और इस मुआमलेका मुचल्का हुज़ूरमें लिख भेजे. तावेदारोंकी जाय पनाह सलामत, बदनसीबीसे इस तावेदारने कोई ऐसा काम नहीं किया, कि हमेशह बग़ैर फ़र्मानेके किसी तरफ़ न जावे, इस मर्तबह तीर्थ जानेको दुश्मनोंने इस ख़ैरस्वाहकी नमक हरामीपर ख़याल करके बेजा बातोंसे हुज़ूरकी पाक, बुज़ुर्ग, नेक तबीअतको नाराज़ करदिया; इन्साफ़को पालने वाले सलामत, दुन्या और आख़िरतकी रूसियाही उस नालायक़के नसीब हो, जिसकी तबीअतमें उद्रूल हुक्मीका कोई ख़याल पैदा हो- ज़ियादह क्या अर्ज़ किया जावे. यह ख़ैरस्वाह सिवाय तावेदारीके कोई ख़राब इरादह दिलमें नहीं रखता. बुज़ुर्ग मिहर्वानियोंसे उम्मेद है, कि क़ुसूरकी मुआफ़ीसे इज़्ज़त बख़्शकर तसल्ली फ़र्मावें, कि यह तावेदार ख़ैरस्वाहीके रास्तेपर साबित क़दम है. वाजिब जानकर अर्ज़ किया.

८- शहनशाह आलमगीरके वज़ीरकी याद्दाश्त.

ख़ास बादशाही तावेदारके नाम हुक्म हुआ, कि पृथ्वीसिंह और रामराय वग़ैरह, जो अगले राणाके बेटेके वकील हैं, बादशाही लश्करमें हाज़िर हुए हैं, इनके साथ कुछ जमइयत भी है; इस लिये इनको तीन तीन थान कपड़ेके देकर फ़ौजकी चौकीदारी पर मुक़र्रर किया जावे. ता० ९ जमादियुल अव्वल सन् ४३ जुलूस (हिज्री ११११ = विक्रमी १७५६ कार्तिक शुक्ल ११ = ई० १६९९ ता० ४ नोवेम्बर).

९- वज़ीर असदख़ांका ख़त महाराणा अमरसिंहके नाम.

मामूली अल्क़ाबके बाद- उन उम्दह सर्दारके ख़त कई बार पहुंचे, मज़्मून अर्ज़ कर दिया गया; मन्शासे पहिले भी इत्तिला दी गई है. उन उम्दह भाईके

काम मेरे ज़िम्मह हैं; इसलिये जगरूप वकील, पृथ्वीसिंह, रामराय और बाघमल्लको बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ अपने पास ठहरा लिया है, जिस वक़् कि सय्यद अब्दुल्लाख़ां हुज़ूरमें जवाब लिखेंगे, उन दोस्तके काम अच्छी तरह तै हो जावेंगे; वे फ़िक्र रहें. ता० १४ जमादियुल अव्वल सन् ४३ जुलूस (हिजी १९१९ = विक्रमी १७५६ कार्तिक शुक्ल १५ = ई० १६९९ ता० ९ नोवेम्बर).

१०- अजमेरके वक़ाया निगारकी याद्दाश्त, ता० ११ रजब सन् ४३ जु० आ० (हि० १९१९ = वि० १७५६ पौष शुक्ल १३ = ई० १७०० ता० ४ जैन्युअरी).
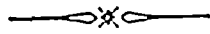
उदयपुरका जागीरदार अमरसिंह, इन दिनोंमें बहुतसी फ़ौज एकट्ठी करता है, मालूम नहीं उसका क्या इरादह है.

११- किसी बादशाही सर्दारका काग़ज़ पर्गनह बदनौर वग़ैरह की बाबत,
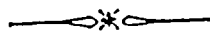
बुज़ुर्ग ख़ान्दानवाले सय्यद हुसैनको मालूम हो, कि इन दिनोंमें बहादुर ख़ासियत अमरसिंह, राणा जयसिंहके बेटेने लिखा है, कि पर्गनह बदनौर वग़ैरह तीन इलाक़े, बापकी तरहपर बादशाही ख़ालिसेमें छोड़ दिये हैं. हुसैनअली अब्दुल्लाख़ांका बेटा वहां जाकर राजपूतोंको सताता है; इसलिये उसको समझा दिया जावे, कि ये पर्गने राणाकी तरफ़से ख़ालिसेमें होगये हैं; कोई शख़्स किसी तरहका इसमें दख़्ल न दे. ता० २१ रजब सन् ४३ जु० आ० (हि० १९१९ = वि० १७५६ माघ कृष्ण ७ = ई० १७०० ता० १४ जैन्युअरी).

१२- महाराणा अमरसिंहकी दरख़्वास्त किसी शाहज़ादहके नाम वि० १७५६ [हि० १९१९ = ई० १७००].

बुज़ुर्ग हुक्मसे इत्तिला पाई, जिसमें लिखा था, कि राणाकी फ़ौज जमा होकर फ़साद करना चाहती है, जुझारसिंह कई बातें अर्ज़ कर चुका है. जवाबमें अर्ज़ किया जाता है, कि जुझारसिंहका बयान हुज़ूरमें बिल्कुल झूठ समझना चाहिये; इस ख़ैरख़्वाहको बादशाही इलाक़े लूटनेका हौसला नहीं है. हमेशह ख़ैरख़्वाहीका ख़याल रहता है, जुझारसिंहका भतीजा राजसिंह मेरे मातह्त दूल्हासिंहके भाइयोंको पकड़कर लेगया, मैं ने अपने मातह्त दूल्हासिंहको मना कर दिया.

अपने भाइयोंके एवज़ सब्र करे. जुझारसिंहने अपनी तरफ़से हुज़ूरमें झूठ तूफ़ान लिख भेजा. इस मुआमलेकी तहक़ीक़ात हो, और फ़सादी या झूठेको सज़ा दी जावे, ता कि दुबारा बादशाही दर्गाहोंमें कोई ऐसी अर्ज़ न करे.

१३– ख़बर.

नारायणदास कुन्बी जोधपुरमें तईनात है, और वहींसे जागीर पाता है, और जुझारसिंहकी विकालत करता है. लाला नन्दरायकी मारिफ़त बादशाही हुक्मसे जोधपुरमें जाकर बहुतसे राजपूतोंको मिला लिया है. यहां आकर जुझारसिंहसे कहा है, कि तुम हमेशह राणाकी शिकायत लिखते रहो; मैं कोशिश करके हुक्म भिजवा दूंगा, कि राणाका इलाक़ह लूटते रहो; नारायणदास नन्दरायसे मिला हुआ है, और वह राणाका दुश्मन है, क्यों कि जिस वक़ उसका बेटा ब्याहके वास्ते दिहली जाता था, और राणाने आदमी साथ देकर अजमेर तक आरामसे पहुंचवा दिया, तो उदयपुरसे दूर होनेके सबब अपने पास बुलाकर सफ़र ख़र्च नहीं दिया; इस बातसे नन्दराय राणाकी तरफ़से नाराज़ है, कि उसका बेटा उनके इलाक़ेमें गया, और उन्होंने ख़ातिर नहीं की. वज़ीर इस बातको ख़ूब जानता है, कि राणा सिवाय हमारे और कोई सिफ़ारिश नहीं रखता. (हिज्री ११११ = विक्रमी १७५६ = ई० १७००).

१४– मेवाड़ वकीलकी दरख्वास्त वज़ीर असदखांके नाम.

नव्वाब साहिब इह्सान करने वाले, फ़ायदह पहुंचाने वाले सलामत– ताबेदारी और लाचारीके दस्तूर अदा करके बुज़ुर्ग ख़िझतमें अर्ज़ किया जाता है, कि पर्गने बदनोर और मांडलगढ़ बड़े दरजे के अमीर राणा अमरसिंहने बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ ख़ाली करके सुजानसिंह राठौड़के बेटों कर्णसिंह और जुझारसिंहको सौंप दिये. अब हर तरह ताबेदारीके साथ हुक्मोंके मुवाफ़िक़ अमल किया जाता है, अगले दिनोंमें यह दोनों पर्गने फ़सादी डाकुओंकी जाय पनाह थे, जब ख़ालिसेमें या राणाके इलाक़ेमें मुक़र्रर हुए, अम्न रहा; अब यक़ीन है, कि लुटेरे फिर आ बसेंगे; इस लिये अगर ख़ालिसेमें शामिल कर लिये जावें, तो अच्छा बन्दोबस्त होगा. (हिज्री ११११ विक्रमी = १७५६ = ई० १७००).

१५- वज़ीरका ख़त, महाराणा २ अमरसिंहके नाम. ता० १० रमज़ान सन् ४४ जु० आ०
[हि० ११११ = वि० १७५६ फाल्गुण शुक्ल १२ = ई० १७००
ता० २ मार्च].

हमेशह नेक बादशाही मिहर्बानियोंमें शामिल होकर खुश रहें, जो ख़त कि बादशाही नौकरोंको पर्गनह सौंपने, १००० सवार रवानह करने, फ़र्मान और टीका इनायत होने और पृथ्वीसिंहको रुख़्सत मिलनेकी बाबत लिखा था, पहुंचा. पर्गनोंके सौंपने और सवारोंकी रवानगी और फ़र्मान मिलनेके वास्ते हुज़ूरमें अ़र्ज़ किया गया; हुक्म हुआ, कि फ़र्मान लिखा जावेगा. मैंने दुबारा लिखा है, ख़ातिर जमा रक्खें, जमइयत भेजनेमें देर न करें; यक़ीन है, कि सवारोंके पहुंचनेपर पर्गने बदस्तूर बहाल होजावें; फ़िक्र न करें. पृथ्वीसिंह और रामराय और वकील जगरूप अच्छी पैरवी करते हैं, ज़ियादह क्या लिखा जावे.

१६- वज़ीरका ख़त महाराणा २ अमरसिंहके नाम.

हमेशह बादशाही मिहर्बानियोंमें शामिल होकर खुश रहें, दोस्ती की बातें ज़ाहिर करनेके बाद मालूम हो, कि बादशाही दर्गाहमें अ़र्ज़ हुआ है, कि गोपाल नालायक़ 'मालका' और 'बाजणा' के पहाड़ोंमें ठहरा हुआ है; यह गांव अगर्चि पहिले मांडलगढ़के पर्गनेमें शामिल था, लेकिन् शुरू साल २८ जुलूससे गुज़रे हुए राणा जयसिंहने इस तरफ़के १७ गांव अपनी जागीरके तअ़ल्लुक़में कर लिये थे, और अब भी यह जगह उन उ़म्दह सर्दारके क़ब्ज़ेमें है; उदयभान शक्तावत उस दोस्तका नौकर, जो इस गांवका जागीरदार है, बदनसीब गोपालके साथ इत्तिफ़ाक़ रखता है; और वह दोस्त भी मदद ख़र्च देते हैं. यह बात अच्छी नहीं मालूम होती. इस वक़्से पहिले उस उ़म्दह भाईके लिखनेसे हुज़ूरमें अ़र्ज़ हुआ था, कि उदयभान वग़ैरह ज़मींदार गोपालके साथ इत्तिफ़ाक़ रखते हैं, और राठौड़ भी, जिनकी जागीर क़रीब है, उसको नहीं रोकते हैं; इन दिनोंमें अ़र्ज़के बर्ख़िलाफ़ मालूम हुआ, जिसकी बाबत बहुत अफ़्सोस है. बुज़ुर्ग हुक्मकी मुवाफ़िक़ मैंने लिखा है, कि पर्गनह मालका और बाजणाको मए १७ गांवोंके अपने इलाक़ेमें जानकर ताकीद रक्खें, कि उदयभान बेजा हरकतोंसे शर्मिन्दह होकर हुक्मके बर्ख़िलाफ़ अमल न करे. वह दोस्त भी मदद ख़र्चसे हाथ खेंचकर बादशाही ख़ैरख़्वाहीपर क़ाइम रहें; और ऐसी कोशिश करें, कि गोपाल

बदआमाल क़ैद होकर बादशाही दर्गाहमें पहुंचे, इस कामको अपनी उम्दह ख़िद्मत गुज़ारी समझें; अगर उदयभान कहनेपर अमल न करे, तो उसको भी निकालकर इत्तिला देवें, और हर तरह अच्छा बन्दोबस्त करें. ज़ियादह क्या लिखा जावे. (हिज्री १११९ विक्रमी १७५७ = ई० १७००).

१७—किसी बादशाही सर्दारका ख़त दूसरे सर्दारके नाम ता० २१ शव्वाल सन् ४४ जुलूस आ० [हिज्री ११११ = वि० १७५७ वैशाख कृष्ण ७ = ई० १७०० ता० १२ एप्रिल].

बड़े दरजेके बहादुर दोस्त खुश रहें— शौक़के बाद मालूम हो, रामराय वकील, जो उम्दह सर्दार अमरसिंहका वकील है, नावाक़िफ़ीसे सय्यद मुज़फ़्फ़रकी मारिफ़त मुझसे ख़्वास्तगार हुआ, कि वह दोस्त ख़्वाहिश रखते हैं, कि-अगर गुज़रे हुए राजा भीमके मुवाफ़िक़ मन्सब इनायत हो, और पर्गनह ईडर मए इलाक़ह जागीरमें मिले, तो उम्दह फ़ौज समेत हुज़ूरमें हाज़िर रहे, और एक लाख रुपया नज़ दे, जिसमेंसे आधा पहिले और आधा मन्सब पानेके बाद अदा करे. इसलिये लिखा जाता है, कि उम्दह जमइयत लेकर हाज़िर होनेपर तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार, और पांच सौ सवार दो अस्पह सि अस्पहका मन्सब बख़्शा जावेगा, और ईडर जागीरमें दिया जावेगा. यह कोशिश और इम्तिहानका वक़्त है, फ़ौज लेकर आवें, तो ज़रूर फ़ायदह उठावेंगे, इस काग़ज़को इक़ार समझकर ज़रूर रवानह हों, थोड़े लिखेको बहुत जानें.

१८—वज़ीरका ख़त, मेवाड़के मुआमलेकी बाबत सूबेदारके नाम.

बड़े ख़ान्दानी बहादुर दोस्त, खुदाकी पनाहमें रहें— सलामके बाद मालूम हो, कि इससे पहिले बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ कर्णसिंह और जुझारसिंहको ताकीद लिख दी गई थी, कि गुज़रे हुए राणा जयसिंहके बेटे अमरसिंहके इलाक़हमें दख़्ल न देनेके वास्ते ताकीद की थी; इन दिनोंमें अमरसिंहने दोबारह लिखा, कि कर्ण और जुझारसिंह उसकी जागीरमें हाथ डालते हैं, और इरादह रखते हैं, कि फ़साद करें, जिससे अमरसिंह हुज़ूरमें बदनाम हो. इस वास्ते लिखा जाता है, कि वह सर्दार ताकीद करदें, कि गुज़रे हुए दलपतके मुवाफ़िक़ अमल रक्खें; और अमरसिंहके इलाक़हमें दख़्ल न दें; अपनी जागीरोंका ऐसा बन्दोबस्त रक्खें, कि

दोबारह तक्रार न होने पावे. ता० ४ ज़ीक़ाद सन् ४४ जु० ऋ० [हिज्री ११११ = वि० १७५७ वैशाख शुक्ल ६ = ई० १७०० ता० २६ एप्रिल].

१९ – बादशाह ज़ादह शाहआ़लम बहादुरशाहका निशान, (१) महाराणा २ अमरसिंहके नाम, दस्तख़त ख़ासका.

बादशाही.

हिन्दुस्तानके राजाओंके बुज़ुर्ग बड़े जागीरदारोंके उ़म्दह राणाजी, मिह्रबानियोंसे इ़ज़्ज़तदार होकर जानें– हिम्मतवर नरायणदासकी ज़बानी बाज़ बातें मालूम हुईं, अस्ली जवाब, जिनमें झूठका लगाव नहीं है, उससे कह दिये गये; वह मुफ़स्सल लिखेगा मोतबर समझें. मुआ़मला पहिलेके मुवाफ़िक़ है; जो कोई कम ज़ियादह कहता है, उसमें कुछ सच नहीं है, जितनी बादशाही ख़ैरख़्वाही करेंगे, बड़े दरजेपर पहुंचेंगे. ज़ियादह ताबेदारीपर क़ाइम रहना चाहिये. अगर मेरी इस बातको मानोगे, तो मैं तुम्हारा साथी हूं, और अगर बच्चोंकी बातोंपर ध्यान रक्खा, तो

---

(१) نقل نشان د ستخط خاص شاهزادهٔ شاه عالم بهادر
نام رانا امرسنگه - دوم *

——(*O*)——

بادشاهی

زبدهٔ راجهای هندوستان عمدهٔ
زمینداران عالیشان راناجیو از نوازش
ممتاز بوده بدانند - از زبانی
تهور دستگاه نراین داس بعض مقدمات
ظاهر شد جوابها نفس الامری که
شائبهٔ دروغ ندارد باو گفته شد - مفصل
خواهد نوشت — معتبر شناسند * و حرف
حرف اول است — و هر که کم و زیاد
میگوید بهرهٔ از راستی و درستی ندارد -

هرچند بندگی بادشاه عالم پناه بیشتر خواهد کرد بمراتب خواهد
رسید زیاده انقیاد و بندگی باد ۱۶ ذوالقعده نوشته شد ه

اگر اینحرف مرا شنیدید — بندهٔ درگاه رفیق شماست — و اگر حرف
طفلان گوش کردید — اختیار دارید — من با شما رفیق نیستم فقط

तुम्हारा इख़्तियार है; मैं शरीक नहीं हूं. ता० १६ ज़िल्क़ाद सन् ४४ जु० आ० [हिज्री ११११ = विक्रमी १७५७ ज्येष्ठ कृष्ण २ = ई० १७०० ता० ८ मई].

२०– बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ फ़ज़ाइलख़ांने नव्वाब वज़ीरके नाम लिखा.

दोस्तीके आदाब बजा लाकर अर्ज़ रखता है, कि बुज़ुर्ग ख़त ता० २४ शव्वालका लिखा हुआ मए ख़त अमरसिंहके वुसूल हुआ, सब हाल मालूम हुए; हुज़ूरमें अर्ज़ करदिया गया. अमरसिंहने लिखा, कि खुमानसिंह जागीरदारने क़िले चित्तौड़की मरम्मतके लिये जो अर्ज़ किया है, उसकी ख़िलाफ़ बयानी शजाअ़तख़ांने लिखी होगी. बादशाही हुक्म हुआ, कि उस सर्दारने अभी तक उस मुआ़मलेमें राय नहीं दी. बादशाही मन्शा है, कि अमरसिंह क़िला चित्तौड़ और बुतख़ाने बनानेसे पर्हेज़ रखे, और बादशाही मर्ज़ीके बर्ख़िलाफ़ कोई काम न करे; और बादशाही हुक्म ऐसा भी है, कि बख़्तयारख़ांके ख़तकी नक़्ल, जो इन दिनोंमें पेश हुआ है, उन उ़म्दह वज़ीरके पास भेजी जावे, वह नज़रसे गुज़रेगी; ख़ुशीके दिन हमेशह रहें. माह ज़िल्हिज सन् ४४ जुलूस [हिज्री ११११ = विक्रमी १७५७ ज्येष्ठ शुक्ल = ई० १७०० मई].

२१– नव्वाब असदख़ांका ख़त, मेवाड़के मुआ़मलेमें फ़ज़ाइलख़ां मुन्शीके नाम.

बड़े दरजेके साफ़ दिल दोस्त बादशाही मिहर्बानियोंमें शामिल रहें, बाद सलाम शौक़के मालूम हो, कि उस दोस्तका ख़त, जो बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ लिखा था, मुझको मिला; उसमें इशारह है, कि अमरसिंह, राणा जयसिंहके बेटेकी लिखावटसे डूंगरपुरके जागीरदार खुमानसिंहकी अर्ज़ ग़लत मालूम होती है, जिसने लिख दिया था, कि चित्तौड़की मरम्मत होती है, और बुतख़ाने बनाये जाते हैं. शजाअ़तख़ांसे भी दर्याफ़्त किया जावे; इससे पहिले शजाअ़तख़ांका ख़त भी पहुंचा था. जो भेज दिया, अब दो बारह उसकी नक़्ल भेजी जाती है, जिससे मुफ़स्सल हाल मालूम होगा. जागीरदारके वकीलोंसे भी, जो मए तीन सौ सवारोंके लश्करमें हाज़िर हैं, दर्याफ़्त किया गया; मुचल्का और जो काग़ज़ कि उन्होंने लिख

दिया है, अस्ल भेज दिया जाता है, किसी मौक़ेपर पेश करदें; और बादशाही हुक्मसे इत्तिला दें. ता० २७ ज़िल्हिजको मुसव्वदह किया, और ता० १ मुहर्रम सन् ४४ जु० आ० [हिज्री १११२ = विक्रमी १७५७ आपाढ़ शुक्ल ३ = ई० १७०० ता० २० जून] को तय्यार हुआ.

२२– नव्वाब वज़ीरका ख़त, महाराणाके मुआमलेमें
सूबेदार अहमदाबादके नाम.

ख़ान्दानी इज़्ज़तदार दोस्त ख़ुदाकी हिफ़ाज़तमें रहें, सलामके बाद मालूम हो, कि पहिले उन दोस्तका ख़त पहुंचा था, कि डूंगरपुरके जागीरदार खुमानसिंहकी लिखावटमें कुछ सचाई नहीं है; इन दिनोंमें खुमानसिंहकी तहरीर और अजमेरके वक़ाया निगारोंकी ख़बरोंसे मालूम होता है, कि चित्तौड़की मरम्मत की जाती है; और बुतख़ाने बनाये जाते हैं, और फ़ौज इकट्ठी करके अमरसिंह, राणा जयसिंहका बेटा ख़राब इरादह रखता है. उस शख़्सके लिखने और उसके वकीलोंके इज़्हारसे मालूम होता है, कि यह तमाम झूठ है; इस वास्ते अब लिखा जाता है, कि वह इज़्ज़तदार दोस्त गुज़रे हुए राणाके बेटेकी पूरी हक़ीक़त और नाक़िस इरादहको दर्याफ़्त करके सहीह तौरपर मुझको लिखें, ता कि बादशाही हुज़ूरमें अर्ज़ किया जावे; ज़ियादह सलाम. ता० शुरू मुहर्रम सन् ४४ जु० आ० [हिज्री १११२ = वि० १७५७ आपाढ़ शुक्ल ३ = ई० १७०० ता० २० जून].

२३– किसी बादशाही नौकरकी दर्ख़्वास्त, महाराणा २ अमरसिंहके नाम
ता० २९ सफ़र सन् ४४ जु० आ० [हि० १११२ = वि० १७५७
भाद्रपद कृष्ण ऽऽ = ई० १७०० ता० १५ ऑगस्ट].

हज़रत बुज़ुर्ग बादशाहकी मिहर्बानियें, उन बड़े दरजेके आलीशान ख़ान्दान वाले राजाके हालपर जारी रहें, मुलाक़ातकी आर्ज़ूके बाद अर्ज़ करता है, कि बुज़ुर्ग ख़त भैया रामरायकी मारिफ़त वुसूल हुए, और जो अर्ज़ियें, कि शाहज़ादहके हुज़ूरमें भेजी थीं, पेश करदी गईं. कामोंका तै होना अपने वक़्पर मौक़ूफ़ है. शाहज़ादह आलीजाहका लश्कर इन दिनोंमें सूबे मालवाकी तरफ़ आने वाला है, निहायत साफ़ दिलीसे वह उम्दह राजा अपनी ख़ैरख़्वाहीसे मुचल्का लिख कर एक हज़ार सवारकी जमइयत, जो उज्जैन पहुंचनेसे पहिले भेज देंगे, यह सब अर्ज़ कर दिया. बुज़ुर्ग

शाहज़ादहने बे हद मिहर्बानियोंके साथ बादशाही दर्गाहसे टीकेका फ़र्मान, राणाका ख़िताब और जड़ाऊ जम्धर, घोड़ा और हाथी, मए चांदीके सामानके उस बुज़ुर्ग सर्दारके लिये हासिल किया; ताबेदारीकी सूरत देखकर शाहज़ादह आलीजाह भेज देंगे, उन उम्दह सर्दारका वकील भी ख़िझतमें हाज़िर रहेगा.

उन बुज़ुर्ग ख़ान्दानके सर्दारको क़दीमी ख़िताब मुबारक हो, इसका शुक्रियह अदा करें, और अपने बुज़ुर्गोंकी मानन्द ख़ैरख़्वाहीके रास्तेपर क़ाइम रहकर बादशाही मर्ज़ीके ख़िलाफ़ कोई काम न करें. बाग़ियोंको अपने इलाक़हमें जगह न दें, और जमइयत भेजकर फ़सादियोंकी ख़राबीमें कोशिश करें, जिससे बादशाही मिहर्बानियें बढ़ती रहें. जो पैरवी उन उम्दह सर्दारके दीवानसे इस मौक़ेपर ज़ाहिर हुई, तारीफ़के क़ाबिल है, यक़ीन है, कि उम्दह नतीजह बख़्शे. बादशाही दर्गाहमें होश्यार आदमीका भेजना आपकी ख़ूबी ज़ाहिर करता है. मुझको दोस्तीके रास्तेपर साबित क़दम समझें. ज़ियादह क्या लिखूं. ख़ुशीके दिन हमेशह रहें.

२४— जुम्दतुल्मुल्क असदख़ां वज़ीरका ख़त, महाराणा २ अमरसिंहके नाम.

हमेशह बादशाही मिहर्बानियोंमें शामिल रहकर ख़ुशी और बिहतरीमें रहें- मुहब्बतकी बातें बयान करनेके बाद साफ़ तबीअतपर ज़ाहिर हो, जो ख़त हुज़ूरमें जमइयत भेजनेकी बाबत और अपने गांवपर करण और जुझारसिंहके ज़ुल्मके बयानमें लिखा था, नज़रसे गुज़रा. बादशाही हुक्म होगया है, कि यह बादशाही ख़ैरख़्वाह (मैं) उस दोस्तको लिखे, कि बड़े नव्वाब बुज़ुर्ग शाहज़ादह आलीजाह आज़मशाह उस तरफ़ तश्रीफ़ रखते हैं, उनके मन्शाओंको बादशाही हुक्म समझकर अमल करें. बादशाही हुक्मके काग़ज़ क़ाइदहके साथ इस ख़ैरख़्वाहकी मुहरसे पहुंचेंगे. उस उम्दह सर्दारके एक हज़ार सवार शाहज़ादह आलीजाहकी ख़िझतमें तईनात हुए हैं, वहां भेजदें. करण और जुझारसिंहको बादशाही दर्गाहसे हुक्म मिला है, कि किसी तरहका नुक़्सान उस बुज़ुर्ग दोस्तके इलाक़ेमें न पहुंचावें. उम्मेद है, कि हुक्मके मुवाफ़िक़ अमल रहेगा. ता० ५ रजब सन् ४४ जुलूस आ० [हि० १११२ = वि० १७५७ मार्गशीर्ष शुक्ल ७ = ई० १७०० ता० १९ डिसेम्बर].

२५- आज़मशाहके कारख़ानहकी तरफ़से सय्यद अहमदकी रसीद, महाराणा २ अमरसिंहकी भेजी हुई चीज़ोंकी बाबत.

तारीख़ २९ रबीउस्सानी सन् ४५ जु० आ० [हिज्री १११३ = विक्रमी

१७५८ आश्विन कृष्ण ३० = ई० १७०१ ता० ३ सेप्टेम्बर].

हाथी गजशोभा नाम, कीमती रु० ४१२१।=॥.
जम्धर ७ कीमती रु० १४८३।=॥.
जम्धर सोनेके सामानके, कीमती रु० ४२४॥।.
झूल, कीमती रु० ९१.
पायजामा साबरी, कीमती रु० ४५.

तलवार नग ७ साबरी ९
पाखर वगैरह, कीमती रु० ४००.
तरक, कीमती रु० ४००.
सरचंद, कीमती रु० ५००.

घोड़ा ४२, सर्ज याने ज़ीन घोड़ेके २, जम्धर जड़ाऊ कामकेमए अतलसी गिलाफ़, कीमती रु० १०५९।.
ज़ीन सुनहरी, रुपहरी, कीमती रु० १५९३.

२६– वज़ीरका खत, रावल अजबसिंहके नाम.

बराबरी वालोंमें उम्दह रावल अजबसिंह नेक नियत रहें, इन दिनोंमें बुज़ुर्ग खान्दान राणा अमरसिंहके लिखनेसे अर्ज़ हुआ, कि उस सर्दारने भीलवाड़ा वगैरह २७ गावोंपर, जो डांगलके ज़िलेमें राणाके सर्हदी इलाकेपर हैं, और जिनकी बाबत राणा एक महज़र उनके बाप रावल कुशलसिंह और डूंगरपुरके ज़मींदार रावल खुमानसिंहके हाथकी रखता है, बेफ़ायदह दावा करके ज़ुल्म और दख्ल दे रक्खा है. यह बात बादशाही दर्गाहमें बहुत ख़राब मालूम होती है, और हुक्मके मुवाफ़िक़ लिखा जाता है, कि इस काग़ज़के पहुंचतेही राणाके इलाकेपर बेजा दख्ल न करे; इस मुआमलेमें हुज़ूरकी तरफ़से सख्त ताकीद समझे. ता० २५ ज़िल्क़ाद सन् ४६ जु० आ० [हिज्री १११३ = विक्रमी १७५९ वैशाख कृष्ण ११ = ई० १७०२ ता० २३ एप्रिल].

२७– नव्वाब शायस्तहखांकी रिपोर्टका खुलासह, ता० ३ शअ्बान सन् ४७ जु० आ० [हि० १११४ = वि० १७५९ पौष शुक्ल ५ = ई० १७०२ ता० २४ डिसेम्बर].

सुब्हके वक्त राजा इस्लामखांने मालवेके सूबेदार नव्वाब शायस्तहखांके पास

आकर ज़ाहिर किया, कि राणा अमरसिंहकी फ़ौज इस्लामपुरके इलाक़ेमें आगई है, जिससे गांवकी रअय्यत भागती है. नव्वाबने कहा, राणाका मोतबर वकील हर वक्त मेरे पास रहता है; मैं उसको ताकीद करता हूं, कि बादशाही मर्ज़ीके खिलाफ़ कोई कार्रवाई न होने पावे. नव्वाबने राणाके वकीलको ताकीद की, जिसने जवाबमें ज़ाहिर किया, कि हमारे ठिकानेदारको बादशाही मुल्कपर हाथ डालनेकी हिम्मत नहीं है. राजा इस्लामखां और प्रतापसिंह देवलिया वालेके बेटे कीर्तिसिंहने अपने जानेके लिये हीला बनाया है; अगर मेरा मालिक कोई नुक्सान पहुंचावे, तो मैं मुचल्का लिख देताहूं; राणाको राजासे कोई दुश्मनी भी नहीं है. वकीलने मुचल्का लिख दिया.

मुचल्केकी नक्ल.

मेरा नाम बाघमल है, राणा अमरसिंहजीका वकील हूं, इक़ार करता हूं, कि राजा इस्लामखांने अपनी मुहरसे लिख दिया है, कि राणाजी मुझसे दुश्मनी रखते हैं, और अनोपपुरा वगैरह रामपुरेके इलाक़ोंको लूटना चाहते हैं. मेरे ठिकानेदारको राजासे कुछ दुश्मनी नहीं है, बल्कि राजासे बहुत मुवाफ़क़त रखते हैं; इस्लामपुरेके इलाक़ेको लूटना उनके खयालमें भी नहीं है. अगर राणाजीकी फ़ौज इस्लामपुरका इलाक़ह लूटे, मैं उसकी जवाबदिहीके वास्ते हाज़िर हूं.

२८- महाराणा २ अमरसिंहका खत, ज़ुल्फ़िक़ारखां बख़्शीके नाम.
[विक्रमी १७५९ = हि० १११४ = ई० १७०२].

बुज़ुर्ग बादशाही मिहर्बानियें उन बड़े दरजेके दोस्त बख़्शियुल् मुल्कके हालपर जारी रहें, बाद शौक़के मालूम हो, कि इससे पहिले नव्वाब ज़ुम्दतुलमुल्कके फ़र्मानेके मुवाफ़िक़ एक अर्ज़ी फ़त्हकी मुबारकबादीमें मए किसी क़द्र नज़्रके बाघमलकी मारिफ़त भेजी थी, यक़ीन है, कि हुज़ूरमें पेश की हो. आपने हुज़ूरके रूबरू मेरे मोतबर पंचोली बिहारीदास और सलामतराय मुन्शीको जमइयत भेजनेके वास्ते फ़र्माया था, उसके मुवाफ़िक़ अपने काका कीर्तिसिंहको मए जमइयतके रवानह किया है; अगर खुदाने चाहा, तो खैरियतसे पहुंचकर आपकी मन्शाके मुवाफ़िक़ बादशाही काममें मसरूफ़ होगा. जबसे कि मेरे वकीलोंने आपकी साफ़ तबीअतका हाल लिखा है, मुझको हर तरहकी बे फ़िक्री है; यक़ीन है, कि मेरे कामोंमें खयाल रक्खेंगे, ज़ियादह क्या तक्लीफ़ दी जावे.

२९– अमीरुल्उमरा शायस्तहख़ांकी याद्दाश्त; ता० ७ ज़िल्क़ाद ४७ जु० आ० [हि० १११४ = वि० १७६० चैत्र शुक्ल ९ = ई० १७०३ ता० २६ मार्च] हि० ता० २७ ज़िल्क़ाद [वि० वैशाख कृष्ण १३ = ई० ता० १५ एप्रिल] को दुबारा पेश हुई–

कि पर्गनह सिरोही वग़ैरह इलाक़ह अजमेरमें से एक किरोड़ दाम जमापर, १००० सवार दक्षिणमें नाज़िमके पास हाज़िर रहनेकी शर्तपर शुरूअ् रबीअ्‌इलसे राणा अमरसिंहकी जागीरमें मुक़र्रर हुआ; मुनासिब है, कि चौधरी, क़ानूनगो, पटैल, रअय्यत और करसे, कुल जवाबदिही और दीवानीके मुआमले सफ़ाईके साथ, लिखे हुए सर्दारके आगे पेश करते रहें; और उसकी मर्ज़ीके बख़िलाफ़ कार्रवाई न करें. ५ ज़िल्हिज सन् ४७ जु० आ० [हि० १११४ = वि० १७६० वैशाख शुक्ल ७ = ई० १७०३ ता० २३ एप्रिल].

पुश्तकी इबारत.

मुक़र्रर जागीर राणा अमरसिंहके नामपर याद्दाश्तके मुवाफ़िक़ पर्गनह सिरोही और आबूगढ़, ज़िले जोधपुर सूबह अजमेरमें से, १००० सवार दक्षिणमें नाज़िमके साथ रहनेकी शर्तपर इनायत किया गया; दो पर्गने एक किरोड़ बीस लाख दामकी जमामेंसे बीस लाख दाम तख़्फ़ीफ़ किये गये.

३०– मालवेके सूबहदार अमीरुल्उमरा शायस्तहख़ांका ख़त, अली अहमद फ़ौज्दारके नाम; ता० ९ ज़िल्हिज सन् ४७ जु० आ० [हि० १११४ = वि० १७६० वैशाख शुक्ल ११ = ई० १७०३ ता० २७ एप्रिल].

सर्कारी ख़ैरख़्वाह सय्यद अलीअहमद ख़ुश रहें, मालूम हो, कि पर्गनह सिरोही और आबूगढ़ बादशाही दर्गाहसे सनदके मुवाफ़िक़ बहादुर सर्दार राणा अमरसिंहको बख़्शा गया; इस वास्ते हुक्मके मुवाफ़िक़ लिखा जाता है, कि राणाके आदमियोंकी मदद करके थानहदारोंपर ताकीद रक्खें, कि बर्तरफ़ ज़मींदार बादशाही इलाक़हमें रहकर रास्तह चलने वालोंको लूट मार न करे, और दख़्ल न पावे. इस मुआमलेमें बादशाही तरफ़से ताकीद जानकर लिखे मुवाफ़िक़ अमल रक्खें.

३१- मालवेके सूबहदारका खत यूसुफ़अली फ़ौज्दारके नाम.

इज़्ज़तदार यूसुफ़अली खुश रहें, मालूम हो, कि पर्गनह सिरोही और आबूगढ़ बादशाही दर्गाहसे बड़े दरजेके राणा अमरसिंहकी जागीरमें सनदके साथ बख़्शा गया है; मालूम होता है, कि अजीतसिंह राठौड़ बतरफ़ ज़मींदारको मदद देता है. बादशाही हुक्मोंकी तामील ज़रूर है, इस लिये अजीतसिंहको सख़्त ताकीद करदें, कि उसकी मददसे माज़ूल ज़मींदार इलाक़हके रहने वालों और रास्तह चलने वालोंकी जान व मालपर लूट मार न करे. इस मुआमलेमें बादशाही ताकीद है. ता० ११ ज़िल्हिज सन् ४७ जु० आ० [हि० १११४ = विक्रमी १७६० वैशाख शुक्क १३ = ई० १७०३ ता० २९ एप्रिल].

३२-नक़ल यादाश्त, महाराणा २ अमरसिंहकी तरफ़से.

हक़ीक़त यह है, जब हज़रत बादशाहने राणा राजसिंहपर चढ़ाई फ़र्माई थी, उस ज़मानेमें राणाके वकीलोंने सुलहके वास्ते हुज़ूरमें जाकर सुलहका बयान पेश किया; हज़रतने फ़र्माया कि जिज़्यह उसको देना पड़ेगा. आख़िर बहुतसी रद व बदलके बाद जिज़्येके एवज़में पर्गने बदनौर, मांडलगढ़ और पुरको लेलिया, और सुलह होगई. इसके पीछे खुद हज़रत अजमेरको तश्रीफ़ लेगये, कि इसी अर्सेमें राणा मज़्कूरका इन्तिक़ाल होगया; हुज़ूरसे राजाईका टीका राणा जयसिंहको मिला. इन राणाने अर्ज़ कराया, कि पर्गने मज़्कूर इनायत होजावें, उनके एवज़ एक लाख रुपया सालाना अजमेरके सर्कारी खज़ानेमें अदा करता रहूंगा. यह बात मंज़ूर फ़र्मा लीगई, और फ़र्मान पर्गनोंकी बाबत ख़िल्अ़त और हाथी समेत सूबहके दीवान मुहम्मद स्वलाह की मारिफ़त हासिल हुआ, कि मामूली रुपया खज़ानेमें अदा होता रहे. इसके बाद राणा जयसिंह गुज़र गया, पर्गने मज़्कूर राठौड़ोंकी जागीरमें तन्ख़्वाहके तौर मुक़र्रर होगये. फिर बादशाही हुक्म राणा अमरसिंहके नाम जारी हुआ, कि एक हज़ार सवारकी जमइयत हुज़ूरमें भेजदे, जब यह फ़ौज हाज़िरी देगी, तो पर्गने इनायत हो जावेंगे. इस लिये हुक्मके मुवाफ़िक़ जमइयत मज़्कूर हुज़ूरमें

भेजदी है, जो अब दक्षिणकी लड़ाइयोंमें चाकरी दे रही है; लेकिन् पर्गने अभी तक अ़ता नहीं हुए. अब मैं जनाब नव्वाब साहिब (वज़ीर) की बुज़ुर्गीसे उम्मेद रखता हूं, कि इस बाबत हुज़ूरमें कोशिश करके पर्गनोंके मिलनेसे काम्याब फ़र्मावें, ताकि बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ एक लाख रुपया सर्कारी ख़ज़ानेमें दाख़िल होता रहे, या एक हज़ार सवार मौजूदी हुज़ूरमें चाकरी करते रहें; और मालूम हो कि तीन किरोड़ दाम इन्आममेंसे एक किरोड़ दामकी तन्ख़्वाह वुसूल हुई है, और दो किरोड़ दाम सर्कारमें मांगता हूं.

३३- मालवेके सूबहदार अमीरुल्उमरा शायस्तहख़ांका ख़त, अ़ली अहमद फ़ौज्दारके नाम; ता० १८ शव्वाल सन् ४८ जु० आ़० [हि० १११५ = वि० १७६० फाल्गुन् कृष्ण ४ = ई० १७०४ ता० २४ फेब्रुअरी].

बादशाही ख़ैरख़्वाह अ़ली अहमद खुश रहें, इन दिनोंमें राणा अमरसिंहके वकीलकी अ़र्ज़से मालूम हुआ, कि पर्गने सिरोही और आबूगढ़के चौधरी और क़ानूनगो उस एक किरोड़ दामकी जागीरको राणा अमरसिंहसे ज़ब्त होना मश्हूर करके जवाबदिही नहीं करते हैं. बादशाही दफ़्तरसे यह जागीर उनके नाम बहाल पाई जाती है; इस लिये लिखा जाता है, कि चौधरी, क़ानूनगो और रअ़य्यत वग़ैरहको ताकीद करदें, कि दस्तूरके मुवाफ़िक़ दीवानी और मालकी जवाबदिही ज़िक्र किये हुए सर्दारके पास करते रहें, हिसाबी कार्रवाईमें कुछ फ़र्क़ न हो, ताकीद जानें.

३४- ज़ुल्फ़िक़ारख़ां बहादुर, नुस्रत जंग, बख़्शियुल्मुल्कका ख़त, महाराणा अमरसिंहके नाम; ता० १२ रबीउ़ल्अव्वल सन् ४८ जु० आ़० [हि० १११६ = वि० १७६१ आषाढ़ शुक्ल १२ = ई० १७०४ ता० १५ जुलाई].

उन बड़े दरजेके इ़ज़्ज़तदार दोस्तकी उम्मेदों और कार्रवाईका बाग़ बादशाही मिहर्बानियोंसे सर्सब्ज़ हो, बाद शौक़के मालूम हो, कि दोस्तीका ख़त पहुंच कर खुशीका सबब हुआ. पर्गनह मांडलगढ़ और बदनौर वग़ैरहकी जागीरके लिये पहिले भी हुज़ूरमें अ़र्ज़ किया गया था; और अब फिर इरादह है. चूंकि लिहाज़से एक हज़ार सवारकी रसीद दी जाती है, वर्नह जमइ़यत बहुत कम है;

इस बातपर ताकीद समझ कर और आदमी भेजें. उम्मेद है, कि इसी तरीक़ेपर दोस्तीके ख़त भेजते रहें. ज़ियादह क्या लिखा जावे.

ऊपर लिखे तर्जमोंका खुलासह.

१ नम्बरके काग़ज़का जो तर्जमह लिखा गया, उसका मत्लब यह मालूम होता है, कि वज़ीर असदख़ांने उदयपुरके वकीलोंकी तसल्लीके लिये बादशाहसे अ़र्ज़ करनेको यादके तौरपर सब काम लिखे हैं, जिसपर बादशाहने पेन्सिलसे ख़ुद हुक्म लिखा है; और उसकी नक़्ल तसल्लीके लिये वज़ीरने, उदयपुरके वकीलोंको दी होगी, और उन्होंने उदयपुर भेजी, कामोंकी तफ़्सील बदनौर, पुर मांडल, और मांडलगढ़का कुछ ज़िक्र है, जो हम ऊपर हिन्दी काग़ज़की नक़्लके साथ लिख आये हैं; लेकिन् राठौड़ कर्णसिंह और जुझारसिंहको बादशाहने ये पर्गने जागीरमें देदिये, और इन राठौड़ोंसे बार बार फ़साद होता रहा, और बादशाही मुलाज़िमोंके कई काग़ज़ोंमें भी इनका ज़िक्र है. पाठक लोगोंको यह संदेह न रहे, कि ये लोग कौन थे, इस लिये थोड़ा ज़िक्र इनका वंश वृक्षके साथ नीचे लिखते हैं:-

जोधपुरके राव मालदेवके बेटे राजा उदयसिंह थे, जिनका जन्म विक्रमी १५९४ माघ शुक्ल १२ रविवार [हि० ९४४ ता० ११ शअ़्बान = ई० १५३८ ता० १३ जैन्युअरी] को हुआ, और विक्रमी १६४० भाद्रपद कृष्ण १२ [हि० ९९१ ता० २६ रजब = ई० १५८३ ता० १५ ऑगस्ट] को जोधपुर आये; बादशाह अक्बरसे जोधपुरका राज्य और राजाका ख़िताब हासिल किया; और विक्रमी १६५१ आषाढ़ शुक्ल १५ [हि० १००२ ता० १४ शव्वाल = ई० १५९४ ता० ३ जुलाई] को लाहौरमें उनका देहान्त हुआ. इनके १७ बेटे थे, जिनमेंसे तेरहवें (१) माधवदासकी औलादके ज़िले अजमेर, जूनियां, महरू, पीसांगण वग़ैरहमें अभी तक इस्तिमरारदार कहलाते हैं, उनका वंश वृक्ष मए गांवों वग़ैरह जागीरके नीचे लिखते हैं. माधवदासका बेटा केसरीसिंह, जिसको बादशाही दर्बारसे पीसांगण जागीरमें मिला था, और उसका बेटा सुजानसिंह, जिसने जूनियां तो गौड़ राजपूतोंसे, और महरू सीसोदियोंसे छीन लिया था.

---

(१) लेo डीo ला टूश साहिब अजमेरके मुहतमिम् बन्दोबस्त, पांचवां बेटा होना लिखते हैं; और जोधपुरकी तवारीख़से तेरहवां बेटा होना पाया जाता है.
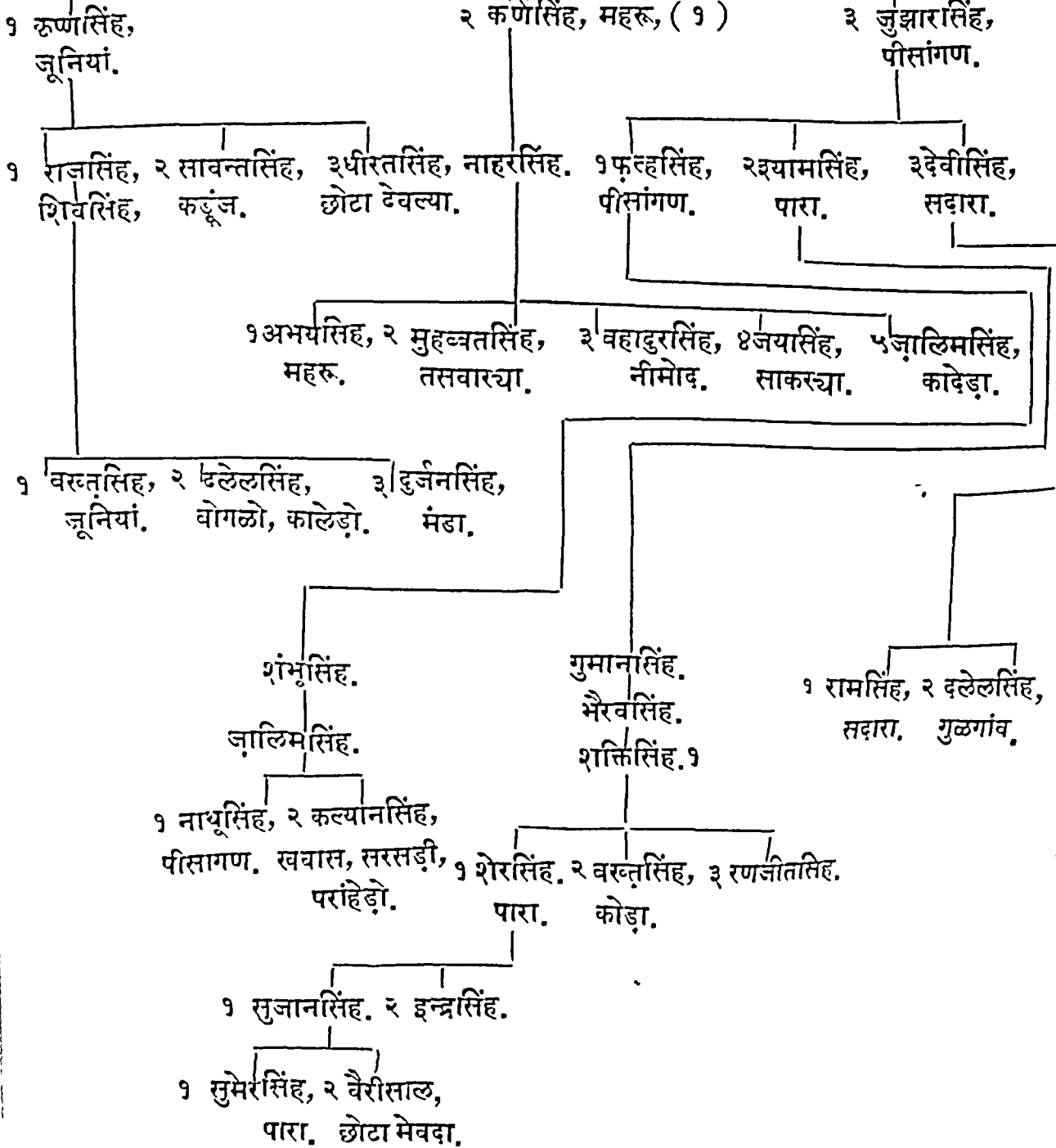
(१) कर्णसिंहको आलमगीरने बदनौर मेवाड़से लेकर जागीरमें देदिया, और उसके बड़े भाई रूपसिंहको व मांडलगढ़ झुझारसिंहको दिया था.

इन ऊपर लिखे हुए राठौड़ोंकी औलाद इन्हीं गांवोंमें मौजूद है, जैसा कि ऊपर लिखे नसब नामेसे ज़ाहिर होती है. गवर्मेंट अंग्रेज़ीके मातहत नीचे लिखे मुवाफ़िक़ सालाना मालगुज़ारी अजमेरके सर्कारी खज़ानेमें जमा कराते हैं. इन लोगोंको दीवानी फ़ौज्दारीका कुछ इस्तियार नहीं है.

जूनियांवाले,	कोड़ा,	सदारा,	गुळगांव,	कादेड़ा,
रु०५७२३॥≡.	रु०५३६।≡॥.	रु० ८५१.	रु० ८०१।-॥.	रु० १९१४।≡।॥.
मंडो,	बोगळो, कालेड़ो,	कडूंज,	देवल्या छोटा,	मेवदा छोटा,
रु० २४९.	रु० १६०० ≡ २.	रु०१७१३।-१.	रु०७९९॥।-॥।.	रु० ७८८।-.
महरू,	तसवारिया,	नीमोद,	साकरच्या,	
रु०५३५९॥,१.	रु०१०२३।,॥।१.	रु० ६१२॥-॥१.	रु० ४०७.	
पीसांगण,	खवास, सरसड़ी,	परांहेड़ा,	पारा,	
रु०४५६३॥।=२.	रु०१९३७॥।-॥।.	रु०१६९५॥,७.	रु०२४९२=।२.	

जूनियांके कृष्णसिंहका बेटा राजसिंह, जो बड़ा बहादुर आदमी था, अपनी जागीर पुर और मांडलपर क़ाबिज़ रहकर मेवाड़के राजपूतोंसे लड़ा भिड़ा करता था. ज़ियादह तर सीसोदिया चूंडावतोंसे उसकी अदावत होगई, उसने कई चूंडावतोंको मार मारकर पुरके नज़्दीक पहाड़ीकी खोहमें, जिसको 'अधरशिला' कहते हैं, डाल दिया; उस वक़् किसी शाइरने मारवाड़ी ज़बानमें यह दोहा कहाः—

दोहा

खेती थारी राजड़ा रस आई रावत्त ॥
अधर शिला तळ ओठिया चुण चुण चूंडावत्त ॥ १ ॥

यह बादशाह आलमगीरकी हिक्मत अमली थी, कि राजपूत लोग आपसमें लड़कर मारे जावें, और कम ताक़त हों; लेकिन् राठौड़ोंकी बहादुरीमें शक नहीं, क्योंकि बड़े ताक़तवर मेवाड़के महाराजा धिराजसे बख़िलाफ़ रहकर बेदिल न होना बग़ैर दिलेरीके नहीं होसक्ता.

अव्वल नम्बर फ़ार्सी काग़ज़का तर्जमह, वज़ीरकी याद्दाश्त है, पहिली क़लमका मत्लब, जो कर्णसिंह, जुझारसिंहके बारेमें है, खुलासह लिखा गया. दूसरी बात उस याद्दाश्तमें यह है, कि डूंगरपुरके जागीरदारने चित्तौड़ वग़ैरहकी बाबत जो कुछ लिखा, उसमें कुछ सचाई नहीं है, और ज़मींदार नामके लिये मन्सबदार

है, जिस क़द्र उसको अहमदाबाद आनेके लिये लिखा जाता है, उसका कुछ नतीजा नहीं निकलता. इस यादका यह मत्लब था, कि डूंगरपुर, बांसवाड़ा, और देवलिया प्रतापगढ़के राजा हमेशहसे मेवाड़के मातहृत रहे, लेकिन् चित्तौड़पर बादशाह अक्बरका हम्ला होनेके बाद यह तीनों ठिकाने कभी बादशाही नौकर और कभी उदयपुरके मातहृत होते रहे. जब महाराणा जयसिंहका इन्तिक़ाल हुआ, और अमरसिंह गद्दीपर बैठे, तब इन लोगोंने गद्दी नशीनीका दस्तूर, जिसको टीका कहते हैं, नहीं भेजा; महाराणा अमरसिंहने नाराज़ होकर महाराज सूरतसिंह भगवन्तसिंहोतको डूंगरपुरकी तरफ़ भेज दिया; सोम नदीपर डूंगरपुरके जागीरदार चहुवान राजपूत मुक़ाबला करके मारे गये; रावल खुमानसिंह डूंगरपुरसे भाग गये; मेवाड़की फ़ौजने शहरको लूटा. आख़िरकार देवगढ़के रावत् चूंडावत द्वारिकादासकी मारिफ़त रावल खुमानसिंहने सुलह चाही, टीकेका दस्तूर उदयपुर भेज दिया, और फ़ौज ख़र्चके एक लाख पचहत्तर हज़ार रुपये की ज़मानत द्वारिकादासने दी, और रुपया वुसूल करनेके लिये पचास सवार डूंगरपुर छोड़कर फ़ौज वापस आई. रावल खुमानसिंहने बादशाही हुज़ूरमें अर्ज़ी लिख भेजी, कि महाराणा अमरसिंह बादशाही मुल्कपर हम्ला करनेके इरादेसे फ़ौज इकट्ठी करके चित्तौड़गढ़की मरम्मत करवाते हैं, और मुझको भी अपने शरीक होनेको कहा, लेकिन् मैं राज़ी न हुआ, इस लिये फ़ौज भेजकर मुझको तबाह किया. इस अर्ज़ीके सुननेसे बादशाह नाराज़ हुआ होगा, लेकिन् दक्षिणकी लड़ाइयोंके सबब इस बातको दर्याफ़्त करनेका हुक्म दिया; तब वज़ीरने अहमदाबाद और अजमेरके सूबोंसे दर्याफ़्त किया, जिसके जवाबमें सूबोंने रावल खुमानसिंहके लिखनेको ग़लत होना ज़ाहिर किया.

तीसरे - उस याद्दाश्तमें यह ज़िक्र है, कि रामराय और पृथ्वीसिंहके हाथ टीका भेज दिया जावे; इसका मत्लब यह है, कि महाराणा अमरसिंह, कर्णसिंह, जगत्सिंह, और राजसिंहके इन्तिक़ाल होनेसे वक्त़ वक्त़पर बादशाह जहांगीर, शाहजहां और आलमगीर गद्दी नशीनीका दस्तूर फ़र्मान, ख़िल्अ़त वग़ैरह किसी बड़े मन्सबदारके हाथ भेजते रहे, उसी तरह महाराणा जयसिंहके इन्तिक़ाल होनेपर अमरसिंह भी चाहते थे, क्योंकि जयपुर, जोधपुर और बीकानेर वग़ैरहके दूसरे राजाओंके लिये टीकेका दस्तूर घरपर बादशाह नहीं भेजते थे, दर्बारमें हाज़िर होनेपर बतौर ख़िल्अ़तके उनको मिलता था; इस लिये मेवाड़के राजा उस दस्तूरके ज़ियादह ख़्वास्तगार रहते थे. हज़ार सवारके बारेमें जो लिखा, यह वही हज़ार सवारकी जमइयत है, जो बादशाह जहांगीरके वक्त़ क़रारनामेसे क़रार पाई थी, लेकिन् इसकी तामील होनेमें हमेशह हुज्जत और तक्रार पेश आती रही. जब ज़ियादह दबाव देखा,

भेज दिया, वर्नह टाल दिया. इस वक्त महाराणा अमरसिंहके कई मत्लब दर्पेश थे. सिरोही, ईडर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, रामपुरा, मांडलगढ़, पुर मांडल, और बदनोर वगैरह क़ब्ज़ेसे निकले हुए पर्गनोंको फिर शामिल करनेकी कोशिशमें थे; इस लिये हज़ार सवारोंकी जमइयत देना मंजूर किया.

काग़ज़ नम्बर २, जो वज़ीरने बख़्शियुलमुल्कके नाम लिखा है, उसमें ऊपर बयान की हुई बातोंका, और वकीलोंके मुचल्केका ज़िक्र है.

काग़ज़ नम्बर ३ भी ऊपर ज़िक्र किये हुए बारेमें वज़ीरने महाराणाके नाम लिखा है.

काग़ज़ नम्बर ४ याने कायस्थ केशवदास वकीलकी अर्ज़ी ऊपर लिखी बातोंके बारेमें इत्तिलाअ़न व मस्लिहतन है.

काग़ज़ नम्बर ५ किसी बादशाही सर्दारका शक्तावत कुशलसिंहके नाम है, जो महाराणा अमरसिंहका एतिबारी नौकर था, और जिसकी औलादके क़ब्ज़ेमें इस वक्त विजयपुरका ठिकाना है, और वह रावल खुमानसिंह डूंगरपुर वालेकी बाबत है; जिसका हाल ऊपर लिखा गया.

६ नम्बर काग़ज़का मत्लब यह है, कि महाराणा अमरसिंह तेज़ मिज़ाज थे, और अपने पुराने खुदमुख़्तार ख़ान्दानका गुरूर रखते थे, जिससे हर वक्त झुंझलाकर बादशाहतके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई करना चाहते थे; और पहिले भी जब गद्दी नशीनी का मौक़ा हुआ है, उस वक्त टीका दौड़में मालपुरेका ही लूटना मुक़र्रर था, जो बूंदीके नज़्दीक बादशाही ख़ालिसेमें था, और अब रियासत जयपुरके क़ब्ज़ेमें है. महाराणा अमरसिंह पन्द्रह बीस हज़ार फ़ौज लेकर अपने ननिहाल बूंदी पहुंचे, यक़ीन है कि महाराणाका इरादह मालपुरा लूटनेका हुआ होगा, लेकिन् उनके सलाह कारोंने मौक़ा न देखकर मना किया; इससे वापस चले आये होंगे, और तीर्थका बहाना बनाया; क्योंकि बूंदीकी तरफ़ कोई ऐसा तीर्थ नहीं है, जहां गद्दीपर बैठतेही महाराणा जाते. क़ियाससे मालूम होता है, कि उनके सलाहकारोंने कहा होगा, कि डूंगरपुर, बांसवाड़ा, देवलिया और रामपुरा वगैरहको मातह्त करना और सिरोही व ईडरपर क़ब्ज़ा करना और जिज़्यहके एवज़, जो तीन पर्गने निकल गये, उनको वापस लेना चाहिये; बादशाही मुख़ालफ़तमें इन सब कामोंसे ना उम्मेद होना पड़ेगा. दूसरे यह भी कहा होगा, कि बादशाह आलमगीर ज़ईफ़ है, उसके मरनेपर बादशाहतमें भी बखेड़ा पड़ेगा, याने उनके बेटे आपसमें लड़ेंगे, उस वक्त अपने दिलका गुबार निकालना बिहतर होगा, जैसे कि महाराणा राजसिंहने किया. इस तरहकी बातें सोचकर महाराणा वापस चले आये; और वज़ीरने जो काग़ज़ लिखा है, वह बिल्कुल बादशाही हिदायतके मुवाफ़िक़ होगा; क्योंकि औरंगज़ेब आलमगीर दक्षिणकी लड़ाइयोंमें फंसा हुआ अस्सी वर्षसे भी

ज़ियादह ज़ईफ़ था, और राजपूतानामें फिर आग भड़क उठनेकी उसको फ़िक्र थी; इस लिये अपने वज़ीर असदख़ांसे दोस्ती रखने और ख़ानगीमें हिदायतें करनेके इरादेसे लिखाया होगा.

७ वां काग़ज़, महाराणा अमरसिंहकी अर्ज़ीका मुसव्वदह है, जो ऊपर लिखे, याने छठे नम्बर वज़ीरके काग़ज़के जवाबमें बादशाहके नाम लिखी गई.

नम्बर ८, वज़ीरकी याद्दाश्त है, जो शायद बादशाहको मालूम करनेके लिये लिखी होगी.

काग़ज़ नम्बर ९, वज़ीर असदख़ांका महाराणा अमरसिंहके नाम है, जिसका यह मत्लब है, कि अजमेरके सूबे सय्यद अब्दुल्लाखांकी सिफ़ारिश आनेपर सब काम (१) होजावेंगे.

काग़ज़ नम्बर १०, अजमेरके वाक़िअ़निगारकी ख़बर लिखी हुई है, जिससे महाराणाकी ख़्वाहिश झगड़ा करनेकी तरफ़ साबित होती है.

काग़ज़ नम्बर ११, किसी बादशाही सर्दारका अजमेरके सूबेदारके नाम पर्गने बदनोर वग़ैरहकी बाबत है.

काग़ज़ नम्बर १२, महाराणाने किसी शाहज़ादेके नाम ऊपर लिखे पर्गनोंकी बाबत जुझारसिंह वग़ैरहकी शिकायतके बारेमें लिखा है; और चूंडावतों और राठोड़ोंके आपसमें जो फ़साद हुआ, उसका ज़िक्र हम ऊपर लिख आये हैं. यह आंबेठका रावत् दूलहसिंह था, जिसके भाइयोंको कर्णसिंहका भतीजा कृष्णसिंहका बेटा राजसिंह पकड़ ले गया था; उसके एवज़ महाराणाके इशारेसे देवगढ़के रावत् द्वारिकादास और मंगरोपके महाराज जशवन्तसिंहने पुर मांडलपर हम्ला करनेकी तय्यारी की, लेकिन् आपसकी शर्तोंमें ग़फ़्लत होनेसे देवगढ़ रावत् तो ल्हेसवे गांवमें ठहर गया, और मंगरोप महाराज मए अपने भाइयों पेमसिंह और बख़्तसिंहके पुरके गढ़में जाघुसा. राठौड़ राजसिंहने मुक़ाबला किया, लेकिन् भागकर मांडलमें जा छिपा, वहां भी जशवन्तसिंह आ पहुंचा, और राजसिंहको मांडलसे भी निकाल दिया. इस लड़ाईमें राठौड़ और सीसोदियोंके बहुतसे आदमी मारे गये; लेकिन् फ़त्ह सीसोदियोंकी रही. महाराणाने अलहदह रहकर यह कार्रवाई की, जिसमें बादशाहको जवाब देनेकी जगह रहे.

काग़ज़ नम्बर १३, कोई ख़बरका काग़ज़ मालूम होता है; लाला नन्दराय मुन्शी कोई कायस्थ क़ौमका बादशाही मुलाज़िम होगा, जिसे कुछ रिश्वत न मिली; इससे वह बादशाहको भड़काता था; और नारायणदास कुन्बी

---

(१) काम वही हैं, जो ऊपर लिख चुके हैं, याने डूंगरपुर, बांसवाड़ा, देवलिया वग़ैरह मातहत करके सिरोही और ईडरपर क़ब्ज़ा करना वग़ैरह; और जिज़्यहके एवज़, जो पर्गने दिये, वापस लेना. ऊपर लिखे हुए हमारे क़ियासको इस काग़ज़का मज़्मून ज़ियादह मज़्बूत करता

नन्दरायका दोस्त गुजरातका रहने वाला बादशाही मन्सबदार था, और जोधपुर ख़ालिसह होनेपर उसको जागीर भी मारवाड़में मिली थी, और वह कर्णसिंह, जुझारसिंहकी विकालत भी करता था. पाठक लोगोंको मालूम हो, कि आलमगीरके मुलाज़िमोंका ढंग बहुत ख़राब था, अगर नन्दराय मुन्शीके कहनेसे मेवाड़पर फ़ौज-कशी कीजाती, तो बादशाहका बहुत ख़र्च पड़ता, और नन्दराय मुन्शीकी बेईमानीसे रिश्वत लेनेकी तादाद बहुत कम होगी. अब सोचना चाहिये, कि जिस बादशाहके मुलाज़िम अपने थोड़े मत्लबके लिये मालिकका ज़ियादह नुक्सान करने पर कुछ निगाह न करते हों, वह बादशाहत कब तक ठहर सक्ती है. ऐसे खुद मत्लबी मुलाज़िमोंका नतीजा थोड़े ही दिनोंमें आलमगीरके बाद ज़ुहूरमें आया, और वह बादशाहत तबाह होगई.

काग़ज़ नम्बर १४, वज़ीरके नाम वकील मेवाड़की दर्ख्वास्त है, इस दर्ख्वास्तसे यह मत्लब होगा, कि पर्गने ख़ालिसेमें रहनेसे किसी मौक़ेपर फिर मेवाड़में शामिल हो सक्ते हैं; और दूसरेकी जागीर होनेसे उस जागीरदारकी कोशिशके सबब मेवाड़के मत्लबमें ख़लल रहेगा.

१५ वां काग़ज़, वज़ीर असदख़ांका महाराणा अमरसिंहके नाम वकीलोंकी सिफ़ारिश और जमइयत भेजनेकी बाबत है, जिसमें वकील पृथ्वीसिंह और राम-रायका नाम लिखा है; सो पृथ्वीसिंह भींडर महाराज अमरसिंहका बड़ा कुंवर था, जो बादशाह आलमगीरके पास भेजा गया, और वहीं लड़ाइयोंमें मारा गया, जिसका छोटा भाई जैतसिंह भींडरका मालिक बना. रामराय कोई अहल्कार कायस्थ था.

काग़ज़ नम्बर १६ का मत्लब यह है, कि राव गोपालसिंह रामपुरा वालेको पेश्तर महाराणा अमरसिंह अपना मातहत करना चाहते थे, लेकिन् महाराणाका इरादह पूरा न हुआ, और मुख़्तारख़ां वग़ैरह बादशाही मुलाज़िमोंने गोपालसिंहको निकाल कर यह इलाक़ह उसके बेटे रत्नसिंह (इस्लामख़ां) को देदिया. जब राव गोपालसिंह लूट मार करने लगा, तब महाराणा अमरसिंहने ख़ानगी तौरपर उसको मदद दी, और गांव सतखंधाका शक्तावत राजसिंह, जिसका बड़ा बेटा कल्याणसिंह, तो सतखंधामें रहा, जिसकी औलादमें अब पीपल्याके जागीरदार हैं; और दूसरा बेटा कीता, उसको गांव बीनोता जागीरमें मिला, इसके चार बेटे थे, जिनमेंसे बड़ा सूरतसिंह तो बीनोतेका मालिक रहा, और छोटा उदयभान था, जिसको महाराणा अमरसिंहने जुदी जागीर 'मालका' 'बाजणा' वग़ैरह दी, और महाराणाके हुक्मसे वह राव गोपालसिंहको मदद देता था, और इस काग़ज़में राठोड़ोंका भी राव गोपालसिंहको मदद देना लिखा है; ये राठोड़ रतलामके भाइयोंमेंसे होंगे.

१७ वां कागज़, किसी सर्दारका या तो किसी बादशाही मुलाज़िमके नाम है, जो उनको हिदायत करे, या खुद राजा भीमसिंहके बेटे सूर्यमल्लके नाम होगा; क्योंकि भीमसिंहके मरने बाद मन्सब और पट्टा सब ज़ब्त हो गया था, और इसी कोशिशके वास्ते राजा भीमसिंहके छोटे बेटे ज़ोरावरसिंह बादशाही हुज़ूरमें विक्रमी १७५६ आश्विन [हिज्री ११११ रबीउस्सानी = ई० १६९९ ऑक्टोबर] में पहुंचे, जिसका हाल उदयपुरके वकील जगरूप और बाघमल्लकी अर्ज़ीमें लिखा है, जो महाराणा अमरसिंहके नाम अख्बारके तौर पर भेजी है. महाराणा अमरसिंहकी कोशिशसे बनेड़ा फिर भीमसिंहके बेटे सूरजमल्लके क़ब्ज़ेमें होगया; और ईडरका ज़िक्र इस वास्ते है, कि महाराणा अमरसिंह बनेड़ाकी निस्बत ईडरको अपने तअल्लुक़ करना ज़ियादह चाहते थे, जिसका ज़िक्र मौक़ेपर लिखा जावेगा.

१८ वां ख़त, वज़ीर असदख़ांका सूबेदारके नाम महाराणा अमरसिंहके ख़तके जवाबमें, कर्णसिंह और जुझारसिंहको समझादेनेके वास्ते है.

१९ वां कागज़, शाहज़ादह शाहआलम बहादुरशाहका महाराणाके नाम है, जिसमें इशारे लिखे हैं, उससे मालूम होता है, कि जिस तरह शाहज़ादह मुहम्मद आज़मने महाराणा जयसिंहके साथ अपने मत्लबके इक़ार किये थे, उसी तरह शाहज़ादह शाह आलमने भी इन महाराणाके साथ किये होंगे; और बादशाही ख़ैरख़्वाही रखनेसे भी यही मुराद होगी, कि जब तक मौक़ा आवे, तब तक बादशाही मर्ज़ीके बर्ख़िलाफ़ न हो.

कागज़ नम्बर २०, जो वज़ीरके नाम बादशाही लश्करसे बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ फ़ज़ाइलख़ांने लिखा है, उसमें डूंगरपुरके रावलकी ग़लत बयानीका ज़िक्र है.

२१ वां कागज़, नव्वाब असदख़ांका फ़ज़ाइलख़ां मुन्शीके नाम डूंगरपुरके मुआमलेमें है, जिसका ज़िक्र ऊपर होचुका.

२२ वें कागज़में वही डूंगरपुरके मुआमलेका ज़िक्र है, वज़ीरने दोबारह अहमदाबादके सूबहदारसे तहक़ीक़ात कराई है.

२३ वें कागज़का मत्लब यह है, कि महाराणा अमरसिंहके गद्दीनशीनीका दस्तूर, जिस तरह कि हमेशह आता था; इस वक़ भी आया; और शाहज़ादहसे मुराद शायद शाह आलम बहादुरशाहसे होगी.

२४ वां कागज़, वज़ीरका महाराणाके नाम है. जिसका यह मत्लब है, कि शाहज़ादह मुहम्मद आज़मको गुजरातकी सूबहदारी मिली थी. उसकी सलाहके बर्ख़िलाफ़ काम न करनेकी हिदायत है. शाहज़ादह महाराणाने. और महाराणा शाहज़ादहसे खुश थे, पहिले महाराणा जयसिंहके वक़में इसी शाहज़ादहकी मारिफ़त सुल्ह हुई थी; और शाहज़ादहने अपने मत्लबका इक़ार नामह भी महाराणाके नाम लिखा था, जिसकी

नक़्ल हम महाराणा जयसिंहके हालमें लिख चुके हैं. इस वास्ते महाराणासे हज़ार सवारकी जमइयतकी नौकरी शाहज़ादहने अपने पास लेनी चाही, कि जिसके मुवाफ़िक़ वज़ीरने महाराणाके नाम लिख भेजा.

२५ वां काग़ज़, जो चीज़ें कि मेवाड़से शाहज़ादह या बादशाहके वास्ते भेजी गईं, उनकी रसीद शाहज़ादहके कारख़ानहकी है.

२६ वां काग़ज़, बांसवाड़ेके रावल अजबसिंहके नाम वज़ीर असदख़ांका उन गांवोंके बारेमें है, जो पर्गनह डांगलमेंसे महाराणा राजसिंहने फ़ौज ख़र्चमें ज़ब्त किये थे.

२७ वें काग़ज़में रामपुराकी शिकायत है, मुसल्मान होजानेपर राजा इस्लामख़ां रामपुराके रावका और 'इस्लामपुर' रामपुरेका नाम रक्खा गया था. रामपुराके राव गोपालसिंहका बेटा रत्नसिंह, मालवेके सूबहदार मुख़्तारख़ांकी मारिफ़त मुसल्मान होकर अपने बापको गादीसे ख़ारिज करके खुद मुख़्तार बन गया था, लेकिन् राव रत्नसिंहने विक्रमी १७६२ फाल्गुन् शुक्ल ६ [हिज्री १११७ ता० ४ ज़िल्क़ाद = ई० १७०६ ता० १८ फ़ेब्रुअरी] को एक अर्ज़ी महाराणाके नाम लिखी, जिसकी नक़्ल हम नीचे लिखते हैं, इससे मालूम होता है, कि रत्नसिंह दिलसे मुसल्मान नहीं हुआ, शायद अपने बापके जीते जी खुद मुख़्तार होनेकी ग़रज़से दीन इस्लाम इख़्तियार कर लिया हो. इसका मुख़्तसर हाल रामपुरेके ज़िक्रमें लिखा जायगा.

राव रत्नसिंहकी अर्ज़ी महाराणा २ अमरसिंहके नाम (१).

सिध श्री उदयपुर सुभ सुथाने श्री महाराजाधिराज महाराणा श्री अमरसिंहजी एतान, चरण कमलांण लिपतं रामपुरा थी सेवग आग्याकारी राव रत्नसिंघ केन, पावां धोक अोधारजो जी अप्र- अठाका समाचार श्री- जीकी कृपा श्री दिवाणजीकी सुनज़र प्रताप थी सब भला हैजी, श्री दिवाणजीका सुख समाचार सदा सर्वदा आरोग्य आवे तो सेवग हैं परम संतोक होयजी, अप्र श्री दिवाणजी बडा है, मावीत है, पर्मेश्वर है, मोटा है, इधको कांई लिखांजी, श्री पर्मेश्वरजी श्री दिवाणजी हैं लापां साल सलामत राखे. श्री जीका तेज प्रताप थी श्रीजीका छोरू सऊपरां हे जी, श्री दिवाणजी पान कपूर जतनांसूं अरोगवाको हुकम करेगाजी, और म्हे श्री जीका सेवक हां, अठे सारो ही ब्योहार श्री दिवाणजीका हुकमको हे जी, सेवकसूं कृपा सुनजर ठेठ कुंवर पणासुं है, जणी ही माफ़िक़ हुकम रहे जी; काम चाकरी सेवग लायक व्हे, सु अढायांको हुक्म होबो करेजी; और श्री दिवाणजीको परवाणों हाथ अषरें सेवग

(१) पुराने काग़ज़ोंकी जिस क़द्र नक़्लें दर्ज होती हैं, उनकी इबारतमें कुछ रद्द व बदल नहीं किया गया, और इनमें अक्सर राजपूतानाके रिवाजी संवत् लिखे हैं, जिनको आम तौरपर मुताबिक़ कर दिया गया है.

हैं इनायत हुवो थो, सो पुहंतो माथे चढ़ाय लियो, अपराको द्रसन करे सेवग क्रतारथ हुवोजी; परवानामें हुकम लिख्यो थो, थांको घर सदा स्याम धर्मी है, ज्यूंही थे सेवामें चित रापो हो, आ म्हे निश्चय जाणी है. सो श्री दिवाणजी पर्मेश्वर हैं, हिन्दुस्थानका सूरज है, पर्मेश्वरसुं अंतेह करणकी वात अर सुरका प्रताप आगे जाहिरी वात छिपी ने रहे है; श्री जी अंतर जामी हैं, भाग है, सेवगको श्रीजी यो हुकम कियो, घणी सेवा जाहिरा महनत करे मिनप पावंद हैं, मावीत हैं, रिझावे हैं, जद नीठ या वात पावे है, सो म्हारे अंतह करण वड़ांकी भगत थी, सो श्री जी जाण यो हुक्म वांच्यो, मैं जाणी आज म्हारो जीवतव धन्य है, जीवतवको फल मैं आज भर पायो. श्रीरामजी श्री दिवाणजी सरपा मावीतांकी उमर दराज करे; अर छोरू है याही वुधि जीवे जब ताईं देसु स्यामधरमो ही मावितांसु रहै; अर मावित सदा सुजाणें रावांको घर सरासर स्याम धरमी है. याही वीनती परमेश्वरांसु रात दिन करूं हूं जी, अर कामके सिर सेवगकी चाकरी पण नजरे आवसी जी; अर हुक्म हुवो दरवारका लोग रामपुरे आया, जणाहें थे जतनां राप्या वाना (यत्न) किया, सो थांसु सुख पाया हां; अब रूपजी पंचोली हैं हजूर वुलाया हैं, सो थे रूड़ा माणस साथे दे हजूर मेल्ह जो, रूपजी थी नवाजिस होसी. श्री एकलिंगजीकी आंण लिप्याको हुक्म हुवो, अर ठाकुर हठीसिंहजी हुक्म थी वोरो लिपसी, सु श्री दिवाणजी सलामत, जो कोई दरवारको लोग आयो रह्यो, सु अणीही वास्ते सेवगने रापे वाना किया. श्री दरवारका एही चाकर अर याही जायगा श्री जीकी, अठे रह्यो आदमी श्री जी याद करें, जदे ही सेवामें हाज़िर रहै जी, अर रूपजी ही श्री जीका गुलाम चाहिजे, इस्यो सेवग स्याम धरमी लायक आदमी हे जी. हजूर वापरयां श्री दिवाणजी पण हुकम करेंगा, स्याम धरमी गुलाम हे जी, अब यो हुक्म पहुंच्यो ठाकुरे हुक्मसु दिलासा लिखी, मैं रूपजी सूं सब हुक्म थो ज्यूं कही, अब फाल्गुण शुदि १० का चाल्या रूपजी हजूर पहुंचसी जी, परवानो सदा मया प्रसाद होवु करेजी. मि० फाल्गुण सुद ६ संवत् १७६२ का ब्रपे.

---

२८ वां ख़त, महाराणा अमरसिंहका ज़ुल्फ़िक़ारख़ां बादशाही बख़्शीके नाम है, जिसमें जमइयत भेजने वग़ैरहका हाल है.

२९ वां ख़त, अमीरुल्उमराकी याद्दाश्त है, (याद्दाश्तका लफ़्ज़ इस वास्ते लिखा है, कि बादशाहके नज़्र करनेके लिये मुसव्वदह किया होगा, और फिर इसी मुवाफ़िक़ लिखा गया होगा) जिसमें यह मत्लब है, कि जब विक्रमी १६७१ [हिज्री १०२४ = ई०

१६१५] में बादशाह जहांगीरसे महाराणा अमरसिंहका सुलह नामह हुआ, तब एक हज़ार सवार दक्षिणकी नौकरीमें भेजना ठहरा था, और इन सवारोंकी तन्ख्वाहमें जागीर मिलनेका भी इक़ार था. सो जब कभी जमइयत भेजीगई, तब दक्षिणमें और किसी वक्त दूसरे इलाक़ोंमेंसे जागीर भी मिली; और जब जमइयत भेजनेमें टालाटूली होती, वह जागीर ज़ब्त होजाती थी. इस वक्त जमइयत भेजी, परन्तु महाराणा अमरसिंहकी ख्वाहिशके मुवाफ़िक़ सिरोहीका इलाक़ह मिला, जो क़दीमसे देवड़ा चहुवान राजपूतोंकी जागीरमें चला आता था. यह देवड़ा राजपूत कभी मेवाड़के मातहत और कभी आज़ाद रहते थे, लेकिन् मेवाड़के राजा क़दामतसे इस इलाक़हको मेवाड़के शामिल जानते रहे. इस वक्त महाराणाने देवड़ोंको बिल्कुल निकाल देना चाहा था.

३० वां ख़त, मालवेके सूबहदार शायस्तहख़ां (१) का अली अहमद फ़ौज्दारके नाम सिरोहीकी बाबत है; यह ख़त बे सरिश्तह लिखा गया; क्योंकि सिरोही हमेशहसे अजमेरके सूबेमें रही, अजमेरके सूबहदारकी मारिफ़त कार्रवाई होना चाहिये था. ३१ वां काग़ज़ भी ३० नम्बरके काग़ज़के बाबमें है.

काग़ज़ नम्बर ३२ मेवाड़के किसी वकीलकी दर्ख्वास्त है, जो सिरोहीका पर्गनह एक किरोड़ दाम आमदनीका मिलजाने और एक हज़ार सवार दक्षिणमें जमइयतके तौर भेज देनेपर दो किरोड़ दाम आमदनीके एवज़ पर्गनह बदनोर, मांडलगढ़ और पुर मिलनेके लिये वज़ीरके नाम याद्दाश्तके तौर लिखी थी.

३३ वां ख़त, मालवेके सूबहदारका फ़ौज्दारके नाम पर्गनह सिरोहीकी बाबत है.

३४ वां ख़त, ज़ुल्फ़िक़ारख़ां बख़्शीका महाराणाके नाम जमइयतकी रसीद और पर्गनह मांडलगढ़ वग़ैरहकी कोशिशके बारेमें है.
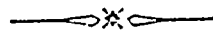
अब हम वह हाल लिखते हैं, जिसके सबब जोधपुरके महाराजा अजीतसिंह और महाराणा अमरसिंहमें बर्ख़िलाफ़ी और दोस्ती हुई. सिरोहीके देवड़े क़दीमसे राजपूतानहकी बड़ी रियासतोंके सम्बन्धी रहे, जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंहने भी एक व्याह सिरोहीमें किया था. जब महाराजा जशवन्तसिंहका इन्तिक़ाल पिशावरके पास थाने जम्रोदपर हुआ, उस वक्त उनकी दो राणियां हामिला थीं, जिनके लाहौरमें आनेपर दो बेटे पैदा हुए; एक दलथम्बन, दूसरे अजीतसिंह. दलथम्बन का इन्तिक़ाल चार महीनेकी उम्रमें होगया; और अजीतसिंहको राठौड़ दुर्गदास

(१) शायस्तहख़ां नूरजहांके भाई आसिफ़ख़ांका बेटा था.

वगैरह जोधपुर लेआये. फिर जोधपुर मुसल्मानोंने छीन लिया, तो कम उम्र अजीतसिंहको उनके सर्दार लेकर उदयपुर आये, और उदयपुरसे आलमगीरकी सुलह होने बाद अजीतसिंहको राठोड़ सर्दारोंने महाराजा जशवन्तसिंहकी राणी देवड़ीके पास सिरोही भेज दिया, और देवड़ोंने इनको पोशीदह रक्खा. उस ख़िद्मतके बाइस अजीतसिंह सिरोहीके देवड़ोंकी तरफ़दारी ज़ियादह रखते थे. जब सिरोहीका इलाक़ह बादशाह आलमगीरने देवड़ों से छीनकर महाराणाको दे दिया, तब अजीतसिंह देवड़ोंकी मदद करने लगे, जिससे महाराणा अमरसिंह अजीतसिंह से नाराज़ हुए; लेकिन् महाराजा अजीतसिंहका मुल्क छूटा हुआ था, इस सबबसे उन्होंने महाराणा से फिर मेल करना चाहा; क्योंकि बहुत वर्षों तक अजीतसिंह मुल्क लूटकर गुज़र करते रहे. जब विक्रमी १७५५ [हिज्री ११०९ = ई० १६९८] में आलमगीरने डेढ़ (१) हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब और जालौरकी फ़ौज्दारी इनके नाम लिख भेजी, तबसे अजीतसिंह जालौरमें रहने लगे, लेकिन् आलमगीरकी चालाकियोंसे ग़ाफ़िल नहीं थे.

विक्रमी १७६२ [हिज्री १११७ = ई० १७०६] में नागौरके राव अमरसिंहके बेटे रायसिंहके बेटे राव इन्द्रसिंहका कुंवर मुह्कमसिंह, जो बादशाही तरफ़से मेड़तेका फ़ौज्दार था, मौक़ा पाकर दो हज़ार सवारोंके साथ जालौरपर चढ़ आया, कि महाराजा अजीतसिंहको गिरिफ्तार करके बादशाहके पास भेज देवे. अजीतसिंहके राजपूतोंमेंसे चांपावत लखधीरका बेटा उदयसिंह कुंवर मुह्कमसिंहसे मिल गया; लेकिन् मुह्कमसिंहके आनेकी ख़बर धांधल उदयकरणने खींवसरसे लिख भेजी थी, जिससे वह होश्यार होकर जालौरसे निकल गये. चांपावत उदयसिंहने अजीतसिंहको ठहरानेकी बहुत कोशिश की, लेकिन् मुह्कमसिंहसे उसकी मिलावट होना ज़ाहिर हो गया था, जिससे अजीतसिंह उसके दावमें नहीं आये, और निकल गये; उनके चन्द आदमी, जो पीछे रह गये थे, मुह्कमसिंहसे मुक़ाबला करके मारे गये. अजीतसिंहने बड़ी जमइयत इकट्ठी करली, तब कुंवर मुह्कमसिंह मए उदयसिंह चांपावतके क़िला जालौर छोड़ भागे, अजीतसिंह उनके पीछे लगे, धूंधाड़े गांवमें जा पहुंचे, और वहां लड़ाई हुई, जिसमें अजीतसिंहकी फ़त्ह हुई, और मुह्कमसिंहके तीस आदमी जानसे मारे गये, और

---

(१) मारवाड़की तवारीख़में डेढ़ हज़ारी मन्सब मिलना लिखा है, और मिराते अह्मदीमें मन्सब फ़ौज्दारीका लफ़्ज़ लिखा है, जिसकी निस्बत ख़याल होता है, कि ग़लतीसे दो हज़ारीका लफ़्ज़ फ़ौज्दारी होगया है, और शायद फ़ौज्दारीसे उह्दह और इख्तियार मुराद हो,

पचास घायल हुए. अजीतसिंहके सिर्फ़ तीन आदमी मरे, और सात घायल हुए. इसपर भी अजीतसिंहने मुह्कमसिंहका पीछा नहीं छोड़ा, तब बादशाही मुलाज़िम जोधपुरका फ़ौज्दार जाफ़रबेग और क़ाज़ी मुहम्मद मुक़ीम वक़ाया नवीस दोनों बीचमें आये, और बड़ी फ़हमाइशके साथ अजीतसिंहको वापस जालौर रवानह किया.

महाराजा अजीतसिंहको यह शक ज़ियादह हुआ, कि मुह्कमसिंह बादशाह आलमगीरके इशारेसे आया था. दुर्गदास राठौड़को पाटनकी फ़ौज्दारी मिली थी, उसपर भी शाहज़ादह मुहम्मद आज़मने धोखेसे एक दम हम्ला किया; इन बातोंसे अजीतसिंहको यक़ीन हो गया, कि बादशाह हमको ज़रूर मारेगा, या पकड़ेगा; तब महाराणा अमरसिंहसे सुलह करनेकी कोशिश की. उस वक़्के चन्द काग़ज़ातकी नक़्ल हम नीचे लिखते हैं:-

१ महाराज अजीतसिंहका खत समीनाखेड़ाके
गुसाईं हरनाथगिरके चेले नीलकंठ
गिरके नाम (१).

श्री रामोजयति. श्री हींगोल सत्य.

प्रसादातु.

श्री हींगोल्ल. सही.

सिधि श्री गुशांई श्री नीलकंठगीरजी सूं महाराजा धिराज महाराजा श्री अजीतसिंघजीरो नीमो नारायण वाँचजो, अठारा समाचार श्री जीरा प्रताप सूं भला छे, थारा देजो. तथा गुसाईं म्हारे पूजनीक छो सही. तथा अठे श्री जीरा प्रतापसूं फ़ते हुई, गुसाईं सुण बहुत खुस्याली कीधी, सो गुसाईं सारी बातां जाणियां छौ स्ही. तथा गुसाईं अठीरी उठीरी माहोमाह मेल करणरी बिचारी, ने भगवान धरणी धरनू मेलिया था, उठे आदमी बुलाया था, तीएरी अठै ढील एक सबब हुई, सो गुसाईं षीम्या कीजो, ढीलरी हकीकत भगवान धरणीधर जाहीर करसी. अठासूं

(१) महाराणा अमरसिंह हरनाथगिरकी करामातके मोतक़िद थे, और रियासती मुआमलातमें नीलकंठगिरकी ज़ियादह दस्तअन्दाज़ी रही, जिससे उन्होंने क़रीब पन्द्रह हज़ारके आमदनीकी जागीर भी हासिल की, जो अभी तक उनकी औलाद याने मुरीदोंके क़ब्ज़ेमें है.

गुसाईंरा इसारा माफक सारो कामकर त्रवाड़ी सुपदेव नू मेलीया छै, सो थानू कहसी, काम ठीक कीजो, सको थांरा सेवग छै; गुसाईं छो, काम ठीककर बेगी सीख देजो, घणो कासुं लिखां, सारी हकीक़त बिगतवार रूक़ामे लीखीछै, वाचीयां जाणस्यो, रुक्का जाहीर कठैही मत करो. त्रवाड़ी भगवान धरणीधर सारी जाहीर करसी सही. संवत् १७६२ रा चैत्र सुदी ११[विक्रमी १७६३ = हिज्री १११७ ता० ९ ज़िल्हिज = ई० १७०६ ता० २५ मार्च] बुध मकाम जालंधर गढ़.

लीपतं हाथसुं

ऊपर लिखे काग़ज़में दो काग़ज़ और हैं, जिनकी नक्ल यह हैः-

तथा रुक्कारी आ हकीकत छै, इतरा दीन आदमी इण सबब बैठा रह्या, जो म्हारे ने उदयसिंघरे चित पंत पड़ी ने तेजसिंहनु पीजमत फुरमाई, तिण-कर म्हेनु राठौड़ मुकन्ददास वारंवार लिखतो रह्यो, जो आपकने दीवाणरा आदमी गुसाईंरी मारफ़त आया छै, सो आपरे मेलरी वात करणी होय सबली तो म्हारी मारफ़त वात करे म्हे दिवाण कने गया था, वात वीगत सारी करी, म्हे रुक्को एक दीवाणरे हाथ अपरे लिखायो छै; जद मारवाड़नु काम पड़े, ने मुकन्ददास कहे, जठीनु रुपीया लाप एक असवार हज़ार पांच अरावो मदत देस, इण भांत म्हेनु कहावतो रह्यो; इण भांतरो मुदो म्हारे हाथ छे पंचोली दमोदरदासरी मारफ़त महारी वात छे. आप लिखसो गुसाईंरी मारफ़त तो पीण दीवाण म्हानु पुछे, ने पछे आपनु लिपसी, तिणसुं आंप म्हारीज हाथ वात करे ज्यु रुक्कारो मुद्दो आपरी तरफ़ रजू ल्यावें, गुसाईंरा आदमीयांनु सीप देजो, ए आषर अतीत छे, मोटेरो काम मोटे हीज वेत हुवा सपरा पहलां तो हुं अबोलो बैठो थो हीमैं आप रा० तेजसिंघ नु काम फुरमायो छे, तिणसुं म्हारी तेजसिंघरी बात एक छै. म्हे आपरी चाकरीनु छा, तरे म्हे इणनु लिपीयो, थे हजूर आवो, ने म्हानु रुक्को आपीयां दिपावो, सो हजुर तो नायो, इतरामें धुम धाम हुई. म्हे फतेकर नागौर ऊपर चलाया, जोधपुररो सूबेदार आय भेलो हुवो; मुकन्ददास ही आय हाजर हुवो, सुबादार रा कयासुं म्हे जालौर आया, मुकन्ददास पीण म्हां साथे आया, अठे ही म्हे बात बिगत कीधी, सो रुक्को तो म्हा नु न दीषायो, और कागळ दिवाणरा दोय चार दीपाया इणरी बात म्हारे कुछ तरेदारसी नीजर आई. म्हे इहनु पूछीयो हीमैं कासुं कीयो चाहीजे, तरे इण अरज करी, आदमी मौकुप रापो. हूं म्हारो आदमी एक मेलु छूं, जैसो आप काम चाहा सो तैसो अठे बैठा कागळसु करीस तरे म्हे विचारीयो, इणरो कह्यो न करे छे तो कामरो पतरो करे छे, और सारी वात मौकूफ रापने परगट तो इणरे सीर उठेरो काम रापयो छे; गोसासुं (पोशीदा) त्रवाड़ी सुपदेवनु था कने म्हेलीयोछे, त्रि० सुपदेव भगवान धरणी धर सारी

हकीकत कहसी; उठे त्रि० सुपदेव जाहर होण पावे नहीं, थांरी रजावंधीरी पातर मेलीयो छे, मुकंददासरा जासूस उठे दमोदरदासरी मारफत घणा छे, सो उठे त्रिवाड़ी जाहर हुवो तो अठे काममें पलचो पड़सी. दीवाण म्हासु वात करे, सु उठे जाहर न करे, ने मुकन्ददासनु पुछे पीण नहीं, ने लिखे पीण नहीं; इणनु वात पूछीयां रस न छे. थे स्याणा छो, इतरामें घणो समझजो. कागळ (काग़ज़) पीण म्हारे हाथसुं लिपने मेलीयो छे थांरी रजावन्दीरे लीये, सो कागळ थांरे हाथ रापने दीवाणरो कागळ दीवाण पहिली लीप त्रिवाड़ीरे हवाले करे, तठा पछे म्हारो कागळ दिवाणरे हवाले करे जो, म्हे पीण भली भांतसु लीपयो छे, ने उणरो तो लीपावणो गुसांईरे हाथ छे, म्हारी पातर नीसा छे; गुसाई वीच आया छो, भली ईज करसो; तिण वात अठीरो रूड़ो दीसे त्यूं करजो, म्हारेने उणरे मेलनु घणा लोक करावणनु जस लेणनु पपता था; इण वातरो इकत्यार थांरो रापीयो छे, थांरे सीर छे, थांरो कयो कबूल कीयो छे, म्हानु दीवाण राजी करसी, तो एक भले काम सीर म्हे घणे साथसुं मुढा आगे हुसां, म्हारी ने इणरी वात भेली छे. संवत् १७६२ रा चेत सुद ११ बुधे [विक्रमी १७६३ = हिज्री १११७ ता० ९ ज़िल्हिज ई० १७०६ ता० २५ मार्च] मुकाम जालंधर.

इसी काग़ज़के नीचे यह मज़्मून हाथ अक्षरोंका लिखा मालूम होता है.

तथा गुसाई थां सरीपा समझणा ने दीवाण दपणीयांनु बुलाया, ऐसी अलवद (अफ़्वाह) कुगलां (खोटी वातें) म ठी, जे थे तो म्हानू कदेही लीपीयो नहीं, सो जाणीजे, म्हे सुणियो कुछ मसलत कीधी, सो कासुं मसलत कीधी, कासु ठेराव कीयो, कुण कुण था, सो लीप जो. तथा म्हे सुणां छां, आ वात पातसाह सुण अठी आवणो कीयो छे, सो अठी आयो इण भापरानुं भूंडोछे, सो औरंगजेब छे, तीणसुं इण वातरो इलाज कीजो, पछेजु सको (सब) री पातर छे, भली जाणो सो कीजो रही.

तीजी टीप. श्री हीगोल.

तथा गुसाई चीठी दीवाणनु मेलीछे, गुसाई काम सीध वेगो कीजो, ने म्हासुं सेवा होसी तीणरी कोताही नहीं होवे, सो हकीकत भगवान धरणीधर केसी. वे० सु० ११ सुक्रे [विक्रमी १७६३ = हिज्री १११८ ता० ९ मुहर्रम = ई० १७०६ ता० २४ एप्रिल].

नीचे लिखे काग़ज़में किसीका नाम नहीं है, लेकिन् मालूम होता है, कि यह काग़ज़ भंडारी विठ्ठलदासने किसीके नाम लिखा है, क्यौं कि इस काग़ज़के हुरूफ़ उक्त भंडारीके ख़तसे मिलते हैं, जिसके और भी कई काग़ज़ मौजूद हैं. विठ्ठलदास महाराजा अजीतसिंहका बड़ा मोतबर अहल्कार था.

कागज़की नक्ल.

! श्रं ! हजुर सुं राजाजी नु दिलासा आई, जो थे पातर जमासुं सावक दस्तूर जालौर वन्दोवस्त सु पवरदार थका वैठा रहजो, ने कुंवर थासु विना हुक्म कीवी छे, तिणरो नतीजो ओलंभारो पावसी; सो हजुर (१) सु दिलासा आवे, तठा सुधां म्हानु मिरजेजी अठे रापीया था, सो दिलासा तो आई, हमें राजाजी कहे छे, थे म्हा कनेहीज रहणो मुकर्रिर करो, सो श्री जी जिकुंही हुकम भेजें सो, म्हानु कवूल छेजी, हुक्म भेजावजो जी. श्री जी पास दसपतां परवानामें लिप्यो थो, जु एक आदमी मातवर हजुर भेजजो, सो इतरा दिन ढील हुई, सो जालोररा आवणारी सवव हुई, हमें चुरा देवदतनु श्री जीरी पीदमतमें भेजियो छे, सो अठारी हकीकत सारी हजुरमें मालूम करसी, और चीठी १ श्री जीरी हजुर राजाजी भेजी छे, सो हजुर पहुंचसी जी. वाहुड़ता परवाना महरवानगीरा हमेसा इनायत हुवे. वेसाप वद १४ (२) सवंत् १७६२ रा [विक्रमी १७६३ = हि० १११७ ता० २८ ज़िल्हिज = ई० १७०६ ता० १२ एप्रिल].

जब विक्रमी १७६३ फाल्गुन् कृष्ण १४ [हिज्री १११८ ता० २८ ज़िल्क़ाद = ई० १७०७ ता० ३ मार्च] शुक्रवार को वादशाह आलमगीरका देहान्त होगया, तो यह सुनकर महाराणा २ अमरसिंहने अपनी फ़ौज सुधारी, और महाराजा अजीतसिंहको जोधपुरपर क़ब्ज़ह करनेका इशारा किया. महाराजाने विक्रमी १७६३ चैत्र कृष्ण १३ [हिज्री १११८ ता० २७ ज़िल्हिज = ई० १७०७ ता० १ एप्रिल] को जोधपुरपर क़ब्ज़ा करलिया, और महाराणाने भी जितने पर्गने पुर मांडल, वदनोर और मांडलगढ़ वग़ैरह निकल गये थे, वे सब ले लिये. वादशाहतका ढंग विगड़ने लगा था, जिसका हाल आगे लिखेंगे. जब वड़े शाहज़ादह मुहम्मद मुअ़ज़्ज़म और आज़मसे लड़ाई हुई, आज़म मारा गया, और मुअ़ज़्ज़मने फ़त्ह पाकर वादशाही ताज अपने सिरपर रख शाह आलम वहादुर शाहके लक़बसे मश्हूर हुआ. आंवेरके महाराजा जयसिंह आज़मकी फ़ौजमें और उनके छोटे भाई विजयसिंह वहादुरशाहके साथ थे; इसलिये वादशाहने जयसिंहसे आंवेर छीनकर विजयसिंहको देने और जोधपुरसे महाराजा अजीतसिंहको निकाल वाहर करनेके लिये विक्रमी १७६४ कार्तिक शु० [हि० १११९ शब्बान = ई० १७०७

(१) हुज़ूरसे मत्लब वादशाह आलमगीरसे है.

(२) यह कागज़ गुसाईं नीलकंठगिरके नामके कागज़ोंमें, जो तीसरी टीप है, उससे पहिलेका लिखा हुआ है, लेकिन् पहिलेके तीनों कागज़ एकके नाम और एक मत्लबके होनेसे तीनों एक जगह दर्ज कर दिये गये. और इसको पीछे रक्खा.

नोवेम्बर] में आगरेसे कूच करके आंबेर और जोधपुरको ख़ालिसे किया; और फिर महाराजा जयसिंह व अजीतसिंह को दिहलीसे साथ लेकर इसी वर्षके विक्रमी चैत्र कृष्ण [हि० ज़िल्हिज = ई० १७०८ मार्च] में दक्षिणकी तरफ़ शाहज़ादह कामबरूशसे मुक़ाबला करनेको रवानह हुआ. दोनों महाराजा अपनी अपनी रियासतोंके मिलनेकी उम्मेदमें नर्मदा तक साथ रहे, परन्तु बादशाहकी मर्ज़ी बर्ख़िलाफ़ देखकर दोनों राजा राठौड़ दुर्गदास समेत बग़ैर रुख़्सत उदयपुरकी तरफ़ चले आये.

उस वक्त एक काग़ज़ महाराजा जयसिंहने महाराणा अमरसिंहके नाम लिखा था, जिसकी नक्ल नीचे लिखते हैं:-

श्री रामो जयति.

श्री सीतारामजी.

सिधश्री महाराजा धिराज माहाराणा श्री अमरसिंघजी जोग्य, लिषितं जैसींघ केन जुहार बंच्या अप्र- एठाका समाचार की कृपासों भला छै, आपका सदा भला चाहीजे जी; अप्र- आप बड़ाछो, ठाकुर छो, अठे घोड़ा रजपूत छै, सो आपका कामने छै, अपरंच- आपको काम्दार पंचोली बिहारीदास अठे आयो छो, हकीकति सगली कही; सो म्हांके तो आपको ही फुरमायो प्रमाण छै, सो जे ऊपरि महाराजा अजीतसिंघजी अर हुं अर दुर्गदासजी १३ की दिन लसकरसो जुदो होय आपकी हजूरि आवांछां जी. (इस काग़ज़में संवत् तिथि नहीं है).
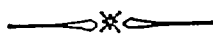
नर्मदासे आकर बड़ी सादड़ीमें दोनों राजाओंका क़ियाम हुआ, उस वक्त जोधपुरके राठौड़ मुकुन्ददास और जयपुरके चारण देवीदान गाडणने पंचोली बिहारीदासके नाम उदयपुरको काग़ज़ लिखे थे, जिनकी नक्ल नीचे लिखते हैं:-

राठौड़ मुकुन्ददास का काग़ज़ पंचोली बिहारीदासके नाम.
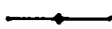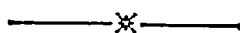
श्रीरामजी.

पं। श्रीविहारीजी थी राज श्री मुकन्ददासजी रो जुहार वांचजो, तथा जेठ वद २ सोमवाररे दीन श्री महाराजाजी रा ने सवाई जैसींघजी, ठाकुर दुर्गदासजी

सकोईरा डेरा सादड़ी हुवा छै, हमै सारो साथ रोज २ मैं उदैपुर श्री दीवाणजी थी मीलने आघा जोधपुर पधारसी (१) संवत १७६४ जेठ विद २ [वि० १७६५ = हि० ११२० ता० १६ सफ़र = ई० १७०८ ता० ८ मई] सोमे.

दूसरा काग़ज़ देईदानका पंचोली
विहारीदासके नाम.

श्रीरामजी.

श्री दीवाणजी सूं सलाम करी मुजरो मालीम कीजो जी.

सीधि श्री राजी श्री पंचोली जी श्री वीहारीदासजी जोगी, लीपतं देईदान केनी जुहार वांची जो, अप्रंची सादड़ीरे डेरे वाघमलजी वा बीठलदासजी आया, राजी डेगे वा रावटी वीछावणा मेल्या: सु आणी पहुंता, और या अरज पहुंचाई, जु आजी मुकाम कीजे: सु तीज सोमवारको तो मुकाम हुवो, अर बुधवारके दीनी वुटोलाइ डेरा होइला, और पांचे विसपती वार वुठे पधारेला जी. और श्री दीवाणजी को पत आयो. सु श्री महाराजी वोहोत राजी हुवा; सु पतको जुवाब जोड़ी पाछे ही आवे छे जी. मिती जेठ वदी ७, [वि० १७६५ = हि० ११२० ता० २१ सफ़र = ई० १७०८ ता० १३ मई].

अब हम इन दोनों राजाओंके उदयपुर आनेका हाल, पुरोहित पद्मनाथके यहां से, जो एक उसी समयका लिखा हुआ काग़ज़ मिला, उससे और उदयपुरके पुराने जुज़दानोंमें, जो उसी वक्तकी तस्वीरोंपर लिखा हुआ मिला. व कारखानहजातकी वहियोंसे नक़्ल करके खुलासहके तौरपर नीचे लिखते हैं:-

महाराणा अमरसिंह विक्रमी १७६५ ज्येष्ठ कृष्ण ९ बृहस्पति वार [हि० ११२० ता० १९ सफ़र = ई० १७०८ ता० ११ मई] को उदयपुरसे [illegible] होकर उदयसागर तालावके रूण (भीतरी किनारा) में गत रहे. इन्होंने सवारीके लोगोंको तो देवारीके रास्ते भेजा, और महाराणा उदयसागरकी [illegible]

(१) मेवाड़ और जोधपुरमें श्रावण कृष्ण प्रतिपदासे संवत् बदलता है, और [illegible] काग़ज़में संवत् १७६४ लिखा गया, लेकिन चैत्री हिसाबसे वि० १७६५ समझना [illegible]

होकर गाडवा (१) गांवके पास पहुंचे; उधरसे महाराजा अजीतसिंह, महाराजा जयसिंह, दुर्गदास और मुकुन्ददास आये. महाराणा पेश्तर अजीतसिंहसे फिर जयसिंहसे, और उसके बाद दुर्गदास व मुकुन्ददाससे मिले; दोनों राजाओंने चंवर और छांहगी (सायः गीर) नहीं रक्खा था, महाराणाने अपनी तरफ़से दिया. उदयसागरकी पालपर गोठ (दावत) तय्यार थी सो भोजन करके महाराणा सिफ़ेद घोड़े (जिसका नाम मन मान प्यारा था) पर सवार हुए उनके दाहिनी तरफ़ महाराजा अजीतसिंह, बांई ओर महाराजा जयसिंह, और पीछे ठाकुर दुर्गदास थे, इस तरह देबारीके रास्तेसे उदयपुरके महलोंमें दाखिल हुए. दोनों राजा शिवप्रसन्न अमरविलास में, जिसको अब बाड़ी महल कहते हैं सोये, और महाराणाने सूरज चौपाड़में आराम किया.

दूसरे दिन सुब्ह ही महाराजा अजीतसिंहका डेरा कृष्णविलास (२) में और महाराजा जयसिंहका सर्व ऋतु विलास में हुआ. फ़ज्रमें दोनों राजा महाराज गजसिंह (३) की हवेली गये, शामके वक़् महलोंके नीचे नाहरोंके दरीख़ाने में दर्बार हुआ. महाराणा बड़ी पौल तक पेश्वाई करके दोनों राजाओंको ले आये; तीन गादियां तय्यार थीं- दाहिनी तरफ़ (४) महाराजा अजीतसिंह, बाईंपर महाराजा जयसिंह और बीच की गद्दीपर महाराणा बैठे. ठाकुर दुर्गदास महाराजा अजीतसिंहके साम्हने गद्दीके कोनेपर, ठाकुर मुकुन्ददास चांपावत महाराजाकी गद्दीके नीचे तकियाके बराबर बैठे. महाराणाके मातह्त सर्दार गद्दीके साम्हने दाहिनी बाईं लैनमें, और दोनों राजाओंके अपने अपने मालिकोंके साम्हने दहिने बाएं बैठे. इसी तरह पहिले दिनके मुवाफ़िक़ शामको उसी जगह दर्बार

---

(१) तस्वीरपर तो गाडवा गांवके इधर तक जाना कायस्थ लक्ष्मण सही वालेने लिखा है, जो उस वक़् मौजूद था; और पुरोहित पद्मनाथके यहांकी हक़ीक़तमें उदयसागरकी पालके खुरे तक पेश्वाईको जाना लिखा है.

(२) यहांकी अगली इमारत तो गिर गई, और अब वहांपर जेलख़ाना बनाया गया है.

(३) यह महाराज, महाराणा जयसिंहके छोटे भाई और अमरसिंहके काका थे, जिनकी बेटीसे विक्रमी १७५३ [हिज्री ११०७ = ई० १६९६] में महाराजा अजीतसिंहका व्याह हुआ था.

(४) तस्वीरपर तो इसी तरह लिखा है, लेकिन् पुरोहित पद्मनाथके यहांकी हक़ीक़तमें महाराजा जयसिंहका दाहिनी तरफ़ बैठना तहरीर है.

हुआ, और दूसरे दिन दोनों राजाओंके लिये फ़ौज समेत गोठ तय्यार कीगई; लेकिन् उसी दिन महाराणाके काका बहादुरसिंहके मरनेकी ख़बर मिली, जिससे वह खाना घोड़ोंको खिला दिया गया.

महाराणा, महाराजा अजीतसिंहके डेरेपर गये, उन्होंने दस्तूरके मुवाफ़िक़ एक हाथी, दो घोड़े, एक जड़ाऊ कटारी, एक वर्छी और एक मीनाके दस्तेकी तलवार महाराणाको दी. फिर महाराणा महाराजा जयसिंहके डेरेपर गये, उन्होंने भी महाराजा अजीतसिंहके मुवाफ़िक़ चीज़ें देना चाहा, लेकिन् महाराणाने नहीं लिया, क्योंकि उन्होंने महाराजा जयसिंहके साथ अपनी बेटीकी शादी करना विचारा था; इस लिये महाराणाने एक हाथी, और दो घोड़े उक्त महाराजाको टीकेमें दिये. विक्रमी आषाढ़ कृष्ण २ सोमवार [हिज्री ता० १९ रबीउल् अव्वल = ई० ता० ८ जून] को महाराणाकी कन्या चन्द्रकुंवर बाई (१) का व्याह आंबेरके महाराजा जयसिंहके साथ हो गया. दो हाथी चांदीके सामान समेत, ४५ घोड़े, एक रथ, दो ख़र्सल, गहना और सोने चांदीके बर्तनोंके सिवाय बीस हज़ार रुपये नक्द और आठ सौ सिरोपाव मर्दाने और ६१९ ज़नाने दिये; बाईको गहना, कपड़ा, दास, दासी वग़ैरह बहुत कुछ दहेज़में दिया.

इस शादीका नतीजा अच्छा होना चाहिये था, क्यौं कि संबंध होनेसे इत्तिफ़ाक़की तरक़्क़ी होती है, लेकिन् यह राजपूतानहके लिये बर्बादीका बीज बोया गया; क्योंकि इस वक़्त एक अह्दनामह तीनों राजाओंमें लिखा गया, कि उदयपुरके राजाओंकी बेटी अव्वल नम्बर और पहिली जितनी राणियां हों, वे उससे छोटी समझी जावें. दूसरे- उदयपुरके राजाओंकी बेटीका फ़र्ज़न्द युवराज हो; और जो दूसरी राणियोंसे बड़े बेटे हों, वे सब छोटे गिने जावें. तीसरे- उस राज कुमारी से बेटी पैदा हो, तो उसकी शादी मुसल्मानोंके साथ नहीं कीजावे. दूसरी क़लम राजपूतानहके रवाजके बर्ख़िलाफ़ थी, लेकिन् उदयपुरकी राज कुमारीके साथ विवाह करनेमें अपनी इज़्ज़त जानते थे, और बहादुरशाहकी नाराज़गीके सबब मदद मिलनेकी उम्मेदपर यह इक़ारनामह साबित किया गया, जिसका अंजाम यह हुआ, कि

---

(१) जयपुरकी तवारीख़ तथा वंशभास्कर नाम ग्रन्थ (बूंदीके इतिहास कवि सूरजमल्लके बनाए हुए) में इस शादीके सिवाय महाराणाकी बहिनका विवाह महाराजा अजीतसिंहसे होना लिखा है, और मश्हूर भी है, कि दोनों राजाओंकी शादियां हुईं; लेकिन् उस वक़्तके काग़ज़ों और जोधपुरकी तवारीख़के देखनेसे यह नहीं पाया जाता. महाराजा अजीतसिंहकी शादी पहिले उदय-कुंवर बाईके साथ हुई थी, जिसको लोगोंने एक साथ होना ख़याल कर लिया है.

मरहटे राजपूतानामें दख़ील हो गये; जिनको पहिले इन्हीं राजाओंके डरसे नर्मदा उतरना कठिन था. उदयपुर और जयपुर दोनों रियासतें बिल्कुल तबाह होगई.

अब हमेशह सलाह होने लगी, कि मुसल्मानोंको हिन्दुस्तानसे निकालकर महाराणाको बादशाह बनाया जावे; लेकिन् यह राय महाराजा अजीतसिंहको ना पसन्द हुई, तब तीनों रियासतोंसे तीन चारण बुलाये गये, और उनकी रायपर फ़ैसलह होना क़रार पाया. जोधपुरकी तरफ़से द्वारिकादास दधिवाड़िया, उदयपुरसे ईश्वरदास भादा और आंबेरसे देवीदान गाडण थे; इन लोगोंकी राय लीगई, तो द्वारिकादासने एक दोहा मारवाड़ी भाषामें कहा-

दोहा.

व्रज देशां चन्दण वड़ां मेरु पहाड़ां मोड़ ॥
गरुड़ खगां लंका गढां राज कुळां राठोड़ ॥ १ ॥

इसका यह मत्लब है, कि देशोंमें व्रज, दरख्तोंमें चन्दन, पहाड़ोंमें सुमेरु, पक्षियोंमें गरुड़, क़िलोंमें लंका और राजपूतोंमें राठोड़ अव्वल दरजेके हैं; इस लिये हिन्दुस्तानकी बादशाहतपर महाराजा अजीतसिंहका हक़ है. यह सुनकर ईश्वरदासने दोहा कहा-

दोहा.

व्रज बसावण गिर नख धरण चन्दण दियण सुगंध ॥
गरुड़ चढ़ण लंका लियण रघुवंशी राजन्द ॥ १ ॥

इसका यह अर्थ है, कि व्रजको आबाद करने वाले, पर्वतको नखपर उठा लेने वाले, चन्दनको खुशबू देने वाले, गरुड़पर सवार होने वाले, लंकाको जीतने वाले रघुवंशी राजा हैं. इस लिये महाराणा ही हिन्दुस्तानके बादशाह होने चाहियें.

इस आपसके झगड़ेको देखकर महाराणाने कहा, कि हम हिन्दुस्तानकी बादशाहत नहीं चाहते; क्यौं कि अभी तो सब राजा मुसल्मानोंके दर्बारमें खड़े रहकर बहुतसी नागवार बातें सहते हैं, और हमारी ताबेदारी करनेसे भी बुरा मानकर फ़साद करेंगे, तब वेही मुसल्मान विलायतसे आकर फिर हिन्दुस्तानके मालिक बन जावेंगे; हम अपनी इस तरहकी फ़ज़ीहत करानी नहीं चाहते. इस लिये यह ठीक है, कि दोनों राजा अपनी अपनी रियासतपर क़ब्ज़ा कर लेवें, हम दिलसे दोनोंके मददगार हैं.

इसी अर्सेमें शाह आलम बहादुर शाहके बड़े शाहज़ादह मुइज़्ज़ुद्दीन जहांदार शाहका एक निशान महाराणा अमरसिंहके नाम आया; जिसका तर्जमह मए नक़्ल लिखा जाता हैः-

निशान (१) शाहज़ादह जहांदार शाह, वलद बहादुरशाह बादशाहका.

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम.

मुहरकी नक़ल.

अल्लाह
अक्बर

जहांदार शाह
बहादुर, इब्न सय्यद
अबुन्नस्र कुतुबुद्दीन मुहम्मद
मुअ़ज़्ज़म शाह आ़लम बहादुर
बादशाह ग़ाज़ी
सन् अहद १११९

तुग़राकी नक़ल.

निशान आ़लीशान
शाहज़ादह जहांदारशाह
बहादुर, इब्न शाह आ़लम
बहादुर बादशाह ग़ाज़ी.
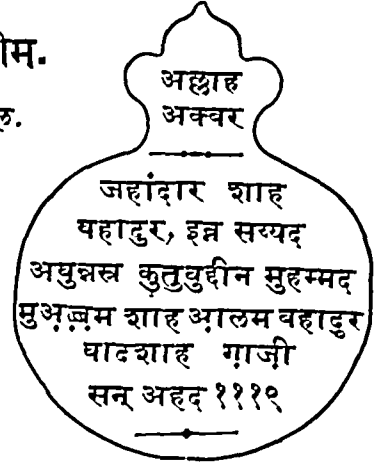
नेक नियत ख़ैरख़्वाहोंका बड़ा, नेकी चाहने वाले दोस्तोंका उ़म्दह, वफ़ादार ख़ान्दानमेंका बुज़ुर्ग, मर्ज़ी ढूंढने वाले घरानेका यादगार, बादशाही ताबेदारोंका

---

(१) نشان بان شاهزادهٔ جهاندار شاه بهادر- بنام رانا امرسنگه - ۲ *
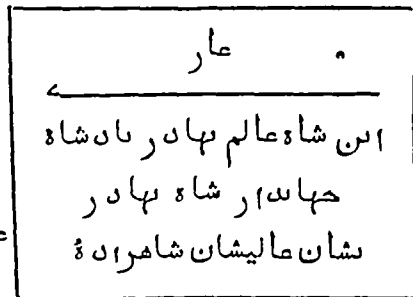
بسم الله الرحمن الرحيم

پادشاهي

نقل طغرہ

عالی متعالي شانی

عار

ابن شاه عالم بهادر بادشاه
جهاندار شاه بهادر
نشان عالیشان شاهزادهٔ

* الله *
اکبر
محمد غازي
معظم
عالم بهادر بادشاه
ابوالنصر قطب الدين سنه احد
۱۱۱۹
جهاندار شاه بهادر ابن

نقل مهر

زبدهٔ نیکخواهان عقیدت کیش، خلاصهٔ مخلصان خیر اندیش، نتیجهٔ دودمان وفاجوئی، بقیهٔ خاندان رضاجوئی، سلالهٔ عبودیت منشان، سزاوار الطاف و احسان، مطیع الاسلام رانا امرسنگه،

بعنایات بے نهایات مستظهر بوده بداند- درینولا چون باجیت سنگه و جے سنگه و درگ داس جاگیر متصدیان عظام تنخواه بدادند، بنابران از راه پریشانی برخواسته رفته اند؛ باید که او بهار نوکر

विह्तर, बादशाही मिह्र्बानियों और इह्सानके लाइक़, मुसल्मानी बादशाहतका फ़र्मांबर्दार, राणा अमरसिंह, बहुतसी बादशाही मिह्र्बानियोंसे मज्बूत दिल होकर जाने- जो कि इन दिनोंमें अजीतसिंह, जयसिंह और दुर्गदासको बादशाही अह्लकारोंने जागीर और तन्ख्वाह नहीं दी, इस लिये वह तक्लीफ़के सबब उठ भागे हैं. उस खैरख्वाहको चाहिये, कि उन लोगोंको अपने पास नौकर न रक्खे, और बादशाही मिह्र्बानियोंसे तसल्ली देकर तीनोंकी अर्ज़ियां हुजूरमें भेज दे, कि उस उम्दह राजाकी मारिफ़त हम दर्मियानमें आकर इन लोगोंके कुसूर मुआफ़ करा देंगे; और जागीरोंकी सनद हुजूरसे हासिल करके हम उस साफ़ दिल दोस्तके पास भेज देंगे, ता कि ये लोग कुछ अर्से अपने वतनमें रहकर तक्लीफ़से आराम पावें; इसके बाद हम हुजूरमें तलब करके अपनी मारिफ़त मुजरा करा देंगे. इस मुआमलेमें जहां तक हो सके, ज़ियादह ताकीद जाने, तसल्लीके साथ हज़रत बादशाहकी मिह्र्बानियोंको अपने हालपर हमेशह बढ़ता हुआ समझे. ता० १४ सफ़र सन् २ जुलूस [हिज्री ११२० = विक्रमी १७६५ वैशाख शुक्ल १५ = ई० १७०८ ता० ६ मई].

——*——

इस निशानपर कुछ लिहाज़ न हुआ, लेकिन् महाराणाने महाराजा अजीतसिंह, महाराजा जयसिंह और दुर्गदासकी अर्ज़ी उनके बे रुख्सत चले आनेके उज़्रों और कुसूरोंकी मुआफ़ी करानेके मत्लबकी लिखाकर शाहज़ादह मुइज़्ज़ुद्दीनकी मारिफ़त भेज दी. महाराजा अजीतसिंहको, जब तक उदयपुरमें रहे, चार सौ रुपये और महाराजा जयसिंहको ४०० रुपये और दुर्गदासको २०० रुपये रोज़ दिये जाते थे. विदाके वक्त दस हज़ार रुपये, एक हाथी, दो घोड़े महाराजा अजीतसिंहको, और उनके चारों बेटोंके लिये घोड़े, सिरोपाव, और दुर्गदासको घोड़ा, सिरोपाव व दो हज़ार रुपया दिया. इसके बाद महाराणाने दोनों राजाओंको विदा किया, जिनके साथ कुछ फ़ौज

جون نكند، و مستمال عنايات نموده عرضه داشت هر سه بحضور فيض گنجور ارسال دارد، كه بوساطت آن عمدهٔ راجها ما بدولت درميان آمده تقصيرات آنها را معاف كنانيده سند جاگير آنها را از حضور پرنور حاصل نموده پيش آن مخلص با اخلاص ميفرستيم، كه تا چندے در وطن خود بوده از پريشانی برآيند- بعد از آن بحضور پرنور طلبيده بوساطت خود ملازمت آنها خواهيم كنانيد- درين باب تاكيد اكيد و قدغن بليغ دانسته مستمال نمايد، و عنايات عالی متعالی شاهی بنسبت بحال خود روز افزون شناسد * بتاريخ چهاردهم شهر صفر ختم الظفر سنه دوم جلوس مبارك والا سمت تحرير پذيرفت * .

——***——

देकर कायस्थ श्यामलदास और महासहानी चतुर्भुज वगैरहको भेजा. दोनों राजा उदयपुरकी जमइयत समेत जोधपुर पहुंचे; और बादशाही थानेको उठा दिया. महाराजा जयसिंहके दीवान रामचन्द्र और श्यामसिंह कछवाहा वगैरहने, जब कि ये दोनों राजा उदयपुरमें थे, आंबेरसे बादशाही थानेदारोंको पेश्तर ही निकाल दिया था. इस बारेमें शाहज़ादह जहांदार शाहका दूसरा निशान महाराणा अमरसिंहके नाम आया, जिसका तर्जमह नीचे लिखा जाता है:–

दूसरा निशान (१).

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम.

मुहरकी नक़ल.

तुग्राकी नक़ल

निशान आ़लीशान
शाहज़ादह जहांदारशाह
बहादुर, इब्न शाह आ़लम
बहादुर बादशाह ग़ाज़ी

आदाब अल्क़ाबके बाद,

उस ख़ैरख़्वाहने, जो अ़र्ज़ी कि अजीतसिंह, जयसिंह व दुर्गदासकी अ़र्ज़ियों

---

(۱) نشان دوم شاهزاده جهاندار شاه بهادر - بنام رانا امر سنگه - ۲ *

بسم الله الرحمن الرحیم

نقل طغره

والا

غازی

ابن شاه عالم بهادر بادشاه
جهاندار شاه بهادر
نشان عالیشان شاهزاده

عالی متعالی شامی

نقل مهر

زبدهٔ نیکخواهان عقیدت کیش، خلاصهٔ مخلصان صبر اندیش،
نتیجهٔ دودمان وفاجوئی، نقیهٔ خاندان رضاجوئی، سلالهٔ

समेत मीर शुक्रुल्लाह मन्सबदारके हाथ भेजी थी, हमने बादशाही मुबारक नज़रमें पेश करदी. हम इस फ़िक्रमें थे, कि इन लोगोंके कुसूर मुआफ़ होजावें, लेकिन् इन दिनोंमें अजमेरके सूबहदार शजाअतख़ांकी अर्ज़ीसे हुज़ूरमें मालूम हुआ, कि रामचन्द्र वग़ैरह जयसिंहके नौकरोंने सय्यद हुसैनख़ां वग़ैरह बादशाही नौकरोंसे लड़ाई की. अजीतसिंह वग़ैरहको हर्गिज़ मुनासिब नहीं था, कि हमारा जवाब पहुंचने तक बेहूदह हरकत करते, बहुत नालायक़ कार्रवाई हुई. इसलिये कुछ अर्से तक इनके कुसूरोंकी मुआफ़ी हमने मौकूफ़ रक्खी है. इनको कहदे, कि अब भी हाथ खेंचकर कोनेमें बैठें, रामचन्द्रको निकालदे, और अर्ज़ी भेजे, कि उसने बादशाही आदमियोंके साथ बे अदबी की थी, इसलिये नौकरीसे दूर कियागया. इसके बाद उनके कुसूरोंकी मुआफ़ीकी फ़िक्र कीजावेगी. बादशाही मिहर्बानियोंको हमेशह अपने हालपर ज़ियादह समझे. ता० २७ रबीउस्सानी सन् २ जुलूस [हिज्री ११२० = विक्रमी १७६५ श्रावण कृष्ण १३ = ई० १७०८ ता० १७ जुलाई].

ऊपर लिखे निशानके जवाबमें महाराणा अमरसिंहने शाहज़ादह जहांदार शाहके नाम जो लिखा, उसका अस्ल मुसव्वदह उसी वक़्तका हमको मिला है, जिसका तर्जमह यहां लिखा जाता है:-

———

قدوت منشان، سزاوار الطاف واحسان، مطیع الاسلام رانا امرسنگه
بعنایات بے نہایات مستظہر بودہ بداند، عرضہ داشتے کہ باعرضہ داشت اجیت سنگه
وجیسنگه و درگداس مصحوب میر شکراللہ منصبدار ارسال داشتہ بود، از نظر ہمایون مقدس معلی
گذرانیدیم - در فکر این بودیم، کہ عفو جرایم اینہا بشود، درین اثنا از روے عرضہ داشت شجاعت خان
ناظم صوبہ دار الخیر اجمیر بعرض اشرف اقدس ارفع اعلے رسید، کہ رامچند وغیرہ نوکران جے سنگه
با سید حسین خان وغیرہ ملازمان بادشاہی جنگ کردند - اجیت سنگه وغیرہ را نمے بایست کہ تا رسیدن
جواب ما حرکت دور از کار میکردند - بسیار بد واقعہ شد - بنابران چندے عرض برائے عفو جرایم
آنہا موقوف فرمودہ ایم - آنہا را بگوید کہ الحال ہم دست خود ما را کوتاہ نمودہ گوشہ نشینند، و رامچند
نوکر خود را دور کنند، و عرضہ داشت ارسال دارد کہ او با بندہاے بادشاہی بے ادبی شدہ، از
نوکری برطرف کردم - در آن وقت فکر عفو جرایم آنہا کردہ شود - عنایت عالی متعالی شاہی را نسبت
بحال خود روز افزون شناسد * بتاریخ بیست و ہفتم ربیع الثانی سنہ دوم جلوس مبارک سمت
تحریر پذیرفت *

महाराणा २ अमरसिंहकी तरफ़से दर्ख्वास्त
शाहज़ादह जहांदार शाहके नाम.

जहान और जहान वालोंके बुज़ुर्ग सलामत,

हुज़ूरका बुज़ुर्ग निशान निहायत क़द्रदानीके साथ इस तावेदार ख़ैरख्वाहके नाम इस मज़्मूनसे जारी हुआ, कि इस फ़र्मांवर्दारकी अर्ज़ीके साथ राजा अजीतसिंह, राजा जयसिंह और दुर्गदास राठौड़की अर्ज़ियां बादशाही हुज़ूरमें पेश कर दीं, हुज़ूर इनके कुसूर मुआफ़ करावेंगे; और इस बातका भी हुक्म था, कि जयसिंहको ताकीद कीजावे, कि वह अपने नौकर रामचन्द्रको, जिसने बादशाही आदमियोंके साथ बे अदबी की है, अलहदह करदे; और ये लोग अपने कुसूरोंकी मुआफ़ीके लिये बादशाही हुज़ूरमें अर्ज़ियां भेजें.

इन बातोंके लिखनेसे तावेदारको बहुत इज़्ज़त हासिल हुई, हुज़ूरके निशानको इज़्ज़तके साथ सर आंखोंपर रक्खा; हुज़ूरकी मन्शाके मुवाफ़िक़ राजा जयसिंहको सख़्त ताकीद लिखदी है, कि रामचन्द्रको, जिसने नालाइक़ कार्रवाई की, निकाल दें; और अपने कुसूरोंकी मुआफ़ीके वास्ते बादशाही दर्गाहमें और हुज़ूरके पास अर्ज़ियां भेज दें. लेकिन् अस्ल हक़ीक़त यह है, कि वतनमें जागीर पाये बग़ैर इन लोगोंकी तसल्ली नहीं होगी, और ऐसा मालूम होता है, कि हिन्दुस्तानमें बड़ा फ़साद उठेगा. इसलिये हुज़ूरकी ख़ैरख्वाही और इस इलाक़हका फ़साद दूर होनेके लिहाज़से जागीर और कुसूरोंकी मुआफ़ीके लिये अर्ज़ किया जाता है; ये लोग क़दीमी ख़ानहज़ाद हैं; इसलिये तावेदार उम्मेद रखता है, कि बादशाही हुज़ूरमें अर्ज़ करके वतनकी जागीर इनको इनायत करा देवें, ता कि झगड़ा दूर हो; मुनासिब जानकर अर्ज़ किया गया.
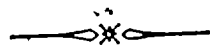
महाराणा २ अमरसिंहका ख़त, जो नव्वाब आसिफ़ुद्दौलह
को जवाबमें लिखा गया.
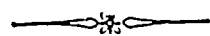
बाद शौक़के यह है, कि आपका बुज़ुर्ग ख़त पहुंचा, जिसमें यह लिखा है, कि हज़रत शहन्शाहकी तरफ़से मन्सब बहाल होकर राजा अजीतसिंहको सोजत और जैतारन, राजा जयसिंहको खदमनी (१) और दुर्गदास राठौड़को पर्गनह

(१) इस गांवका नाम खदमनी पढ़ा जाता है, नहीं मालूम सहीह नाम क्या है.

सिवाना जागीरमें दिये जानेका हुक्म हुआ; इनको ताकीद कर दें, कि फ़साद और बेजा हरकत न करें, आंबेरसे हाथ खैंचकर चुप चाप बैठें; खुदाने चाहा, तो दुबारा हुजूरमें अर्ज़ करके जोधपुर और आंबेर इनको दिला दिये जावेंगे; हर एक अपना वकील भेजकर सनद हासिल करे. इन बातोंके दर्याफ़्त करनेसे बहुत खुशी हासिल हुई, लेकिन् नव्वाब साहिब सलामत, अस्ल हक़ीक़त यह है, कि ये लोग जब उदयपुरमें पहुंचे, तो मैंने सिर्फ़ शाहज़ादह साहिबके हुक्म और हज़रत शहन्शाहकी खैरख्वाहीके लिहाज़से हर तरहकी नसीहतें, जो मुनासिब नज़र आईं, उन अज़ीज़ोंको कहीं; और हुजूरमें भी इत्तिलाई अर्ज़ी भेजकर एक महीनेसे ज़ियादह उन लोगोंको ठहरा रक्खा; लेकिन् बादशाही अहल्कारोंकी नाराज़ीके सबब कोई मत्लब दुरुस्त न हुआ.

आपकी साफ़ तबीअतपर ज़ाहिर है, कि बुज़ुर्ग खुदाने दुन्याके इन्तिज़ामको कुद्रतसे किया, और बहुत चीज़ें व जान्दार पैदा किये; और हर इलाक़ेके लिये जुदे आदमी मुक़र्रर फ़र्माये हैं. इसी तरह अगले बादशाह राजपूतानाकी आमद, खर्च और इन्तिज़ामपर नज़र करके अपनी खुशीसे इस इलाक़ेके मौजूद आदमियोंके बुज़ुर्गोंको वतनकी जागीरोंके सिवाय अपने पाससे पर्गने और इन्आम देते रहे हैं, जिसके सबब उन्होंने उम्दह खिद्मतें की हैं.

इस वक्त मुल्कमें हर तरफ़ फ़साद उठ रहा है, और हर तरह कोशिश कीजाती है, लेकिन् बगैर वतनमें जागीर मिलनेके दोनों अज़ीज़ (जयसिंह व अजीतसिंह) और दुर्गदास राठौड़ फ़सादसे जल्द बाज़ न आवेंगे; यह खैरख्वाह मुद्दतसे आपकी खिद्मतमें एतिबार रखता है, इस वास्ते बेतकल्लुफ़, जो कुछ सच नज़र आया, लिख दिया है; इस मौक़ेपर मुनासिब यही है, कि शाहज़ादह साहिबकी सिफ़ारिशसे वतनकी जागीरोंके लिये इन लोगोंको सनद इनायत होजावे, तो बहुत मुनासिब है; आगे जिस तरह हज़रत शहन्शाहकी मर्ज़ी मुबारक और बड़े अहल्कारोंकी खुशी हो, सबसे बिह्तर है. वकीलोंके लिये, जो फ़र्माया, उसका यह हाल है, कि मैं आपके कारखानह और मकानको अपना घर जानता हूं, जल्द वकील भी आपकी खिद्मतमें हाज़िर होजाएंगे. ज़ियादह क्या तक्लीफ़ दी जाये.

इसके बाद महाराजा अजीतसिंह, जयसिंह और महाराणा २ अमरसिंहकी फ़ौजने जोधपुरसे निकलकर पुष्करमें एक महीने तक मक़ाम रक्खा, और अजमेरके सूबहदार शजाअतखांसे फ़ौज खर्चके कुछ रुपये लेकर दोनों राजाओंने सांभरपर जा

क़ब्ज़ा किया; वहां सय्यद हुसैनसे मुक़ाबला हुआ, दोनों राजाओंने फ़त्ह पाई, और सय्यद मए फ़ौजके मारा गया; यह हाल जोधपुरकी तवारीख़में लिखा जायगा.

इसी वर्षमें महाराणाको फ़ौज ख़र्चकी ज़रूरत हुई, तब मेवाड़के जागीरदार और ख़ालिसे व सासणीक लोगों से फ़ौज ख़र्चके रुपये वुसूल करना चाहा; क्योंकि बादशाही फ़ौजोंसे मुक़ाबला होजानेका ख़तरा था. ख़ालिसेकी रिआया व जागीरदारों और अह्ल्कारोंने तो रुपये देदिये, परन्तु ब्राह्मण, चारण और भाटोंने इन्कार किया, जिसपर ज़ियादह दबाव डाला गया; इससे तीनों ज़ातके हज़ारों आदमियोंने धरना दिया; महाराणा काले कपड़े पहिनकर बाड़ी महलके झरोकेमें आबैठे, और कहा, कि मैं रुपये ज़रूर वुसूल करूंगा. तब महाराणाके पुरोहितने ब्राह्मणोंके बदले छः लाख रुपये, और खेमपुरके गोरखदास दधिवाड़िया (१) ने चारणोंके एवज़के तीन लाख रुपये अपने घरसे जमा करा दिये, और इन दोनोंने अपनी अपनी ज़ात वालोंसे कहला दिया, कि तुमको रुपये छोड़ दिये हैं; क्योंकि यदि उन्हें यह ख़बर हो जाती, तो वे हर्गिज़ न उठते. यह देखकर भाट लोग और भी भड़के.

महाराणासे किसीने कहा, कि इन भाटोंके बिस्तरोंमें मिठाई और रोटियां मौजूद हैं. तब एक मस्त हाथी छुड़वाया, जिसके डरसे भाट लोग बिस्तरे छोड़ भागे, और उनके बिछोनोंमें मिठाई और रोटियां मिलीं; इसपर उन्हें शहर बाहर निकलवा दिया. इस लज्जासे हज़ारों भाट एक साथ एकलिंग पुरीको चले; महाराणाने चीरवेके घाटेपर बन्दोबस्त करवा दिया; तब उदयपुरसे उत्तर ५ मीलके फ़ासिलेपर आंवेरीकी बावड़ीके पास दो हज़ार भाट ख़ुद कुशी करके मर गये; और उनके क़ब्ज़ेमें, जो ८४ गांव सासणके थे, वे महाराणाने छीन लिये. उसी दिनसे हज़ारों भाटोंने बंजारोंका पेशह इख्तियार किया, और उनकी औलाद वाले अब तक बैल लादकर गुज़ारा करते हैं. उस समय किसी कविने मारवाड़ी ज़बानमें एक सोरठा कहा थाः–

सोरठा.

धर पतरे धाड़ेह । भटवाड़े सह भांजिया ॥
गोरख गढ़वाड़ेह । आडो आस करन्न वत ॥ १ ॥

---

(१) दधिवाड़िया, चारणोंमें एक गोत्रका नाम है.

मत्लब इसका यह है, कि महाराणाके ज़ुल्मने भाटोंको ग़ारत किया; और गोरखदास आसकरणका बेटा उस वक्त चारणोंके गढ़वाड़ोंका मददगार रहा.

इन महाराणाने अपने नामके ख़रीते, पर्वाने व ख़ास रुक्के लिखनेका क़ाइदह मुक़र्रर किया, जिसमें सहीह वालोंके (१) अक्षर पहिले कई ढंगके (बापके और और बेटेके और) लिखे जाते थे, उनका तर्ज़ उस समयसे एक ही तरहका क़ाइम किया गया, जो कि आज तक जारी है.

दूसरे, सोलह व बत्तीस उमराव क़ाइम करके उनकी जागीरें मुक़र्रर (२) कर दी गईं, जिससे रिआया और जागीरदार दोनोंको फ़ायदह हुआ.

इन महाराणाने राजपूतानामें आग भड़काकर सर गिरोह बननेकी कार्रवाई की, और यह ख़बरें अजमेरके सूबहदारकी मारिफ़त दक्षिणमें बादशाहके पास पहुंचती थीं; लेकिन् बादशाह अपने भाई कामबख़्शकी लड़ाइयोंमें फंसा हुआ था; उसने अजमेरके सूबहदार शजाअ़तख़ांके एवज़ सय्यद हुसैनको सूबहदारीपर भेज दिया. महाराजा अजीतसिंहने छेड़ छाड़ कर रक्खी थी, और महाराणाने बदनौर, पुर मांडल और मांडलगढ़ तीनों पर्गनोंसे राठौड़ सुजानसिंहके बेटोंको निकालकर क़ब्ज़ा कर लिया. जब बहादुरशाह अपने भाई कामबख़्शपर फ़त्ह पाकर दक्षिणसे लौटा, तो महाराणाने लड़ाईकी तय्यारी करके पहाड़ोंमें रहनेका इरादह किया. यह हाल सूबहदारोंने बादशाहको लिखा, इसपर वज़ीर असदख़ांने महाराणाके नाम फ़ार्सीमें एक काग़ज़ भेजा, जिसका तर्जमह यहां लिखते हैं:-

---

(१) यह भटनागर कायस्थ हैं, और महाराणाकी 'सही' हुक्मी काग़ज़ोंपर करवाते हैं, इससे वह सहीह (صحيح) वाले मश्हूर हैं.

(२) पहिले ख़ास ख़ास लोगोंके लिये जागीरका सद्र मक़ाम (ख़ास ग्राम) क़ाइम रहा है, परन्तु आम रवाज यह था, कि जागीर तीन वर्ष या इससे कम ज़ियादह अर्सेमें बदल दी जाती थी. इसमें महाराणाने रअ़य्यतकी ख़राबी जानकर पक्का पट्टा और अमरशाही रेख क़ाइम करदी. जागीर बदलनेका रवाज इस रियासतमें मुग़ल बादशाहोंके क़ाइदेके मुवाफ़िक़ महाराणा कर्णसिंहने जारी किया था.

अस्अदखां वज़ीरका ख़त, महाराणा
२ अमरसिंहके नाम.

अमीरोंकी पनाह, बड़ी ताक़तवाले बहादुर, बराबरीवालोंसे उम्दह और बिहतर, बुज़ुर्ग सर्दार राणा अमरसिंह, हज़रत शहन्शाहकी मिहर्बानियोंमें रहें -

हुज़ूरमें अर्ज़ हुआ, कि वह दिलेर सर्दार बादशाही लश्करकी रवानगीकी ख़बर सुनकर बेवकूफ़ लोगोंके बहकानेसे वहमके सबब अपना अस्बाब और सामान पहाड़ोंमें भेजते हैं. हुक्म फ़र्माया गया है, कि इससे पहिले तसल्लीका बुज़ुर्ग फ़र्मान् जारी हो चुका है; फिर किस वास्ते ख़ौफ़ किया जाता है. जब कि हज़रत बादशाहकी मिहर्बानी उन उम्दह राजाके हालपर किसी तरह कम नहीं है. तो साफ़ दिली और बे फ़िक्रीके साथ अपनी जगहपर आरामसे रहें, और अपने आदमियोंकी भी तसल्ली करदें, कि कोई न घबरावे. हुक्मके मुवाफ़िक़ अमल करें. मैंने ख़त उन दोस्तके नाम भेजा था, उसके जवाबका इन्तिज़ार किया जाता है, जिस क़द्र जल्द भेजें बिहतर है. ता० ७ मुहर्रम सन् २ जुलूस [हिज्री ११२० = विक्रमी १७६५ चैत्र शुक्ल ९ = ई० १७०८ ता० ३१ मार्च].

इसी सबबसे अगर्चि चित्तौड़के पास होकर बादशाही लश्करका रास्तह मुक़र्रर हुआ था, लेकिन् उसे छोड़कर मुकन्दराके घाटेसे हाड़ौती होकर गया. महाराणाका वकील बाघमल्ल और मोतमद भाला कान्ह वगैरह इस कोशिशमें बादशाही लश्करके साथ थे, कि मेवाड़के तीनों पर्गने जो क़ब्ज़ेमें किये, उनकी सनद हासिल करके महाराजा जयसिंह और महाराजा अजीतसिंहका भी मत्लब पूरा किया जावे. बादशाही अहल्कार कुछ दबाव और कुछ लालचसे बादशाहके दिलपर राजा लोगोंकी तरफ़से रोब बढ़ाते जाते थे. यह भी याद रखना चाहिये, कि राजाओंके वकील भी अपने मालिकोंको उसी तरह बेफ़िक्र नहीं होने देते थे. इसलिये दो काग़ज़ोंकी नक़्ल यहां लिखते हैं, जो बादशाही लश्करसे मेवाड़के वकीलोंने महाराणा २ अमरसिंहके नाम भेजे थे.

पहिले कागज़की नक्ल.

अप्रंच। आगे कागद सांवन सुदी ९ रीऊ (रवि) मेवड़ा मनोहर नगा साथे मोकल्या से, सु हजुर मालुंम हुवा होगाजी, ईनहीं दीन सांझे म्हावतषांरे म्हे गया, म्हावतषां म्हलमां थो, षवर करावी, दीवांनषांने आई बैठा, म्हांने कहो जो तुंम वड़े नवाब (वज़ीर) पास जावो, जो फरमांवे सु सुंनवो करो, परगनो वासते याही कहो, जो रांनांजीकुं ईनाईत करो, या मेरे ओहदूहे करो; ईस सीवाई तीसरी वात कवुल न्ही. नरंम गरंम जाब करीयो, मैंने भी डराया है, अर म्हे फरदां अरजी परगनां वासते तथा चीतोड़री राहदारी वासते नसरतयारषांहे हुवी है, तीन वासते तथा फरद १ म्हारांनांजीरा पीताब वासते फरमांन पीलअत हाथी तीलायर स्मेत साज स्मेत, घोड़ो साज स्मेत, तरवार जड़ाऊ, मोत्यांरी माला, कलगी, पालकी साज नै झालर स्मेत, तथा म्हाफ़ो (अमारी محفہ) घोड़ांरो अतनी वसतां वासते म्हे अरजी लीपदी थी, सु पातीसाहजी वै दीन पीताब ईनांमरी फरद प्र सुवाद (ص) मंनजुर कीयांरो कर आया; और अरजांपर दस्पत न हुवा, सु बोवरो आगे अरज लीपोसे, सु पीताब ईनांम हुवांरी फरद म्हावतषां म्हांने दीपावी. म्हावतषां कही, जो अब ही ईस हुकंमके साहा (हिसाबी कागज़ سیاہہ) कारषांनो भेजे, तो बड़ा नवाब तथा पातीसाह पातीसाहजादा जांनेंगे, जो रांनांजीके लोग ईतनेमे ही राजी हुवा, परगनोंकी मजकुर सरद पड़ैगी; मैंने सबकुं कहा है, बीगर परगने कांन्हजीकुं और बात कबुल न्ही, परगनोंका कांम हुवा सब ईनायात कबुल है.

म्हाबतषां ऐ वातां कहै म्हांने षांनषांनां तीरै भेजा, दीलीरो (दिहलीका) वाकानवीस वषसी फषरुदीषांहे म्हाबतषां म्हांरी साथे दीधो, जो वड़ा नवाव पास लेजावो. घड़ी ६ रात गयां षांनषांनांरै गया, नवाव म्हलमे था, षवर करावी, नवाव दीवान षांने आई बेठा, षीलवत मे नवाव नै फषरुदीषां ने म्हे दोई जंना था, प्हैलां तो नवाव आवताही श्रीजीहे षीताव ईनांमां हुई, तींरी मुवारकवादी म्हांनै दीवी, म्हे तसलीमां कीवी, अरज कीवी, जो नवावने तवज्हे कर सव कांम कीया, ईक थोड़ासा हंमरे परगनोका कांम रह्या, सु भी तवज्हे करे; नवाव कही वो भी होता हे; पंन पातीसाह तुंम्हारा कहाही करता जाता हे, तुंम्हारो राह न गया, तुंमने कह्या सु कीया, अर करेगा; तुम भी तो पातीसाह राजी होई सु करो. पातीसाह तुंम्हारे मुलकरे राह होई दीषंण गया, अव फेर तुम्हारे मुलक पास होई अज्मेर आया, चाहीये था जो कुंवरजीकुं मुलाज्मतकुं भेजते, पातीसाह राजी होता, ईन प्रगनों सीवाई ओर परगने देता, अर जो कीनी पातीसाहने आगुं न दीया होगा, सु दे पातीसाह ईनांम देता राजी होई तुरत रुषसत करता; सु तुंमने या भी कांम कीया न्ही, अर पातीसाह अर सव पातीसाहजादे अर हंमारे हंमचसंम (همچشم) सव जांनते हे, जो राजपुतीया सव मुकदमां षांनषांनांके हाथ है, सु षुदाईके फजल सुं, जो कांम हाथ पकड़ा, सु सव सरंजांम पाया. राजोंका कांम कैसा वरहंम (ख़राव) था, छत्रसाल बुंदेलेका कांम चालीस वरससुं वरहंम था, सु हंमारे कोलसुं सव आये हजुर आयों, हंमारी तजवीज सुं भी ईंधका कांम सवका हुवा. अव देषो राव वुधसिंघकुं वतनकी रुषसत होती न थी, सु भी हंमने पातीसाह सुं वजद (ताकीदसे) होई आज रुषसत वुंदी कुं कराया, हाथी, घोड़ा दीलाया, म्हाबतषांके सीरकी सोगंद हे. जो हंम जांनते हे, जो राजपुतों सुं ऐसा ईषलास मजवुत करें, जो हंमारी ओलाद अर ईनकी ओलाद ईषलास सचा चाल्या जाई; अर हंसारा तुंम्हारी षोथीमे नांव रहे, हंम या वात चाहते है. अव दोई वात सुं हंमारी जीयादे सरंम रेहती हे, जो ईक तो दोनुं राजा वादे सुं दोई रोज प्हैलां कावल कुं चले, दुजा तुंम्हारे मनमे साच आवे अर कुंवरजीकी मुलाज्मत ठैहरावो, तुंम्हारी वात वीच छत्रसाल कुं ल्यांवेगे. रांनांजीके अर छत्रसालके वोहत ईषलास हे, छत्रसाल रांनांजीके षत हंमकुं दीषाता है, सु उंनकुं वीच देगे; अव तुंम भी दांनां हो, अव ही जवाव दो मत, ईस वात कुं वीचारकर कहीयो, उतावल का कांम न्हे–

षांनां दुजो.

तव म्हे तो वें वकत सलाह देष नवाव साहीव नवाव साहीव ...

नीधांन म्हे कही जो सब सरंम नवाब कुं है, हींदुसतांनमै वड़ा जस होई रहा है, रांनांजी नै राजौनै तो या करार कीया है, जो पुसत दर पुसत नवावके पांनदांनसुं अैसी ही बंदगी रहैगी; अर रांनांजीकुं, जो खीदमत फरमाई, सु लापों रुपये घरके परच कर नवाबका हर भांत बौल बाला कीया. अव नवावकुं सव सरंम है. पाछै दुरगदासजीरी मजकुर पुछी, नवाब कही, जो परगनों लीप ल्यावो हंम करदेते है, अमां दुरगाकुं लीपौ, जो सीताव हजुर आवै, तुं काहेकु वैठ रहया है, ती पाछै नवाब कही, जो तुंम रांनांजीकुं लीपौ, जो राजोंकुं ताकीद लीपै, अपनै भले मांनस राजों पास भेजै, ताकीद कर चलांवै. म्हे कही रांनांजी तो नवाबके फरमायेसुं लीषैगे, अमां नवाब पंन राजोंकु पत लीप सरकारके आदीमी भेजै. नवाब पांन दे म्हांनै रुपसत कीया; म्हे वारै आई घोड़ां असवार हुवा, अर फेर नवाव बुलाया कही, जो हंम अपनै दसषतों सुंही अब पत लीख देते है; सुव्है रांनांजी हजुर चलाईदो. अर तुंम्हारै हीसै का मेवा भी लो; सु आंव अर अंनननास २ दीया. वैही वकत नवाब आपरा हाथसुं पत लीप मोहर कर म्हांनै सोपो, कही जो सीताब चलावो, म्हांनै घंनां ईपलास प्यारसुं आधी रातहै डेरा है रुपसत कीया. सु पत हजुर मोकलो सै, हजुर मालुंम होसी. सांवंन सुदी १० सोमे मंनोहरपुर सुं कुंच हुवो, सु म्हावतपां सुं पांनपांनांरी मजकुर क्हैनी सै, यांरी सलाह सुं बड़ा नवावहै जाब देनो है, सु म्हाबतपां सोवतो मोड़ो जागो, उठतो ही पातीसाहरै मुजरै गया, उठासुं मंनोहरपुररै बागमै जनांनो कीयो; सौ म्हे पंन बागमै वैठा सां, म्हावतपां सुं मील आगली मंजल जास्यां. राव बुधसिंघजीहै देसरी सीप हुवी, आजरा डेरांसुं चालसी. राजांहै अवार हजुरसुं पांनपांनांरा लीष्यासुं कुछ लीपवारो हुकंम न्होई. अै अर वै आपरी करेलेसी, राजा अजीतसिंघजीहै हजुररा कागद ललो पतोरा ईपलासरा सदा भेजा कराजो, पांनषांनांरा पतरो जाब लीष भेजी जो, घंनो ईपलास वंदगी लीषाजो, राजां बाबत–

पांनो तीजो.

लीपजो नवाब्रा लीष्यासुं राजांहै ताकीद घंनी लीषी है, अर फेर लीषां हां सु असो पतमै लीषाजो, ओर गाजदीषांरो पोजो व्हेरौज (فیروز) नवाबरा घोड़ा स्मदाव दीली सुं लसकर पोंहचो, नवाब तीरै जाईसै. म्हाबतषां म्हांनै कहौ, जो पोजारी लारे जमीयत दे उदैपुर तक पोंहचावो, सु म्हां तीरै तो जमीयत मालुंम अर

गाजदीपां (غازی الدین خان) रो पंन भलो मंनांवनो, तींसुं पोजा हे असवार दे म्हाराजा जैसिंघजी हजुर मोकल्यो है; कागद १ साह नांनजी है म्हे लीप दीधो है, जो थे हजुर है चालो, तरै पोजा हे लारे लीयां जाजो, ऊंटालै डेरा करावे हजुर मालुंम कर लोग साथ देगा, जदी पां तीरै पोंहचता कीजो. पोजो सीरदार सै म्हाराजा जैसिंघजी घोड़ा ४ पातीसाहजी हजुर मोकल्या था, सु प्हलां तो पातीसाहजी नजर करे रपाया था, काल्हे फेर नजर गुजरया, हुकंम कीयो, जैसिंघकै घरके घोड़े पुब पैदा होते है, ऐ घोड़े फेर दो. वे घोड़े भेजेगा, सु अै घोड़ा दुवलासा था, तींसुं फेर भेजा; तुरत म्हावतपां आपरे तवेलै बांधासै जी. गाजदीपां पोजा व्हेरोज हे लीपो थो, तुं जोधपुररै राह आवे मत, आवे तो उदैपुर होई आवी. सु पोजो ईतवारीसे हजुर आवे तो पगेलगावारो हुकंम होई, रुपसतरी वीरयां सीरोपाव पावै, अर गाजदीपां तक पोंहतो कराजे, अनननास २ हजुर मेवड़ा भांमां छीत्र साथे मोकल्या से; सु हजुर नजर गुदरावजो जी. पांनपांनां कहै थो, जो पातीसाहजी फरमाया करे है, रांनांजीका कुंवर मुलाज्मतकुं न आया, आगै वकीलनै मामुल लीष दीधा था, अर करारदाद था, अर पातीसाहजी या भी फरमावे है, जो हंम अज्मेरकुं सीताव फीरेंगे, पांनपांनां वाघमलजी वासते पुछो, तव म्हे कही वाजे कांमकुं हजुर गया हे. नवाव कही हंमारी वीगर रुपसत कुं चलाया, अस कहै था. अवे म्हावतपांसुं ईन वातरी ठीक मंनसुवो करे वड़ा नवाव सुं कंहां हां, ठैहरे है, सु अरज लीपी ही जी. संवत् १७६७ व्रपे साव्रण सुद १० [हि० ११२२ ता० ८ जमादियुस्सानी = ई० १७१० ता० ६ ऑगस्ट] सौमे पाछला पहररा चाल्या.

दूसरे काग़ज़की नक़्ल.

१ ॥ श्रीरामजी ॥.

पौस सुदी ८ रीजरा लीख्या
कागद माहा वदी ऽऽ पौछे
दीनै २२ आया.

अप्रंच । आगै कागद पौस वदी १४ सुक्रे मेवड़ा रांमां देवा साथे भेजा है,

सु हजुर मालुम हुआ होगाजी. मगरांरा राजां है गुरुजी (सिक्ख) रा पकड़वा सारु ताकीद गई थी, अर नांहंनरा राजा तीरै ईक दोई मंनसवदार पंन ताकीद वासतै भेजा था, तींप्र नांहंनरा राजारो प्रधांन हजुर आयो अरज कीवी, जो गुरु हंमारे मुलकमै आया न्हीं, राजा भी हजुर आवता है, गुरुकी पवर कुं हमारे जासुस पंन गये है; ओर डावरमै गुरुरी सारी गढी पोदी, सु आगै साढी सात लाप रुपया नीसरया था, तीं पाछै कुछु नीसरो न्हीं; अर गुरुरी पन पवर ठीके आवी न्हीं; तींसुं पेस पांनो (पेश ख़ेमह) पीजरावाद मुपलसपुर त्रफ जमंनांजी त्रफ चलायो. म्हंमद अमीषां सरहंदसु कीलारी फत्हेरी अरज दासत भेजी थी, तींप्र म्हंमद अमीपांरो मुजरो हुवो, फरमांन भेजो हजुर वुलायो. फेरौजपां है आगै सरहंदरी फोजदारी ठैहरी है, सु सरहंद है वीदा कीयो. पोस सुदी ३ भोमे डावरसुं कुच हुवो, दोई कोसरो कुच हुवो, सु ता० ३ जीलकादरी कांमवपसरी फत्हे कीधी थी, सु जीलकादरो म्हीनो पोसैसु सुदी ५ थे उन फत्हेरो जसंन सरु कीधो, दीन तीन तांई जसंन होगो; तींनसुं अठै मुकाम हुवा; पाछै पीजरावाद जासी, मगरांरा राजां है दवदवो देसी; सु अव तांई गुरुरी ठीके तो आवी न्हीं, कोई ठीके न्ही जी. सुदी ५ नाहंनरो राजा हजुर आयो, अगाड़ी उत्रो थो, म्हावतपां सांम्हो लेवा गयो थो, प्हैलां पांनपांनारै ल्यायो, पाछै पातीसाहजीरी मुलाज्मत करावीजी, ओर कागद आपरो मांगसर सुदी ५ रो लीपो पोस सुदी ४ मेवड़ा टोड़ा वा नांमे ४ साथे आया दीन २९-

पानो दुजो.

स्मांचार सारा पाया जी, राजां वासतै लीपो थो, जो दो ही राजांरा कागद हजुर आया था, चलावारी सल्हा पुछाई थी, जींणीप्र जवाव यो लीपो है, सो ऐक वार दो ही म्हाराजा गुरुजीरो मामलो फैसल हुवां प्हैलां भेलो व्हैणो सल्हा सै; पछै कावलरी मोहंम जतंन करतां मोकुफ व्हे तो भलां सै, न्ही तो आगै जीसी गों देपजे, जीसी गों कीजे; सु हजुर सुं आछां सल्हा तरीक लीप भेजो, आगै उणारो अपत्यार सै. अठै पंन नाहरपांरा जोधपुरसुं कुच करायांरा कागद आया था जी. भंडारी पींवसी म्हाराजा जैसिंघजीसुं मीले लसकर है आगै चालो सै. भंडारी आजे स्वारै लसकर पोंहचसी. कागद आया था जी, राजा अजीतसिंघजीरा मेड़तै पोंहचारा समाचार आया था जी. म्हाराजा जैसिंघजीरा डेरा नई सराई सै. अजीतसिंघजीरा कागद रात दींन आवे है, जो म्हे वेगा आंवां हां, थे आगै चालो मत. तींनसुं म्हाराजा जैसिंघजी नई सराई वैठा सै. भंडारी अठै आवे सै, सु फेर कोल करार लेसी.

कावलरी मोकुफी वासतै तलास करसी, पांनषांनां म्हावतपां तो क्हैसी, तुंम हजुर आवो, हजुर रहो, अर्जीमरी पंन मरजी सै, जो कावल न जाई, तो भलांसै, हजुरमैं ही रहै; पछै दीपंण पुरवरी तईनाती ठैहराई लेस्यां. अब देपजे, भंडारी आंयांसुं कांई ठैहरै जी, और राजा अजीतसिंघजी है, दरवार सुं टीलो भेजो, सु या वात जोग्य ही थी जी. ऊंटां वासते लीपो, जो ऊंट परीद तो कीया है, पणं तुरत पोंहचा न सै; सु ऊंट तरै पोंहचै तरै सीताब चलाव जो जी. हकींम नीत याद करै सै जी; दुरगदासजीरा कांम वासतै लीपो, सु अठै कड़ावी नराईनदासनै सवलसिंघ रजपुत ईणांरा कांम वासते रफीअलसां (رفیع الشان) रै रीसालै फीरै हे जी, सु दुरगदासजी है वौवरौ लीपता ही होगाजी.

पांनो तीजो.

अप्रंच । ईनामात तो कोचअलीपां उरफ मीरजा म्हंमदरै हुवालै हुवी, मीरजा म्हंमद कहैसे, जो प्रगनोका कांम परगनोंमें ही करलेंगे उहां चुकाई म्हावतपांकुं लीप भेज जाव मंगावेंगे; सु यो भलो मांनस नजर आवै है; पंन सारो अपत्यार म्हावतपांरो नै पांनपांनांरा पेसकारांरो है, सु आगे तो म्हावतपां परगनांरो छ्हमाहो मांगै थो, सु छ्हमाहरा तीनुं प्रगनांरा स्वा तीन लाप रुपया ज्मा होई, सु म्हे आरे करां न था; अब म्हावतपां राई गजसिंघ पालसारा पेस दसत है वुलाई गजसिंघ है नै भगवंतराई आपरा दीवांन है म्हा तीरै दीवांनपानांमे भेजाया; रद बदल करावी तींप्र म्हे फेर और कीवी न्ही; वां राजा अजीतसिंघजी म्हाराजा जैसिंघजीरो पत मेड़ता वस्यारो दीपायो, सु छ्हमाहो उन कागद माहे लीपो सै. म्हे कही राजोंके परगनोमे अर हंमारे परगनो तफावत (फ़र्क़) घंना है; राजोके परगनै रईयती नै सेर हासील है; हंमारै परगनै जोर तलव कंम हासील, तींन हजार असवारकी फोज वाहरै म्हीनै रहै है, तव टका पैदा होता है; तव गजसिंघ मेवात्यारी जागीर दारीरो उपजतांरो कागद काढो, सु कंम जीयादै छ्हमाहा वरावर ज्मां लीपी सै. म्हे कही तक्सींममै जागीरदारीरी ज्मां जीयादै है, कानुंगो लीपदेसै, कोई पालसारा अमलरो दापलारो कागद काढो; फेर म्हे कही जो नवावनै तवज्है करनी सै, तो रीयाईतसुं प्रगनां चुकाईदो, मौनै सीप दो, अर नवावरा दीलमै न आवै, तो मोनै सीप दीजे; मीरजा म्हंमद जाई ही सै, तीसो देपैगा, तीसा करैगा; तींप्र मुतसद्यां सारी बात नवाब है कही, म्हावतपां सुंन कही, जौ अैसा कांम कीजे, तीसमैं सवका सुपंन वाला रहै, ईन प्रगनोका हासील मेरी नकदीकी तंनपाह कराई लुंगा; सु यांरी तौ या मरजी सै, म्हे चाहां हा

जो सीमाहा चो माहा तक चुके, तो आछां से; अर वांरी मरजी छह माहारी से जी, कहे से, जो परगनै तो गुंजाईस-

पानो चोथो.

के है, हम रीयाईतकर छहमाहा क्हैते है, सु तब तक अठे चुके है, च्यार टकां घाट बाध तब तक तो अठै ही चुकांवां हां, जे कदाच अठे न चुके है, तो सीष मांगे उठैही मीरजा म्हंमद तीरां चुकाई लेस्यां; ईसे पंन करार कर राषोसे, पंन तब तक चुके, तब तक अठै चुकास्यां जी; ओर म्हाबतषां है, हकींम है, तथा हीदायत केस्षां है, तथा मुतसद्यां है आपर दरबार आडीसुं देणो व्हैगो; घंणां दीनांरा सारा उमैदवार से, कंही कुछ्ह पायो न से, सु हजुर मालुंम ही से; यांसुं सदा कांम है, अर म्हाबत्षांरो लालच है सु आपो संसार जांणे है जी; पातीसाह ने पातीसाह जादा पंन ईनरो लालच नीकां जाने है; आप लीषो जो त्यांहे देनां होई, त्यारी ठीक करे बोवरो लीपजो; सु आगे वार दोई अरज लीपी थी, जो ईक लाप रुपया मोकलबारो हुकंम होई, सु फेर बोवरारो लीपो आयो; सु अठे कींने ठीक कीवी से; सारा मोढो उबाई चोघ रह्या से; दरबार सुं पावनरो घंनो भरंम राषे से जी. षांनषांनां रोक तो न लेगो, यां है कुछ्ह जींनस पोंहचा जे, तो ईषलास बधे है जी. म्हावतषां वागैरे है परगनांरो चुकाव व्हे तो देणां, न चुके तो देणां; यांसु सरोधो राषजे, तो भलां से; सु हजुर मालुंम करे हजुर रो हुकंम होई सु बेगा मोकलावजो जी. ओर पोस सुदी ७ सीनुं मीरजा म्हंमद सारी ईनांमात ले म्हाबतषांसु पंन रुषसत हुवो, षांनषांनां सुं आगे रुपसत हुवो ही थो; सु स्वार तक चालसी, सु प्हैलां तो दीली जासी, साज सांमांन करसी; ओर अतनां नांमां है देणों से - बीगत-

१ षांनषांनां है, जीनस.	१ म्हाबतषां रै, नगदी.	१ हकींम सलेंम.
१ हीदायत केसषां.	१ राई नवनिध.	१ राई गजासिंघ.
१ राई भगवंत.	१ मुनसी सारांरा.	१ तथा हजुर नवीस.
१ हकीमरो पेसकार.		

अतना नांमा है देनों जरुर से जी, जो म्हे अठै अठारा करीनां माफक कंही है, देनो करे हजुर बोवरो अरज लीषां हां, तो हजुर में लोक अरज करे, जो अतनो टको कीसा कांम प्र-

पांनो पांचमो.

षरचे है, अपुठो गैर मुजरो होई; अठै यांरे कंही बातकी कंमी न से, जे थोड़ो कंहां सां, तो अठे मसषरी करे है, जो उसा मोटा दरबाररी त्रफसुं या

वात कहै सै, तव सरंस न रहै; तींसुं वां नांम लीप हजुर मोकल्या सै; सु हजुर मालुंम करेजो; नांम नांमप्र हुकंम होई, ती माफक लीपे सीताव सरंजांम करे भीजा जो जी;

और वराड़ रौ नै पांनदेसरो सुवो आगै रुसतंमपां दीपणीं है थो, रुसतंमपां है सुवदारी नवाव पांनपांनां म्हावतपांरी मारफत हुवी थी; अवै यां दीना मांहै अमीरल उमराव रफीअलसां सुं जोड़ कीधो सै; सु अमीरल उमराव वां दोऊ सुवांरी सुवदारी दाऊदपांरै नामै ठैहरावे फरमांन भीजायो जी. तींप्र आपसमै गुफत गो अठै होई रही सै; यां वाप वेटा रुसतंमपां है हसवल हुकंम आपरी मोहरसुं भेजा है, जो सुवदारी तुंमप्र वहाल सै; सु असी सोहवत होई रही सै. वाकारी फरद ४ मोकली सै जी, वकाआरी फरद ४ च्यार मौकली छै जी समत १७६७ व्रपे पौस सुद ८ [हि० ११२२ ता० ६ ज़िल्काद = ई० १७१० ता० २९ डिसेम्बर] रऊ प्रभातै.

कागदरो जाव सताव मोकलजो, ढील नु होवै जी, घणो कंई ल्पांजी.
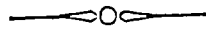
ईश्वरकी मर्ज़ी देखना चाहिये, कि महाराणा २ अमरसिंहके पास यह अर्ज़ी पहुंचने भी नहीं पाई, कि वे इस जहानसे चल वसे; इसीसे अक्लमन्दोंने कहा है, कि मौत वहरी है, वह किसीके मत्लवकी बातें नहीं सुन्ती. महाराणाके वड़े वड़े इरादे थे, जो पूरे न होने पाये.

इनका जन्म विक्रमी १७२९ मार्गशीर्ष कृष्ण ५ बुधवार [हिज्री १०८३ ता० १९ रजव = ई० १६७२ ता० ११ नोवेम्बर] को और देहांत विक्रमी १७६७ पौष शुक्ल १ [हिज्री ११२२ ता० आख़िर शव्वाल = ई० १७१० ता० २२ डिसेम्बर] को हुआ.

इनका मंझला क़द, गेहुंवां रंग, वड़ी आंखें, और चौड़ी पेशानी थी. यह मिज़ाजके तेज़ और गुस्सेकी हालतमें ज़ालिम और निर्दई थे. सीसोदिया वंशमें शराव पीना इन्होंने शुरूअ् किया, शरावके नशेमें बहुतसी वुरी बातें जहांगीर वादशाहके मुवाफ़िक़ कर बैठते थे; लेकिन् अच्छी आदतोंसे भी खाली नहीं थे; इन्होंने देशका इन्तिज़ाम भी बहुत उम्दह किया, कोई किसीपर ज़ुल्म नहीं करने पाता था, हर एक आदमीको इनकी तरफ़से यक़ीन था, कि सिवाय मालिकके दूसरेसे हमारा नुक्सान नहीं होसक्ता. पर्गनोंका बन्दोबस्त, दर्बारका तरीक़ह, सर्दारोंकी नशस्त और वर्ख़ास्तके दस्तूर क़ाइम किये; सोलह और वत्तीस उमराव मुक़र्रर हुए, जागीरका क़ाइदह और पुख़्तगी क़ाइम करदी; नौकरी, छटूंद, जागीरकी रेख व तल्वार वन्दीका तरीक़ह

बांधा; दफ़्तर और कारख़ानोंकी तर्तीब की. लड़ाई झगड़ोंमें भी यह अव्वल दरजेके बहादुर थे. इनका बांधा हुआ बन्दोवस्त जब तक मेवाड़में क़ाइम रहा, कोई बखेड़ा नहीं हुआ. इन्होंने "शिवप्रसन्न अमरविलास" नामी महल सिफ़ेद पत्थरका बहुत उ़म्दह और आलीशान विक्रमी १७६० [हिज्री १११५ = ई० १७०३] में बनवाया, जो कि अब "बाड़ी महल" के नामसे मश्हूर है. बड़ी पौलके दोनों बाजूके दालान, घड़ियाल और नक़ारखानेकी छत्री भी इन्हीं की बनवाई हुई है. इनके एक कुंवर संग्रामसिंह थे, जो इनके बाद गादीपर बैठे.

जोधपुर या मारवाड़की तवारीख़.

महाराणा राजसिंह, जयसिंह और अमरसिंहके वक़्में जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंहके बेटे अजीतसिंहका मेवाड़से बहुत तअ़ल्लुक़ रहा; इसलिये जोधपुरका इतिहास मुफ़स्सल यहां लिखा जाता है:—

मुल्क मारवाड़ (राज जोधपुर) का जुग्राफ़ियह.

लेफ्टिनेएट कर्नेल सी. के. एम. वाल्टर, साबिक़ पोलिटिकल एजेएट जोधपुरके गज़ेटियरके २२२ वें सफ्हेसे खुलासह लिखा जाता है, कि जोधपुरका इलाक़ह जिसको मारवाड़ भी कहते हैं, फैलावमें सब राजपूतानाकी रियासतोंसे बड़ा है. इसकी उत्तरी सीमा बीकानेर और शेख़ावाटी; पूर्वी सीमा मेवाड़, जयपुर और कृष्णगढ़; अग्निकोणपर अजमेर और मेरवाड़ा; दक्षिणमें मेवाड़, सिरोही और पालनपुर; पश्चिममें कच्छकी खाड़ी और थर व पारकर नामी सिंध देशके ज़िले, और वायुकोणपर जयसलमेर है. उत्तर समतल रेखा २४·३० और २७·४० और ७०· और ७५·२० पूर्व देशान्तरके मध्यमें है; ईशान और नैर्ऋतमें इसकी लंबाई २९० मील, सबसे ज़ियादह चौड़ाई १३० मील, और रक़्बह ३७००० मील मुरब्बा है.

कुद्रती हालत.

यह एक बहुत बड़ा मरुस्थल (रेगिस्तान) है, और इसके दक्षिण पूर्व तीसरे हिस्सेमें यानी लूनी नदीके दक्षिणमें अर्वली पर्वतके सिलसिलेके मुवाफ़िक़

बहुतसी अलग २ पहाड़ियां हैं; परन्तु उन पहाड़ियोंमेंसे किसीकी चौड़ाई व ऊंचाई इतनी नहीं है, कि जिसको पहाड़ी सिल्सिला कह सकें.

मिट्टी और ज़मीनकी हालत.

मारवाड़की ज़मीन अव्वल- बेकल, (वालू) जो बहुत है, उसमें बाजरा, मोठ, मूंग, तिल, तर्बूज़ और ककड़ी वगैरह चीज़ें बहुत पैदा होती हैं; उम्दह ज़मीन, जिसको चिकनी मिट्टी कहते हैं, उसमें अक्सर गेहूं पैदा होता है.

दूसरी- पीली, जिसमें रेत मिली हुई है; ऐसी ज़मीनपर तम्बाकू, कांदा और तरकारी होती है.

तीसरी- सिफ़ेद (एक तरहकी खारी मिट्टी) है; और उसमें अच्छी वर्षा होनेके बाद फ़स्ल हो सक्ती है.

चौथी- खारी ज़मीन, जिसमें कुछ भी पैदा नहीं होता.

यहां अक्सर पहाड़ियें हैं, जिनमें और रेतके नीचे बिल्लौर, अबरक़ और काला पत्थर निकलता है; पहाड़ियों में सबसे बड़ी नाडोलाईकी पहाड़ी है, जिसपर एक बहुत बड़ा पत्थरका हाथी बना हुआ है. जीधनके पास पूनागिर, सोजतकी पहाड़ी, पालीके पासकी पहाड़ियां, गुंडोजके पासकी पहाड़ी, सांडेरावकी पहाड़ी, जालौरकी पहाड़ी और बहुतसी छोटी छोटी पहाड़ियां हैं. इनके चारों तरफ़की ज़मीन सख़्त और पथरीली है; लूनी नदी के पार या मारवाड़के फैलावके तीसरे हिस्सेमें ये पहाड़ियां नहीं हैं. राजधानी जोधपुर तक ये चटान नज़र आते हैं, क़िला जिसके साम्हने बस्ती है, पहाड़ी और बालूपर है, जिसकी ऊंचाई आठ सौ फ़ुट है; क़िलेके उत्तरी तरफ़ आतिशी और रेतीला पत्थर भी है, जिसके रेज़े सितारोंके मानिन्द चमकते हैं; इस देशमें पानी बहुत दूर याने दो सौ तीन सौ फ़ुट नीचे मिलता है.

मारवाड़में कोई धातु नहीं है, सोजतके पास किसी क़द्र जस्त मिलता था, उत्तरमें मकरानाके पास सिफ़ेद पत्थर निकलता है, और पूर्व दक्षिणकी सीमापर घाणेराव गांवके पास छोटी छोटी टेकरियोंमें भी मिलता है.

नमककी खान.

जोधपुरके राज्यमें नमक, मक़ाम सांभर, पचभद्रा, डीडवाना, फलौदी, पोहकरण

और कुचामण वगैरहमें निकलता है. पचभद्रामें ई० १८५७ [वि० १९१४ = हि० १२७३] में कूता गया है, कि वर्ष भरमें अंग्रेज़ी तोलसे ग्यारह लाख मन नमक और डीडवानेमें साढ़े तीन लाख मन, और इसीके मुवाफ़िक़ फलौदीमें है, और पोहकरणमें बीस हज़ार मन पैदा होता है.

नदी और झील.

लूनी नदी, जो पुष्करसे निकली है, निकासके पास साबरमती, और गोविन्दगढ़में सारस्वती नामसे मश्हूर है; और गोविन्दगढ़से मारवाड़के बीच होकर कच्छके रणके पास दलदलमें जज़्ब होगई है. यह बर्साती नदी है, दूसरे मौसममें खड्डोंके सिवाय और कहीं पानी नहीं रहता, नोवेम्बरसे जून तक इसकी तलहटीके सत्हसे कई फुट नीचे कूओंमें पानी मिलता है; इन कूओंका पानी बहुत गहरा खोदे जानेसे खारी हो जाता है. मारवाड़में बालोतरा तक इस नदीका पानी बहुत मीठा, और बालागांवके पास खारी है; लेकिन् इससे निकली हुई छोटी नदियोंका जल कम खारी है; जोधपुरके राजमें इन नदियोंके तीरपर नमकके छोटे छोटे कारख़ाने जारी हैं; कच्छके रणके क़िनारेपर, जो मारवाड़की सर्हद है, इस नदीकी तीन शाखें हुई हैं.

जोजरी नदी, मारवाड़के मेड़ता ज़िलेसे निकलकर जोधपुरसे दक्षिण पश्चिम कोणमें पांच मीलके फ़ासिलेपर लूनीमें गिरती है.

गोवा नदी, बाला कापुरा (कापुरा सोजतका एक पर्गना है) के पहाड़ोंसे निकलकर सातलानाके पास लूनीमें मिलती है.

रेडरिया वाली नदी, सोजतके पहाड़ोंसे निकलकर गोवा बालामें मिलने बाद पालीके पास बहती है ; इस नदीके पानीसे कपड़ा रंगा जाता है; रंगनेका मुसालिहा पानीमें मिलाने और उबालनेसे रंग कुछ पक्का हो जाता है.

वांडी नदी, सरयारीके पास अर्बली पहाड़से निकलकर लूनीमें गिरती है; और 'जुआई' अर्वलीसे निकलने बाद ऐरनपुरेकी छावनीके पास होकर गुड़ाके पास लूनीमें मिलती है.

सांभर झील, मारवाड़में तीस मील लंबी है, जिसकी बाबत कर्नेल ब्रुक साहिबने ई० १८६८ या ६९ [विक्रमी १९२५ = हिजी १२८५] के अकालकी रिपोर्टमें इस तरह लिखा है:-

अजमेरके उत्तरका अर्वली पहाड़, जो राजपूतानाके अलग अलग दो हिस्से करता है, उसमें एक खाई है, इसमें भी अर्वलीके दोनों तरफ़ ३० या ४० मील तक इस तौर पर है, कि एक खाई तीस मील लंबी है; मुद्दतों पहिले जब राजपूताना समुद्रकी धरातलसे ऊंचा उठाया गया, चलती हुई लहरोंसे इस बड़ी खाईमें खारी पानी भर गया होगा; पानी धीरे धीरे धूपसे सूखा, और चिकनी मिट्टीकी बनी हुई तलहटीपर नमक भर गया; हर वर्ष झीलमें पानी बहकर इस खारको गला देता है; इसीसे गर्मीके दिनोंमें डली बंधती है. इसी तरह दो और खाई हैं, एक मारवाड़के उत्तर डीडवानेके पास, दूसरी मारवाड़के दक्षिणी हिस्से पचभद्राके पास, जिनका ज़िक्र ऊपर हो चुका है.

मारवाड़में कई झीलें हैं, जिनमेंसे सांचौरकी झील वर्षा ऋतुमें चालीस या पचास मीलतक फैलती है, और उसकी तलहटीपर गेहूं, चने अच्छे पैदा होते हैं.

पानी, हवा और बर्सातकी कैफ़ियत.

मारवाड़की आब व हवा खुश्क है, वर्षा ऋतुमें भी और जगहोंकी ब निस्बत यहां खुश्की ज़ियादह रहती है; क्योंकि जंगल नहीं है. मारवाड़, दक्षिणमें सिरोही, पालनपुर, और कच्छके रणसे लेकर उत्तरमें बीकानेर तक फैला है, दोनों सीमाओंका फ़ासिला, याने लम्बाई २९० मील है; और इस देशकी पूर्वी हद अर्वली पहाड़ है, जो मेवाड़को अलग करता है; पश्चिमी हद कच्छका रण, अमरकोट, और थरका रेगिस्तान है; इस मुल्ककी चौड़ाई १३० मीलके क़रीब है. हिन्दके समुद्रसे भापको लाने वाली नैर्ऋत्य कोणकी हवा और बंगालेकी खाड़ीसे (अग्निकोण) भापको लाने वाली हवा यहां बिल्कुल नहीं आती; नैर्ऋत्य कोणका बादल मारवाड़ पहुंचनेके पहिले उत्तरमें गुजरात, कच्छके रणके रेतीले देश, अमरकोट और पारकरपर होकर आता है; इसीसे यहां पानी बहुत कम बरसता है. जोधपुरमें साढ़े पांच इंचसे ज़ियादह पानी नहीं बरसता. दूसरे ज़मीनके ऊपरी हिस्सेके रेतेके असरसे हवा खुश्क होती है; रेतेके नीचे पत्थरकी तह है, और उसमें खरिया मिट्टी और कंकरकी खान मिलती है. लूनी वग़ैरह नदियोंमें पानी न रहनेके सबब हवामें तरी नहीं रहती, और जंगल न होनेसे पानी कम बरसता है, जिससे खेती बाड़ी

बहुत कम होती है. ठंडके मौसममें हवाका हेर फेर दिन और रातमें भी रहता है. मारवाड़में दिनको तंबूके नीचे गर्मीके सबब थर्मामेटर ९० से ऊपर रहता है, और रातको इतनी ठंड होती है, कि पाला जम सक्ता है; अक्सर ठंडके दिनोंमें हवाके बदलनेसे सील होती है, खुजलीकी बीमारी ज़ोर करती है; यह पानीके ख़राब होने और सफ़ाई न रहनेका सबब है. अगर मारवाड़में नमक सस्ता और ज़ियादह न होता, तो बीमारी और ज़ियादह फैलती; चेचक अक्सर निकलती है, बाला और ब्याऊ यहां की ख़ास बीमारियां हैं; लेकिन् जोधपुरके पश्चिममें ये बीमारियें बहुत कम होती हैं.

मुन्शी हरदयालसिंह, सेक्रेटरी मह्कमह ख़ासकी
रिपोर्ट विक्रमी १९४० से.

इस रियासतमें कुल ४४४० गांव हैं, जिनमेंसे ४९७ ख़ालिसेके हैं; उनकी जमा बाला बाला दीवानकी मारिफ़त तहसील कीजाती है; बाक़ी २८२ गांव ख़ालिसेके वे हैं, जिनकी आमदनी ख़ालिसह कचहरियान ज़िलामें जमा होती है; कुल ७७९ ख़ालिसह, बाक़ी जागीर और सासण वग़ैरहमें हैं.

इन पर्गनोंके सिवाय मल्लानीका पर्गनह, जो सबसे बड़ा है, विक्रमी १८९० से अंग्रेज़ी सर्कारने मुल्की मस्लिहतके सबब अपने तअ़ल्लुक़ कर लिया है. उसमें एजेंटीकी हुकूमत है, सिर्फ़ राजकी फ़ौज बन्दोबस्तके वास्ते हाकिमके पास रहती है; हाकिम एजेंटीके हुक्मके मुवाफ़िक़ काम करता है. यह पर्गने राठौड़ जागीरदारोंके हैं, और उनसे एजेंटी की मारिफ़त दस हज़ार रुपयेके क़रीब राजका सालाना ख़िराज 'फ़ौज बल' के नामसे लिया जाता है. इस पर्गनेकी आबादी १४८३२६ आदमियोंकी है.

पर्गनह अमरकोट, जो पहिले इस रियासतमें था, अब सर्कार अंग्रेज़ीके क़ब्ज़ेमें है; इसके एवज़ दस हज़ार रुपये सालाना राजको सर्कार अंग्रेज़ीसे मुक़र्रर ख़िराजमेंसे मुजरा मिलते हैं. इस मुल्कमें मामूली दो फ़स्लें होती हैं, पहिली बारिशसे, जब कि ११ से १३ इंच तक पानी बरसे; दूसरी कुएं और तालाबोंकी सिंचाईसे होती है. यहां नव या दस वर्षमें पानीकी कमी होनेसे अकाल पड़ता है; तब लोग अपने खटले समेत मालवाको चले जाते हैं.

मारवाड़में बाजरा, मोठ, ज्वार, तिल, मूंग, कपास, मक्की, मंड, भुरट, ज़ीरा, अजवायन, धानिया, तिजारा, मिर्च, तर्बूज़, कचरी, मेथीदाना, ककड़ी, मतीरा, गेहूं,

जव और चने होते हैं; लेकिन् आम लोगोंकी खुराक बाजरी, मोठ और भुरट है, जो ज़ियादह पैदा होती है. ख़ास जोधपुरके अनार अच्छी क़िस्मके होते हैं; मवेशी सब क़िस्मके उ़म्दह होते हैं, लेकिन् ऊंट और बकरी मानो परमेश्वरने इसी मुल्कके लिये पैदा किये हैं; गाय, बैल, घोड़े भी अच्छे होते हैं. घोड़ोंकी नस्लको महाराजा जशवन्तसिंहने सुधारकर अव्वल दरजेपर पहुंचाया है. इस मुल्ककी कुल आबादी सन् १८८१ ई० की मर्दुमशुमारीके मुताबिक़ १७४६८०२ है, जिसमें मल्लानीके पर्गनेके भी १४८३२६ आदमी शामिल हैं.

राठौड़ोंकी तवारीख़.

क़न्नौजके राजा जयचन्द्रसे पहिलेकी वंशावली और उनका अहवाल मिलना कठिन है. कविराजा करणीदान कविया चारणने, जो 'सूर्य्यप्रकाश' नाम ग्रंथ मारवाड़ी और व्रज भाषामें कविताके तौरपर विक्रमी १७८७ [हि० ११४३ = ई० १७३०] में बनाया, उसमें लिखा है, कि राजा १ सुमित्रका पुत्र २ कम्धज, उसका ३ गणपति, उसका ४ तौगनाथ, उसका ५ कीर्तिपाल, उसका ६ भैरव, उसका ७ पुंजराज; इन्हींके तेरह बेटोंके नामसे राठौड़ोंकी तेरह शाखें हुईं. पहिली दानेसुरा, दूसरी अभयपुरा, तीसरी कपालिया, चौथी करहा, पांचवीं जलखेड़िया, छठी बुगलाना, सातवीं अरह, आठवीं पारकेश, नवीं चंदेल, दसवीं वीर, ग्यारहवीं बरियावर, बारहवीं खैरबदा, और तेरहवीं शाख़ जैवंत है. पुंजके १३ बेटोंमें बड़ा धर्म बंब था, जिसका बेटा ९ अभय चन्द्र, उसका १० विजय चन्द्र, और उसका ११ जयचन्द्र.

सूर्य्य प्रकाशकी तेरह शाख़ों और वंशावलीके नामोंसे जोधपुरकी दूसरी तवारीख़के नाम नहीं मिलते, जो जोधपुरसे हमारे पास आई है; और इसी तरह तीसरी तवारीख़में कुछ और ही तरहपर है. ऐसी हालतमें किसी एकपर यक़ीन नहीं होसक्ता; मालूम होता है, कि यह सब घड़ंत बड़वा भाटोंने अपनी पोथियोंको मोतबर बनानेके लिये की है; इसलिये हम इस ज़मानेकी नई तहक़ीक़ातके मुवाफ़िक़, जहां तक वंशावली मिली, वह नीचे लिखते हैं, जो मारवाड़की तवारीख़ोंसे कुछ भी नहीं मिलती.

क़न्नौजके राठौड़.

एशियाटिक सोसाइटीकी सौ सालकी रिपोर्ट, भाग २ के पृष्ठ ११९ से १२२ तकका तर्जमहः—

ईसवी १८०७ [वि० १८६४ = हि० १२२२] के क़रीब एक ताम्रपत्र एच. टी. कोलब्रुक साहिबको मिला, जिन्होंने उसका तर्जमह एशियाटिक रिसर्चेज़में छापा. वह क़न्नौजके राजा विजयचन्द्रका दानपत्र ईसवी ११६४ [वि० १२२१ = हि० ५५९] का मालूम हुआ. विजयचन्द्र राजा जयचन्द्रका पिता था, जिसके बारेमें आईनअक्बरीके हवालेसे मुसल्मानोंके मुक़ाबलेपर ईसवी ११९३ [वि० १२५० = हि० ५८९] में शिकस्त खाना लिखा था. उस पत्रमें राजा विजयचन्द्रकी वंशावली छः पीढ़ियों तक पाई गई. १ श्रीपाल, २ यशोविग्रह सूर्य वंशका उसका बेटा ३ महीचन्द्र, उसका बेटा ४ श्रीचन्द्रदेव, जिसने कान्यकुब्ज जीत लिया, और क़न्नौजका पहिला राठौड़ राजा हुआ. ५ मदनपालदेव, ६ गोविन्द चन्द्र, ७ विजय चन्द्रदेव.

ईसवी १८२५ [विक्रमी १८८२ = हिज्री १२४०] में प्रोफ़ेसर एच०एच० विल्सन ने ईसवी ११७७ [विक्रमी १२३४ = हिज्री ५७२] के राजा जयचन्द्रके वक़्के ताम्रपत्रसे, उनकी वंशावलीका पहिला नाम यशोविग्रह निकाला, जो कि पहिले भूलसे श्रीपाल पढ़ा गया था. यह ख़ान्दान राठौड़ राजपूतोंका था, और उसकी सात पीढ़ियोंके नाम, जो ग़लत नहीं हो सक्ते, कर्नेल टॉडकी लिखी हुई वंशावलीसे कुछ भी नहीं मिलते, जो उन्होंने राजस्थानकी दूसरी जिल्दके ७ वें एष्ठमें लिखी है; वह सातों नाम, उन पुराने सिक्कोंसे भी पुख़्तह किये गये, जो क़न्नौजके आस पास बहुतसे मिले; लेकिन् ईसवी १८३२ [विक्रमी १८८९ = हिज्री १२४८] के पहिले उनको किसीने नहीं पहिचाना, जिस सन्में कि विल्सन साहिबने राजा जयचन्द्रके पितामह गोविन्दचन्द्रके दो सिक्कोंका बयान एशियाटिक रिसर्चेज़की १७ वीं जिल्दके ५८५ एष्ठमें छापा. ईसवी १८३५ [विक्रमी १८९२ = हिज्री १२५१] में प्रिन्सेप साहिबने श्रीचन्द्रदेवका नाम तहक़ीक़ करके इन सिक्कोंकी सुबूतीको पक्का किया. ईसवी १८३५ [विक्रमी १८९२ = हिज्री १२५१] के बाद और बहुतसे ताम्रपत्र राठौड़ोंके पाये गये, जिन सभोंसे पहिले पत्रोंकी वंशावली पक्की हुई.

ईसवी १८४१ [विक्रमी १८९८ = हिज्री १२५७] में जयचन्द्रका दान पत्र ईसवी ११८७ [विक्रमी १२४४ = हिज्री ५८३] का एच. टॉरेन्स साहिबने छापा. ईसवी १८५८ [विक्रमी १९१५ = हिज्री १२७४] में एक पत्र जयचन्द्रके पड़दादा मदनपालके वक़्का ईसवी १०९७ [विक्रमी ११५४ = हिज्री ४९०] का, और दूसरा जयचंद्रके दादा गोविन्दचंद्रका ईसवी ११२५

[विक्रमी ११८२ = हिज्री ५१९] का फ़िड्ज़ एडवर्ड हॉल साहिबने प्रसिद्ध किया. पीछेसे जो तहक़ीक़ातें हुई, उनमेंसे गोविन्दचन्द्रके दान पत्रसे, जो बाबू राजेन्द्रलाल मित्रने ईसवी १८७३ [विक्रमी १९३० = हिज्री १२९०] में छापा, कोलब्रुक, विलसन और दूसरे साहिबोंकी राय खूब पुख़्तह ठहर गई, याने यह कि इस ख़ान्दानके पहिले दो आदमी 'यशोविग्रह' और 'महीचन्द्र' क़न्नौजके राजा नहीं थे; लेकिन् तीसरे राजा श्रीचन्द्रने क़न्नौजको फ़त्ह किया, और वह वहांका पहिला राठौड़ राजा हुआ. उसी पत्रसे यह भी मालूम हुआ, कि अगले ख़ान्दानके आख़िरी राजाका नाम भोज था. जिसके मरने बाद कुछ दिनों तक राजा श्री कर्णके समयमें बद इन्तिज़ामी रही, और उसी वक़्में राठौड़ राजा श्रीचन्द्रने क़न्नौजकी गद्दी पहिली बार हासिल की.

इन सब ताम्रपत्रोंसे क़न्नौजके राठौड़ोंका समय ईसवी १०५० [विक्रमी ११०७ = हिज्री ४४२] से ईसवी ११९३ [विक्रमी १२५० = हिज्री ५८९] तक ठहराया जासक्ता है, इस ताम्रपत्रके दूसरे श्लोकमें "विजयीनृपः" श्री चन्द्रदेवके लिये लिखा है, और उसको महिआल याने महिपालका बेटा लिखा है, जो महीचन्द्रका दूसरा नाम था; जर्नल जिल्द ४ पृष्ठ ६७० में गहरवाल वंशका रिश्तहदार बतलाया गया है, जो कि इलियट साहिबके लिखनेके मुताबिक़ राठौड़ोंका ही ख़ान्दान है.

महाराजा जयचन्द्रका हाल राजपूतानेमें पृथ्वीराजरासा (१) के मुताबिक़ ज़ाहिर है, लेकिन् यह पुस्तक हमारी रायमें विक्रमी १६४० [हि० ९९१ = ई० १५८३] से विक्रमी १६७० [हि० १०२२ = ई० १६१३] के बीचमें चहुवानोंके किसी भाटने पृथ्वीराजके भाट चंदके नामसे बनाकर प्रसिद्ध करदी है. इसी पुस्तकके सबब राजपूतानेके इतिहासमें बहुत कुछ फेर फार हो गया; याने अस्ली नाम व साल सम्वत् गुम होकर उनके बदले बनावटी क़ाइम हुए, जैसे कि राजा जयचन्द्रकी गद्दी नशीनीका संवत् विक्रमी ११३२ [हि० ४६८ = ई० १०७६] मारवाड़की तवारीख़ोंमें दर्ज हो गया, लेकिन् राजा जयचन्द्र और उनके बुज़ुर्गोंके ताम्र पत्रोंने

---

(१) हमने इस ग्रन्थकी नवीनता साबित करनेके लिये एक पुस्तक रूप बनाकर बंगाल एशियाटिक सोसाइटीके ई० १८८६ [विक्रमी १९४३ = हिज्री १३०३] के पहिले जर्नलमें छपवाया है, और उसीके मुताबिक़ हिन्दी भाषामें भी छपवाकर प्रसिद्ध किया, जिसके देखनेसे पुरानी प्रशस्तियां, ताम्रपत्र और उस ज़मानेकी फ़ार्सी तवारीख़ोंके लेख पाठक लोगोंको विश्वास दिलावेंगे, कि यह पुस्तक नई और इतिहासमें ख़राबी डालने वाली है.

सच्चा हाल खोल दिया, जिनके नाम यह हैं:- १ श्री पाल, २ महीचन्द्र, ३ श्रीचन्द्रदेव, ४ मदनपालदेव, ५ गोविन्दचन्द्र, ६ विजयचन्द्रदेव ७ जयचन्द्र. पृथ्वीराजरासामें लिखा है, कि विक्रमी ११५१ [हि० ४८७ = ई० १०९४] में राजा जयचन्द्र राठौड़की वेटी संयोगिताको दिल्लीका राजा पृथ्वीराज चहुवान ले आया, लेकिन् ईसवी १८८६ [विक्रमी १९४३ = हिज्री १३०३] के जर्नल इन्डियन एन्टीकेरीमें राजा जयचन्द्रके दो दान पत्र, एक विक्रमी १२२५ माघ शुक्ल १५ [हि० ५६४ ता० १४ रवीउस्सानी = ई० ११६९ ता० १६ जैन्यूएरी] का, दूसरा विक्रमी १२४३ आपाढ़शुक्ल ७ रविवार [हि० ५८२ ता० ५ रवीउस्सानी = ई० ११८६ ता० २६ जून] का दर्ज है. इस तरहके गलत संवत् देखकर राजपूतानेकी तवारीखोंमें फ़र्क़ पड़ा, और अस्ली संवत् नष्ट होगये.

हमको जयचन्द्रसे मंडोवरके राव चूंडा तक मारवाड़की तवारीखके संवत् ठीक मालूम नहीं होते, राठौड़ोंकी तवारीखमें वहुत पुराने ज़मानेसे क़न्नौजका राज उनकी हुकूमतमें होना लिखा है, लेकिन् ऊपरके लेखसे यह साबित होगया, कि विक्रमी ११०७ [हि० ४४२ = ई० १०५०] में क़न्नौजका राज राठौड़ों के क़ब्जेमें आया.

आख़िरी राजा जयचन्द्रसे उसका मुल्क विक्रमी १२५० [हिज्री ५८९ = ईसवी ११९३] में शिहाबुद्दीन ग़ोरीने चन्दवार (चन्दावल) में लड़ाई करके लेलिया; (तवक़ात नासिरी पृष्ठ १२०) इस लड़ाईमें तीन सौसे ज़ियादह हाथी शिहाबुद्दीनके हाथ आये, और जयचन्द्र अपनी राजधानी छोड़ भागा. फिर हिन्दुस्तानके पहिले वादशाह कुतुबुद्दीन एवकने इस शहरको अपने मातहत किया. पृथ्वीराजरासेका बनाने वाला लिखता है, कि राजा जयचन्द्र शिहाबुद्दीन ग़ोरीके हिन्दुस्तानमें आनेसे पहिले गंगामें डूब मरा, शायद यह डूब मरनेकी वात सहीह हो; लेकिन् इस पुस्तकपर पूरा विश्वास नहीं हो सक्ता.

जोधपुरकी तवारीख़में राजा जयचन्द्रका वेटा ९ वरदाईसेन, उसका १० सेतराम, उसका ११ सीहा, जिसे शिवा भी कहते हैं, लिखा है; हमको वरदाईसेन और सेतरामके नाममें शक है, कि वहुतसी पुरानी पोथियोंमें राजा जयचन्द्रके पीछे शिवाका नाम लिखा है, और वड़वा भाट अपनी पोथियोंमें इन दोनों नामोंके वाद सीहाका नाम वतलाते हैं; परन्तु इस वातको सहीह या ग़लत ठहरानेके लिये कोई पुख़्तह सुबूत नहीं मिलता.

सीहाने भीनमालके पास मुसल्मानोंसे लड़ाई की, फिर वह मारवाड़में आया. जोधपुरके इतिहासमें लिखा है, कि सीहाने अनहिलवाड़ा पट्टनके राजा मूलराज सोलंखीकी वेटीसे शादी की; लेकिन् यह नहीं होसक्ता; क्योंकि मूलराज विक्रमी

९९८ [हि० ३२९ = ई० ९४१] में अनहिलवाड़ा पट्टनकी गद्दीपर बैठा, और विक्रमी १०५४ [हि० ३८७ = ई० ९९७] में मर गया; और सीहा, जयचन्द्र राठौड़से चौथी पीढ़ीपर था; जयचन्द्र विक्रमी १२५० [हि० ५८९ = ई० ११९३] में मरा, तो जयचन्द्रसे दो सौ वर्ष पहिले मूलराजका समय होता है. शायद सीहाने भीमदेव सोलंखीकी बेटीके साथ शादी की हो. सीहाने पालीमें सोमनाथका मन्दिर बनवाया, और वहांके पल्लीवाल ब्राह्मणोंको लुटेरोंकी तक्लीफ़ोंसे बचाया. राव सीहाका बेटा, १ आस्थान, २ अजमाल, ३ सोनंग, ४ भीम था.

इनके बाद १२ आस्थान मारवाड़के गांव पालीमें आया, वहांके पल्लीवाल ब्राह्मणोंने आस्थानको इस मत्लबसे अपने गांवमें रक्खा, कि उनको लुटेरोंसे बचावे. जब वहांसे आस्थानने खेड़के शंकरसाहसे दोस्ती पैदा की, और खेड़के मालिक गोहिल राजपूतोंसे संबन्ध हुआ, आस्थान शादी करनेको खेड़ गया; वहांके मुसाहिब डाबी राजपूत भी राठौड़ोंसे मिल गये; आस्थानने गोहिलोंको दग़ासे मारकर खेड़का राज छीन लिया, और गोहिल भागकर गुजरात चले गये, जिनका ज़िक्र महाराणा उदयसिंहके इतिहासमें लिखा गया है. (पृष्ठ ८७ से १०० तक) आस्थानने भीलोंको मारकर ईडरका राज छीना, और अपने छोटे भाई सोनंगको दिया, जिसका हाल ईडरकी तवारीख़में लिखा जायगा. सोनंगकी औलाद अब ईडरके ज़िलेमें पालपोलांके जागीरदार हैं, जो पहिले मुल्कके राजा थे.

खेड़में राज करनेसे आस्थानकी औलाद खेड़ेचा कहलाई; इसका बेटा १ धूहड़, जो खेड़की गद्दीपर बैठा, २ जोयसा, जिसके सात बेटे हुए; १ सिंधल, जिसके सिंधल राठौड़ कहलाये, २ जेलू, जिसके जेलू कहलाये, ३ जोरा, जिससे जोरा मश्हूर हुए, ४ ऊहड़, जिसके ऊहड़ राठौड़ कहलाये, ५ राजींग, ६ मूल, जिसके मूलू राठौड़ कहलाये, ७ खींवसी.

आस्थानका तीसरा बेटा धांधल था, इससे धांधल कहलाये; इसके तीन बेटे थे, १ पाबू जो चारणोंकी गायें छुड़ानेके बखेड़ेमें खीचियोंसे लड़कर मारा गया; वह अब तक देवताके नामसे पूजा जाता है, और राजपूतानेमें प्रसिद्ध है. २ बूड़ा, जिसके बेटे झरड़ाने खीचियोंको मारकर पाबूका बैर लिया; ३ ऊहड़.

आस्थानका ४ हिरडक, ५ पोहड़, ६ खींवसी, ७ आसल, ८ चाचिग, जिसकी औलाद चाचिंग राठौड़ कहलाई.

आस्थानके बाद १३ धूहड़ गद्दीपर बैठा, यह राजा करणाटक देशसे अपनी

कुलदेवी (१) चक्रेश्वरीकी मूर्ति लाया था, उसको नागौरमें रक्खा, जिससे उसका "नागणेची" नाम मश्हूर हुआ; उसको अब तक राठौड़ अपनी कुलदेवी मानकर पूजते हैं. इन्होंने पंवार राजपूतोंको शिकस्त देकर ५६० गावों समेत बाढ़मेरका इलाक़ह लेलिया; इसके बाद धूहड़, चहुवान राजपूतोंसे लड़कर मारागया. उसके सात बेटे थे- १ रायपाल, २ कीर्तिपाल, ३ बेहड़, इसकी औलादके बेहड़ राठौड़ कहलाते हैं, ४ पीथड़, जिसके पीथड़ राठौड़ कहलाते हैं, ५ जोगायत, ६ जालू, ७ बेग. धूहड़के बाद १५ रायपाल गद्दीपर बैठा, उसने बुद्ध भाटी राजपूतको रोड़ (क़ैद) करके चारण बनाया, जिसके वंशके रोड़िया बारहठ कहलाते हैं, और जन्म व शादी होनेके वक्त नेग पाते हैं. रायपालने देहान्त होनेपर बारह पुत्र छोड़े- १ कान्ह, २ केलण, इसका थांथी, इसका फिटक, जिससे फिटक राठौड़ कहाते हैं. रायपालका ३ बेटा सूंडा, ४ लाखणसी, ५ थांथी, ६ डांगी, ७ मोहन, ८ जाभ्रूण, ९ राजा, १० जोगा, ११ राधा, जिससे राधा राठौड़ कहलाये; और रायपालका १२ वां बेटा हतूंडिया था. इसके बाद बड़ा बेटा १६ कान्ह गद्दीका मालिक बना, उसके तीन बेटे थे. १ भीवकरण, २ जालणसी, ३ विजयपाल भीवकरण तो पहिले ही लड़ाईमें काम आया, और १७ जालणसी अपने बापके मरने

---

(१) कुलदेवी उसे कहते हैं, जिसे अपने कुलके बुजुर्ग पूजते आये हों; इसलिये हमारा क़ियास है, कि दक्षिणके राठौड़ राजाओंमेंसे किसीने आकर क़न्नौजका राज लिया है, क्योंकि मारवाड़की तवारीख़में राव धूहड़का करणाटक देशसे अपनी कुलदेवी चक्रेश्वरीको लाना लिखा है; जब धूहड़की कुलदेवी दक्षिणमें थी, तो उसके मानने वाले बुज़ुर्ग भी उसी मुल्कमें होंगे. दक्षिणके राठौड़ोंका वंश इस तरहपर जाना गया है:-

दक्षिणके राष्ट्र कूटोंका हाल.

(रामकृष्ण गोपाल भंडारकरकी बनाई हुई अंग्रेज़ी ज़बानमें दक्षिणकी पुरानी तवारीख़ पृष्ठ ४७ से ५५ तक)

इस ख़ान्दानमें पहिला राजा गोविन्द (पहिला) हुआ, लेकिन् एलूरामें दशावतारके मन्दिरकी एक प्रशस्तिमें दंतिवर्मन और इन्द्रराज दो अगले नाम और भी लिखे हैं. इन्द्रराज गोविन्दका पिता और दंतिवर्मन उसका पितामह था. गोविन्दका बेटा कर्क पहिला, उसके बाद उसका बेटा इन्द्रराज दूसरा गद्दीपर बैठा. इन्द्रराजने चालुक्य घरानेकी लड़कीसे शादी की, लेकिन् वह मांकी तरफ़से चन्द्र वंशी, या शायद राष्ट्रकूटों हीके ख़ान्दानकी थी; उसका बेटा दंतिदुर्ग हुआ, जिसने करणाटककी फ़ौजको जीत लिया, और दक्षिणमें बड़ा राजा हुआ; उसका एक दानपत्र शक ६७५ [ईसवी ७५३ = विक्रमी ८१० = हिज्री १३६] का कोल्हापुरमें मिला. दंतिदुर्गके बाद उसका चचा कृष्णराज मालिक हुआ; जैसा कि कर्डाके एक ताम्रपत्रसे साबित है. उसका दूसरा नाम शुभतुंग था, और उसने चालुक्योंको शिकस्त दी.

बाद गद्दीपर बैठा. उसने सोढा राजपूतोंसे लड़ाई की, और फ़त्ह पाई. इसके बाद वह मुसल्मानोंकी लड़ाईमें मारा गया, जिसके तीन बेटे थे—१ छाडा, २ भाखर्सी, ३ डूंगरसी. जालणसीके बाद १८ छाडा गद्दीपर बैठा, इसके सात बेटे थे- १ तीडा, २ वानर, जिससे वानर राठौड़ कहलाये. छाडाका तीसरा बेटा रुद्रपाल, ४ खोखर, जिससे खोखर राठौड़ कहलाये, ५ सीमल, ६ खींवसी, ७ कानड़. छाडाके देहान्त होनेपर १९ तीडा राजका मालिक हुआ, उसने महेवाको अपनी राजधानी

कृष्णराजका समय ई० ७५३ [विक्रमी ८१० = हिज्री १३६] और ई० ७७५[विक्रमी ८३२ = हिज्री १५८] के बीच रहा होगा. उसका बेटा गोविंद दूसरा, उसके बाद उसका छोटा भाई ध्रुव गद्दीपर बैठा, जिसके दूसरे नाम निरुपम, कलिवल्लभ और धारावर्ष हैं; उसने कौशांबीके राजापर चढ़ाई की, कौशांबीको अब कोशम कहते हैं, जो इलाहाबादके नज़्दीक है; उसने वत्सराजको मारवाड़में भगा दिया. इसके बाद गोविन्द तीसरा या जगत्तुंग पहिला हुआ, जिसने मयूरखंडी स्थानमें शक ७३० [ई० ८०८ = वि० ८६५ = हि० १९२] में राधनपुर और वणीडिंडोरीके दानपत्र जारी किये; यह बहुत बड़ा राजा हुआ.

मालवासे लेकर कांचीपुर तक उसका राज फैला, इसके बाद उसका बेटा शर्व या अमोघवर्ष पहिला राजा हुआ, जिसका हाल उत्तर पुराणके शेष संग्रहमें लिखा है. अमोघवर्षका बेटा अकालवर्ष था, वह कृष्ण दूसरा भी कहलाता था; इसीके वक्तमे गुणभद्रने जैनियोंका महापुराण शक ८२० [वि० ९५५ = हि० २८५ = ई० ८९८] के क़रीब पूरा किया. इसकेबाद जगत्तुंग दूसरा गद्दीपर बैठा, उसका बेटा इन्द्रराज तीसरा हुआ, इन्द्रके बाद अमोघवर्ष दूसरा, और फिर उसका भाई गोविन्द चौथा हुआ, जिसका नाम सहसांक भी था, उसने अपनी राजधानी मान्यखेटमें शक ८५५ [ई० ९३३ = विक्रमी ९९० = हिज्री ३२१] में दान किया, उसका पत्र 'शांगलीपत्र' कहलाता है. उसके बाद वद्दिगा या अमोघवर्ष तीसरा, जिसके बाद कृष्णराज तीसरा और उसके पीछे उसका छोटा भाई खोटिका गद्दीपर बैठा, जैसा कि खारी पाटनके ताम्रपत्रसे मालूम होता है. खोटिकाके बाद उसका भतीजा ककल या कर्क दूसरा. ककल बड़ा दिलेर सिपाही था, लेकिन् उससे चालुक्य वंशके राजा तैलप ने जीतकर राज छीन लिया.

ककलके समयका ताम्रपत्र, जो करड़ामें पाया गया, शक ८९४ [ईसवी ९७२ विक्रमी १०२९ = हिज्री ३६१] का है, और दूसरे वर्षमें तैलप दक्षिणका राजा हुआ. इस तरह ईसवी ७४८ [विक्रमी ८०५ = हिज्री १३०] से ई० ९७३ [विक्रमी १०३० = हिज्री ३६२] तक दक्षिणका राज्य राष्ट्रकूटोंके हाथमें रहा, (याने क़रीब दो सौ पच्चीस वर्ष के.) इससे साबित है, कि इन्हीं लोगोंकी औलादने क़न्नौजको वि० ११०७ [हि० ४४२ = ई० १०५०] में लिया होगा.

बनाया, देवड़ा चहुवानोंपर फ़त्ह पाई, भाटियोंसे दंड लिया, और बालेसा राजपूतोंको शिकस्त दी. इसके बाद मुसल्मानोंके हाथसे वह मारा गया. उसके तीन बेटे थे, १ त्रभूणसी, २ कान्हड़, ३ सळखा. तब २० सळखा गद्दीपर बैठा, इसका १ मल्लीनाथ, उसके वंशके माला कहाये, २ जैतमाल, जिससे जैतमालोत राठौड़ कहलाये, उसकी औलादवाले मेवाड़में केलवा, आगरिया वगैरहके जागीरदार हैं. सळखाका ३ बेटा वीरम, ४ सोभीत, जिसकी औलाद सोड़ राठौड़ कहलाई. मल्लीनाथने महेवापर क़ब्ज़ा किया, इनके नौ बेटे थे, १ जगमाल, २ रूपा, ३ चंडा, ४ उदयसिंह, ५ जगमाल, ६ मेदा, ७ अडराव, ८ अड़कमल्ल, और ९ हरम; जैतमालने सीवानामें अपना अमल जमाया, जिसके छः बेटे हुए, १ हापा, २ जीया, ३ बीजड़, ४ खींवा, ५ लूंठो और ६ खेतसी; सळखाके तीसरे बेटे २१ वीरमदेव खेड़में रहने लगे. दल्ला जोइया, जो दिल्लीके बादशाहका ख़ज़ानह लेकर भाग आया था, महेवामें आरहा, मल्लीनाथके बड़े बेटे जगमालने उसका माल व असबाब छीन लेना चाहा; तब उसने खेड़में जाकर २१ वीरमदेवकी पनाह ली; पीछेसे फ़ौज लेकर जगमाल भी पहुंचा; तरफ़ैनमें लड़ाईकी तय्यारी हुई; लेकिन् महेवासे मल्लीनाथ गया, और बीच बिचाव कराकर जगमालको लौटा लाया. इसके बाद दल्ला (१) जोइयाने अपने वतनमें जाना चाहा, तो उसे पहुंचानेको वीरमदेव भी साथ चला, लखबेरामें पहुंचकर दल्लाने वीरमदेवकी बहुत ख़ातिर की, और अपने इलाक़ेपर वीरमदेवका हुक्म जारी करदिया; लेकिन् वीरमदेव और उसके राजपूतोंने जुल्मसे मुसल्मनोंको तंग किया, उन लोगोंने एक अर्से तक दर गुज़र किया; अन्तमें बहुत दिक़ होनेसे मुसल्मानोंने वीरमदेवपर हम्ला कर दिया; और वह मुक़ाबला करके मारागया.

वीरमदेवके पांच बेटे थे, देवराज, जयसिंह, बीजा, चूंडा और गोगादेव. इनमेंसे छोटा गोगादेव, जिसने लखबेरामें पहुंचकर दल्ला जोइयाको मारा, और अपने बापका एवज़ लिया, वह दल्लाके भतीजे देपालदेव, धीरा वगैरहसे लड़कर मारागया; इस लड़ाईका हाल गोगादेवके रूपक (२) में मुफ़स्सल लिखा है. वीरमदेवके मरने बाद चूंडा मंडोवरका मालिक हुआ.

---

(१) यह पहिले राजपूत था, लेकिन् फिर मुसल्मान होगया.

(२) यह किताब मारवाड़ी भाषाकी कवितामें है.

२२ राव चूंडा.

वीरमके मरनेके बाद चूंडा बड़ी तक्लीफ़ोंमें रहा, फिर राव मल्लीनाथने उसको सालोढ़ी गांवके थानेपर रक्खा, वहां कुछ जमइय्यत इसके पास होगई. मंडोवरका क़िला पहिले राव रायपालने परिहार राजपूतोंसे छीन लिया था, और पीछे मुस्लमानोंके क़ब्ज़ेमें आया, ईंदा राजपूतोंने मुस्लमानोंसे फिर छीन लिया; लेकिन् कम ताक़त होनेके सबब रायधवल ईंदाने अपनी बेटी राव चूंडाको ब्याहकर मंडोवरका क़िला दहेज़में दिया; किसी शाइरने उस वक़ मारवाड़ी भाषामें एक सोरठा कहा था:—

सोरठा.

ईंदांरो उपकार, कमधज कदे न वीसरे ॥
चूंडो चवरी चाड़, दियो मंडोवर दायजे ॥

यह मंडोवरका राज विक्रमी १४५१ [हि० ७९६ = ई० १३९४] में राव चूंडाको मिला (१). राव चूंडाने मुसल्मानोंसे नागोरभी छीन लिया; इन दिनोंमें दिल्लीके बादशाह बेताक़त होगये थे, जिनके नौकरोंने गुजरात और मालवे की खुद मुख़्तार बादशाहतें बनाली. ऐसी हालतमें मंडोवर और नागोरसे गुजरातके मातहत मुसल्मानोंको राजपूतोंने निकाल दिया हो, तो तअज्जुब नहीं; दिल्लीकी ताक़त तो बहुत अर्से तक ग़ाइब रही, लेकिन् गुजरातियोंने कुछ अर्से बाद नागोर छीन लिया. फिर भाटी राजपूत और सिंधके मुसल्मानोंसे लड़कर राव चूंडा मारागया. (मुन्शी देवीप्रसादने इनके मारेजानेका संवत् विक्रमी १४६५ [हिज्री ८११ = ईसवी १४०८] लिखा है) इसके १४ बेटे थे.

---

(१) क़न्नौजके राजा जयचन्द्रसे पीछे राव चूंडा तक गद्दीनशीनीके साल संवत् हमने नहीं लिखे, क्योंकि पृथ्वीराजरासाकी बनावटी तहरीरने अस्ली संवत् मिटाकर जाली बना दिये, इसलिये राजा जयचन्द्रसे पहिलेके संवत् हमने ताम्रपत्र वगैरह के लेखसे सहीह बना दिये; परन्तु पिछले संवतोंको सहीह करनेके लिये कोई सुबूत नहीं मिलता; इससे लाचार ग़लत संवतोंको छोड़ दिया; और जो मारवाड़की ख्यातसे मिले हैं, वे इस नोटमें लिखे जाते हैं. आस्थानका जन्म वि० १२१८ कार्तिक कृष्ण १२ गुरुवार [हि० ५५६ ता० २८ शव्वाल = ई० ११६१ ता० २० ऑक्टोबर] को हुआ, और उसने विक्रमी १२३३ [हि० ५७२ = ई० ११७६] को मारवाड़में आकर खेड़का राज

१– रणमल, जिसका जन्म वि० १४४१ वैशाख शुक्ल ४ [हि० ७८६ ता० २ जमादियुस्सानी = ई० १३८४ ता० २८ एप्रिल] को हुआ; २– अरड़कमल, जिसके अरड़कमालोत; ३– बीजा, ४– सत्ता, जिसके सत्तावत राठौड़ कहलाये; ५– भीम, जिसके भीमोत; ६– पूना, इसके पूनोत; ७– कान्ह, जिसके कान्होत; ८– शिवराज, ९– अजा, १०– लूंबा, ११– रावत, १२– रामदेव, १३– सहसमल्ल, जिसके सहसमलोत; १४ रणधीर, जिसके रणधीरोत कहलाते हैं. इनके बारेमें यह कहावत मश्हूर है:–

"चौदह राव चूंडाका जाया। चौदह ही राव कहाया ॥"

चूंडाकी बेटीका नाम हांसबाई था, जो चित्तौड़के महाराणा लाखाको ब्याही गई, जिसका ज़िक्र पहिले भागमें लिखा गया है. राव चूंडाके बाद उसके छोटे बेटे कान्हके गद्दीपर बैठ जानेसे बड़ा रणमल, जो हक़दार था, नाराज़ होकर महाराणा मोकलके पास चित्तौड़ चला आया; इसे महाराणाने कई गावों समेत धणलाका पट्टा दिया, जो अब मारवाड़के इलाकेमें सोजतके पास है.

—<>✻<>—

राव कान्ह.

कान्हने जांगलूके सांखला राजपूतोंपर फ़त्ह पाई; फिर मरगया. रणधीर वगैरह भाइयोंने मिलकर सत्ताको मंडोवरका मालिक बनाया, जिसपर महाराणा मोकलसे मदद लेकर रणमल चढ़ आया. सत्ताके बेटे नर्बदसे रणमलका मुक़ाबला होनेपर नर्बद ज़ख्मी हुआ, और रणमलने फ़त्ह पाकर मंडोवरपर क़ब्ज़ा कर लिया; नर्बद महाराणा मोकलके पास आया, जिसको महाराणाने एक लाख रुपयेकी जागीरमें कायलाणाका पट्टा दिया, जो अब जोधपुर के पास है.

लिया. इनके बाद राव धूहड़ गद्दीपर वि० १३५८ ज्येष्ठ कृष्ण १३ [हि० ७०० ता० २७ शअबान = ई० १३०१ ता० ३० एप्रिल] में बैठा, और चहुवानोंकी लड़ाई में वि० १३६६ ज्येष्ठ [हि० ७०९ जमादियुस्सानी = ई० १३०९ मई] को मारागया. इनके बाद रायपाल गद्दीपर बैठा; इनके बाद वि० १३७९ [हि० ७२२ = ई० १३२२] में कान्ह गद्दीपर बैठा, जिनका जन्म वि० १३५९ [हि० ७०१ = ई० १३०२] और देहान्त वि० १३८५ [हि० ७२८ = ई० १३२८] में हुआ. इनके बाद जालणसी गद्दीपर बैठा; फिर मल्लिनाथ विक्रमी १४१३ [हि० ७५७ = ई० १३५६]को गद्दीपर बैठा; और वीरमदेवका इन्तिकाल वि० १४४० कार्तिक कृष्ण ५ [हि० ७८५ ता० १९ शअबान = ई० १३८३ ता० १७ ऑक्टोबर] को लिखा है.

२३ राव रणमल (१).

इन्होंने सोनगरा राजपूतोंसे कई लड़ाइयां करके उनको अपने तावे वनाया. मेवाड़में कुल कारोवारका मुख्तार राव रणमल था, क्योंकि रावकी वहिनके वेटे महाराणा मोकल उसपर पूरा भरोसा रखते थे; रणमलने महाराणा लाखाके वेटे चूंडा वगैरहको निकलवा दिया था, जिससे वे लोग राठौड़ोंके दुश्मन होगये. महाराणा मोकलको महाराणा खेताकी पासवानके वेटे चाचा और मेराने मार डाला, जिनको मारकर रणमलने मोकलका वैर लिया. महाराणा कुम्भाके वक्तमें भी राव रणमल मेवाड़का मुसाहिव रहा; मांडूके वादशाह महमूदको (२) गिरिफ्तार करके महाराणा कुम्भाके हवाले किया. कुम्भाके काका महाराणा लाखाके वेटे राघवदेव (३) को रणमलने दगासे मरवा डाला, इस वातसे फिर अदावत ज़ियादह वढ़ी; रावत् चूंडा व महपा पंवारके वेटे अक्काने महाराणा कुम्भाके इशारेसे रणमलको विक्रमी १५०० [हिज्री ८४७ = ई० १४४३] में मरवा डाला; और उसका वेटा जोधा मारवाड़की तरफ़ भागा; रास्तेमें लड़ाइयां होकर दोनों तरफ़के वहुतसे आदमी मारेगये. राव जोधाने तक्लीफ़की हालतमें रहकर सात वर्ष वाद मंडोवरका क़िला अपने क़ब्ज़ेमें किया, और सीसोदिया रावत् चूंडाके वेटे इस हम्लेमें मारेगये. यह सव हाल मुफ़स्सल महाराणा मोकल और कुम्भाके वयानमें लिखा गया है.

राव रणमलके २४ वेटे थे, १- जोधा, २- अखैराज, इसका महेराज, इसका कूंपा, जिससे कूंपावत राठौड़ कहाये; अखैराजका दूसरा वेटा पंचायण, जिसका जैता हुआ, इसकी औलादवाले जैतावत कहलाते हैं. रणमलका ३- वेटा कांधल, जिसकी औलाद वीकानेरके इलाक़ेमें कांधलोत मश्हूर हैं; ४- चांपा, जिसके चांपावत; ५ वां- लक्खा, इसके लखावत; ६ वां- भाखर, इसका वेटा वाला हुआ, जिससे वाला राठौड़ कहलाये. रणमलका ७ वां- वेटा डूंगरसी, जिससे डूंगरसिंहोत हुए; ८ वां- जैतमाल, इसका

---

(१) मुन्शी देवीप्रसादका वयान है, कि इनकी गद्दीनशीनीके संवत्में बहुतसे इख्तिलाफ़ हैं, लेकिन् हमारी दानिस्तमें विक्रमी १४७४ [हिज्री ८२० = ई० १४१७] दुरुस्त है.

(२) यह वात मारवाड़ और मेवाड़ वगैरह राजपूतानेकी ख्यातोंमें लिखी है, लेकिन तवारीख़ोंमें नहीं मिलती.

(३) इसकी छत्री चित्तौड़में अन्नपूर्णाके मन्दिरके पास दक्षिणी तरफ़ अवतक और उसे सीसोदिया अपना बुज़ुर्ग मानकर पूजते हैं.

भोजराज, जिससे भोजराजोत राठौड़ कहलाये. रणमलका ९ वां- वेटा मंडला, जिससे मंडलावत मश्हूर हुए, जो बीकानेरके इलाक़ेमें हैं. रणमलका १० वां- वेटा पाता, जिसके पातावत; ११ वां- रूपा, जिसके रूपावत; १२ वां- कर्ण, जिसके कर्णोत; १३ वां- सांडा, जिसके सांडावत; १४ वां- मांडण, जिसके मांडणोत; १५ वां- नाथा, जिसके नाथोत; १६ वां- ऊदा, जिसके ऊदावत; १७ वां- वैरा, जिसके वैरावत; १८ वां- हापा; १९ वां- अडमाल; २० वां- सावर, २१ वां- जगमाल, इसका वेटा खेतसी, जिससे खेतसिंहोत हुए; २२ वां- शक्ता; २३ वां- गोपा; २४ वां- चन्द (१).

२४ राव जोधा.

इनका जन्म विक्रमी १४७२ वैशाख कृष्ण १४ [हिज्री ८१८ ता० २७ मुहर्रम = ई० १४१५ ता० ९ एप्रिल] को हुआ था, और राव रणमलके मारेजाने वाद यह चित्तौड़से भागकर बहुत दिनों तक रेगिस्तान (मरुस्थल) में फिरता रहा, और मंडोवरपर रावत् चूंडाने क़ब्ज़ा करलिया, जो कुछ अर्से वाद इसके तह्तमें आया. राव जोधाने विक्रमी १५१५ ज्येष्ठ शुक्ल ११ शनिवार [हिज्री ८६२ ता० १० रजव = ई० १४५८ ता० २५ मई] को जोधपुर शहर और क़िलेकी नीव डाली. विक्रमी १५४५ वैशाख शुक्ल ५ [हिज्री ८९३ ता० ३ जमादियुल अव्वल = ई० १४८८ ता० १८ एप्रिल] को राव जोधाने इस दुन्याको छोड़ा. इनके १७ वेटे थे, १-सांतल, २-सूजा, ३-बीका (२), ४-नीवा, ५-कर्मसी, ६-रायसाल, ७वां-वनवीर, ८वां-बीदा, ९वां-जोगा, १०वां-भारमल, ११वां-दूदा, १२वां-वरसिंह, १३वां-सामन्तसिंह, १४वां-शिवराज, १५वां-जशवन्त, १६वां-कूंपा और १७वां-चान्दराव था.

२५ राव सांतल.

राव जोधाका बड़ा वेटा सांतल गद्दीपर वैठा. अजमेरके सूवहदारसे कोशाणा गांवमें राव सांतलकी लड़ाई हुई, सूवहदार अजमेरके साथ घड़ूला नामी कोई मश्हूर

---

(१) राव रणमलके वेटोंके नाम मुख़्तलिफ़ तौरपर हैं, लेकिन् हमने ये मौतबर ख्यातकी पोथीसे लिखा है, जो कविराज मुरारिदानने भेजी है.

(२) बीकानेरकी तवारीख़में बीकाको दूसरे नम्बरपर लिखा है, और राव सांतलके वाद बीका जोधपुर लेनेको इसी मत्लबसे गया था, कि अब मैं हक़दार हूं; यह ज़िक्र बीकानेरके हालमें लिखागया है; लेकिन् जोधपुरकी तारीख़में वह सूजासे छोटा तहरीर है.

आदमी था, जिसको राव सांतलने मार लिया, और खुद भी मुसल्मानोंसे लड़कर विक्रमी १५४८ चैत्र शुक्ल ३ (१) [हिज्री ८९६ ता० १ जमादियुल अव्वल = ई० १४९१ ता० १३ मार्च] को मारेगये. कोशाणाके तालावपर इनकी छत्री मौजुद है. सांतलके कोई लड़का नहीं था, इसलिये उनके छोटे भाई गद्दीपर विठाये गये, और सांतलके नामपर सांतलमेर आवाद हुआ.

२६ राव सूजा.

इनका जन्म विक्रमी १४९६ भाद्रपद कृष्ण ८ [हिज्री ८४३ ता० २२ सफ़र = ई० १४३९ ता० ३ ऑगस्ट] को हुआ था; राव बीकाने बीकानेरसे फ़ौज लेकर जोधपुरमें राव सूजाको आघेरा, लेकिन् सुल्ह होनेके वाद वापस लौट गया. राव सूजा विक्रमी १५७२ कार्तिक कृष्ण ९ [हिज्री ९२१ ता० २३ शऋवान = ई० १५१५ ता० २ ऑक्टोवर] को मर गये. इनके ९ वेटे थे; १- वाघा, विक्रमी १५१४ वैशाख कृष्ण ३० [हिज्री ८६१ ता० २९ जमादियुल अव्वल = ई० १४५७ ता० २५ एप्रिल] को पैदा हुआ, और विक्रमी १५७१ भाद्रपद शुक्ल १४ [हिज्री ९२० ता० १३ रजव = ई० १५१४ ता० ३ सेप्टेम्वर] को वापके साम्हने ही मर गया, इसका वेटा १- वीरम, २- गांगा था, जिनमेंसे पिछला सूजाके वाद जोधपुरका मालिक हुआ; वाघाका ३- वेटा खेतसी; ४- प्रतापसिंह था. राव सूजाका २- वेटा नरा; ३- शेखा; ४- देवीदास; ५- ऊदा; इससे ऊदावत (२) कहलाये; ६- प्राग; ७- सांगा; ८- पृथूराव; ९- नापा था.

२७ राव गांगा.

इनका जन्म विक्रमी १५४० वैशाख शुक्ल ११ [हि० ८८८ ता० ९ रबीउ़ल अव्वल = ई० १४८३ ता० १८ एप्रिल] को हुआ. राव सूजाके वाद वीरमको गद्दीपर विठाना चाहते थे, लेकिन् वीरम और उनकी माकी मग़्री

---

(१) हर साल जोधपुरमें अव तक इसी चैत्र शुक्ल ३ के दिन [illegible] मेला होता है

(२) इसकी औलादमें रायपुर वग़ैरहका ठिकाना है.

उसको महरूम रखकर सर्दारोंने गांगाको गद्दीपर बिठा दिया. यह राव गांगा अपने दादाकी ज़िन्दगीमें भी चित्तौड़के महाराणा सांगाके पास रहा था. जब विक्रमी १५७६ [हि० ९२५ = ई० १५१९] में महाराणा सांगाने ईडरके राव भीमदेवके बेटे राव रायमल्लकी मददपर चढ़ाई की, और गुजरातका बहुतसा हिस्सह लूटा, उस वक्त राव गांगा उनके शरीक थे. विक्रमी १५८६ [हि० ९३५ = ई० १५२९] में नागौरके हाकिम दौलतखांपर, जो गांगाके भाई शेखाकी मददको आया था, लड़ाईमें फ़त्ह पाई, बहुतसा अस्बाब लूट लिया, और शेखा भागकर चित्तौड़ चला आया, जो गुजराती बहादुरशाहकी लड़ाईमें मारा गया.

विक्रमी १५८८ (१) ज्येष्ठ शुक्ल ५ [हि० ९३७ ता० ३ शव्वाल = ई० १५३१ ता० २१ मई] को राव गांगाका इन्तिकाल हुआ, जिसकी हक़ीक़त इस तरहपर हैः- राव गांगा महलके झरोखेपर अफ़ीमकी पीनकमें ग़ाफ़िल हो रहे थे, कि उस वक्त उनके बड़े बेटे मालदेवने नीचे गिरा दिया, और वे मर गये. इनके ६ बेटे थे, १- मालदेव, २- मानसिंह, ३-वैरीशाल, ४- कृष्णसिंह, ५-सार्दूलसिंह, और ६- कानसिंह.

---

२८ राव मालदेव.

राव मालदेवका जन्म विक्रमी १५६८ पौष कृष्ण १ [हि० ९१७ ता० १४ रमज़ान = ई० १५११ ता० ४ डिसेम्बर] को हुआ था. यह गद्दीपर बैठनेके बाद अपने भाई वीरमदेवसे सोजतमें कई बार लड़े; आख़िरकार सोजतसे उसे निकाल दिया; और वीरा सींधलको मारकर भाद्राजून लेली. विक्रमी १५९२ [हि० ९४२ = ई० १५३५] में मुसल्मानोंसे नागौर (२) छीन लिया. महाराणा उदयसिंहकी मददके लिये बनवीरकी लड़ाईके वक्त मारवाड़की तवारीख़में राठौड़ कूंपा वगैरहको भेजना लिखा है, लेकिन् मेवाड़की तवारीख़ोंमें इस बातका कुछ ज़िक्र

---

(१) यह संवत् चैत्री हो, तो ठीकही है, और अगर मारवाड़के रवाजसे है, तो विक्रमी १५८९ चैत्रीका ज्येष्ठ शुक्ल ५ होगा.

(२) नागौरमें गुजराती बादशाहोंकी तरफ़के मुलाज़िम रहते थे; मारवाड़की तवारीख़में उस हाकिमका नाम नागौरीखां लिखा है, लेकिन् यह नाम नागौरके ख़ान (خان ناگور) से बिगड़कर बना मालूम होता है, नाम शायद उसका कुछ और होगा.

नहीं है. विक्रमी १५९५ आषाढ़ कृष्ण ८ [हि० ९४५ ता० २२ मुहर्रम = ई० १५३८ ता० २० जून] को डूंगरसिंह जैतमालोतसे सिवानाका क़िला लेकर मांगलिया देवा भादावतको क़िलेदार बनाया.

विक्रमी १५९८ [हि० ९४८ = ई० १५४१] में राव मालदेवने बीकानेरपर फ़ौज भेजी, और राव जैतसीको मारकर मुल्क जांगलूपर क़ब्ज़ा करलिया; जिसके इन्आममें कूंपाको झूंझनूंका पट्टा दिया. यह हाल तफ़्सीलवार बीकानेरके इतिहासमें लिखआये हैं. विक्रमी १५९९ आषाढ़ शुक्ल १५ [हि० ९४९ ता० १४ रबीउ़ल् अव्वल = ई० १५४२ ता० २८ जून] को हुमायूं बादशाह शेरशाहसे तंग होकर सिन्धकी तरफ़से देवरावलमें आया, और श्रावण कृष्ण ६ [हि० ता० २० रबीउ़ल् अव्वल = ई० ता० ४ जुलाई] को बासिलपुर, और भाद्रपद कृष्ण ३ [हि० ता० १७ रबीउ़स्सानी = ई० ता० ३० जुलाई] को बीकानेरसे १२ कोसपर, और वहांसे फलोदी व जोगी तालाव (१) पर पहुंचा. हुमायूं शाहको राव मालदेवने बुलाकर अपनी पनाहमें रखना चाहा था, लेकिन् वह यह बात सुनकर, कि बादशाहके साथियोंने गाय मारी है (२), नाराज़ हुआ. हुमायूंको भी उसकी नाराज़गीका हाल मालूम होगया, तब वह डरकर सांभर, सातलमेर और जयसलमेर होता हुआ उमरकोट चला गया.

राव मालदेवने बीकानेर और मेड़ता अपने भाइयोंसे छीन लिया था, जिससे बीकानेरका राव कल्याणमल्ल और मेड़तेका राव वीरमदेव शेरशाहके पास दिल्ली पहुंचे, और मदद्के लिये उसको ले आये; वह मए फ़ौजके अजमेर पहुंचा. यह ख़बर

---

(१) जहां अब् कृष्णगढ़ शहर आबाद है.

(२) राजपूतानहकी तवारीख़ोंमें मश्हूर है, कि हुमायूंने गाय मारी, इस सबबसे मालदेवने नाराज़ होकर बादशाहको कह दिया, कि हमारे देशमेंसे चले जाओ, नहीं तो मारे जाओगे. अक्बरनामह, तबक़ात अक्बरी, तारीख़ फ़िरिश्तह वग़ैरह तवारीख़ोंमें यह बात नहीं लिखी, लेकिन् हमारी रायमें राजपूतानहकी तवारीख़ोंका क़ौल सहीह मालूम होता है, क्योंकि अक्बर जौहर आफ़्ताबची, जो हुमायूंके साथ था, लिखता है, कि जब बादशाह जयसलमेरके इ़लाक़ेमें पहुंचा, तब रावलकी तरफ़से दो क़ासिद आये, जिन्होंने अ़र्ज़ किया, कि राजा मालदेवने आपको बुलाया था, और उसके मुल्कमें गाय भी नहीं मारी, हमारे इ़लाक़ेमें आकर गाय मारी गई, यह अच्छा काम न हुआ; इसलिये हम तुम्हारा रास्ता रोकते हैं.

इस कलामसे साबित होता है, कि हुमायूं और उसके साथियोंको गाय मारनेमें कुछ नुक्सान मालूम न था, इसलिये उसने मारवाड़में भी मारी होगी; जयसलमेरके क़ासिदोंने हुमायूंको ज़ियादह क़ुसूरवार दिखलानेके लिये ऐसा कहा होगा.

सुनकर मालदेवने अपने सर्दारोंको बुलाया; उन लोगोंने क़ासिदोंको बधाई (१) का इनूआम दिया.

सब लोगोंको साथ लेकर राव मालदेव अजमेरकी तरफ़ रवाना हुए; अस्सी हज़ार फ़ौज शेरशाहके पास और पचास हज़ार राव मालदेवके पास थी. बादशाहका डेरा गांव समेलमें और रावका मक़ाम गीररी गांवमें था. शेरशाहको मालदेवकी बड़ी फ़ौज देखकर हैरानी हुई; तब बीरमदेव मेड़तियाने कहा, कि आपको कुछ फ़िक्र नहीं करनी चाहिये, हम इसका इलाज करते हैं. बादशाहसे कई फ़र्मान मालदेवके सर्दारोंके नाम इस मज़्मूनके लिखवाये, कि तुम लोगोंकी अर्ज़ियां राव मालदेवके ज़ियादह तक्लीफ़ देनेसे उसको गिरिफ्तार करा देनेके मत्लबकी आईं; सो जमा ख़ातिर रखनी चाहिये; जब मालदेवको गिरिफ्तार करादोगे, तब तुम्हें इक़ारके मुवाफ़िक़ जागीरें दी जायंगी.

इस तरहके फ़र्मान ढालकी गादियोंमें सिलवाये, और ढालें अपने आदमीको सौदागर बनाकर मालदेवके सर्दारोंके हाथ कम क़ीमतपर बेच दीं. बीरमदेवने अपना आदमी भेजकर मालदेवको ख़ानगीमें कहलाया, किं अगर हम आपके बर्ख़िलाफ़ हैं, तो भी अपनी और आपकी एक इज़्ज़त जानकर होश्यार करते हैं, कि आपके सर्दार कूंपा, जैता, वग़ैरह बादशाहसे मिलगये हैं; एतिबार न हो, तो इनकी ढालोंकी गादियोंमें बादशाही फ़र्मान मौजूद हैं, उनको देख लीजिये. यह सुनकर मालदेवने ढालोंकी गादियोंमेंसे काग़ज़ निकलवाकर देखे, और घबराया; तो कूंपा व जैता वग़ैरहने बहुतसा समझाया, पर विश्वास न आया, और भाग निकला; तब कूंपा, खींवां व जैता वग़ैरहने विचारकर बादशाहकी फ़ौजपर धावा किया. इस लड़ाईमें दो हज़ार राठौड़ और बहुतसे बादशाही आदमी मारेगये. यह लड़ाई विक्रमी १६०० पौष शुक्ल ११ [हि० ९५० ता० १० शव्वाल = ई० १५४४ ता० ५ जैन्युअरी] को हुई. इस लड़ाईमें, जो मारवाड़ी सर्दार काम आये, उनकी तफ़्सील नीचे लिखी जाती है:-

---

(१) खुशीकी ख़बरको बधाई बोलते हैं, राजपूतानहमें राजपूत लोग लड़ाईकी ख़बरको खुश ख़बरी मानकर इनआम देते थे, और यह ख़याल करते थे, कि हम बीमारीसे नहीं मरें, लड़ाईमें मारे जाकर दूसरी दुन्याका आराम हासिल करें. इन लोगोंका अब तक अक़ीदह है, कि लड़ाईमें मारे जाने बाद परियां फूलकी माला लेकर आती हैं और मरने वालेके गलेमें डाल कर उसे अपना ख़ाविन्द बनाती हैं, फ़िर दोनों मिलकर दूसरी दुन्यामें आरामके साथ रहते हैं.

(१) राठौड़ जैता पचांयणोत. (२) राठौड़ उदयसिंह, जैतावत.
(३) राठौड़ जोगा, रावल अखैराजोत. (४) राठौड़ बीरसी, राणावत.
(५) राठौड़ वीदा, भारमलोत. (६) राठौड़ हामा, सिंहावत.
(७) रणमल्ल. (८) राठौड़ भद्दो, पचांयणोत.
(९) वीदा, पर्वतोत. (१०) सूरा अखैराजोत.
(११) राठौड़ हरपाल. (१२) सोनगरा अखैराज, रणधीरोत (१).
(१३) राठौड़ कूंपा, महराजोत. (१४) राठौड़ खींवां, ऊदावत.
(१५) राठौड़ पत्ता, कान्हावत. (१६) राठौड़ सुजानसिंह, गांगावत.
(१७) राठौड़ कल्ला, सुरजणोत. (१८) राठौड़ रायमल्ल, अखैराजोत.
(१९) राठौड़ भोजराज, पचांयणोत. (२०) राठौड़ जयमल्ल.
(२१) राठौड़ भवानीदास. (२२) राठौड़ नींबा, आनन्दोत.
(२३) सोनगरा भोजराज, अखैराजोत. (२४) भाटी पचांयण, जोधावत.
(२५) भाटी मेरा, अचलावत. (२६) भाटी कल्याण, आपलोत.
(२७) भाटी सूरा, पातावत. (२८) भाटी नींबा, पातावत.
(२९) देवड़ा अखैराज, वनावत. (३०) ऊहड़ सुर्जन, नरहरदासोत.
(३१) सांखला धनराज. (३२) ईंदा किशना.
(३३) जयमल्ल वीदावत. (३४) राठौड़ भारमल्ल, वालावत.
(३५) भाटी गांगा, वरजांगोत. (३६) भाटी हमीर, लक्खावत.
(३७) भाटी माधा, राघोत. (३८) भाटी सूरा, पर्वतोत.
(३९) सोढा नाथा, देदावत. (४०) ऊहड़ वीरा, लक्खावत.
(४१) सांखला डूंगरसिंह, माधावत. (४२) मांगलिया हेमा, नरावत.
(४३) चारण भाना, खेतावत. (४४) पठान अलीदादखां.

शेरशाहने इस लड़ाईके बाद कहा, कि "मैंने एक मुट्ठी बाजरेके एवज़ हिन्दुस्तानकी सल्तनत खोई होती". राव मालदेव पीपलादके पहाड़ोंकी तरफ़ चले गये, और बादशाहने जोधपुरपर क़ब्ज़ा किया. उस वक्त जोधपुरमें भी मालदेवके बहुतसे राजपूत लड़मरे, जिनकी छत्रियां अब तक गढ़पर मौजूद हैं, तवालतके सबब नाम नहीं लिखे गये. इस वक्त राव कल्याणमल्लने बीकानेर, और बीरमदेवने मेड़तेपर क़ब्ज़ह किया. इसके बाद बादशाह चला गया, और राव मालदेवने गांव भांगेसरके

---

(१) यह अखैराज महाराणा प्रतापसिंहका नाना नहीं है, दूसरा होगा.

थानेपर हम्ला करके बहुतसे बादशाही आदमियोंको मारा, और ख़ज़ानह लूटलिया. विक्रमी १६०२ [हि० ९५२ = ई० १५४५] में राव मालदेवने जोधपुरका क़िला लेलिया.

विक्रमी १६१३ फाल्गुन् [हि० ९६४ रबीउल् अव्वल = ई० १५५७ जैन्युअरी] में जब महाराणा उदयसिंह और हाजीखांसे लड़ाई हुई, तब राव मालदेवने हाजीखांकी मददके लिये डेढ़ हज़ार सवार भेज दिये थे. मारवाड़ी सर्दार हाजीखांको सहीह सलामत जोधपुर ले आये; फिर वह पठान गुजरातको चला गया. यह ज़िक्र महाराणा उदयसिंहके हालमें लिखा गया है- (देखो पृष्ठ ७१). इस लड़ाईमें मेड़तेका राव जयमल्ल वीरमदेवोत महाराणा उदयसिंहकी फ़ौजमें था, वह मेड़ते गया, तो राव मालदेवने अदावतसे मेड़ता छीन लिया.

विक्रमी १६१४ फाल्गुन् शुक्ल पक्ष [हि० ९६५ जमादियुल् अव्वल = ई० १५५८ मार्च] में बादशाह अक्बरके सर्दार मुहम्मद क़ासिम नेशापुरीने अजमेर और नागोरपर क़ब्ज़ह करलिया; और इस सर्दार के मातहत सय्यद मुहम्मद बारह और शाहकुलीखां महरमने जैतारन फ़त्ह करलिया; राव मालदेवके राजपूत भाग गये. राव वीरमदेवका बेटा जयमल्ल बादशाह अक्बरके पास गया, और बादशाह भी राजपूतानहकी तरफ़ चला. उसने सांभरके मक़ामसे विक्रमी १६१९ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष [हि० ९६९ रमज़ान = ई० १५६२ मई] में मिर्ज़ा शरफ़ुद्दीनहुसैनको मए जयमल्ल मेड़तियाके मेड़तेपर भेजा. यह क़िला पहिलेसे राव मालदेवने जगमालको देदिया था, जिसकी मददके लिये रावने देवीदासको पांच सौ राजपूतों समेत भेजा; राजपूत मिर्ज़ाकी फ़ौजसे खूब लड़े, कभी कभी बाहर निकलकर भी हम्ला करते थे. एक दिन बादशाही लोगोंने सुरंग लगाकर क़िलेका एक बुर्ज उड़ा दिया; लेकिन् राजपूतोंने बहादुरीके साथ दुश्मनोंको रोका, और रातके वक़ वह बुर्ज पीछा तय्यार करलिया; परन्तु रसदकी कमीके सबब राजपूतोंने सुलह चाही.

इक़ारके मुवाफ़िक़ जगमाल तो अपने बाल बच्चोंको लेकर निकल गया, लेकिन् देवीदास अपना अस्बाब जलाकर बाहर जाता था, कि मिर्ज़ा शरफ़ुद्दीनहुसैनके हुक्मसे जयमल्ल, लूणकर्ण, शाह बदाग़खां, अब्दुल मुत्तलिब, मुहम्मदहुसैन और सूजा वग़ैरहने हम्ला करदिया; देवीदास भी बहादुरीके साथ पेश आया और ज़ख्मी होकर घोड़ेसे गिरगया, जो कई वर्षोंके बाद जोगियोंकी जमाअतमें मश्हूर होकर जोधपुरमें आया; जिसका ज़िक्र आगे किया जायगा; इसके सिवाय और भी बहुतसे बहादुर इस लड़ाईमें मारे गये; मेड़ता मिर्ज़ा शरफ़ुद्दीनहुसैनने जयमल्लके

सुपुर्द किया, लेकिन् विक्रमी १६१९ आश्विन शुक्ल पक्ष [हि० ९७० सफ़र = ई० १५६२ ऑक्टोबर] में मिर्ज़ा शरफुद्दीनहुसैनके बाग़ी होनेपर बादशाहने जयमल्लसे छीनकर जगमालको मेड़ता दिला दिया, और जयमल्ल चित्तौड़ आया, जिसको महाराणा उदयसिंहने एक हज़ार गांवों समेत बदनौरका पट्टा दिया.

राव मालदेवका देहान्त विक्रमी १६१९ कार्तिक शुक्ल १२ [हि० ९७० ता० ११ रबीउल् अव्वल = ई० १५६२ ता० ९ नोवेम्बर] को हुआ. यह राव तेज़ मिज़ाज, बेरहम, खुद मत्लबी और घमंडी थे, लेकिन् बड़े बहादुर और बलन्द हिम्मत होनेके सबब पहिले सब ऐब रद्द होगये. वह अपने नुक्सानका बदला लेनेको बड़े मुस्तइद थे, और दूसरेकी तारीफ़ पसन्द नहीं करते. मारवाड़का खुद मुरूतार पहिला राजा मालदेवको ही समझना चाहिये, क्योंकि पहिलेके राजा आस्थानसे लेकर राव गांगा तक छोटे इलाकेके मालिक रहे; यह राव ब्राह्मण, चारण वग़ैरह पेश्वा कौमोंकी बहुत ख़ातिर करते थे. इनके ग्यारह पुत्र थे १- रामराज, २- उदयसिंह, ३- चन्द्रसेन, ४- रायमल्ल, ५-भाणा, ६-रत्नसी, ७- भोजराज, ८- विक्रमादित्य, ९- पृथ्वीराज, १०- आशकरण, ११- गोपाल, जिनमेंसे बापके मरने बाद चन्द्रसेन गद्दीपर बैठा.

२९ राव चन्द्रसेन.

राव चन्द्रसेनका जन्म विक्रमी १५९८ श्रावण शुक्ल ८ [हि० ९४८ ता० ६ रबीउस्सानी = ई० १५४१ ता० ३१ जुलाई] को हुआ था. राव मालदेवका सबसे बड़ा बेटा रामराज था, परन्तु उसने अपने बापको दादेकी तरह मारनेका इरादह किया, इसलिये मालदेवने उसको निकाल दिया, तब रामराज अपने ससुर महाराणा उदयसिंहके पास उदयपुर आया; महाराणाने उसको कई गांवों समेत कैलवाका पट्टा दिया. दूसरा उदयसिंह और तीसरा चन्द्रसेन, दोनों महाराणी झाली स्वरूपदेसे पैदा हुए थे, झाली राणीने किसी नाराज़गीसे उदयसिंहको निकलवाकर (१) चन्द्रसेनको वलीअह्द बनाया; जब राव मालदेवका इन्तिकाल हुआ, तब चन्द्रसेन जोधपुरकी गद्दीपर बैठे; लेकिन् इनका बड़ा भाई रामराज बादशाह अक्बरके पास पहुंचा, और चन्द्रसेनकी तेज़ मिज़ाजीके सबब उसके राजपूत, रामराज और उदयसिंहसे मेल रखते थे. मारवाड़में आपसकी फूटसे

(१) राव मालदेवने उदयसिंहको निकालने बाद फलोदीकी जागीर उसको दी थी.

गढ़ होने लगा; गद्दीनशीनीके दूसरे वर्ष ही बादशाही फ़ौजने चन्द्रसेनको जोधपुरसे निकाल कर मारवाड़पर क़ब्ज़ाकर लिया.

चन्द्रसेन वहांसे निकलकर घूमते रहे; अबुल्फ़ज़्ल लिखता है, कि हिज्री ९७८ ता० १६ जमादियुस्सानी [वि० १६२७ मार्गशीर्ष कृष्ण २ = ई० १५७० ता० १५ नोवेम्बर] को चन्द्रसेन नागौरमें बादशाह अक्बरके पास हाज़िर हुआ, फिर बादशाहसे बाग़ी होनेके बाद कुछ दिनों तक सिवानेपर क़ाबिज़ रहा. इसके बाद पहाड़ोंमें डूंगरपुर, बांसवाड़ेकी तरफ़ चलागया; बादशाही लोगोंसे कई लड़ाइयां कीं; आख़िरकार बादशाही थाना काटकर सोजतमें क़ब्ज़ा करलिया और वहीं उसका इन्तिक़ाल हुआ. अबुल्फ़ज़्ल यह भी लिखता है, कि जुलूसी सन् २५ [हिज्री ९८८ ता० २४ मुहर्रम = विक्रमी १६३६ चैत्र कृष्ण १० = ई० १५८० ता० १० मार्च] को, जब चन्द्रसेनने फ़साद उठाया, तब पाइन्दा मुहम्मदख़ां मुग़ल मए दूसरे जागीरदारोंके उसकी तंबीहको तइनात हुआ, जिससे राजाने शिकस्त खाई, और फिर कभी उसका पता नहीं लगा, जिससे उसका मरना ख़याल किया गया. इसीसे मालूम होता है, कि विक्रमी १६३७ [हि० ९८८ = ई० १५८०] व वि० १६३८ [हि० ९८९ = ई० १५८१] के बीचमें उनका देहान्त हुआ होगा. इनके तीन बेटे थे, १- रायसिंह जिसका जन्म विक्रमी १६१४ [हिज्री ९६४ = ई० १५५७] में; २- उग्रसेन जिसका जन्म विक्रमी १६१६ भाद्रपद कृष्ण १४ [हिज्री ९६६ ता० २८ शव्वाल = ई० १५५९ ता० ३ ऑगस्ट] को हुआ; ३- आशकरण जिसका जन्म विक्रमी १६२७ श्रावण कृष्ण १ [हिज्री ९७८ ता० १५ मुहर्रम = ई० १५७० ता० १९ जून] को हुआ था. इन तीनोंमेंसे सब राजपूतोंने मिलकर छोटे आशकरणको गद्दीपर बिठा दिया, जिससे उग्रसेनने फ़साद किया; तो राजपूतोंने दोनों भाइयोंको आपसमें समझाया, लेकिन् उग्रसेन दिलसे नाराज़ था, जिससे विक्रमी १६३८ चैत्र शुक्ल २ [हि० ९८९ ता० १ सफ़र = ई० १५८१ ता० ७ मार्च] के दिन उसने आशकरणको मारडाला, और उसके राजपूतोंने उग्रसेनका भी काम तमाम किया. रायसिंह, जो बादशाह अक्बरके पास था, यह ख़बर सुनकर सोजतमें आया और अपने बापकी गद्दीपर बैठा.

सिरोहीके राव सुल्तानपर बादशाह अक्बरने महाराणा उदयसिंहके बेटे जगमालको फ़ौज देकर रायसिंहके साथ भेजा. विक्रमी १६४० कार्तिक शुक्ल ११ [हि० ९९१ ता० ९ शव्वाल = ई० १५८३ ता० २७ ऑक्टोबर] को ये दोनों मारेगये. इन तीनों भाइयोंमेंसे उग्रसेनके तीन बेटे थे, १- कर्मसेन, २- कल्याणदास, ३- कान्ह; कर्मसेनकी औलादमें अजमेरके मातहत भिणायके राजा हैं.

३० राजा उदयसिंह (मोटा राजा).

इनका जन्म विक्रमी १५९४ माघ शुक्ल १२ रविवार [हिज्री ९४४ ता० १० शश्र्वान = ई० १५३८ ता० १३ जैन्युअरी] को हुआ था, ये विक्रमी १६२७ [हिज्री ९७८ = ई० १५७०] में अक्बरकी तावेदारीमें हाज़िर हुए, और विक्रमी १६३५ चैत्र शुक्ल [हिज्री ९८६ मुहर्रम = ई० १५७८ मार्च] में सादिक़ख़ांके साथ राजा मधुकर बुन्देलेकी तंबीहके वास्ते मुक़र्रर हुए. इनको बादशाह अक्बरने "राजा" का ख़िताब और जोधपुरका क़िला दिया. विक्रमी १६३९ चैत्र कृष्ण १ [हिज्री ९९१ ता० १५ सफ़र = ई० १५८३ ता० ९ मार्च] को मिर्ज़ाख़ां (ख़ानख़ानां अब्दुर्रहीम), बीरमख़ांके बेटेके साथ गुजरातकी सफ़ाई करने और मुज़फ़्फ़र गुजरातीका फ़साद मिटानेको गये. विक्रमी १६४० भाद्रपद कृष्ण १२ [हिज्री ९९१ ता० २६ रजब = ई० १५८३ ता० १५ ऑगस्ट] को जोधपुरमें आकर गद्दीपर बैठे.

विक्रमी १६४४ [हिज्री ९९५ = ई० १५८७] में इन्होंने अपनी बेटी मानबाई (१) की शादी शाहज़ादह सलीम (जहांगीर) के साथ की; यह बात कल्ला रायमलोतको बुरी मालूम हुई; और उसने फ़साद करना चाहा, लेकिन् बादशाही दबावसे भागकर सिवाने चला आया; राजा उदयसिंह भी पीछेसे बादशाही फ़ौज लेकर चढ़ा; विक्रमी १६४५ [हिज्री ९९६ = ई० १५८८] में कल्ला इस लड़ाई में मारागया, जिसकी औलाद लाडणू वगैरह गांवोंमें है. फिर इन्होंने बादशाही फ़ौज लेकर विक्रमी १६४८ फाल्गुन शुक्ल ७ [हि० १००० ता० ५ जमादियुल आख़र = ई० १५९२ ता० २० फ़ेब्रुअरी] को बादशाह अक्बरसे विदा होकर सिरोहीके राव सुल्तानपर चढ़ाई की और फ़त्ह पाई.

राजा उदयसिंहका इन्तिक़ाल विक्रमी १६५२ आषाढ़ शुक्ल १५ [हि० १००३ ता० १४ ज़िल्क़ाद = ई० १५९५ ता० २३ जुलाई] को लाहौरमें हुआ. यह राजा शुरूअमें बहादुर थे, लेकिन् बदनके भारी होनेसे बेकार होगये; राव मालदेवके पीछे भाइयोंके फ़सादसे मारवाड़का कुल मुल्क क़ब्ज़ेसे निकल गया था, जिसमेंसे कुछ पर्गने बादशाह अक्बरकी मिहर्बानियोंसे हासिल किये; और एक हज़ारी ज़ात व सवारके मन्सब

(१) अक्बर नामहमें मानमती, और बादशाह जहांगीरने तुज़क जहांगीरीमें जगत गुसांयन लिखा है; शायद यह ख़िताबी नाम होगा, जिसका अर्थ जगतकी मालिक है.

तक पहुंचे थे. इनको "मोटा राजा" बदनके मोटा पनसे बादशाहने कहा होगा, जिससे यह नाम मश्हूर हुआ. दूसरा सबब यह भी है, कि इन्होंने चारणोंके कुल गांवोंपर विक्रमी १६४३ [हि० ९९४ = ई० १५८६] में इस ग़रज़से ज़ब्ती भेज दी थी, कि कुछ रुपये वुसूल करें, जिसपर दो हज़ार चारण तागा (खुद कुशी) करके मरगये; उन चारणोंमेंसे नामी और मश्हूर दुर्सा आढ़ा था, उसने भी अपने गलेमें छुरी मारी थी, जब वह बादशाहके पास गया, और दर्याफ़्त करनेपर सब हाल अर्ज़ किया, तो जितने राजा व राजपूत वहां खड़े थे, सबने राजा उदयसिंहकी हिक़ारत की; तब बादशाहने फ़र्माया, कि ऐसे आदमीका नाम ज़बानपर लाना ठीक नहीं, उसी वक़से "मोटा राजा" कहने लगे; जिससे दोनों मत्लब निकलते हैं, याने एक तो मोटा बदन देखकर, दूसरा तानेसे "मोटा (बड़ा) राजा" मश्हूर हुआ, जैसे कि अक्सर लोग किसी बुरे आदमीको बाज़ मौक़ेपर "भला आदमी" या "बड़ा आदमी" कहते हैं.

इस राजाके १६ बेटे थे, १- नरहरदास, जो विक्रमी १६१३ माघ कृष्ण १ [हि० ९६४ ता० १५ सफ़र = ई० १५५६ ता० १९ डिसेम्बर] को पैदा हुआ, २- भगवानदास, विक्रमी १६१४ आश्विन कृष्ण १४ [हि० ९६४ ता० २८ ज़िल्क़ाद = ई० १५५७ ता० २३ सेप्टेम्बर] को, ३- शक्तिसिंह विक्रमी १६२४ [हि० ९७४ = ई० १५६७] में, ४- दलपत विक्रमी १६२५ श्रावण कृष्ण ९ [हि० ९७६ ता० २३ मुहर्रम = ई० १५६८ ता० २१ जुलाई], ५- भोपतसिंह विक्रमी १६२५ कार्तिक शुक्ल ६ [हि० ९७६ ता० ४ जमादियुल अव्वल = ई० १५६८ ता० २९ ऑक्टोबर], ६- सूरसिंह विक्रमी १६२७ वैशाख कृष्ण ३० [हि० ९७७ ता० २९ शव्वाल = ई० १५७० ता० ४ एप्रिल] को, ७- मोहनदास विक्रमी १६२८ [हि० ९७९ = ई० १५७१], ८- कृष्णसिंह वि० १६३९ ज्येष्ठ कृष्ण २ [हि० ९९० ता० १६ रबीउस्सानी = ई० १५८२ ता० १० मई] को हुआ, ९- अभयराज, १०- तेजसी, ११- माधवसिंह, १२- कीर्तिसिंह, १३- जशवन्तसिंह, १४- करणमल्ल, १५- केशवदास और १६- रामसिंह था.

---

३१ राजा सूरसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १६२७ वैशाख कृष्ण ३० [हिज्री ९७७ ता० २९ शव्वाल = ई० १५७० ता० ४ एप्रिल] को हुआ था. इनको बादशाहने लाहौरमें उदयसिंहकी जगह

क़ाइम किया, दूसरे बेटे इनसे बड़े थे, लेकिन् राजा उदयसिंहने सूरसिंहकी माके लिहाज़से (जिससे कि वह बहुत खुश थे) बादशाहसे कहदिया था, कि मेरी जगहपर सूरसिंहको क़ाइम करना चाहिये, इससे अक्बरशाहने सूरसिंहको जोधपुरका राजा बनाया. विक्रमी १६५३ [हि० १००५ = ई० १५९६] में बादशाह अक्बरका शाहज़ादह सुल्तान मुराद गुजरातकी हुकूमतपर मुक़र्रर हुआ, उसके साथ सूरसिंह भी थे. जब गुजरातके जागीरदार लोग शाहज़ादह मुरादके साथ दक्षिणकी मुहिम्पर चले गये, और मुज़फ़्फ़र गुजरातीके बड़े बेटे बहादुरने गंवारोंकी जमइयत इकट्ठी करके वहांके गांवोंको लूटना शुरूअ् किया, तब यह उसके मुक़ाबलेके वास्ते अहमदाबादसे निकले; जब दोनों तरफ़की फ़ौजें तय्यार होगईं, बहादुर कम हिम्मतीसे भाग गया. सुल्तान मुरादके मरने बाद विक्रमी १६५४ [हि० १००६ = ई० १५९७] में दक्षिणकी हुकूमत सुल्तान दानयालके नाम हुई; तब सूरसिंह भी उसके साथ भेजेगये, और शाहज़ादहने राजू दक्षिणीकी तंबीहके वास्ते दौलतख़ां लोदीके साथ सूरसिंहको भेजा. विक्रमी १६५९ ज्येष्ठ कृष्ण ३० [हि० १०१० ता० २९ ज़िल्क़ाद = ई० १६०२ ता० २१ एप्रिल] को ख़ानख़ानां अब्दुर्रहीमके साथ खुदावन्दख़ां हबशीकी तंबीहके वास्ते, जिसने कि पालम वग़ैरहमें फ़साद उठा रक्खा था, रुख़्सत हुआ; राजाने उस सूबेमें सर्कारकी ख़ातिरख़्वाह ख़िद्मत की थी, इसको शाहज़ादह दानयाल और ख़ानख़ानांकी अर्ज़के मुवाफ़िक़ नक़ारा इनायत हुआ.

विक्रमी १६६५ चैत्र शुक्ल १३ [हि० १०१६ ता० १२ ज़िल्हिज = ई० १६०८ ता० २९ मार्च] को सूरसिंह बादशाह जहांगीरके हुज़ूरमें हाज़िर हुए. और उसी सन् में बादशाहके चौथे जुलूसपर अस्ल और इज़ाफ़ह मिलाकर चार हज़ारी ज़ात व दो हज़ार सवारका मन्सब पाया, और मन्सबदारोंके साथ दक्षिणके सूबहदार ख़ानख़ानांकी मददको मुक़र्रर होकर वहां भेजे गये. बादशाह जहांगीरके वक़्तमें उदयपुरकी लड़ाईमें महाबतख़ांने सोजतका पर्गनह छीन लिया, लेकिन् विक्रमी १६६८ [हि० १०२० = ई० १६११] में अब्दुल्लाख़ां फ़ीरोज़जंगने फिर इन्हींको देदिया. महाराजाका मुसाहिब गोविन्ददास भाटी था, पहिले कुल राठौड़ महाराजाके साथ भाई चारेके हक़से बराबरीका दावा रखते थे. गोविन्ददासने नीचे लिखे मुवाफ़िक़ रियासतका इन्तिज़ाम किया :- दीवान, बख़्शी, ख़ानसामां, हाकिम, कारकुन, दफ़्तरी, दारोग़ा, फ़ोतहदार, वाक़िअ़ह नवीस वग़ैरह बनाये; राव रणमल्ल, राव जोधा, सूजा, गांगा, मालदेव और उदयसिंहकी औलाद वाले, जो सब बराबरीका दावा रखते थे, उनको ताबेदार करके दर्बारमें

दाहिनी, बाई तरफ़ बैठनेका तरीका चलाया; दाहिनी तरफ़ राव रणमल्लकी औलादमेंसे आउवाके चांपावतोंको और बाई तरफ़ राव जोधाकी औलादमेंसे रीयांके मेड़तियोंको अव्वल नम्बर क़ाइम किया; शादी ग़मीमें उमराव, भाई, बेटोंकी औरतोंका रिश्तहदारीके हक़से ज़नानख़ानहमें जानेका तरीक़ह बन्द किया; ख़वास, पासवान दरजे बदरजे बनाये; महाराजाकी ढाल, तलवार रखनेका काम खीचियोंको, और चंवर करनेकी ख़िदमत धांधलोंको सौंपी; ग़रज़ इस तरह सब रियासती ढंग बनाया. यह बात महाराजा सूरसिंहके भाइयोंको नागवार मालूम हुई. जब बादशाह जहांगीर उदयपुरके महाराणा अमरसिंहपर चढ़ाई करके अजमेर आया, तब दक्षिणसे सूरसिंहको भी बुलाकर पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब दिया; और शाहज़ादह खुर्रमके मातहत उदयपुर भेजा; शाहज़ादहने उनको बड़ी सादड़ीके थानेपर तईनात किया. मेवाड़की लड़ाई ख़त्म होने बाद विक्रमी १६७२ ज्येष्ठ शुक्ल ८ [हि० १०२४ ता० ६ जमादियुल् अव्वल = ई० १६१५ ता० ६ जून] को राजा सूरसिंहके भाई राजा कृष्णसिंहने गोविन्ददास भाटीको मार डाला, क्योंकि पहिले गोविन्ददासने भगवानदास उदयसिंहोतके बेटे गोपालदासको मारा था; राजा कृष्णसिंह भी इसी झगड़ेमें मारा गया. इस मारिकेका ज़िक्र तफ्सीलवार कृष्णगढ़के इतिहासमें लिखा गया है. इसके बाद महाराजा सूरसिंह दो महीनेकी रुख़्सत लेकर जोधपुर आये. दोबारह अपने कुंवर गजसिंह समेत बादशाही हुज़ूरमें पहुंचे, और दक्षिणकी तरफ़ भेजे गये.

विक्रमी १६७६ भाद्रपद शुक्ल ९ [हिज्री १०२८ ता० ७ शव्वाल = ई० १६१९ ता० १९ सेप्टेम्बर] को दक्षिणमें महेकरके थानेपर सूरसिंहका इन्तिक़ाल हुआ. यह राजा बड़े बहादुर, फ़य्याज़ और मुल्कदारीमें होश्यार थे. इन्होंने अपने मुल्कका इन्तिज़ाम बहुत अच्छा किया, जिनके बांधे हुए तरीक़े मारवाड़में अब तक जारी हैं. राव मालदेवके सिवाय मारवाड़का पूरा राजा इन्हींको कहना चाहिये. लेकिन् इतना फ़र्क़ है, कि मालदेवने आज़ादीकी हालतमें मुल्क बढ़ाया, और इसके सिवाय वह ज़ालिम व मग़रूर भी था; यह दूसरेकी तावेदारीमें बढ़े, और सख़्त मिज़ाजीमें भी बढ़कर नहीं थे. इनके दो बेटे १- गजसिंह, २- सबलसिंह थे; दूसरेका जन्म विक्रमी १६६४ [हि० १०१६ = ई० १६०७] में हुआ था. इसने अपने बापसे फलोदी और बादशाहसे गुजरातमें जागीर पाई थी; यह विक्रमी १७०३ फाल्गुन् कृष्ण ३ [हि० १०५७ ता० १७ मुहर्रम = ई० १६४७ ता० २३ फ़ेब्रुअरी] में नौकरके ज़हर दे देनेसे मरगया.

३२ राजा गजसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १६५२ कार्तिक शुक्ल ८ गुरुवार [हि० १००४ ता० ६ रबीउल् अव्वल = ई० १५९५ ता० ११ नोवेम्बर] को हुआ था. राजा सूरसिंहके मरने बाद इनको जहांगीरशाहने तीन हज़ारी ज़ात व दो हज़ार सवारका मन्सब, नेज़ा और राजाका ख़िताब दिया; यह दक्षिणकी फ़ौजमें अपने बापकी जगह महेकरके थानेपर तईनात थे; जब गुजरातकी बाग़ी फ़ौजने इनको आघेरा, तब इन्होंने बड़ी बहादुरीके साथ उन्हें पीछे हटादिया, और दूसरी भी कई लड़ाइयोंमें दक्षिणियोंपर फ़त्ह पाई, जिसपर खुश होकर बादशाह जहांगीरने "दल थंभन" का ख़िताब और एक हज़ारी ज़ात व सवारके इज़ाफ़ेसे चार हज़ारी ज़ात व तीन हज़ार सवारका मन्सब दिया.

विक्रमी १६७९ [हि० १०३१ = ई० १६२२] में शाहज़ादह खुर्रम दक्षिणमें भेजा गया. तो यह रुख़्सत होकर जोधपुर आये; फिर बादशाहसे शाहज़ादह खुर्रम बाग़ी हुआ, उसके मुक़ाबलेके लिये शाहज़ादह पर्वेज़ और महाबतख़ांके साथ विक्रमी १६८० ज्येष्ठ कृष्ण ५ [हि० १०३२ ता० १९ रजब = ई० १६२३ ता० १९ मई] को यह पांच हज़ारी ज़ात, व चार हज़ार सवारका मन्सब पाकर मुक़र्रर हुए, और इनको पहिली तरक़्क़ीके साथ जालौर और दूसरी तरक़्क़ीके साथ फलौदीका पर्गनह मिला; इसी वर्षमें मेड़ता भी मिलगया.

विक्रमी १६८१ कार्तिक शुक्ल १५ [हि० १०३४ ता० १४ सफ़र = ई० १६२४ ता० २६ नोवेम्बर] को शाहज़ादह पर्वेज़की फ़ौजसे शाहज़ादह खुर्रमका मुक़ाबला हुआ, इस लड़ाईमें राजा गजसिंहने पर्वेज़की मातह्तीमें बड़ी बहादुरी दिखलाई. खुर्रमकी तरफ़ राजा भीम मारागया, और खुर्रम भाग निकला.

विक्रमी १६८४ माघ [हि० १०३७ जमादियुस्सानी = ई० १६२८ फ़ेब्रुअरी] में जहांगीरके बाद शाहजहां बादशाह हुआ; जब शाहजहां आगरेमें आया, तब यह उसी सन् में बादशाहके पास गये; शाहजहांने ख़ास ख़िल्अ़त, जड़ाऊ जम्धर फूल कटारा समेत, जड़ाऊ तलवार और पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब जो जहांगीरके अ़ह्दमें था, निशान, नक़ारह, घोड़ा ख़ास सुनहरी ज़ीन समेत और ख़ास हल्क़ेका हाथी दिया. विक्रमी १६८६ फाल्गुन् कृष्ण ६ [हि० १०३९ ता २० जमादियुस्सानी = ईसवी १६३० ता० ३ फ़ेब्रुअरी] को ख़ानेजहां लोदी सर्कशीसे निज़ामुल्मुल्क दक्षिणीके पास भागकर चलागया; तब बादशाहने निज़ामुल्मुल्क वग़ैरहकी बर्बादीके वास्ते

राजधानीसे दक्षिण जानेका इरादह किया, और तीनों फ़ौजें तीन अमीरोंकी सर्दारीसे तज्वीज़ हुईं, एक फ़ौजके सर्दार यह राजा मुक़र्रर होकर दक्षिणके सूबहदार आज़मख़ांके साथ रुख़्सत हुए. विक्रमी १६८७ पौष [हि० १०४० जमादियुस्सानी = ई० १६३१ जैन्युअरी] में, जब आसिफ़ख़ां, आदिलख़ांकी तंबीहके वास्ते मुक़र्रर हुआ, यह उसकी हरावलमें थे; वहांसे लौटकर अपनी राजधानीको चले आये. विक्रमी १६८९ पौष [हि० १०४२ जमादियुस्सानी = ई० १६३२ डिसेम्बर] में बादशाही हुजूरमें गये, दोबारह ख़ास ख़िल्अ़त और सुनहरी ज़ीन समेत घोड़ा इनायत हुआ. विक्रमी १६९३ कार्तिक [हि० १०४६ जमादियुस्सानी = ई० १६३६ नोवेम्बर] में घर जानेकी रुख़्सत पाई.

वि० १६९४ कार्तिक [हि० १०४७ जमादियुस्सानी = ई० १६३७ नोवेम्बर] में यह अपने बेटे जशवन्तसिंह समेत बादशाही दर्बारमें हाज़िर हुए, जहां इनको बीमारी हुई, और वि० १६९५ ज्येष्ठ शुक्ल ३ [हि० १०४८ ता० २ मुहर्रम = ई० १६३८ ता० १७ मई] को आगरे में देहान्त होगया. यह राजा फ़य्याज़ी, सख़ावत और दिलेरीमें बड़े मश्हूर थे; इन्होंने चौदह लाख पशाव (१) नीचे लिखे लोगोंको दिये :-

(१) चारण भादा अजा, कृष्णावत. (२) चारण आड़ा दुर्सा, मेहराजोत.
(३) चारण आड़ा कृष्णा, दुर्सावत. (४) चारण बारहठ राजसी, अखावत.
(५) चारण महडू कल्याणदास, जाड़ावत. (६) चारण संडायच हरीदास, बाणावत.
(७) चारण कविया पचांयण. (८) चारण दधिवाड़िया जीवराज, जयमलोत.
(९) भाट मनोहर. (१०) बारहठ राजसी, प्रतापमलोत.
(११) चारण कविया भवानीदास, नाथावत. (१२) चारण केसा, मांडण.
(१३) भाट गोकलचन्द, ताराचंदोत. (१४) सामोर हेमराज.

---

(१) राजपूतानामें लाख पशाव देनेका यह क़ाइदह है, कि पांच हज़ार का ज़ेवर अपने पहननेका, पांच हज़ारका ज़ेवर घोड़े हाथियोंका और एक हाथी व घोड़े जो दो से कम न हो, और नक़्द पच्चीस हज़ारसे लेकर पचास हज़ार तक, बाक़ीके एवज़में गांव एक हज़ार रुपये सालानहकी आमदनीसे पांच हज़ार रुपये सालानह तककी आमदनीका दियाजाता है; और उस कविको हाथीपर राजा ख़ुद हाथ पकड़कर सवार करता है; बाज़ वक़् अपने कन्धेपर कविका पैर दिलाकर भी चढ़ाते थे, और जलेब में मर्ज़ी हो, तो कुछ दूर तक राजा चले, वर्नह अपने बड़े सर्दार या प्रधानको मकान तक जलेबमें भेजे, यह बर्ताव राजाकी मर्ज़ीपर कम या ज़ियादह होसक्ता है; लेकिन दानमें कमी करने का क़ाइदह नहीं है.

इसके सिवाय और भी कई वार चारणोंको लाख पशाव वग़ैरह दिया; इन्होंने मुल्की इन्तिज़ाम अच्छा किया; इनके तीन बेटे हुए, जिनमेंसे १- अमरसिंह थे, जिनको जोधपुरकी गद्दी नहीं मिलनेका कारण आगे लिखा जायगा; २- अचलसिंह, जो बचपनमें मरगये; ३- जशवन्तसिंह थे, जिन्होंने राज पाया.

३३ महाराजा जशवन्तसिंह अव्वल.

इनका जन्म वि० १६८३ माघ कृष्ण ४ मंगलवार [हि० १०३६ ता० १८ रबीउस्सानी = ई० १६२७ ता० ६ जैन्युअरी] को हुआ. अमरसिंह इनसे बड़े थे, लेकिन् महाराजा गजसिंहने मरते वक्त शाहजहांसे अर्ज़ की थी, कि मेरे बाद छोटा कुंवर जशवन्तसिंह जोधपुरका मालिक हो; बादशाहने वैसा ही किया. इसके कई सबब मारवाड़की तवारीख़ोंमें लिखे हैं; अव्वल एक अनारां नाम पातर महाराजा गजसिंहकी ख़वास थी, जिसको अमरसिंह कम दरजा जानकर नफ़त करते थे, और जशवन्तसिंहने एक दिन अनारांकी जूतियां उठाकर उसके साम्हने रखदीं, जिससे उसने खुश होकर महाराजासे सिफ़ारिश की; महाराजा अनारांसे निहायत खुश थे, उसके कहनेसे जशवन्तसिंहको अपना वलीअह्द किया. दूसरे बीकानेरकी तवारीखमें लिखा है, कि रीवांके बघेले राजकुमारके साथ गजसिंहकी बेटीकी शादी हुई थी, वह जोधपुर आया, और ज़बानी तक्रारमें अमरसिंहके हाथसे मारागया, जिसपर गजसिंहने नाराज़ होकर उसे राजसे ख़ारिज किया. तीसरे यह लिखा है, कि अमरसिंह ज़ियादह बदकार था, उसकी दोस्ती किसी शाहज़ादीके साथ होगई, महाराजाने डरकर और रिश्तहदारीमें ऐसा बुरा काम देखकर उसे ख़ारिज किया; बादशाह नामह वग़ैरह फ़ार्सी तवारीख़ोंमें यह लिखा है, कि गजसिंहने अपने छोटे बेटे जशवन्तसिंहको अपना वारिस बनानेकी बादशाहसे अर्ज़ की, क्योंकि वह जशवन्तसिंहकी मासे खुश था; यह रवाज राठौड़ोंके सिवाय और राजपूतों में नहीं है (१). इन ऊपर लिखे सबबोंसे अमरसिंहका हक़ मारागया,

---

(१) जैसा कि राव मल्लीनाथके छोटे भाई वीरमदेवका बेटा चूंडा मंडोवरका मालिक हुआ, और चूंडाके बड़े बेटे रणमल्ल वग़ैरहसे छोटा कान्ह मंडोवरका राव हुआ. राव मालदेवके बड़े बेटों रामसिंह, उदयसिंह वग़ैरहसे छोटा चन्द्रसेन गद्दीका मालिक बना, चन्द्रसेनके बेटोंमें छोटा आशकरण हक़दार माना गया, और महाराजा उदयसिंहके बेटोंमेंसे छोटा बेटा सूरसिंह जोधपुरका मालिक बना; इसी तरह गजसिंहका छोटा बेटा जशवन्तसिंह वलीअह्द बनाया गया.

और बादशाह शाहजहांने गजसिंहकी अर्जके मुवाफ़िक़ जशवन्तसिंहको ख़िल्अ़त, जड़ाऊ जमधर, चार हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब, राजाका ख़िताब, निशान, नक़ारह, सुनहरी ज़ीन समेत ख़ासह घोड़ा, और हाथी इनायत किया. जशवन्तसिंहका बड़ा भाई अमरसिंह, जो हुक्मके मुवाफ़िक़ शाहज़ादह मुल्तान शुजाअ़के साथ काबुल गया था, तीन हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार और रावके ख़िताबसे सर्फ़राज़ हुआ.

विक्रमी १६९५ [हि० १०४८ = ई० १६३८] में राजसिंह राठौड़, जो बादशाही नौकरीमें एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवारका मन्सब रखता था, ज़ुरूरतके सबब राजाका प्रधान बनाया गया, कि उसका मुल्की काम करता रहे; इसी वर्षके विक्रमी पौष [हि० रमज़ान = ई० १६३९ जैन्युअरी] में राजा जशवन्तसिंहको बादशाहने एक हज़ारी ज़ात, हज़ार सवारकी तरक़्क़ीसे पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवारका मन्सब दिया; इसके बाद बादशाहके साथ काबुलकी मुहिम्पर गये, वहांसे वापस आनेपर जोधपुर जानेकी रुख़्सत पाई. विक्रमी १६९९ [हि० १०५२ = ई० १६४२] में शाहज़ादह दाराशिकोहके साथ राजा जशवन्तसिंहको मए दूसरे राव राजाओंके क़न्धार भेजा, ता कि ईरानका बादशाह उसे फ़त्ह न करले. जो साथ गये, उनका तफ़्सीलवार हाल मए फ़िहरिस्तके नीचे लिखा जाता है:-

क़न्धारका सूबह जो बादशाह जहांगीरके वक़्में ईरानियोंने ले लिया था, शाहजहांके अ़ह्दमें फिर हिन्दुस्तानके शामिल हुआ; इसी संवत् में शाहजहांने सुना, कि ईरानका बादशाह क़न्धारपर चढ़ाई करनेको तय्यार है, तब उसने ख़ुद जानेका इरादह किया, लेकिन् बड़े शाहज़ादह दाराशिकोहने अ़र्ज़ की, कि आप यहीं रहें, और मुझे भेजें; बादशाहने मंजूर करके पचास हज़ार सवार, बहुतसे हाथी, घोड़े, तोपख़ानह व ख़ज़ानह वगैरह साथ दिया; और ख़ासह ख़िल्अ़त, नादिरी, क़ीमती जीग़ह मोती और हीरेका, क़ीमती सर्पेच, लाल वगैरह समेत, पांच हज़ार सवारकी तरक़्क़ीसे बीस हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब, दो ख़ासह घोड़े, एक हाथी व हथनी और बारह लाख रुपया नक़द इन्आ़म देकर रवानह किया; उनके साथी सर्दारोंमें से, जिन्हें ख़िल्अ़त और इन्आ़म दिया, उनके नाम ये हैं:-.

(१) सय्यद ख़ानेजहां बहादुरको ख़ासह ख़िल्अ़त, जड़ाऊ तलवार, दो ख़ासह घोड़े और एक हाथी.

(२) राजा जशवन्तसिंह और राजा जयसिंहको ख़ासह ख़िल्अ़त, जड़ाऊ जम्धर, फूलकटारा, ख़ासह घोड़ा और ख़ासह हाथी.

(३) रुस्तमखांको खासह खिल्अ़त, घोड़ा, और पांच हज़ारी मन्सब मए पांच हज़ार सवार दो अस्पा सिह अस्पा.
(४) क़िलीचखां, बहादुरखां, व अल्लाहवर्दीखांको खासह खिल्अ़त और घोड़ा.
(५) नागोरके राव अमरसिंहको खासह खिल्अ़त और मन्सब चार हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार, और एक घोड़ा मए ज़ीनके.
(६) मुबारिज़खां, फ़िदाईखां, व सर्दारखांको खिल्अ़त और घोड़ा.
(७) अमालतखांको खिल्अ़त, घोड़ा और नक़ारह.
(८) खलीलुल्लाहखांको खिल्अ़त, घोड़ा, नेज़ा और नक़ारह.
(९) राजा रायसिंहको खिल्अ़त, चार हज़ारी मन्सब और घोड़ा.
(१०) राव शत्रुशालको खिल्अ़त और घोड़ा.
(११) नज़र बहादुरको खिल्अ़त और तीन हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवारका मन्सब, घोड़ा और नक़ारह.
(१२) शेख फ़रीद, राजा जगत्सिंह, जांनिसारखां और सरन्दाज़खांको खिल्अ़त और घोड़ा.
(१३) वफ़ा नाज़खां, हरीसिंह और महेशदासको खिल्अ़त, घोड़ा और नेज़ा.
(१४) रामसिंह राठौड़को खिल्अ़त और घोड़ा.
(१५) चन्द्रमन बुन्देलेको खिल्अ़त, घोड़ा और नेज़ा.
(१६) राजा अमरसिंह नरवरी, गोकुलदास सीसोदिया, रायसिंह झाला और सय्यद नूरुलअ़यांको खिल्अ़त और घोड़ा.
(१७) सय्यद मुहम्मद, खलीलबेग, व तुर्क ताज़खां और मीरखांको खिल्अ़त, मन्सब हज़ारी ज़ात पांच सो सवार व घोड़ा.
(१८) सय्यद मन्सूर सय्यद खानेजहांके बेटेको खिल्अ़त मन्सब हज़ारी ज़ात, दो सो सवार व घोड़ा.

और मुल्तानसे सईदखां बहादुरको मए अपने बेटोंके, और काबुलसे सआ़दतखां, अक्बरकुली, सुल्तान कक्खड़, शादमां पगलीवाल और दूसरे मन्सबदार वगैरहको भेजा, लेकिन् ईरानका बादशाह आता हुआ काशानमें मरगया, जिससे बादशाही फ़ौज वापस आई.

विक्रमी १७०० आश्विन [हि० १०५३ शश्र्वान = ई० १६४३ ऑक्टोबर] में राजा जशवन्तसिंहको वतन जानेकी रुख़्सत मिली. विक्रमी १७०२ [हि० १०.. = ई० १६४५] में जशवन्तसिंह वतनसे हाज़िर हुए, और उनके मन्सब हज़ारी ज़ात व सवार में एक हज़ार सवारकी तरक़्क़ी दीगई.

विक्रमी १७०४ [हि० १०५७ = ई० १६४७] में पांच हज़ारी ज़ात, व सात हज़ार सवारका मन्सब पाया. विक्रमी १७०६ कार्तिक शुक्ल १५ [हि० १०५९ ता० १४ ज़िल्क़ाद = ई० १६४९ ता० २० नोवेम्बर] को जयसलमेरका रावल मनोहरदास मरगया, जिसका हक़दार सबलसिंह था, परन्तु वहांके सर्दारोंने रामचन्द्रको गद्दीपर बिठा दिया; सबलसिंह शाहजहांके पास रहता था, इससे उसकी मददके लिये बादशाहने महाराजा जशवन्तसिंहको फ़ौज देकर भेजा; महाराजाने जोधपुरसे रियांके मेड़तिया गोपालदास, पालीके चांपावत विठ्ठलदास गोपालदासोत, व कूंपावत नाहरखां राजसिंहोत आसोपको दो हज़ार सवार और ढाई हज़ार पैदल देकर सबलसिंहके साथ भेजा; विक्रमी १७०७ कार्तिक कृष्ण ६ शनिवार [हि० १०६० ता० २० शव्वाल = ई० १६५० ता० १६ ऑक्टोबर] को पोहकरणका क़िला फ़त्ह करलिया; यह क़िला महाराजा जशवन्तसिंहको सबलसिंहने देना किया था, जो उसी वक़्तसे भाटियोंके क़ब्ज़ेसे निकल गया, और अब तक जोधपुरके इलाक़हमें है. इसी फ़ौजने जयसलमेरको जा घेरा, रामचन्द्र भागगया, और महाराजाके सर्दारोंने सबलसिंहको जयसलमेरका रावल बनाया.

जब शाहजहां बादशाहकी बीमारीके सबब उसके शाहज़ादोंमें लड़ाइयां हुई, तब महाराजा जशवन्तसिंहको सात हज़ारी ज़ात और सात हज़ार सवारका मन्सब देकर शाहज़ादह दाराशिकोहकी सलाहसे बादशाहने बीस हज़ार फ़ौजके साथ औरंगज़ेब और मुरादको रोकनेके लिये मालवेकी तरफ़ भेजा; वहां उज्जैनके पास विक्रमी १७१५ वैशाख कृष्ण ८ [हि० १०६८ ता० २२ रजब = ई० १६५८ ता० २५ एप्रिल] को खूब लड़ाई हुई, और महाराजा जशवन्तसिंहके साथी क़ासिमखां वग़ैरह आलमगीरसे मिलगये; जिससे आलमगीर और मुरादकी फ़ौजने फ़त्ह पाई. महाराजा अपने आठ हज़ार राजपूतोंमेंसे बचे हुए छः सौ राजपूतोंको लेकर जोधपुर पहुंचे; वहां उनकी राणी बूंदीके राव शत्रुशालकी बेटीने क़िलेके किवाड़ बन्द करवाकर महाराजाको अन्दर नहीं आने दिया, और ख़बर देने वालोंको कहा कि, "मेरा पति लड़ाईसे भागकर नहीं आवेगा, वह वहां ज़रूर मारागया है. और यह, जो आया है, बनावटी होगा, मेरे लिये जलनेकी तय्यारी करो." इन झिड़कियोंसे महाराजाने शर्मिन्दह होकर महाराणीसे कहलाया कि, "मैं बहुत बड़ी लड़ाई लड़कर आया हूं, मेरा ज़िरह बक्तर और घोड़ा देखना चाहिये, कैसे छिन्न भिन्न होरहे हैं, और मैं इसलिये आया हूं, कि यहांसे जमइयत बनाकर आलमगीरसे फिर लड़ूं." ऐसी बातोंसे महाराणीको बड़ी मुश्किलोंके साथ समझाया; तब

महाराजाको भीतर आने दिया; लेकिन् जब महाराजाके साम्हने भोजन रक्खागया, तो महाराणीने लकड़ी, मिट्टी और पत्थरके बरतनोंमें परोसकर आगे धरा; महाराजाने कहा, कि खानेके बरतन इस तरहके क्यों लायेगये ? महाराणीने जवाब दिया, कि धातुके शस्त्रोंकी आवाज़से डरकर आप यहां चले आये हैं, अगर यहां भी धातुके बरतनोंका खड़का आपके कानमें पड़े, तो न जाने क्या हालत हो; इसपर महाराजाने बहुत शर्मिन्दह होकर महाराणीसे कहा, कि मैं अब जो लड़ाइयां करूं, वह सुनलेना. इस बातका ज़िक्र बर्नियर भी अपनी किताबकी पहिली जिल्दके ४७ वें एष्ठमें इस तरह लिखता है:-

"जब जशवन्तसिंहकी राणीने, जो राणाकी बेटी (१) थी, यह खबर सुनी, कि वह क़रीब ५०० दिलेर राजपूतोंके साथ ज़ुरूरतके सबब (लेकिन् वे इज़्ज़तीके साथ नहीं) लड़ाईका खेत छोड़कर आरहा है; तब उस दिलेर सिपाहीके बचकर आनेका धन्यवाद देने और उसकी मुसीबतपर तसल्ली करनेके एवज़ उसने यह सख़्त हुक्म दिया, कि क़िलेके किवाड़ उसके बर्ख़िलाफ़ बन्द करदेने चाहियें. उसने कहा, कि यह आदमी बेइज़्ज़तीसे भरा हुआ है, इन दीवारोंके भीतर नहीं आसक्ता. मैं उसे अपना ख़ाविन्द नहीं कुबूल करती; मेरी आंखें जशवन्तसिंहको फिर नहीं देख सक्तीं. राणाका जमाई उसके मुवाफ़िक़ होगा, पस्त हिम्मत नहीं होसक्ता; जो राणाके बड़े नामी ख़ानदानसे रिश्तह रखता है, उसकी सिफ़तें उस बड़े आदमीके मुवाफ़िक़ होनी चाहियें; अगर वह फ़तह न करसके, तो उसको मर जाना चाहिये. थोड़ी देरके बाद वह चिल्लाई, कि चिता तय्यार करो, मैं अग्निमें अपना शरीर जला दूंगी; मुझे धोखा हुआ है, मेरा शौहर हक़ीक़तमें मरगया है; उसका ज़िन्दह रहना मुम्किन नहीं. फिर गुस्सेमें आकर बहुत मलामत करने लगी, आठ या नव दिन तक उसकी यही हालत रही; उसने अपने शौहरको देखनेसे बराबर इन्कार किया; लेकिन् राणीकी माके आजानेसे उसकी तबीअ़त कुछ नर्म हुई; उसने अपनी बेटीको राजाके नामपर वादा करके तसल्ली दी, कि थकावट दूर होनेपर वह दूसरी फ़ौज एकट्ठी करके औरंगज़ेबपर हमलह करेगा, और अपनी बेइज़्ज़तीको दूर करेगा."

औरंगज़ेब, दाराशिकोहपर आगरेके पास फ़तह पाने बाद अपने बाप शाहजहां

---

(१) यह राणी महाराणाकी बेटी नहीं थी, बूंदीके राव शत्रुशाल हाड़ाकी बेटी और महाराणा राजसिंहकी साली थी.

और छोटे भाई मुरादको कैद करके दाराशिकोहके पीछे लाहौरकी तरफ़ रवानह हुआ; तब जयपुरके राजा जयसिंहके समझानेसे जशवन्तसिंह भी औरंगज़ेबके पास आगये; परन्तु उनका दिल साफ़ नहीं था. औरंगज़ेब पंजाबसे दाराको निकालकर वापस आया; और शाहज़ादह शुजाअ्से मुक़ाबला करनेको बंगालेकी तरफ़ चला; इलाहाबादके पास खजुआ गांवसे आगे बढ़कर विक्रमी १७१५ माघ कृष्ण ६ [हि० १०६९ ता० १९ रबीउस्सानी = ई० १६५९ ता० १२ जैन्युअरी] को अपने भाई शुजाअ्से मुक़ाबला करनेके लिये फ़ौजकी दुरुस्ती की; तब हरावल, चंदावल और बाईं फ़ौजमें दूसरे लोगोंको जमाकर दाहिनी फ़ौजका अफ़्सर मए अपनी फ़ौज व राजपूतोंके महाराजा जशवन्तसिंहको बनाया; और महेशदास राठौड़, मुहम्मदहुसैन सलदोज़, मीर अज़ीज़ बदख़्शी, बल्लू चहुवान, रामसिंह और हरदास राठौड़ इन्हींके शामिल किये गये; शुजाअ्की फ़ौजसे मुक़ाबला शुरूअ् हुआ; रात होजानेके कारण दोनों तरफ़से लड़ाई बन्द हुई; लेकिन् घोड़ोंसे ज़ीन और आदमियोंसे हथियार अलग नहीं किये गये; क्योंकि एक को दूसरेका डर था. इसी रातमें औरंगज़ेबकी फ़ौजसे शाहज़ादह शुजाअ्को महाराजा जशवन्तसिंहने कहला भेजा, कि हम आज पिछली रातको औरंगज़ेबके लश्करमें छापा मारकर लूट खसोट करते निकलेंगे; उस वक़्त औरंगज़ेब फ़ौज समेत हमारा पीछा करेगा; आपको मुनासिब है, कि औरंगज़ेबकी फ़ौजपर पीछेसे टूट पड़ें.

इस शर्तके मुवाफ़िक़ महाराजा जशवन्तसिंहने, जो दिलसे शाहजहांके ख़ैरख़्वाह और दाराके दोस्त थे, पिछली चार पांच घड़ी रात रहे बग़ावतका झंडा खड़ा किया; उनके शरीक महेशदास राठौड़, रामसिंह राठौड़, हरदास राठौड़ और बल्लू चहुवान वगैरह होगये थे. उन्होंने पहिले शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तानके लश्कर को, जो इनके नज़्दीक था, लूटा; उसको लूटनेके बाद बादशाही लश्करपर छापा मारा, जो चीज़ मिली लूट ली; और जो साम्हने पड़ा, उसे मारडाला; इससे औरंगज़ेबके लश्करमें तहलका मचगया, जिसका जिधर जी चाहा भागा, और जो लोग औरंगज़ेबके दबावसे आमिले थे, वे भी जशवन्तसिंहके शरीक होकर माल, ख़ज़ानह, हथियार, चौपाये लूट लेगये; और हरावलके लोग मारे ख़ौफ़के भागकर बादशाही डेरोंमें आ छिपे; बहुतसे लोग घबराकर उसी वक़्त शाहज़ादह शुजाअ्से जा मिले; लेकिन् दिलेर औरंगज़ेब बिल्कुल न घबराया, और दूसरी सवारियोंको छोड़कर तामझाम पर सवार हुआ, और अपनी फ़ौजमें फिरने लगा; उसने हुक्म दिया, कि कोई अपनी जगहसे न हिले, और जो भागता नज़र आवे, उसको गिरिफ़्तार करके हमारे पास लावें; फिर अपने लोगोंसे कहा, कि हम जशवन्तसिंहकी इस बग़ावतको ग़नीमत जानते हैं, कि जो ख़ैरख़्वाह और बदख़्वाह थे, मालूम होगये; वर्नह

मुक़ाबलेके वक्त मुश्किल पेश आती. बहुतसे लोग महाराजा जशवन्तसिंहके साथ निकल भागे, कितने एक शुजाअ्से जा मिले, और कुछ तित्तर बित्तर होगये. उस वक्त औरंगज़ेबकी फ़ौज आधीसे भी कम रहगई थी, लेकिन् इस होनहार बादशाहका दिल वैसा ही मज़्बूत बना रहा, जैसा कि पहिले था.

महाराजा जशवन्तसिंह अपने साथियों समेत जोधपुर पहुंचे; आलमगीर दिलसे जलता था, लेकिन् इस ज़बर्दस्त राजाको ज़ियादह अपने बर्ख़िलाफ़ करना मुनासिब न समझकर शुजाअ्की लड़ाईसे निश्चिन्त होनेके बाद आंबेरके महाराजा जयसिंहकी मारिफ़त फिर भी उसकी तसल्ली करवा दी; परन्तु महाराजा जशवन्तसिंहको आलमगीरका डर था, जिससे दाराशिकोहके साथ सलाह करके आलमगीरसे फिर लड़ना चाहा. दाराशिकोह महाराजा जशवन्तसिंहको अपना मददगार जानकर आलमगीरसे लड़नेके लिये अहमदाबादसे अजमेर पहुंचा; महाराजा जयसिंहने जशवन्तसिंहको रोका, जिससे वह जोधपुरमें ही रहे. दाराकी ख़राबी होने बाद आलमगीरने तसल्लीका फ़र्मान और ख़िल्अ़त भेजकर अहमदाबादका सूबहदार बनाया; दो वर्ष तक वहां रहे, धीरे २ उनका डर दूर होता गया, और वे बादशाही दर्बारमें आने जाने लगे; फिर दक्षिणकी लड़ाइयोंमें शायस्तहख़ांके साथ भेजे गये; वहांसे शिवा मरहटाकी मिलावटके शुब्हेसे बादशाहने बुलालिया; और विक्रमी १७२८ ज्येष्ठ कृष्ण ८ [हि० १०८२ ता० २२ मुहर्रम = ई० १६७१ ता० ३१ मई] को बर्सांती फ़र्गुल और ५०० अश्रफ़ीका घोड़ा देकर पेशावरके पास खैबरके घाटेमें जम्रोदके थानेपर भेजदिया. विक्रमी १७३१ [हि० १०८५ = ई० १६७४] में जम्रोदकी थानेदारीसे रावलपिंडीके मक़ामपर बादशाहके पास हाज़िर होकर वापस गये, जहांसे फिर न लौटे. और विक्रमी १७३५ पौष कृष्ण १० [हि० १०८९ ता० २३ शव्वाल = ई० १६७८ ता० ७ डिसेम्बर] को उसी थानेपर महाराजा जशवन्तसिंहका देहान्त हुआ.

यह महाराजा इक़ार पूरा करने वाले, बड़े बहादुर और फ़य्याज़ थे; इनके वक्तमें जोधपुरके राज्यमें सुख चैन रहा; मुसाहिब और अहलकार भी इनके अच्छे थे; बादशाह शाहजहांकी इनपर बड़ी मिहर्बानी रही; और दाराशिकोह इनका मददगार था. इनके पुत्र १- पृथ्वीसिंहका जन्म विक्रमी १७१० ... शुक्ल ५ [हि० १०६३ ता० ४ शअ्बान = ई० १६५३ ता० ३० जून] था, ये दिल्लीमें विक्रमी १७२४ ज्येष्ठ कृष्ण ११ [हि० १०७७ ता० ... = ई० १६६७ ता० १९ मई] को मरगये. २- जगतसिंहका जन्म वि[illegible]

कृष्ण ४ [हि० १०७७ ता० १८ रजब = ई० १६६७ ता० १४ जैन्युअरी] को हुआ, और चैत्र कृष्ण ७ [हि० २१ रमज़ान = ई० ता० १७ मार्च] की रात्रिको मरगये. ३- अजीतसिंहका जन्म विक्रमी १७३५ चैत्र कृष्ण ४ [हि० १०९० ता० १८ मुहर्रम = ई० १६७९ ता० १ मार्च] को हुआ, और ४- दलथंभन भी इसी तारीख़को दूसरी राणीसे पैदा हुए. इन महाराजाके साथ एक महाराणी चन्द्रावत रामपुरेके राव अमरसिंहकी बेटी, और २० ख़वास जोधपुरमें ख़बर आनेपर, और जमोदमें ८ ख़वास परदेवाली, कुल्ल २९ स्त्रियां सती हुईं.

३४ महाराजा अजीतसिंह.

इनका हाल इस तरह पर है, कि महाराजा जशवन्तसिंहके इन्तिकालके वक्त नरूकी महाराणी और महाराणी जादमणको गर्भ था, इसलिये राठौड़ सर्दारोंने उनको सती होनेसे रोका, और एक काग़ज़ जोधपुर लिख भेजा, कि बादशाही आदमी आवें तो फ़साद न करना.

इसके बाद सब राठौड़ दोनों राणियोंको साथ लेकर जमोदसे अटक नदीपर आये, दर्याई अफ़्सरोंने बग़ैर बादशाही पर्वानेके रोका; लेकिन् राठौड़ बादशाही लोगोंको मारकर उतर आये, और लाहौर पहुंचे, जहां दोनों महाराणियोंसे विक्रमी १७३५ चैत्र कृष्ण ४ [हि० १०९० ता० १८ मुहर्रम = ई० १६७९ ता० १ मार्च] को अजीतसिंह और दलथंभन पैदा हुए. वहांसे बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ सब लोग राणी और राज कुमारों समेत दिल्ली आये.

बादशाह आलमगीरने महाराजा जशवन्तसिंहके इन्तिकालकी ख़बर सुनतेही विक्रमी १७३५ फाल्गुन् शुक्ल १३ [हि० १०९० ता० ११ मुहर्रम = ई० १६७९ ता० २३ फ़ेब्रुअरी] को ताहिरख़ांको जोधपुरकी फ़ौज्दारी, ख़िद्मतगुज़ारख़ांको क़िलेदारी, शेख़ अनवरको अमानत और अब्दुर्रहीमको कोतवाली देकर मारवाड़ भेजा; और ख़ानेजहां बहादुरको हसनअलीख़ां वग़ैरह सर्दारों समेत मारवाड़ देशकी संभालके लिये रवानह किया. सय्यद अब्दुल्लाहको सिवानेके क़िलेपर महाराजा जशवन्तसिंहका अस्बाब संभालनेके लिये भेजा.

महाराजा जशवन्तसिंहके बेटे और राणियोंका डेरा कृष्णगढ़के राजा रूपसिंहकी हवेलीमें था. बहुतसे राजपूत पहिलेही मारवाड़को चलदिये थे, और आलमगीरने भी उनका जाना ठीक समझा. फिर नागोरके राव रायसिंहके बेटे इन्द्रसिंहको,
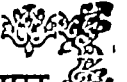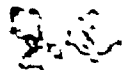
जिसने ३६ लाख रुपये नज़में दिये, फ़र्मान व ख़िल्अ़त वग़ैरह देकर जोधपुर भेज दिया. विक्रमी १७३६ श्रावण कृष्ण २ [हि० १०९० ता० १६ जमादि-युस्सानी = ई० १६७९ ता० २५ जुलाई] को बादशाहने सख़्त हुक्म दिया, कि फ़ौलादख़ां कोतवाल और सय्यद हामिदख़ां ख़ास चोकीके आदमियों समेत व दुर्गादख़ां और कमालुद्दीनख़ां, ख़्वाजह मीर वग़ैरह शाहज़ादह सुल्तान मुहम्मदके रिसालेके सवारों सहित जावें, और राणियों व जशवन्तसिंहके बेटेको, जिनका डेरा कृष्णगढ़के राजा रूपसिंहकी हवेलीमें है, नूरगढ़में ले आवें; और साम्हना करें, तो सज़ा दीजावे. दुर्गदास व सोनंग वग़ैरह राठौड़ पहिले ही दिन अजीतसिंहको लेकर मारवाड़की तरफ़ रवानह होगये थे, बाक़ी राजपूतोंने तलवारोंसे जवाब देकर मुक़ाबला किया. और बड़ी बहादुरीके साथ मग़ राणियोंके लड़ाईमें काम आये; उनके नाम नीचे लिखेजाते हैं:-

(१) राठौड़ रणछोड़दास, गोविन्ददासोत. (२) राठौड़ विट्ठलदास, बिहारीदासोत.
(३) राठौड़ चन्द्रभान, द्वारिकादासोत. (४) राठौड़ कुम्भा, कीर्तिसिंहोत.
(५) राठौड़ दीपा, केशवदासोत. (६) राठौड़ पृथ्वीराज, वीरमदेवोत.
(७) राठौड़ महासिंह, जगन्नाथोत. (८) राठौड़ जगतसिंह, रत्नसिंहोत.
(९) राठौड़ रामसिंह, श्यामसिंहोत. (१०) राठौड़ महासिंह, खींवावत.
(११) राठौड़ जुझारसिंह, राजसिंहोत. (१२) राठौड़ महेशदास, नाहरखानोत.
(१३) राठौड़ हिन्दूसिंह, सुजानसिंहोत. (१४) राठौड़ मोहनदास, धनराजोत.
(१५) राठौड़ भारमल्ल, दलपतोत. (१६) राठौड़ गोविन्ददास, मनोहरदासोत.
(१७) राठौड़ आशकरन, बाघावत. (१८) राठौड़ रघुनाथ, सूरजमलोत.
(१९) राठौड़ गोवर्धन, रामसिंहोत. (२०) राठौड़ जस्सू, अजबसिंहोत.
(२१) राठौड़ भीम, केसरखानोत. (२२) राठौड़ कृष्णसिंह, चान्दसिंहोत.
(२३) राठौड़ भाखरखान, मथुरादासोत. (२४) राठौड़ सुन्दरदास, हरीदासोत.
(२५) राठौड़ सुन्दरदास, ठाकुरसिंहोत. (२६) राठौड़ लक्ष्मीदास, नाथावत.
(२७) राठौड़ सेखदास, खेतसिंहोत. (२८) राठौड़ डूंगरसिंह, लाडखानोत.
(२९) राठौड़ उदयसिंह, जगन्नाथोत. (३०) राठौड़ पूर्णमल्ल, सूरदासोत.
(३१) राठौड़ अखैराज, कल्याणदासोत. (३२) चहुवान रघुनाथ, सुरतानोत.
(३३) भाटी उदयभान, केशरीसिंहोत. (३४) भाटी शक्तिसिंह, हरदासोत.
(३५) भाटी जगन्नाथ, विट्ठलदासोत. (३६) भाटी शक्तिसिंह कल्याणदासोत
(३७) भाटी द्वारिकादास, भाणावत. (३८) भाटी गिरधरदास, कान्हा
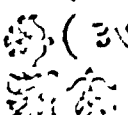
(३९) भाटी धनराज, बीकावत.
(४०) जोगीदास सोभावत.
(४१) राठौड़ सूरजमल्ल, नाथावत.
(४२) राठौड़ नारायणदास, पातावत.
(४३) पंचोली हरराय.
(४४) महता विष्णुदास.

और अठारह राजपूत दूसरे व वर्क़न्दाज़ गिरधर, सांखला आनन्द, रैबारी कुम्भा, और सुल्तान; बाक़ी घायल और बचे हुए मारवाड़में आये.

मआसिरे आलमगीरीमें दो राणियों और ३० राजपूतोंका माराजाना लिखा है, शायद इस पुस्तकके बनाने वालेने मशूहूर राजपूतोंकी गिन्ती लिखदी होगी. पहिले दिन दुर्गदास व सोनंग वगैरह महाराजा अजीतसिंहको ले निकले थे; कोतवालने एक लड़का घोसीके घरसे निकालकर पेश किया, और कहा, कि यही जशवन्तसिंहका बेटा है. बादशाहने उसे अपनी बेटी ज़ेबुन्निसा बेगमको पर्वरिशके लिये सौंपा, और उसका नाम मुहम्मदीराज रक्खा. इस जगह ख़याल होता है, कि कोतवालने अजीतसिंहके निकल जानेसे अपनी ग़फ़्लत छिपानेको किसी लौंडी वगैरह का लड़का पेश किया होगा, या बादशाहने ही अजीतसिंहको बनावटी जतलानेके लिये इस लड़केको अस्ली मशूहूर किया, अथवा दलथंभन, जो अजीतसिंहका छोटा भाई था, इस वक़ बादशाहके हाथ आगया; शायद उसके बड़े भाईके निकल जानेपर दलथंभनका पेश्तर मरजाना और अजीतसिंहका हाथ आजाना बादशाहने मशूहूर किया हो, जैसा कि मआसिरे आलमगीरीमें लिखा है. यह मुहम्मदीराज जवान होनेके पहिले आलमगीरके लश्करमें रहकर दक्षिणमें बबासे मरगया.

राठौड़ोंने अजीतसिंहको सिरोहीमें महाराजा जशवन्तसिंहकी राणी देवड़ीके पास पहुंचाया, और वहां कालिन्द्री गांवमें पोहकरणा ब्राह्मण जयदेवकी औरतके सुपुर्द किया. वह उसको अपना बेटा मानकर पालने लगी; लेकिन् सिरोहीके रावने यह बात सुनकर कहा, कि मेरा राज्य बादशाह छीन लेंगे. तब राठौड़ दुर्गदास वगैरह देवड़ीजीको अजीतसिंह सहित उदयपुर लेआये, और महाराणा राजसिंह (अव्वल) ने तसल्ली करके गांव कैलवा जागीरमें दिया; राठौड़ और सीसोदिये एक होकर फ़साद करने लगे; इसलिये बादशाह आलमगीर बड़ी भारी फ़ौजके साथ मेवाड़पर चढ़ा. यह हाल महाराणा राजसिंहके वर्णनमें लिखागया है- (देखो एष्ठ ४६३-४७२).

फिर मेड़ते और सिवानेपर राठौड़ोंने क़ब्ज़ा करलिया, और बादशाही आदमियोंको मारकर निकाल दिया; पुष्करमें तहव्वुरख़ांकी फ़ौजपर ऊदावत

राजसिंह मेड़तियाने हमलह किया, जिसमें तरफ़ैनके आदमी मारेजाने बाद मेड़ता बादशाही खालिसहमें होगया. फिर गांव ओसियाके पास राठौड़ दुर्गदाससे और इन्द्रसिंहके राजपूतोंसे ख़ूब लड़ाई हुई. इसी तरह तहव्वुरख़ांसे देसूरीके घाटेपर राठौड़ अच्छे लड़े. राठौड़ और सीसोदियोंने मिलकर आलमगीरके शाहज़ादह अक्बरको बाग़ी किया; लेकिन् आलमगीरकी चालाकीसे अक्बरको भागकर ईरानमें जाना पड़ा; उसका एक लड़का और लड़की दुर्गदासके पास रहे थे, जिनको उसने बड़ी ख़ातिरके साथ रक्खा, और तालीम भी दी.

राव इन्द्रसिंहसे मारवाड़का कुछ बन्दोवस्त नहो सका, तब बादशाहने विक्रमी १७३८ चैत्र शुक्ल ११ [हि० १०९२ ता० १० रबीउ़ल अव्वल = ई० १६८१ ता० ३१ मार्च] को इनायतख़ांको अजमेरकी फ़ौज्दारीपर भेजा, और इन्द्रसिंह खटले समेत नागोर गया. राठोड़ोंने कई छोटी बड़ी लड़ाइयां कीं, और शाहज़ादह अक्बर जो बाग़ी होकर शम्भा राजाके पास चला गया, इस बातसे आलमगीरको ज़ियादह फ़िक्र हुई; क्योंकि हज़ारों राठोड़ बाग़ी थे, उदयपुरसे लड़ाई जारी थी; दक्षिणमें फ़साद होता, तो कुल हिन्दुस्तान फ़सादका नमूना बनजाता. यह विचारकर उदयपुरके महाराणा जयसिंहसे, जब कि महाराणा राजसिंहका इन्तिक़ाल होगया था, सुलह करली; और दक्षिणकी तरफ़ कूच किया. दूसरे दिन अजमेरसे देवराई मक़ामपर पहुंचकर विक्रमी १७३८ आश्विन शुक्ल ८ [हि० १०९२ ता० ६ रमज़ान = ई० १६८१ ता० २१ सेप्टेम्बर] को बड़े शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मके बेटे मुहम्मद अ़ज़ीमको जुम्दतुल्मुल्क असदख़ां वज़ीरके साथ अजमेर भेजा, कि वहांका बन्दोबस्त रक्खे; और उनके मातहत एतिक़ादख़ां, कमालुद्दीनख़ां, रा... भीमसिंह ...सिंह राजसिंहोत कुंवर समेत, और मरहमतख़ां वग़ैरहको ख़िल्अ़त, ... १ हथनी, ६ ...ड़े और हाथी देकर मुक़र्रर किया; इनायतख़ां अजमेरके फ़ौजदा... ...; वह मेड़तेमें जा छिपा, ... बुख़ारी बीटलीगढ़के क़िलेदारको भी ख़िल्अ़त देकर ... ...णोंमें जोधपुरके फ़ौज्दार जाफ़...

राजा भीमसिंह राजसिंहो... महाराजाने बादशाही आदमियोंके व... ...राठौड़ोंसे सुलह करनेकी तद्बीर की... पीछा कूचकर जालौरके क़िलेपर दोबारह ... रही. भीमसिंहने राठोड़ोंको क... ...टगया हे, कुछ बहादुरी दिखा... फाल्गुन् कृष्ण १४ [हि० १११८ ता० २८ ज़िल्क़ाद ... लूटकर मेड़तेपर हाथ चला... मार्च] को बादशाह आलमगीर दक्षिणमें मरगया. महा... समेत भेजा. गांव ईंदा... ...र सुनकर जोधपुरकी तरफ़ चले; बादशाही मुलाज़िम फ़ौ... १४ नामी आदमी राठो... निकल गये थे, महाराजाने जोधपुरपर चैत्र कृष्ण ५ [... ...ड़ाईमें

माराजाना लिखा है, परन्तु मारवाड़की ख्यातका लेख सहीह मानकर ऊपर लिखा है. इसका ब्यौरेवार हाल महाराणा जयसिंहके ज़िक्रमें लिखा गया- (देखो पृष्ठ ६६४). दूसरा हमलह पुर व मांडलके पास राठोड़ोंने किया, इसके बाद उन्होंने जुदे २ ज़िलोंमें हमलह करना शुरूअ् किया, मुसल्मान पीछा करते, तो लड़ाइयां होती थीं; किसीको जागीर देकर राज़ी करते, तोभी वह फिर दूसरेकी मदद करनेको बाग़ी होजाता. इन झगड़ोंसे राठोड़ और मुसलमान सर्दार बहुत मारेगये, जिनका ज़ियादह हाल तवालतके सबब छोड़ दिया है.

महाराजा अजीतसिंह, जो बचपनके सबब अब तक पोशीदह रहते थे, विक्रमी १७४४ वैशाख कृष्ण ५ [हि० १०९८ ता० १९ जमादियुल अव्वल = ई० १६८७ ता० २ एप्रिल] को सिरोहीके गांव पालड़ीमें सर्दारोंके शामिल होकर फ़ौज मुसाहिब बने, उस वक्त यह ८ वर्षके थे. फ़साद बढ़ता जानकर जोधपुरके ज़िम्महदार इनायतखांने सिवानेका पर्गनह और राहदारीसे चौथा हिस्सह देनेका इक़ार करलिया, जिससे खर्चमें सहारा मिला. इन्हीं दिनोंमें दुर्गदास भी महाराजासे आमिले, और इसी वर्षमें मुसल्मानोंने सिवाना छीन लिया; तब महाराजा अजीतसिंह उदयपुरके दक्षिण छप्पनके पहाड़ोंमें चले आये, और महाराणा जयसिंह भी इन दिनों उसी ज़िलेमें जयसमुद्र तालाब तय्यार करा रहे थे, महाराजाको खानगी मदद दी होगी. दुर्गदास वगैरह राठोड़ोंने सिंधसे लेकर अजमेरतक शोर मचाया; इसपर अजमेरके सूबहदारने पोशीदह तौरसे कहा, कि तुम लोग राहदारी वगैरह, जो दस्तूर हो, अपने तौरपर लेलिया करो, ज़ाहिर लेनेसे हम बदनाम, और बादशाह हमसे नाराज़ होते हैं.

राठोड़ा...

वि... ...० [हि० ११०३ = ई० १६९२] में महाराणा जयसिंह हुंचाया, और वह

और कुं किया. वह उसको आ; महाराजा अजीतसिंहकी तरफ़से राठोड़ दुर्गदास

तीस हज यह बात सुनकर कहा, कि मेरा घाणेरावमें आया, और बाप बेटोंका बाहमी

रंज मिट स वगैरह देवड़ीजीको अजीतसिंह साहि जयसिंहके प्रकरणमें लिखा गया है-

(देखो नह (अव्वल) ने तसल्ली करके गांव कैलवा जागी ई० १६९६] में महाराणा जयसिंह

और होकर फ़साद करने लगे; इसलिये बादशाह आलजीतसिंहने आकर मिटाया,

और मेवाड़पर चढ़ा. यह हाल महाराणा राजसिंहके के साथ किया, जिसके

दहेज देखो पृष्ठ ४६३-४७२). (देखो पृष्ठ ६८२).

फिर मेड़ते और सिवानेपर राठोड़ोंने क़ब्ज़ा करलियौप [हि० ११०९

जमा दमियोंको मारकर निकाल दिया; पुष्करमें तहव्वुरखांकी द्वार शजाअतखांकी

मारिफ़त दुर्गदास ग्रालमगीरके पास हाज़िर हुआ, और शाहज़ादह अक्बरके बेटे, व बेटीको पेश किया, जो दुर्गदासके पास थे. उसको बादशाहने एक लाख रुपया इन्ग्राम, मेड़ता वगैरह पर्गनह जागीरमें और तीन हज़ारी ज़ात व दो हज़ार सवारका मन्सब दिया.)) उसके साथी दूसरे राठौड़ोंको भी मन्सब और जागीरें मिलीं. राठौड़ मुकुन्ददासको पालीकी जागीर और छः सौ ज़ात व तीन सौ सवारका मन्सब मिला, और महाराजा अजीतसिंहको भी विक्रमी १७५४ ज्येष्ठ शुक्क १३ [हि० ११०८ ता० १२ ज़िल्काद = ई० १६९७ ता० १३ जून] को डेढ़ हज़ारी ज़ात व पांच सौ सवारका मन्सब और जालौर बादशाहकी तरफ़से जागीरमें मिला; महाराजाने मुकुन्ददास चांपावतको मुसाहिब और विट्ठलदास भंडारीको दीवान बनाया. विक्रमी १७५९ मार्गशीर्ष कृष्ण १४ [हि० १११४ ता० २८ रजब = ई० १७०२ ता० २२ नोवेम्बर] को इनके कुंवर अभयसिंह पैदा हुए, और दुर्गदास राठौड़को अहमदाबादके ज़िलेमें पाटनकी फ़ौज्दारी मिली. अहमदाबादके सूबहदारने शाहज़ादह आज़मके इशारेसे दुर्गदासपर फ़ौज भेजी, जिसकी ख़बर विक्रमी १७६२ कार्तिक शुक्क १२ [हि० १११७ ता० १० रजब = ई० १७०५ ता० २९ ऑक्टोबर] को मिली; इस ख़बरके सुनते ही दुर्गदास तो निकल गया, लेकिन् उसके दो बेटे महकरण व अभयसिंह वगैरह मारेगये. दुर्गदासके नाम बादशाहकी तरफ़से तसल्लीका फ़र्मान आया. //

विक्रमी १७६२ [हि० १११७ = ई० १७०५] में बादशाही इशारेके मुवाफ़िक़ नागोरके राव इन्द्रसिंहका कुंवर मुह्कमसिंह जालौरपर चढ़ा, और वहांका क़िला हिक्मत अमलीसे लेलिया. महाराजा अजीतसिंह बाहर निकल गये, और बड़ा भारी लश्कर जोड़कर जालौरकी तरफ़ रवानह हुए; कुंवर मुह्कमसिंह डरकर जालौर छोड़ भागा, रास्तेमें महाराजासे मुक़ाबला हुआ, १ हथनी, ६ घोड़े व अस्बाब, नक़ारह, निशान महाराजाने छीन लिया; वह मेड़तेमें जा छिपा, और महाराजाने पीछा किया, लेकिन् गांव कांकाणीमें जोधपुरके फ़ौज्दार जाफ़रबेगने आकर महाराजाको समझाया, और महाराजाने बादशाही आदमियोंके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई करना ठीक न जानकर पीछा कूचकर जालौरके क़िलेपर दोबारह अपना क़ब्ज़ा करलिया.

विक्रमी १७६३ फाल्गुन् कृष्ण १४ [हि० १११८ ता० २८ ज़िल्काद = ई० १७०७ ता० ३ मार्च] को बादशाह ग्रालमगीर दक्षिणमें मरगया. महाराजा अजीतसिंह यह ख़बर सुनकर जोधपुरकी तरफ़ चले; बादशाही मुलाज़िम फ़ौज्दार वगैरह तो पहिले ही निकल गये थे, महाराजाने जोधपुरपर चैत्र कृष्ण ५ [हि०

ता० १९ ज़िल्हिज = ई० ता० २३ मार्च] को क़ब्ज़ा कर लिया; सब राठौड़ोंने एकडे होकर बड़ी खुशियां मनाईं, और महाराजाने अपने बर्ख़िलाफ़ आदमियोंको पूरी सज़ाएं दीं; जो इनको चाहने वाले थे, उन्हें इन्आम इक्राम दियेगये. शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़म और आज़मकी लड़ाई, जो जाजवके पास हुई, उसमें आज़म अपने बेटे बेदारबख़्त समेत मारागया, और मुअ़ज़्ज़म शाहआलम बहादुरशाह बादशाह बना. यह दोनों राजाओंसे नाराज़ था, क्योंकि महाराजा जयसिंह आंबेर वाले आज़मकी फ़ौजमें, और उनके छोटे भाई विजयसिंह बहादुरशाहके साथ थे; उसने विजयसिंहको आंबेरकी जागीर और मन्सब देना चाहा; महाराजा अजीतसिंहने जोधपुरका क़िला बादशाही आदमियोंसे छीन लिया था; इसलिये इन दोनों रियासतोंपर ख़ालिसह भेजकर बादशाह आप अजमेर आया. महाराजा जयसिंह और अजीतसिंह एक मन होकर बादशाहके पास आये, और पीपाड़के पास दोनों महाराजाओंने विक्रमी १७६४ फाल्गुन् शुक्ल ६ [हि० ११९९ ता० ४ ज़िल्हिज = ई० १७०८ ता० २७ फ़ेब्रुअरी] को बादशाहसे सलाम किया. बादशाहने बखेड़ा मिटानेकी निगाहसे ख़िल्अ़त वग़ैरह देकर तसल्ली की; और हाथी घोड़ोंके सिवाय पचास हज़ार रुपये महाराजा अजीतसिंहको दिये.

विक्रमी १७६५ चैत्र शुक्ल १० [हि० ११२० ता० ८ मुहर्रम = ई० १७०८ ता० २ एप्रिल] को अजमेरमें बादशाहने राठौड़ दुर्गादासको मन्सब देना चाहा, लेकिन उसने उज़्र किया, कि पहिले महाराजा अजीतसिंहको मिले, तो मैं लूंगा. बादशाहने महाराजाको साढ़े तीन हज़ारी मन्सब और सोजत वग़ैरह पर्गने देने चाहे; परन्तु इन्होंने जोधपुरके बग़ैर क़ुबूल नहीं किया; और महाराजा अजीतसिंह व जयसिंह जो बादशाहके साथ थे, नर्मदाके उरली तरफ़से (१) नाराज़ होकर लौट आये; प्रतापगढ़के राव प्रतापसिंहने दोनों राजाओंको मिहमानी दी; फिर ये उदयपुर आये. महाराणा अमरसिंह २ ने ख़ातिर करके अपनी बेटी चन्द्रकुंवर बाईका विवाह महाराजा जयसिंहके साथ करने बाद फ़ौजी मदद देकर दोनों राजाओंको बिदा किया, जिसका पूरा हाल महाराणा अमरसिंह २ के बयानमें लिखा गया है. महाराजाके आनेकी ख़बर सुनकर जोधपुरका फ़ौज्दार मिहराबख़ां भागकर अजमेर चलागया. महाराजा अजीतसिंहने बड़ी खुशीके साथ जोधपुरपर दख़्ल किया. इन महाराजाने अपनी बेटी सूरजकुंवरका संबन्ध महाराजा सवाई जयसिंहसे किया, और महाराजा जयसिंह जोधपुरसे रवानह हुए; महाराजा अजीतसिंहके निकलनेमें कुछ देर हुई; तब एक काग़ज़ राठौड़

(१) कहीं टोडाई और कहीं बड़ौदके मक़ामसे लौट आना लिखा है.

दुर्गदासने महाराणा अमरसिंहके नौकर कायस्थ बिहारीदासके नाम समदरड़ीसे लिख भेजा, जिसकी नक़्ल नीचे लिखते हैं:-

श्री परमेश्वरजी सहाय छै.

स्वस्तिश्री उदयपुर सुभस्थाने पंचोली श्री बिहारीजी योग्य, राजश्री दुर्गदासजी लिखावतुं राम राम बांचजो, अठारा समाचार श्री परमेश्वरजीरा प्रतापसूं भला छै, थांहरा सदा भला चाहिजे, थे घणी बात छौ, थां उपरांत कांई बात न छै, अपरंच; म्हे समदरड़ी गया था, तिण दिसा तो श्री दीवाणजीसूं म्हे अर्ज़ लिखीज छै, जु राजा श्री जयसिंहजीरे कूंच हुवारी खबर आवे छै, तिण घड़ी म्हे जाय भेला व्हां छां, सु थें श्री दीवानजीसूं मालुम करजो; राजा जयसिंहजी तो राजा अजीतसिंहजी सूं कूंचरी बहुत ताकीद कराई, पिण व्हांरे दोय दिनरी ढील देखी, तरे राजा जयसिंहजी कूंचकर जोधपुर सूं कोस १७ पीपाड़ आंण डेरा किया, ने म्हांने समदरड़ी खबर आई, जु राजा जयसिंहजी तो जोधपुरसूं कूंच कियो, उणहीज सायत म्हे समदरड़ीसूं चढीया, सु परबाहिरा आंणने राजा जयसिंहजीसूं सामल व्हां छां; ने राजा अजीतसिंहजी बी आंवण दिसां कहे तौ छै, जु म्हे आवां छां, सु जो आवे छे तो भलांईज छै; ने नहीं आवसी तो म्हांने तो श्री दीवाणजी खिजमत फ़ुरमाई, सु म्हे तो राजा जयसिंहजी साथे व्हां आंबेर जावां छां.

तथा नवाब गाज़ीउद्दीनख़ां रो खत म्हने आयो छौ, तिण जाब लिखियो छै, तिणरी नकल ने उठासूं खत आयो छौ, सु बिजनस भैया सलामत रायजीरा खतमें घाल मेलियो छै; सु हकीकत श्री दीवाणजीसूं मालुम करावजो; वाहुड़ता कागल समाचार बेगा बेगा देजो. विक्रमी १७६५ आसोज वदि २ [हि० ११२० ता० १६ जमादियुस्सानी = ई० १७०८ ता० ३ सेप्टेम्बर].

इन दोनों राजाओंने जोधपुरसे रवानह होकर महाराणा अमरसिंहको भी अपनी मददके लिये बुलाना चाहा था; परन्तु यह सलाह न जाने किस सबबसे मौक़ूफ़ रही. इस बारेमें दुर्गदास राठौड़का जो काग़ज़ बिहारीदास पंचोलीके नाम आया था, उसकी नक़्ल यह है:-

श्री परमेश्वरजी सहायछै.

स्वस्ति श्री उदयपुर सुथाने पंचोली श्री बिहारीजी योग्य, राज श्री दुर्गदासजी

लिखावतुं राम राम वांचजो, अठारा समाचार श्री परमेश्वरजीरा प्रताप सूं भला छै, थांहरा सदा भला चाहीजे, थें घणी बात छो, थां उपरांत कांई बात न छै, अपरंच ॥ महाराजा अजीतसिंहजी ने महाराजा जयसिंहजी म्हांने श्री दीवाणजीरी हजुरनूं विदा किया छै, श्री दीवाणजी नूं वुलावणरे वास्ते; सो श्री ठाकुरजीरो दुवो छै, तो आसोज सुद १० सोमवाररा हालिया म्हे श्री दीवाणजीरे पांवे आवां छां, बाहुड़ता कागल समाचार वेगा वेगा देजो सं० १७६५ आसोज सुद ८ [हि० ११२० ता० ६ रजब = ई० १७०८ ता० २४ सेप्टेम्बर].
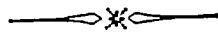
यह महाराणाको बुलाना इस वास्ते था, कि कुल हिन्दुस्तानमें फ़साद फैलाकर मुसल्मानोंकी बादशाहत ग़ारत कीजावे. इसके बाद अजमेरके सूबहदार शजाअत-ख़ांने इन लोगोंको दम देकर कुछ दिनों तक पुष्करमें रक्खा; और बादशाहसे मदद चाही; परन्तु वह कामबख़्शकी लड़ाईमें रुका हुआ था, कुछ भी मदद न कर सका; यह दोनों राजा दुर्गदास और मेवाड़की मददगार फ़ौजके मुसाहिब साह सांवलदास और महासहाणी चतुर्भुज समेत पुष्कर पहुंचे, उधरसे अजमेरका सूबहदार (१) सय्यद हुसैनख़ां, मेड़तेका फ़ौज्दार अहमद सईदख़ां और नारनौलका फ़ौज्दार ग़ैरतख़ां वग़ैरह फ़ौज लेकर आपहुंचे; दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबलह हुआ, जिसमें बादशाही मुलाज़िम सय्यद हुसैनख़ां वग़ैरह तीनों सर्दार भाई बेटों समेत मारेगये, और सांभरपर महाराजाने क़ब्ज़ा करलिया. इस लड़ाईका हाल महासहाणी चतुर्भुजने सांभरसे कायस्थ बिहारीदासको लिखा था, जिसकी नक़्ल यहां दर्ज की जाती हैः–

कागज़की नक़्ल.
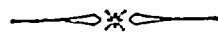
सिद्धश्री उदयपुर सुथाने सर्वोपमा जोग्य पंचोली श्री विहारीदासजी जोग, सांभरी पेली आड़ीरा डेरा कोस अर्ध तलाई देवजानी नखला डेरा थी मसाणी चतरभुज लिखतुं जुहार वांचजो जी, अठारा समाचार श्रीजीरी सुनजर थी भलासै जी, राजरा सदा भला चाहीजे जी, अपरंच– काती विद १५ सनीचर री राते खवरी आई, मियां सैयद हुसैनख़ां जमीती असवार हज़ार चार थी चल्यो आवे सै; काती सुद १ रवे रे

(१) इस वक़ अजमेरकी सूबहदारीपर शजाअ़तख़ां था, परन्तु मुन्तख़बुल्लुबाब तवारीख़में हुसैनख़ां लिखा है, जिससे ऐसा मालूम होता है, कि इसके नामपर अजमेरकी सूबहदारी होगई होगी, लेकिन् तामील होनेमें शजाअ़तख़ांके लिहाज़ और दक्षिणके झगड़ोंसे मुल्तवी रही.

दिने पाछली घड़ी चार राती थी, जदी राजाजी राजाजी दमामो हुओ, दिन पौहर एक चढ़तां सिलेह करेर डेरां थी चढ़्या, तलाई देवजानी थी कोस अर्ध थलो छे, जिठे आवे ऊभा रह्या; परेथी मीयां तथा मीयांरा भाई भतीजा हाथ्यां ऊपरि चढ़्या आव्या, पाछलो घड़ी चार दिन थो, जदी मुकालबो हुओ. सूधा भेलाई होगया जी, एक महाभारत व्हे जिश्यो भारत हुओ जी; मीयां तथा मीयांरा भाई बंध तथा लोग जमीती सारी थी काम आव्यो जी, श्री दीवाणजी सजाजी राजाजीरे बोलबाला हुओ जी. राजाजी राजाजीरे खैर आवी, और चैन अमन श्रीजी री सुनजरथी छे जी. राजाजी राजाजीरे किहीं वातरो उसवास न ल्यावो जी, विशेप खेम कुशल छे जी, और समाचार विवरा वार पंचोली सांवलदासरा कागद थी मालूम होसी जी. काती सुद १ सं० १७६५ [हि० ११२० ता० ३० रजब = ई० १७०८ ता० १५ ऑक्टोबर].

आंबेरपर महाराजा जयसिंहके प्रधान रामचन्द्रने इस लड़ाईसे पहिलेही कब्ज़ह करलिया था, अब सांभरको दोनों राजाओंने आधा आधा बांटकर आंबेरकी तरफ़ कूच किया. और वहां पहुंचनेपर खुशीका जश्न (उत्सव) हुआ. महाराजा अजीतसिंह वापस जोधपुर आये. इन्हीं दिनोंमें महाराजाने पालीके ठाकुर मुकुन्ददास चांपावत राठौड़को धोखेसे मरवा डाला, मुकुन्ददासको पालीकी जागीर और मन्सब बादशाहकी तरफ़से मिला था, महाराजा ऊपरी दिलसे उससे खुश थे, लेकिन् भीतरसे जलते थे, जो महाराजाके एक काग़ज़से ज़ाहिर है, कि उन्होंने अपने हाथसे उदयपुरके गुसांई नीलकंठगिरको लिखा था- (देखो एष्ठ ७६४). मुकुन्ददासको क़िलेपर बुलवाया, जहांपर उसको छिपियाके ठाकुर प्रतापसिंह ऊदावत और कूंपावत सबलसिंहने मारडाला, तब मुकुन्ददासके राजपूत गहलोत भीमा और धन्नाने प्रतापसिंहको मारकर बदला लिया, और आप भी मारेगये. उस वक़् किसी कविने सोरठे व दोहे कहे थे, जो नीचे लिखेजाते हैं:-

सोरठा.

आजूणी अधरात, महळज रूनी मुकन्दरी ॥
पातलरी परभात, भली रुवाणी भीमड़ा ॥ १ ॥
पांच पहर लग पौळ, जड़ी रही जोधाणरी ॥
रे गढ़ ऊपर रोळ, भली मचाई भीमड़ा ॥ २ ॥
चांपा ऊपर चूक, ऊदा कदेन आदरे ॥
धन्ना वाळी धूक, जणजण ऊपर जूझवे ॥ ३ ॥

दोहा.

भीमा धन्ना सारखा दो भड़ राख दुबाह ॥
सुण चन्दा सूरज कहे राह न रोके राह ॥ ४ ॥

अर्थ- १ - आज आधी रातको मुकुन्ददासकी औरतें रोईं, उसी तरह फ़ज्रमें प्रतापसिंहकी औरतोंको ऐ! भीमड़ा तूने अच्छा रुलाया. २- जोधपुरके दर्वाज़े पांच पहर तक बन्द रहे, ऐ! भीमड़ा क़िलेमें तूने अच्छा कोलाहल मचाया. ३- चांपावतोंपर ऊदावत कभी चूक नहीं करेंगे, क्योंकि हर एकके दिलोंपर धन्नाकी दह्शत ग़ालिब होरही है. ४- सूर्य चन्द्रमाको कहता है, कि भीमा और धन्ना, जैसे दो बहादुर अपने पास रक्खेजावें, तो राहु ग्रह कभी रास्ता नहीं रोकेगा.

महाराजाने नागौरपर चढ़ाई करके वहांके रावसे फ़ौज ख़र्च लिया; इसके बाद अजमेरको जा घेरा, वहांके सूबहदार शुजाअतखांने कृष्णगढ़के राजा राजसिंहकी मारिफ़त पैंतालीस हज़ार रुपया फ़ौज ख़र्च देकर पीछा छुड़ाया; शाहपुरेके राजा भारतसिंहने अजमेरके ज़िलेके राठौड़ोंको खूब ज़लील किया था, इस वक्त वे बादशाहके साथ दक्षिण गये थे, पीछेसे अजमेरके राठौड़ोंने महाराजा अजीतसिंहकी हिमायत चाही, तब बादशाही लश्करसे भारतसिंहने और शाहपुरेसे उनके अह्लकारोंने उदयपुरमें पंचोली बिहारीदासके नाम काग़ज़ भेजे, जिनकी नक्ल नीचे लिखी जाती हैः-

कागज़की नक़्ल.
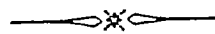
सिद्धश्री उदयपुर सुथाने राज श्री बिहारीदासजी योग्य, लिखाइतुं लश्कर थी राज श्री भारथसिंहजीकेन जुहार वांचजो जी, अठाका समाचार श्री जीका प्रसाद थी भलासे जी, आपका समाचार सदा आरोग्य चाहिजैजी, तो म्हांने परम संतोष होइजी, राजि उपरांत म्हांके सर काई बात न छैजी, राजि म्हांके घणी बात छै जी, म्हांसूं हमेशा हेत मया राखेछे, तींथी विशेष राखावजो जी, अपरंच - कामबख़्श बेटा सूधी काम आव्यो, बादशाह बहादुरकी फतह हुई, अर समाचार होसी, सो कागद पाछां थी लिखांछां जी; अर उठे अमरसिंह छे, सो वांकी राजिने घणी सरम छैजी, अर शाहपुरा काम काज को घणे बसमाने रखावजो जी; कागज समाचार मया करी लिखाजोजी. मिती माह सुदी ६ सं० १७६५ [हि० ११२० ता० ४ ज़िल्क़ाद = ई० १७०९ ता० १७ जेन्युअरी] वर्ष.

शाहपुराके अहलकारोंके
पत्रकी नक़्ल.

सिद्धश्री उदयपुर सुथाने सर्वोपमा योग्य पंचोलीजी श्री बिहारीदासजी चिरणजी चिरण कमलांणं, शाहपुरा थी लिखावतंच चोधरी सांवलदास व्यास कमलाकर केन सेवा मुजरो आशीर्वाद अवधारजो जी, अठारा समाचार श्रीजी री कृपा थी भला से जी. श्री राजिरा सदा आरोग्य चाहिजे जी, राज बड़ा सो, साहिब छो, मोटा छो, म्हारे आप घणी बात छो, आप उपरांत कांई बात न से जी, म्हांसू आप महरबानगी राखो छो, जिणी अवधारता रहजो जी, अठा सरीखी चाकरी होय, सो मया करावजो जी, अपरंच- राजाजी श्री अजीतसिंहजी अजमेर आया छे जी, सो राठोड़ कनकसिंह राजाजी तरि छे, और धरतीरा राठोड़ ठाकुर सारा छे, सो म्हांसू कुं मया करे छे, सो आप तो सारी जाणो छो जी, सो अर्जदास्त श्रीजीसूं लिखी छे; सो आप वसमानो ऊपर करे अर्जदाश्त गुजरावजो जी. राज श्री भारथसिंहजीरी शर्म राजने छे जी; अर राजाजी राठोड़ांरी ऊपर करसी, तो भारतसिंहजी पण श्रीजीरा छोरू बन्दा छे, धणी छो. सो म्हांरा ऊपर राज करजो जी; मारी शर्म आपने से जी, म्हे आप छतां नचीता छांजी, मारो जतन आपने ही करनो से जी; कागल समाचार वेगा मया करावजो जी. मिती चैत्र वदी ३ सम्वत् १७६५ वर्षे [हि० ११२० ता० १७ ज़िल्हिज = ई० १७०९ ता० २७ फ़ेब्रुअरी].

महाराजा अजीतसिंहने अजमेरसेंसे रुपये वुसूल करके देवलिया प्रतापगढ़में अपनी शादी की. और जोधपुर चलेगये. यह ख़बरें बादशाह बहादुरशाहके पास दक्षिणमें पहुंचीं. तो नव्वाब असदख़ांने एक ख़त अजमेरके सूबहदार शुजाअ़तख़ां को लिख भेजा, जिसकी नक़्ल नीचे लिखते हैं:-

नव्वाब असदख़ांका ख़त, अजमेरके सूबहदार शुजाअ़तख़ांके नाम.

अमीरों और बड़े दरजेकी पनाह सलामत, आपके ख़त देखने से तअ़ज्जुब हुआ, ख़ैर! आख़िरमें एक तुम्हारा ख़त पहुंचा, तुम हाल उसके

हुआ, मुनासिब है, कि अच्छी तरहपर लिखते रहें. इन दिनोंमें दोस्तीके ख़यालसे उम्दह राजा राणाजी और अजीतसिंह, और जयसिंहको ख़त भेजे हैं, जिनका मज़्मून अलहदह काग़ज़ोंसे ज़ाहिर होगा; तुमको मालूम है, कि बहुत आदमी झूठ बका करते हैं, लेकिन् मैं सच कहता हूं, और लिखता हूं, कि अगर ये लोग तावेदारी करें, और बादशाही मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ रहें, तो हर तरह बिह्तर होगा, फ़ायदह उठावेंगे; और अगर बदमआशोंके कहनेपर अमल किया, बिल्कुल ख़राब होंगे. ख़ैर! इस बादशाही ख़ैरख़्वाहने राजा अजीतसिंह और राजा जयसिंहको अपना बेटा कहा है, और हर तरहपर मुहब्बत है; इसलिये दिल जलता है, और नसीहत लिखी जाती है; अगर कुबूल करें, तो हर तरह इनका आराम है. बादशाहोंके साथ तावेदारीके बग़ैर इलाज नहीं है. अपने बुज़ुर्गोंके हालपर गौर करना चाहिये, कि बादशाही रज़ामन्दीके लिये किस तरहकी ख़िद्मतें की हैं; अगर शुरूअ़में कम ज़ियादह हो, उसपर नज़र न रखनी चाहिये, ख़िद्मत बजा लावें, आख़िरमें तरक़्क़ी होजायगी, इस बातका जवाब लिखें, जिससे हम काममें दख़्ल दें.

ग़रज़ यह है, कि अव्वल बार, जो हज़रतने फ़र्माया है, कुबूल करना चाहिये; इसके बाद उम्मेद है, कि जल्द उम्मेदको पहुंचेंगे. अगर अब तक बेजा हरकत न करते, तो काम बन जाता, लेकिन् उन् लड़कोंके मिज़ाजसे क्या किया जावे. तुम आप जानते हो, हम इनको बेटा कहनेके सबबसे रंज करते हैं; वर्नह कोई मत्लब नहीं है, मेरी तरफ़से तुम समझाओ. इस वक़्त फ़त्हमन्द बादशाही लश्कर मन्ज़िलवार हिन्दुस्तानको आता है. हमारी और तुम्हारी एक इ़ज़्ज़त है, कोई ऐसा काम नकरें, जिससे हम और तुम बादशाही दर्गाहमें लोगोंके साम्हने शर्मिन्दह हों; बाप बेटेपनका, जो क़रार हुआ था, वह बिल्कुल भूल गये. इस बातको, जिसमें ख़ल्क़तका आराम है, जल्द तै करके लिखें, जिसपर कुछ कार्रवाई की जावे. ता० ११ सफ़र सन् ३ जुलूस [हि० ११२१ = वि० १७६६ प्रथम वैशाख शुक्ल १२ = ई० १७०९ ता० २१ एप्रिल].

विक्रमी १७६७ [हि० ११२२ = ई० १७१०] में महाराजाने बादशाह बहादुरशाहके पास भंडारी खींवसीको भेजकर शाहज़ादह अज़ीमुश्शानकी मारिफ़त फ़र्मान वग़ैरह पाये, और ख़ुद महाराजा भी बादशाहसे सलाम करके जोधपुर लौटआये. विक्रमी १७६८ भाद्रपद [हि० ११२३ रजब = ई० १७११ सेप्टेम्बर] में महाराजा अजीतसिंह फ़ौज लेकर कृष्णगढ़ गये, और वहांके राजा राजसिंहसे पेशकश लेकर वापस आये.

विक्रमी १७७० ज्येष्ठ कृष्ण १ [हि० ११२५ ता० १५ रबीउस्सानी = ई० १७१३ ता० १२ मई] को जूनियांके राठौड़ करणसिंह और जुझारसिंहको महाराजाने बुलाकर जोधपुरके क़िलेमें दग़ासे मरवाडाला. इसके बाद इसी वर्षके भाद्रपद शुक्ल ५ [हि० ता० ४ शअ्बान = ई० ता० २७ ऑगस्ट] को अपने आदमियोंको भेजकर दिल्लीमें नागोरके राव इन्द्रसिंहके कुंवर मुहकमसिंहको मरवाडाला. इसपर बादशाहने राव इन्द्रसिंहको उनके छोटे बेटे मोहनसिंह समेत बुलवाया; महाराजा अजीतसिंहने मोहनसिंहको भी रास्तेहीमें दग़ासे मरवाडाला, जिससे बादशाह फ़र्रुख़सियरने नाराज़ होकर सय्यद हुसैनअलीको बड़ी फ़ौजके साथ मारवाड़पर भेजा. विक्रमी १७७१ [हि० ११२६ = ई० १७१४] में महाराजाने हुसैनअलीसे सुलह करली, और बड़े कुंवर अभयसिंहको दिल्ली भेजदिया. इस वक़ अहमदाबादकी सूबहदारी महाराजाके नाम हुई. विक्रमी १७७२ आषाढ़ [हि० ११२७ जमादियुस्सानी = ई० १७१५ जून] में कुंवर अभयसिंह जोधपुर आये, और महाराजा अहमदाबाद गये. इसी संवत्के आश्विन [हि० शव्वाल = ई० ऑक्टोबर] महीनेमें महाराजाकी कन्या इन्द्रकुंवर बाईका डोला दिल्ली भेजागया, और पोष कृष्ण ८ [हि० ता० २२ ज़िल्हिज = ई० ता० ११ डिसेम्बर] को उसकी फ़र्रुख़सियरके साथ वहां शादी हुई.॥

विक्रमी १७७३ श्रावण [हिज्री ११२८ शअ्बान = ई० १७१६ ऑगस्ट] में महाराजाने इन्द्रसिंहसे नागोर छीन लिया. विक्रमी १७७४ [हि० ११२९ = ई० १७१७] में अहमदाबादकी सूबहदारी मौकूफ़ हुई, और महाराजा जोधपुर आये. विक्रमी १७७५ [हि० ११३० = ई० १७१८] में दिल्ली गये, और सय्यद अब्दुल्लाहख़ां वज़ीरसे मिलगये, जिससे बादशाह फ़र्रुख़सियर दिलमें नाराज़ था; बादशाहने अब्दुल्लाहख़ां और महाराजाको मारनेकी तदबीरें की, परन्तु वह ख़बरदार होगये; आख़िरकार अब्दुल्लाहख़ांने अपने भाई हुसैनअलीख़ांको दक्षिणकी सूबहदारीसे बुलाया, वह तीस हज़ार फ़ौज लेकर आया; तब अब्दुल्लाहख़ां, महाराजा अजीतसिंह और कोटेके महाराव भीमसिंह व कृष्णगढ़के राजा राजसिंह वग़ैरहने लाल क़िलेमें बन्दोबस्त करलिया; विक्रमी १७७५ फाल्गुन् शुक्ल ९ [हि० ११३१ ता० ८ रबीउस्सानी = ई० १७१९ ता० २७ फ़ेब्रुअरी] को फ़र्रुख़सियर भागकर ज़नानेमें जाछिपा; दिल्ली शहरमें ग़द्र मचगया. हुसैनअलीख़ांके साथके २००० हज़ार मरहटे सवार बादशाही मुलाज़िमों और दिल्लीकी रअय्यतके हाथसे मारेगये. विक्रमी फाल्गुन् शुक्ल १० [हि० ता० ९ रबीउस्सानी = ई० ता० २८ फ़ेब्रुअरी] को ज़नानख़ानेसे लाकर फ़र्रुख़सियरको क़ैद किया, और उसी समय बहादुरशाहके पोते और रफ़ीउश्शानके बेटे शम्सुद्दीन अबुल

बरकातको जेलख़ानहसे निकालकर तख़्तपर बिठादिया, जिसकी २० बीस वर्षकी उम्र थी; परन्तु वह सिलकी बीमारीसे कमज़ोर था; तीन दिन तक महाराजा लाल क़िलेमें रहे, फिर अपनी बेटी इन्द्रकुंवरबाईको लेकर जोधपुर चले आये; वह बेगम कुछ अर्सेके बाद जोधपुरमें मरी. जोधपुरकी तवारीख़में उसका ज़हर खाकर मरना लिखा है, परन्तु सबब नहीं बयान किया.

महाराजाको दोबारह अहमदाबादकी सूबहदारी मिली. वि० १७७६ आषाढ़ कृष्ण ९ [हि० ता० २३ रजब = ई० ता० १० जून] को रफ़ीउद्दरजात मरगया, और उसके भाई रफ़ीउद्दौलहको सय्यदोंने बादशाह बनाकर उसका "शाहजहां सानी" ख़िताब रक्खा; लेकिन् वह भी उसी बीमारीसे विक्रमी भाद्रपद [हि० शव्वाल = ई० ऑगस्ट] में मरगया; तब बहादुरशाहके पोते और जहांशाहके बेटे रौशनअख़्तरको दिल्लीके तख़्तपर बिठाया, और "मुहम्मदशाह" लक़ब रक्खा. महाराजा जयसिंह सय्यदोंकी दुश्मनीसे जोधपुर चलेआये; महाराजा अजीतसिंहने अपनी बेटी सूरजकुंवरका विवाह महाराजासे करदिया. सय्यदों और दूसरे मन्सबदार निज़ामुल्मुल्क वग़ैरहसे बिगाड़ हुआ, तब निज़ामुल्मुल्ककी बर्बादीके लिये सय्यद हुसैनअलीख़ां बादशाहको बड़ी फ़ौजके साथ दक्षिणकी तरफ़ ले निकला, और अब्दुल्लाहख़ां दिल्लीमें रहा; लेकिन् हुसैनअलीख़ां फ़तहपुरसे ३५ कोसपर मारागया, और अब्दुल्लाहख़ां दिल्लीमें मुहम्मदशाहसे लड़कर क़ैद हुआ. यह ख़बर सुनकर महाराजा जयसिंह जोधपुरसे दिल्ली गये, और महाराजा अजीतसिंहने अजमेर वग़ैरह बादशाही ज़िलोंपर क़ब्ज़ा करलिया, तब मुहम्मदशाहने मारवाड़पर फ़ौज भेजी.

विक्रमी १७७९ [हि० ११३४ = ई० १७२२] में मेड़तेपर बादशाही फ़ौजका मुहासरा होनेसे महाराजाने सुलह करके अपने कुंवर अभयसिंहको बादशाही ख़िद्मतमें दिल्ली भेजदिया. कुंवर अभयसिंहको महाराजा जयसिंह और दूसरे मुग़ल सर्दारोंने समझाया, कि बादशाह फ़र्रुख़सियरके मारेजानेका कुसूर बादशाहके दिलमें महाराजाकी तरफ़से खटकता है; तुम मारवाड़का राज अपने घरानेमें रखना चाहते हो, तो उनको मरवाडालो; तब कुंवरने अपने छोटे भाई बख़्तसिंहको लिख भेजा. इस इशारेके मुवाफ़िक़ बख़्तसिंहने अपने बापको विक्रमी १७८१ आषाढ़ शुक्ल १३ [हि० ११३६ ता० ११ शव्वाल = ई० १७२४ ता० ३ जुलाई] को ज़नानेमें सोते हुए मारडाला. इनके साथ राणियां, ख़वास, लौंडियां, नाज़िर वग़ैरह जिन सबकी तादाद ६६ थी, चितामें जलमरे. यह महाराजा बहादुर, फ़य्याज़, घमंडी, लुटेरे, वचनके सच्चे दोस्तको नफ़ा व

दुश्मनको नुक्सान पहुंचाने वाले थे. इनके नौकर ऐसे वफ़ादार थे, कि तक्लीफ़की हालतोंमें भी उनके वदनपर किसी तरहका सद्मह नहीं आने दिया, वर्नह तमाम उम्र बादशाहतके दुश्मन रहे थे, जीना मुश्किल होता. इनके १५ बेटे थे, १- अभयसिंह, २- वख्तसिंह, ३- सुल्तानसिंह, ४- तेजसिंह, ५- दौलतसिंह, ६- किशोरसिंह, ७- जोधसिंह, ८- आनन्दसिंह, ९- रायसिंह, १०- अखैसिंह, ११- रत्नसिंह, १२- रूपसिंह, १३- मानसिंह, १४- प्रतापसिंह, और १५- छत्रसिंह.

३५ महाराजा अभयसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १७५९ मार्गशीर्ष कृष्ण १४ शनिवार [हि० १११४ ता० २८ जमादियुस्सानी = ई० १७०२ ता० १८ नोवेम्बर] को हुआ था. जब महाराजा अजीतसिंहको वख़्तसिंहने तलवारसे मारा, तो वह एक महलमें जा छिपा, क्यौंकि वह जानता था, कि पिताके राजपूत मुझे मारे बग़ैर न छोड़ेंगे; राजपूतोंने महलको घेरलिया; तब वख़्तसिंहने मुहम्मदशाहका फ़र्मान और अभयसिंहका काग़ज़ दिखलाकर कहा, कि मैंने उनके हुक्मकी तामील की है, अगर इस वक्त में महाराजाको नहीं मारता, तो फ़र्रुख़सियरके एवज़में महाराजाकी जान जानेके सिवा जोधपुरका राज भी राठौड़ोंके ख़ानदानसे चलाजाता. इसपर राजपूत लोग ठंडे हुए, लेकिन् अजीतसिंहका माराजाना उनके दिलोंपर खटकता रहा; और राजपूतानाकी तमाम रियासतोंमें वख़्तसिंह ऐसा वदनाम हुआ, कि आजतक उसका नाम लेनेसे लोग नफ़त करते हैं; और शाइरोंने मारवाड़ी ज़बानमें उसकी वदनामी बहुतसी की है, जिसमेंसे १ दोहा और १ छप्पय यहां लिखते हैं:-

दोहा.

वखता वखत वाहिरा। क्यूं मार्यो अजमाल ॥
हिंदवाणी को शेवरो। तुरकाणी को शाल ॥ १ ॥

छप्पय.

प्रथम तात मारियो। मात जीवती जळाई ॥
असी चार आदमी। हत्या ज्यांरी पण आई ॥
कर गाढ़ो इकलास। वेग जयसिंह बुलायो ॥

मेटी धर्म मुर्जाद । भरम गांठको गंमायो ॥
कवि अणां हूंत केवा करें। धरा उदक लेवण धरी ॥
वखतसी जन्म पायां पछे। किशी बात आछी करी ॥

जब महाराजा अजीतसिंहके साथ राणियां सती होनेको निकलीं, तब आनन्दसिंह, रायसिंह, और किशोरसिंहकी माओंने बालकोंको सर्दारोंके सुपुर्द किया. किशोरसिंहको तो उनके ननिहाल जयसलमेर भेजदिया, और आनन्दसिंह व रायसिंहको देवीसिंह और मानसिंह चहुवान पहाड़ोंमें लेगये. इसके बाद मारवाड़में ज़ोर पाकर इन दोनों भाइयोंने ईडरका राज्य लेलिया; यह हाल ईडरके ज़िक्रमें लिखा जायगा; बाक़ी भाइयोंको बख़्तसिंहने मरवाडाला. महाराजा अजीतसिंहको मार डालनेके एवज़ बख़्तसिंहको क़िला नागौर और राजाधिराजका ख़िताब मिला; कुल सर्दार, जो महाराजा अभयसिंहके पास थे, वे दिल्लीसे नाराज़ होकर चले आये; बाक़ी जोधपुरसे निकल गये; और कहा, कि भंडारी खींवसी और रघुनाथको क़ैद किया जावे, क्योंकि इन लोगोंने महाराजा अजीतसिंहके मारनेकी सलाह दी थी. लाचार महाराजा अभयसिंहको ऐसा ही करना पड़ा; इस हुल्लड़में भंडारी वग़ैरह और भी आदमी मारे काटे गये, और महाराजा अभयसिंहने अपने राजपूतोंको बड़ी मुश्किलसे तावे किया.

महाराजा विक्रमी १७८७ [हि० ११४३ = ई० १७३०] में मुहम्मद-शाहके हुक्मसे गुजरातकी सूबहदारीकी सनद लेकर मारवाड़में आये, और अहमदाबादके सूबहदार सर्बलन्दख़ांसे सूबहदारी लेनी चाही; परन्तु उसने हुक्मकी तामील नहीं की; तब महाराजा फ़ौज लेकर चढ़े (१), और सिरोहीके राव उम्मेदसिंहको जा घेरा, जो महाराजाके बर्ख़िलाफ़ था; जब उसने ज़ियादह फ़ौज देखी तो अपनी बेटी और फ़ौज ख़र्च देकर पीछा छुड़ाया. वहांसे महाराजा फ़ौज समेत अहमदाबाद पहुंचे; सर्बलन्दख़ांने चार हज़ार सवार व चार हज़ार पैदलोंमेंसे पांच सौ सवार और १००० पैदल, छोटी बड़ी सात सौ तोपें व दो हज़ार मन बारूत अपने बेटे शाहनवाज़ख़ांके साथ शहर में छोड़कर ख़ुद महाराजाके मुक़ाबलेको चढ़ा.

---

(१) मिरात अहमदीमें यह हाल इस तरहपर लिखा है:- "हिज्री ११३६ ज़िल्क़ाद [वि० १७८१ श्रावण = ई० १७२४ ऑगस्ट] को नव्वाब निज़ामुल्मुल्क बहुत झगड़ोंके सबब वज़ारतका उहदह छोड़कर हुज़ूरकी इजाज़त बग़ैर दक्षिणको चलदिया, तो इस वज्हसे कि मुग़लियह सल्तनतमें वज़ीर नहीं बदला जाता, निज़ामुल्मुल्कको वकील मुतलक़, याने ख़ास मुसाहिब और 'आसिफ़ज़ाह' का ख़िताब देकर एतिमादुद्दौलह क़मरुद्दीनख़ां बहादुर नुस्रतजंगको

विक्रमी १७८७ आश्विन शुक्ल ७ [हि० ११४३ ता० ५ रवीउस्सानी = ई० १७३० ता० १७ ऑक्टोबर] को मूंचेड़ गांवके पास दोनों तरफ़से गोलन्दाज़ी शुरूअ् हुई, लेकिन् रात होजानेके सबब उस दिन लड़ाई बन्द रही; दूसरे दिन नव्वाब मुक़ाबलेको तय्यार हुआ, परन्तु कुछ लड़ाई होनेके बाद महाराजा पीछे हटे (१). मिरातअहमदीमें लिखा है, कि महाराजाने साबरमती नदीके पासके गांवोंमें मोर्चे जमा लिये, और भद्र क़िलेकी तरफ़ गोले चलाये; उधरसे भी चलने लगे; तीसरा दिन भी ऐसेही बीता; चौथे दिन विक्रमी आश्विन शुक्ल १० [हि० ता० ८ रवीउस्सानी = ई० ता० २० ऑक्टोबर] को सर्बलन्दखां मए अपनी जमइयतके शहरसे निकलकर लड़ा; महाराजाने भी फ़ौजके तीन हिस्से करके लड़ाई शुरूअ् की; पहिले गोलन्दाज़ी, फिर तीर, बन्दूक़, पीछे तलवारोंसे कटकर लड़े; सब दिन अच्छी तरह लड़ाई हुई; पहिले हमलेमें महाराजाकी फ़ौज हटगई, लेकिन् दूसरे वक्त मारवाड़ी सर्दारोंने नव्वाबकी फ़ौजको बर्बाद किया, और तोपख़ानह व फ़त्हगज नामी हाथी वगैरह लेलिया. मिरातअहमदीमें लिखा है, कि सर्बलन्दख़ांके पास कुल चार सौ सवार बाक़ी रहगये थे; लेकिन् यह तादाद महाराजाको मालूम नहीं हुई, जिससे हमलह नहीं किया, रात होजानेसे नव्वाब शहरमें आगया.

क़ाइम मक़ाम वज़ीर किया. मुबारिज़ुलमुल्क सर्बलन्दख़ांको, जिसका मन्सब सात हज़ारी ज़ात, सात हज़ार सवार दो अस्पह सिह अस्पह था, गुजरातकी सूबहदारी आसिफ़जाहसे उतारकर इनायत कीगई. हिज्री ११४३ [वि० १७८७ = ई० १७३०] में जब कि बहुतसा सामान हासिल करके मुबारिज़ुलमुल्कने बादशाहकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ सूबहका इन्तिज़ाम अच्छी तरह न किया, और अमीरुल्-उमरा समसामुद्दौलह बादशाही मुसाहिबसे हर तरह बरख़िलाफ़ी रहने लगी, और फ़ौजके सवार मौक़ूफ़ कियेजानेका हुक्म दियागया, तो मुबारिज़ुलमुल्कने कई बार हुज़ूरमें इस्तिअ्फ़ा भेजा, जिसपर एतिमादुद्दौलह वज़ीरने उसकी तरफ़से बादशाहका दिल फेरकर जोधपुरके महाराजा अभयसिंहको, जो उस वज़ीरसे मिलावट रखता था, गुजरातकी सूबहदारीके लिये तज्वीज़ किया; और उसको बादशाही हुज़ूरसे ख़ास ख़िल्अ़त, जवाहिर, एक हाथी, अठारह लाख रुपया ख़ज़ानह, पचास तोपोंका तोपख़ानह और दूसरा सामान फ़ौज वग़ैरह, रवानगीके वक्त दिलवाया."

(१) मिरातअहमदीमें महाराजाका पीछा हटना २ या ३ कोस, और मारवाड़की तवारीख़में ५०० या सात सौ क़दम लिखा है.

दूसरे दिन फिर लड़ाई शुरूअ् हुई, तब सुलहका पैग़ाम होने लगा, नींबाजके ठाकुर ऊदावत अमरसिंहसे बात चीत हुई. मिरातअहमदीमें दूसरे दिन सुलह होना लिखा है, और मारवाड़की तवारीख़में ११ के दिन लड़ाई होकर १२ को सुलह होना तहरीर है; लेकिन् यह दूसरा लेख सिल्सिले वार और तारीख़ वार है; इसलिये यही सहीह मालूम होता है. सुलह इस तरहपर ठहरी, कि शहरपर महाराजाका क़ब्ज़ह कराया जावे, बारबर्दारी देकर नव्वाबको अहमदाबादके इलाक़ेसे बाहर पहुंचा देवें, और महाराजासे बराबरकी मुलाक़ात हो. दूसरी बातोंमें तो मिरातअहमदी और मारवाड़की तवारीख़में ज़ियादह फ़र्क़ नहीं है; लेकिन् मिरात-अहमदीमें बारबर्दारी और एक लाख रुपया महाराजाकी तरफ़से नव्वाबको देना, दूसरे, नव्वाबका मुलाक़ातको आना, महाराजाका पेश्वाई करके अपने डेरेमें लाना, पगड़ी बदल भाई होकर मिलना, और महाराजाके भाई बरूतसिंहका तीरकी चोटके ज़रूमके सबब नहीं आना लिखा है; लेकिन् मारवाड़की तवारीख़में एक लाख रुपया देनेका ज़िक्र नहीं, और महाराजाका अपने भाई समेत घोड़ोंपर चढ़कर खड़े खड़े मुलाक़ात करना लिखा है; पगड़ी बदल भाई होना दोनों जगह तहरीर है. महाराजाने नव्वाबके साथ नींबाजके ठाकुर अमरसिंह ऊदावतको भेजा, और बारबर्दारी देकर पहुंचाया. इस लड़ाईमें दोनों तरफ़के सैकड़ों आदमी मारेगये, और महाराजा वहांके सूबहदार बने.

इस वक़्त महाराजाने बादशाही तोपख़ानह, माल, अस्बाब, बहुत कुछ जोधपुर पहुंचा दिया; और सब मारवाड़ियोंने गुजरातियोंको तंग करके रुपये पैदा किये; हुकूमत क्या लुटेरापन था. अगर महाराजा अच्छा इन्तिज़ाम करते, तो शायद निज़ामुल्मुल्ककी तरह गुजरातका मुल्क इन्हींके क़ब्ज़ेमें रहजाता, उन्होंने गुजरातके कुछ मुल्की ज़िले मारवाड़में मिलालिये थे. चारण कविया करणीदान (१) ने सर्बलन्दख़ांकी लड़ाईका ग्रन्थ विरदशृंगार नाम बनाया, जिसपर महाराजाने खुश होकर उसे लाख पशाव और आलावास गांव और कविराजका ख़िताब दिया, और आप उसकी जलेबमें चले, उस समयका मारवाड़ी ज़बानमें एक दोहा इस तरह पर हैः-

---

(१) कविया करणीदान मेवाड़में सूलवाड़ा गांवका रहने वाला था, उसका ज़िक्र महाराणा संग्रामसिंहके हालमें लिखा जायगा.

दोहा.

अस चढियो राजा अभो कवि चाढे गजराज ॥
पोहर हेक जळेवमें मोहर हले महाराज ॥ १ ॥

विक्रमी १७८८ [हि० ११४४ = ई० १७३१] में बाजीराव पेश्वाने चौथ लेनेके इरादेसे बड़ौदेपर क़ब्ज़ा करलिया; महाराजाने फ़ौज भेजी, और दक्षिणसे निज़ामुल्मुल्क महाराजाकी मददको सूरत तक आया; यह सुनकर बाजीराव घबराया, और महाराजासे सुलहके साथ मुलाक़ात करके वापस चला गया; महाराजाने इस मददके एवज़ निज़ामुल्मुल्कको शुक्रिया भेजा. विक्रमी १७९० [हि० ११४६ = ई० १७३३] में महाराजा अपने नाइब भंडारी रत्नसीको अहमदाबादमें छोड़कर जोधपुर आये, और वहांसे फ़ौज लेकर बीकानेरपर चढ़े; नागोरका महाराज वख़्तसिंह भी इनके साथ था; लेकिन् दोनों भाई भागकर पीछे चले आये. इस लड़ाईका हाल बीकानेरके ज़िक्रमें लिखागया है. फिर ज़िले अजमेर हुरड़ा गांवके मक़ामपर महाराणा जगत्सिंह दूसरे, महाराजा जयसिंह, महाराज वख़्तसिंह, महाराव दुर्जनसालने इकट्ठे होकर मुसल्मानोंकी बादशाहत और मरहटोंके लिये सलाह की, जिसका हाल महाराणा जगत्सिंह दूसरेके बयानमें लिखा जायगा. इस मुलाक़ातमें महाराणाके लाल डेरे देखकर महाराजा अभयसिंहने भी अपने लिये उसी रंगके डेरे खड़े करवालिये. यह बात अभयसिंहकी शिकायतमें मुहम्मदशाहके कान तक पहुंची; तब बादशाहने जोधपुरके वकील भंडारी अमरसीको बुलाकर जवाब पूछा, जिसपर भंडारीने कहा, कि महाराजा अभयसिंहने मरहटोंको रोकनेके लिये सब राजाओंको इकट्ठा किया था, और इस बातपर तक़रार हुई, कि किसके डेरेमें बैठकर सब राजा सलाह करें; इस हुज्जतको मिटानेके लिये महाराजाने बादशाही दीवान-ख़ानह लाल रंगका तय्यार करवाकर वहां सबको इकट्ठा किया. इस बातपर भंडारीने अपनी चालाकीसे क़ुसूरकी सज़ाके एवज़ महाराजाको ख़िल्अ़त और ख़ातिरीका फ़र्मान भिजवाया.

विक्रमी १७९४ [हि० ११५० = ई० १७३७] में अहमदाबादकी सूबहदारी ज़ुल्म करनेके सबब महाराजासे उतार लीगई, और आपसमें महाराजा व वख़्तसिंहके नाइत्तिफ़ाक़ी हुई. विक्रमी १७९७ [हि० ११५३ = ई० १७४०] में महाराजाने दोबारह बीकानेरपर चढ़ाई की; इस मौक़ेपर महाराणा २ जगत्सिंहके कुंवर प्रतापसिंह दूसरे उदयपुरसे जोधपुर आये, और महाराजा अजीतसिंहकी बेटी

सौभाग्यकुंवरको विवाहकर उदयपुर चले गये. अभयसिंह लड़ाई झगड़ेमें थे, इससे नहीं आसके. इन्होंने बीकानेरके राजा ज़ोरावरसिंहको घेर रक्खा था, ज़ोरावरसिंहने जयपुर व नागौरके महाराजाओंसे मदद चाही. महाराज बख़्तसिंहने मेड़तेपर क़ब्ज़ा करलिया, और महाराजा जयसिंह भी जयपुरसे चले; तब महाराजा अभयसिंह भागकर जोधपुर चलेआये; लेकिन् दूसरी तरफ़ बड़ी भारी फ़ौज थी, क्योंकि महाराजा जयसिंहके साथ और भी राजा फ़ौज समेत शामिल थे; जोधपुरका क़िला घेर लिया गया. महाराजा अभयसिंहने बीस लाख रुपये फ़ौज ख़र्च देकर पीछा छुड़ाया; और महाराजा जयसिंह लौटे. यह हाल बीकानेरकी तवारीख़में लिखागया है. इसी वर्षमें महाराजा अभयसिंहने अपने भाई बख़्तसिंहसे मिलावट करके जयपुरकी तरफ़ चढ़ाई की; महाराजा अभयसिंह तो मेड़तेमें थे, और बख़्तसिंहने आगे जाकर गगवाणा गांवमें महाराजा जयसिंहसे मुक़ाबला किया. महाराजा अभयसिंहने लड़ाईके समय शामिल होनेको कहा था, परन्तु रीयांके ठाकुर शेरसिंह मेड़तिया और कविराज करणीदानने महाराजासे कहा, कि आपके बेटे रामसिंह कम अक़्ल हैं, जिनसे बख़्तसिंह राज छीन लेंगे, अब जयपुर वालोंसे उन्हें लड़ने दीजिये; अगर फ़त्ह हुई, तो भी ठीक, और जो बख़्तसिंह मारेगये, तो खटका मिटा. इससे महाराजा अभयसिंह रीयांमें ठहर गये, और महाराज बख़्तसिंह जयपुरकी फ़ौजसे ख़ूब लड़े, यहां तक कि फ़ौजके पांच हज़ार आदमियोंमेंसे बहुत थोड़े आदमी बाक़ी रहगये; और जयपुरकी फ़ौजकी हरावलमें शाहपुरेके राजा उम्मेदसिंह भी थे, उनके चार सौ आदमी इस झगड़ेमें काम आये. महाराज बख़्तसिंह भागकर पुष्करमें महाराजा अभयसिंहसे आमिले, और उनकी पूजाकी हथनी वग़ैरह सामान शाहपुरेके राजाने लूटकर महाराजा जयसिंहको देदिया. बख़्तसिंह नागौर गये; महाराजा अभयसिंह और जयसिंहमें इत्तिफ़ाक़ हुआ, और दोनों अपनी अपनी राजधानीको चले गये. यह लड़ाई विक्रमी १७९८ आषाढ़ कृष्ण ९ [हि० ११५४ ता० २३ रबीउल्अव्वल = ई० १७४१ ता० ९ जून] को हुई.

विक्रमी १८०० आश्विन शुक्ल १४ [हि० ११५६ ता० १३ शश्र्वान = ई० १७४३ ता० ३ ऑक्टोबर] को जयपुरके महाराजा सवाई जयसिंहका देहान्त होनेपर महाराजा अभयसिंहने फ़ौज भेजकर अजमेरपर क़ब्ज़ा करलिया; तब जयपुरके महाराजा ईश्वरीसिंहने अजमेरकी तरफ़ चढ़ाई की, और अभयसिंह भी महाराज बख़्तसिंह समेत मुक़ाबले के लिये पहुंचे; परन्तु बीचके लोगोंने मेल करादिया. इस सुलहसे बख़्तसिंह नाराज़

होकर नागौर चला गया, तो भी अजमेर अभयसिंहके क़ब्ज़ेमें रहा, और दोनों राजा अपनी अपनी राजधानीको चले गये.

विक्रमी १८०३ [हि० ११५९ = ई० १७४६] में बीकानेरपर फ़ौज समेत भंडारी रत्नसीको भेजा; यह भंडारी वहां मारा गया, जिसका हाल बीकानेरके इतिहासमें लिखा गया है. महाराजा बख़्तसिंह और अभयसिंहमें नाइत्तिफ़ाक़ी रही, विक्रमी १८०६ आषाढ़ शुक्ल १५ सोमवार [हि० ११६२ ता० १४ रजब = ई० १७४९ ता० ३० जून] को महाराजा अभयसिंहका अजमेरमें देहान्त हुआ; इनके साथ २ ख़वास व ११ पर्दायत पुष्करमें सती हुईं, और जोधपुरमें ६ राणी व १४ ख़वास पर्दायती वग़ैरह जलीं.

यह महाराजा सुलह पसन्द, कारगुज़ार नौकरके क़द्रदान और बहादुर थे, लोगोंके कहनेपर अमल करलेते थे; परन्तु बुद्धिमान और फ़य्याज़ होनेके सबब रियासतमें नुक़्सान नहीं आया; और जो कभी कुछ हुआ, तो मिटाते रहे. इनके एकपुत्र रामसिंह थे, जो गद्दीपर बैठे.

३६ महाराजा रामसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १७८७ प्रथम भाद्रपद कृष्ण १० [हि० ११४३ ता० २४ मुहर्रम = ई० १७३० ता० ७ ऑगस्ट] को हुआ था, यह अक़्लसे ख़ारिज थे, गद्दीपर बैठते ही नालायक़ और कमीन आदमियोंको पास रखकर दरजे और जागीरें देने लगे, जिनमेंसे एक अमीड़ा डोम भी उनका मर्ज़ीदान था. इन्होंने महाराज बख़्तसिंहको कहलाया, कि जालौर छोड़दो, वर्नह नागौर छीन लिया जायगा. इसके बाद महाराजा रामसिंह मेड़ते गये, वहां रीयांके ठाकुर शेरसिंहसे कहा, कि तुम अपना गुलाम विजिया हमको देदो; मगर शेरसिंहने नहीं दिया, और रीयां चला गया. महाराजाने नागौरपर चढ़ाई की, तो दूसरे लोगोंने समझाया, और कहा, कि शेरसिंहको बुलाना चाहिये; तब महाराजा आप रीयां जाकर शेरसिंहको लेआये, और विजियाको अपना मुसाहिब बनाया. इसके बाद आउवाके ठाकुर चांपावत कुशलसिंह और आसोपके ठाकुर कूंपावत कन्हीरामको भी नादानीकी बातोंसे नाराज़ करके अपने देशसे निकल जानेका हुक्म दिया. रीयांके ठाकुर शेरसिंह मेड़तियासे कुशलसिंहकी ज़बानी तक्रार हुई, जिससे चांपावत, कूंपावत,

व ऊदावत वग़ैरह बिगड़कर नागौर चले गये. पोहकरणके ठाकुर देवीसिंह व पालीके ठाकुर पेमसिंह वग़ैरह भी इसी तरह नाराज़ होकर नागौर पहुंचे.

इस बखेड़ेसे महाराजा रामसिंह और बख़्तसिंहमें कई लड़ाइयां हुईं. जयपुरके महाराजा ईश्वरीसिंह और बीकानेरके राजा गजसिंहके बड़े भाई अमरसिंह वग़ैरह महाराजा रामसिंहके मददगार, और बीकानेरके राजा और मारवाड़के उमराव चांपावत व कूंपावत वग़ैरह महाराज बख़्तसिंहके तरफ़दार होगये; आपसमें जो लड़ाई हुई, उसमें अमरसिंह वग़ैरह कई सर्दार मारेगये. इसके बाद मेल होगया, महाराजा रामसिंह मेड़ते, और बख़्तसिंह नागौर पहुंचे, बाक़ी मददगार भी अपने अपने ठिकानोंको चले गये; लेकिन् मारवाड़ी उमराव सब नागौरमें थे, मौक़ा देखकर महाराज बख़्तसिंहको चढ़ा लाये. इधर महाराजा रामसिंहने भी मेड़तिया शेरसिंह वग़ैरह सर्दारोंको लेकर मुक़ाबलह किया; दोनों तरफ़के राजपूत दिल खोलकर खूब लड़े; विक्रमी १८०७ कार्तिक शुक्ल ९ [हि० ११६३ ता० ७ ज़िल्हिज = ई० १७५० ता० ८ नोवेम्बर] को यह लड़ाई हुई, जिसमें महाराजा रामसिंहकी तरफ़के नीचे लिखे सर्दार मारेगये:-

१ रीयांका ठाकुर शेरसिंह मेड़तिया, २ आलणियावासका मेड़तिया ठाकुर सूरजमल्ल, ३ बलूंदेका चांदावत ठाकुर श्यामसिंह, ४ बीखर्णियाका ठाकुर डूंगरसिंह, ५ सेवरियाका ठाकुर सुरतानसिंह, ६ शेरसिंहका कोठारी सुजाण और कर्मसोतोंके तीन आदमी काम आये; ७ मीठड़ीका ठाकुर शक्तिसिंह, अपने बेटे नाहरसिंह समेत मारागया. ८ कुचामणका ठाकुर ज़ालिमसिंह, ९ देधाणाका ठाकुर अनूपसिंह, १० बख़्तसिंह जैतमालोत.

महाराज बख़्तसिंहकी ओरसे आउवाका ठाकुर कुशलसिंह व बिठोराका भाटी बख़्तसिंह काम आया. यहांसे महाराज बख़्तसिंहको बीकानेरके राजा गजसिंह व कृष्णगढ़के राजा बहादुरसिंह ले निकले, और सोजतपर क़ब्ज़ह करलिया. पीछेसे महाराजा रामसिंह भी फ़ौज लेकर पहुंचे, महाराज बख़्तसिंहने विक्रमी १८०८ वैशाख कृष्ण ९ [हि० ११६४ ता० २३ जमादियुल् अव्वल = ई० १७५१ ता० २१ एप्रिल] को दूसरा हमलह रामसिंहकी फ़ौजपर किया; इस लड़ाईमें रामसिंहकी तरफ़से कुचामणका ठाकुर ज़ालिमसिंह मए दो बेटों और सत्तर आदमियोंके मारागया, और दूसरी तरफ़के भी बहुतसे बहादुर राजपूत लड़मरे. इसी तरह तीसरी लड़ाई हुई, आख़िरकार महाराजा रामसिंह तो मेड़तेमें थे, और महाराज बख़्तसिंहने विक्रमी १८०८ श्रावण कृष्ण १२ [हि० ११६४ ता० २६ शअ्बान = ई० १७५१ ता० २१ जुलाई] को जोधपुरपर क़ब्ज़ह किया.

३७ महाराजा बख़्तसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १७६३ भाद्रपद कृष्ण ८ [हि० १११८ ता० २२ जमादियुल् अव्वल = ई० १७०६ ता० १ सेप्टेम्बर] को हुआ था. इन्होंने महाराजा गजसिंह और बहादुरसिंहको रुख़्सत दी. महाराजा रामसिंहके पास जो आदमी थे, वे आपाजी सेंधियासे दस बारह हज़ार फ़ौज मददके लिये लाये; और अजमेरपर क़ब्ज़ा करलिया. महाराजा बख़्तसिंह जोधपुरसे चढ़े, और अजमेर पहुंचे; वहां जाली काग़ज़ बनाकर मरहटोंकी फ़ौजमें डलवा दिया, जैसे कि शेरशाहने राव मालदेवके साथ किया था. मरहटे रामसिंहको लेभागे, और मन्दसौर पहुंचे. बख़्तसिंहने मरहटोंसे लड़कर मालवा लेनेका इरादह किया, और जयपुरसे महाराजा माधवसिंहको बुलाया; सोनोली गांवमें दोनोंका मिलाप हुआ. विक्रमी १८०९ भाद्रपद शुक्ल १३ [हि० ११६५ ता० १२ ज़िल्क़ाद = ई० १७५२ ता० २२ सेप्टेम्बर] को महाराजा बख़्तसिंहका वहीं देहान्त होगया. मशहूर है, कि जयपुरके राजा माधवसिंहने ज़हर दिलवाया था. बख़्तसिंहने अपने बाप महाराजा अजीतसिंहको मारा, इसलिये चारणोंने मारवाड़ी शाइरीमें उन्हें ख़ूब बदनाम किया, जिससे बख़्तसिंहने चारणोंके कई गांव ज़ब्त करलिये. इस वक़्त महाराजा बख़्तसिंहकी बेमारीमें पोहकरणके ठाकुर देवीसिंहने चारणोंके एवज़ अपने हाथपर संकल्प लेकर वे गांव बहाल करवा दिये. इनके साथ ५ राणी व १० पर्दायत वग़ैरह जोधपुरमें सती हुई.

यह महाराजा अव्वल दरजेके बहादुर, सख़्त मिज़ाज, ज़मीनके लोभी, ज़ालिम, फ़य्याज़ और दग़ाबाज़ थे. क़ौलका क़ियाम अपने मतलबके साथ रखते थे. इनके थोड़ेसे राज्य करनेसे ही मारवाड़ी लोगोंका नाकमें दम आगया था; कई आदमियोंके हाथ पैर कटवाये, और अक्सरको मरवाडाला; ईश्वर ऐसे बे रहम राजाके हाथमें लाखों मनुष्योंका इन्तिज़ाम ज़ियादह नहीं रखता. इनके बाद कुंवर विजयसिंह राज्यके मालिक हुए.

३८ महाराजा विजयसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १७८६ मार्गशीर्ष कृष्ण ११ बृहस्पति वार [हि० ११४२

ता० २५ रबीउस्सानी = ई० १७२९ ता० १६ नोवेम्बर] को हुआ था. कृष्णगढ़के राजा बहादुरसिंह और बीकानेरके राजा गजसिंह विजयसिंहके मददगार थे, और रूपनगरके महाराजा सामन्तसिंहके बेटे सर्दारसिंह महाराजा रामसिंहके साथ आपाजी सेंधियाको ६० हज़ार फ़ौज समेत मारवाड़पर चढ़ा लाये; महाराजा विजयसिंह अपनी चालीस हज़ार फ़ौज लेकर जोधपुरसे चले; और बहादुरसिंह व महाराजा गजसिंह भी आमिले; मेड़तेके पास गांव गांगारड़ामें विक्रमी १८११ आश्विन कृष्ण १३ [हि० ११६७ ता० २७ ज़िल्क़ाद = ई० १७५४ ता० १५ सेप्टेम्बर] को सख़्त लड़ाई हुई; आख़िर महाराजा विजयसिंह शिकस्त खाकर मेड़तेमें जाठहरे. इस लड़ाईमें नीचे लिखे हुए सर्दार काम आये :-

चांपावत राठौड़.

(१) पालीका ठाकुर पेमसिंह.
(२) राठौड़ लालसिंह.
(३) राठौड़ अर्जुनसिंह.
(४) सर्वाड़का ठाकुर मुह्कमसिंह.
(५) मांडावासका ठाकुर जैतसिंह.
(६) धांदियाका ठाकुर उदयसिंह.
(७) खाटूका ठाकुर बहादुरसिंह.
(८) रणेलका ठाकुर लखधीर.
(९) हैबतसरका ठाकुर कीर्तिसिंह.
(१०) भैरूंवासका ठाकुर सवाईसिंह.
(११) धाम्लीका ठाकुर नवासिंह.
(१२) मांडियाका ठाकुर ज़ोरावरसिंह.
(१३) गढ़ियाका ठाकुर शुभकरण.
(१४) जैतपुराका ठाकुर ज़ोरावरसिंह.
(१५) बरलेणका ठाकुर भोमसिंह.

राठौड़ मेड़तिया.

(१६) लूणवाका ठाकुर रायसिंह.
(१७) लूणवाका सूरसिंह.
(१८) मारोटका ठाकुर मोतीसिंह.
(१९) खारियाका जुझारसिंह.

राठौड़ महेचा.

(२०) थोबका ठाकुर सर्दारसिंह.

भाटी.

(२१) रामपुरेका ठाकुर शुभकरण.
(२२) मेड़ावासका ठाकुर पेमसिंह.
(२३) कंटालियाका ठाकुर बख़्तसिंह.
(२४) कीटनोदका ठाकुर महेशदास.
(२५) खारियाका ठाकुर कीर्तिसिंह.
(२६) जैतसिंह.
(२७) दौलतसिंह.
(२८) चहुवान लालसिंह.
(२९) शैख़ावत दौलतसिंह, लाडखानी.

और तोपख़ानेका अफ़्सर बहादुरसिंह चांदावत भी इस लड़ाईमें बहादुरीके साथ काम आया. इस लड़ाईमें बीकानेरके महाराजा गजसिंहके ३०० आदमी मारेगये, और १०० घायल हुए; कृष्णगढ़के महाराजा बहादुरसिंहके भी सौ आदमी मारेगये.

महाराजा विजयसिंह मेड़तेमें भी न ठहरने पाये, और भागकर नागौर गये; मरहटी फ़ौजने पीछा किया, और नागौर जा घेरा; महाराजा रामसिंह कुछ मरहटी फ़ौज लेकर जोधपुर जा पहुंचे, और क़िला घेर लिया; महाराजा विजयसिंहने झगड़ा मिटानेको उदयपुरके महाराणा राजसिंह २ व सलूंबरके रावत् जैतसिंहको बुलाया था, वह आपाजी सेंधियाकी फ़ौजमें ठहरा; इसी अर्सेमें चहुवान साईंदासकी जमइयतके खोखर केसरख़ां और एक गहलोत सर्दार दोनों आदमियोंने महाराजाके हुक्मसे मरहटी फ़ौजमें जाकर बनियेकी दूकान की, एक दिन यह दोनों बनावटी बनिये आपसमें ऐसे लड़े, कि देखने वालोंको हंसी आती थी, वे दोनों लड़ते झगड़ते आपाजीकी ड्योढ़ीपर पहुंचे, उन्होंने भी इनकी लड़ाईका हाल सुनकर इन्साफ़के वास्ते अन्दर बुलाया; ये दोनों लड़ते लड़ते आपाजीपर जा गिरे, और पेशक़ब्ज़ोंसे उनका काम तमाम करके ख़ुद भी मारेगये. मरहटोंने सलूंबरके रावत् जैतसिंहपर हमलह किया, वह अपनी जमइयत समेत बहादुरीके साथ मारागया, मरहटोंने फिर भी लड़ाई न छोड़ी; तब महाराजा विजयसिंह अपने राजपूतोंको क़िलेमें छोड़कर बीकानेर गये, वहांसे महाराजा गजसिंहको साथ लेकर जयपुर पहुंचे; लेकिन् महाराजा माधवसिंह १ ने विजयसिंहके साथ दग़ा करना चाहा, तब वे वहांसे लौटकर बीकानेर चले आये. मरहटोंसे इस शर्तपर सुलह हुई, कि अजमेर और इक्यावन लाख रुपया फ़ौज ख़र्चका उनको दिया जाय; जोधपुर महाराजा विजयसिंहके, और मेड़ता महाराजा रामसिंहके क़ब्ज़ेमें रहे; बाक़ी आधा आधा मुल्क बांट लिया जाय. इसके बाद महाराजा बीकानेरसे जोधपुर आये, विक्रमी १८१२ कार्तिक शुक्ल १५ [हि० ११६९ ता० १४ सफ़र = ई० १७५५ ता० १९ नोवेम्बर] को यह झगड़ा ख़त्म हुआ.

विक्रमी १८१३ [हि० ११६९ = ई० १७५६] में महाराजा रामसिंह जयपुर शादी करने गये, पीछेसे मेड़ता, सोजत और जालौर वग़ैरह क़िलोंपर महाराजा विजयसिंहने क़ब्ज़ह करलिया; यह सुनकर मरहटी फ़ौजें फिर मारवाड़पर आईं; महाराजा भी उनके पीछे २ दौड़ते थे; लेकिन् मारवाड़के सर्दार मरहटोंसे मिलगये, जिससे देशकी बर्बादी हुई; महाराजा भी दिक़ होकर जोधपुरमें जा बैठे, सर्दार बिना इजाज़त अपने अपने घर चलेगये, जालौर मरहटोंने लेलिया, और मेड़तेपर महाराजा

रामसिंहका क़ब्ज़ा होगया. खाटू वगै़रह के जागीरदारोंने मुल्कमें ख़राबी फैलाई; तब जग्गू धाय भाईने जोधपुरसे रवानह होकर खाटू व मगरासर वगै़रह जागीरदारोंको सज़ा दी. पोहकरणके ठाकुर देवीसिंहको महाराजाने जोधपुर बुलाया, पर वह न आया, और दूसरे सर्दारोंको एकट्ठाकरके फ़सादपर तय्यार हुआ, महाराजा खुद गये, और उन सर्दारोंको मना लाये, लेकिन् सर्दार लोग मग़रूर होगये, और महाराजाको कहलाया, कि स्वामी आत्मारामको क़िलेसे निकाल दो. यह बात महाराजाको बहुत बुरी मालूम हुई, लेकिन् इसी अर्सेमें उक्त स्वामीका देहान्त होगया. सर्दारोंको जग्गू धाय भाई व गोवर्धनखींचीने कहलाया, कि आत्मारामके मरजानेसे महाराजा बहुत उदास हैं; इसलिये आप लोग आकर तसल्ली दें. तब सर्दार लोग क़िलेपर आये, और उनकी जमइयतोंको बाहर रोक दिया, कि स्वामी आत्मारामकी लाशके दर्शनोंको राणियां आवेंगी. जिन सर्दारोंको विक्रमी १८१६ फाल्गुन् कृष्ण १ [हि० ११७३ ता० १५ जमादियुस्सनी = ई० १७६० ता० ३ फ़ेब्रुअरी] को महाराजाने गिरिफ़्तारीके बाद क़ैद किया, उनके नाम ये हैंः-

(१) पोहकरणका ठाकुर देवीसिंह. (२) आसोपका ठाकुर छत्रसिंह.
(३) रासका ठाकुर केसरीसिंह. (४) नींबाजका ठाकुर दौलतसिंह.

यह केसरीसिंहका बेटा नींबाज गोद गया था. क़ैद होजानेके बाद उसी वक़्त किसी कविने मारवाड़ी ज़बानमें यह दोहा कहा थाः-

दोहा.

केहर देवो छत्रशल । दौलो राज कुंवार ॥
मरते मोड़े (१) मारिया । चोटी वाला चार ॥

देवीसिंह छः दिनके बाद और छत्रसिंह एक महीने बाद मरगये, दौलतसिंहको बच्चा जानकर छोड़ दिया, केसरीसिंह क़ैदमें रहा, जो दो वर्षके बाद मरगया. देवीसिंहके बेटे सबलसिंह वगै़रह चांपावतोंने मारवाड़में लूट मार मचाई; महाराजा विजयसिंहकी फ़ौजने मेड़तेपर दख़्ल किया, और रामसिंहने राठौड़ सर्दारोंके साथ मेड़तेको घेर लिया; लेकिन् फ़ौज समेत जग्गू धाय भाईके आजानेसे भाग गया, और कितने ही सर्दार महाराजा विजयसिंहसे आमिले; चांपावत फ़साद करते रहे, एक लड़ाईमें पोहकरणका ठाकुर सबलसिंह मारा गया, जिससे महाराजा

---

(१) मोड़ेसे मुराद सामी आत्माराम है.

विजयसिंहकी ताक़त बढ़गई; इन्होंने अजमेरके ज़िलेमें फ़ौज भेजकर रुपये वुसूल किये, और अजमेर जाघेरा, मरहटे क़िले बीटलीपर चढ़गये. यह सुनकर माधवराव सेंधिया फ़ौज लेकर आपहुंचा; तब मारवाड़की फ़ौज भागकर अपने देशको चली आई. महाराजाने विक्रमी १८१८ [हि० ११७४ = ई० १७६१] में नव लाख रुपया माधवराव सेंधियाको देना करके पीछा छुड़ाया.

विक्रमी १८२१ श्रावण [हि० ११७८ सफ़र = ई० १७६४ ऑगस्ट] में जग्गू धाय भाई मरगया, और विक्रमी १८२२ [हि० ११७९ = ई० १७६५] में माधवराव सेंधियाके आनेकी ख़बर लगी, तब बारहठ करणीदानको भेजा, जिसने तीन लाख रुपया देकर उसको मन्दसौरसे आगे न बढ़ने दिया. इन्हीं दिनोंसे महाराजा विजयसिंह नाथद्वारेके गुसाईंको मानने लगे; जानवर मारना और शराब निकालना बन्द किया. इसी वर्षके कार्तिक शुक्ल १ [हि० ता० २९ रबीउस्सानी = ई० ता० १४ ऑक्टोबर] को नाथद्वारे आये, और मार्गशीर्ष में सर्दारगढ़के ठाकुर सर्दारसिंहके यहां शादी करके मारवाड़को गये. विक्रमी १८२७ [हि० ११८४ = ई० १७७०] में उदयपुरके महाराणा अरिसिंहसे गोढवाड़का पर्गनह महाराजा विजयसिंहको इस शर्तपर मिला, कि वे तीन हज़ार सवार व पैदलोंकी फ़ौज नाथद्वारेमें महाराणाकी तावेदारीके लिये रक्खें; और रत्नसिंहको, जो कुम्भलगढ़में महाराणा बना है, निकाल देनेकी कोशिश करें; डेढ़ वर्ष तक यह फ़ौज नाथद्वारेमें रही थी; वह जगह नाथद्वारेमें अब तक फ़ौजके नामसे प्रसिद्ध है. उस फ़ौजमें सिंघवी कामदार मुसाहिब था, जिसकी औलाद अब तक नाथद्वारेमें मौजूद है. महाराजा विजयसिंह, बीकानेरके महाराजा गजसिंह और बहादुरसिंह विक्रमी १८२८ माघ [हि० ११८५ ज़िल्क़ाद = ई० १७७२ फ़ेब्रुअरी] में नाथद्वारे आये, और महाराणा अरिसिंहसे मिलकर गोढवाड़के पर्गनहकी बाबत बात चीत की; लेकिन् महाराजा विजयसिंहने टाला टूलीका जवाब दिया, तो सब राजा अपनी अपनी राजधानियोंको चलेगये.

विक्रमी १८२९ [हि० ११८६ = ई० १७७२] में महाराजा रामसिंहका जयपुरमें इन्तिक़ाल हुआ (१), तब सांभरके पर्गनहपर जो उनके क़ब्ज़ेमें था, महाराजा विजयसिंहने क़ब्ज़ह करलिया. विक्रमी १८३१ [हि० ११८८ = ई० १७७४] में महाराजाने आउवाके ठाकुर जैतसिंहको जोधपुरके

---

(१) मारवाड़की ख्यातमें एक जगह महाराजाका इन्तिक़ाल मन्दसौरमें होना लिखा है.

क़िलेमें बुलाकर मरवा डाला. विक्रमी १८३४ [हि० ११९१ = ई० १७७७] में रायपुरके ठाकुरको फ़ौज भेजकर निकालदिया, और जागीर छीन ली. सिंघवी भीमराज फ़ौज लेकर महाराजाकी तरफ़से चढ़ा, और मरहटोंसे खूब लड़ाइयां कीं. कृष्णगढ़का राजा प्रतापसिंह माधवराव सेंधियासे मिलगया, जिससे महाराजा विजयसिंहने फ़ौज भेजकर तीन लाख रुपया लेलिया, और अजमेर भी मारवाड़में शामिल किया.

महाराजा गुलाबराय पासबानके कहनेपर चलते थे, इनको जहांगीर और नूरजहांका नमूना कहना चाहिये. माधवराव सेंधिया फ़ौज बनाकर राजपूतानाकी तरफ़ चला, तंवरोंकी पाटनके पास जयपुर और जोधपुरकी फ़ौजने मुक़ाबलह किया; जयपुर वालोंने माधवरायसे मेल करलिया, जिससे जोधपुरकी फ़ौजका बहुत नुक़्सान हुआ, जिसका जिधरको मुंह उठा, भागा और जान बचाई; बहुतसे मारेगये. मरहटोंने अजमेर छीन लिया, और मारवाड़में घुसे, मेड़तेके पास सिंघवी भीमराजसे मुक़ाबलह हुआ, जो महाराजाका फ़ौज मुसाहिब था; बहुतसे सर्दार और आदमी मारेगये. यह ख़बर सुनकर महाराजाने अपने ज़नाने और छोटे मोटे बाल बच्चोंको जालौर भेजदिया, और पासबान गुलाबराय महाराजाके पास रही.

विक्रमी १८४७ [हि० १२०४ = ई० १७९०] में महाराजाने साठ लाख रुपया और अजमेर देकर मरहटोंसे पीछा छुड़ाया, लेकिन् पासबान गुलाबराय जो चाहती कर बैठती थी, इससे सर्दारोंके दिल बिगड़े, और जोधपुरसे निकल गये. विक्रमी १८४८ फाल्गुन् कृष्ण १२ [हि० १२०६ ता० २६ जमादियुस्सानी = ई० १७९२ ता० २० फ़ेब्रुअरी] में महाराजा उन्हें लानेके लिये निकले, विक्रमी १८४९ वैशाख कृष्ण ७ [हि० १२०६ ता० २१ शअ़्बान = ई० १७९२ ता० १४ एप्रिल] को महाराजाके पोते भीमसिंहने जोधपुरके क़िलेपर क़ब्ज़ह करलिया, और कुंवर ज़ालिमसिंह उदयपुरके भान्जेने फ़साद उठाया, जिसे महाराजाने गोढवाड़का पट्टा जागीरमें देकर उदयपुर भेजदिया.

इसी वर्षके वैशाख कृष्ण १० सोमवार [हि० ता० २४ शअ़्बान = ई० ता० १७ एप्रिल] को पासबान गुलाबराय मारीगई. भीमसिंहको सिवानेके क़िलेमें भेजनेका विचार हुआ; तब उसने कई सर्दारोंको बचन लेकर अपने साथ लिया, और गांव झंवरमें पहुंचे; महाराजा जोधपुर आये. महाराजाने अखैसिंहको परदेशी लोगोंकी फ़ौज देकर भेजा, कि भीमसिंहको गिरिफ़्तार करलेवे. विक्रमी १८५० चैत्र शुक्ल ९ [हि० १२०७ ता० ८ शअ़्बान = ई० १७९३ ता० २२ मार्च] को झंवर गांवमें लड़ाई हुई, जहां कुचामणका ठाकुर सूरजमल्ल व चंदावलका

ठाकुर हरीसिंह वग़ैरह भीमसिंहकी तरफ़से मारेगये, और ठाकुर सवाईसिंह कुंवर भीमसिंहको पोहकरण लेगये. महाराजा विजयसिंहको गुलावराय पासवानके मारे जानेका वहुत रंज हुआ, और विक्रमी १८५० आपाढ़ कृष्ण १४ [हि० १२०७ ता० २८ ज़िल्क़ाद = ई० १७९३ ता० ८ जुलाई] की आधी रातके वक्त उनका देहान्त होगया. इनके साथ नागौरमें एक पासवान सती हुई, लेकिन् जोधपुरमें कोई भी नही हुई.

यह महाराजा धर्म व मतपक्षी और दयावान थे, यहां तक कि इन्होंने अपने राज्यमें जीव जन्तु मारनेकी मनादी करदी थी, और शराव गोश्त छोड़ दिया था; इनके हुक्मसे जो सर्दार वग़ैरह मारेगये, उनके मारनेके लिये इन्होंने दिलसे हुक्म नहीं दिया था, परन्तु जग्गू धाय भाई वग़ैरह इनके ख़ैरख़्वाह वड़े ज़ालिम और सख़्त थे, उन्होंने आधे हुक्मकी पूरी तामील कर वताई. यह महाराजा वहादुरी और सख़ावतमें अपने वुज़ुर्गोंसे कम न थे; इनके वक्तमें महाराजा रामसिंहके झगड़े और सर्दारोंकी ना इत्तिफ़ाक़ीसे देशकी वर्वादी होती रही, आज एक ओरसे तसल्ली हुई, कल दूसरी तरफ़का हमलह हुआ. इनपर उन लोगोंके कहनेका असर ज़ियादह होजाता था, जिनका कि इन्हें भरोसा होता. इनके सात पुत्र थे, १- कुंवर फ़तहसिंहका जन्म विक्रमी १८०४ श्रावण कृष्ण ४ [हि० ११६० ता० १८ रजव = ई० १७४७ ता० २७ जून] को हुआ था, जो विक्रमी १८३४ कार्तिक शुक्ल ८ [हि० ११९१ ता० ७ शव्वाल = ई० १७७७ ता० ८ नोवेम्वर] को मरगये. २- कुंवर भीमसिंह विक्रमी १८०६ भाद्रपद शुक्ल १० [हि० ११६२ ता० ९ शव्वाल = ई० १७४९ ता० २३ सेप्टेम्बर] को पेदा हुए, और विक्रमी १८२६ वेशाख कृष्ण १३ [हि० ११८२ ता० २७ ज़िल्हिज = ई० १७६९ ता० ५ मई] को शीतला (चेचक) की वीमारीसे मरगये; इनके पुत्र भीमसिंह विक्रमी १८२३ आपाढ़ शुक्ल १२ [हि० ११८० ता० ११ सफ़र = ई० १७६६ ता० १९ जून] को पेदा हुए. ३- पुत्र ज़ालिमसिंह विक्रमी १८०७ आपाढ़ शुक्ल ६ [हि० ११६३ ता० ५ शअ्बान = ई० १७५० ता० १० जुलाई] को जन्मे, और विक्रमी १८५५ आषाढ़ कृष्ण ५ [हि० १२१२ ता० १९ ज़िल्हिज = ई० १७९८ ता० ४ जून] को काछवलीके घाटेपर इनका देहान्त हुआ. ४- सर्दारसिंहका जन्म विक्रमी १८०९ ज्येष्ठ शुक्ल १३ [हि० ११६५ ता० १२ रजव = ई० १७५२ ता० २७ मई] को हुआ, और विक्रमी १८२६ वेशाख कृष्ण ७ [हि० ११८२ ता० २१ ज़िल्हिज = ई० १७६९ ता० २९ एप्रिल] को शीतलाकी वीमारीसे मरगये. ५- गुमानसिंह विक्रमी १८१८ कार्तिक शुक्ल ८ [हि० ११७५ ता० ७ रवीउस्सानी = ई० १७६१ ता० ६ नोवेम्बर] को पैदा हुए, और

विक्रमी १८४८ आश्विन कृष्ण १३ [हि॰ १२०६ ता॰ २७ मुहर्रम = ई॰ १७९१ ता॰ २५ सेप्टेम्बर] को इस दुन्यासे कूच किया; इनके कुंवर मानसिंह विक्रमी १८३९ माघ शुक्ल ११ [हि॰ ११९७ ता॰ १० रबीउल्अव्वल = ई॰ १७८३ ता॰ १२ फ़ेब्रुअरी] को जन्मे. ६-सावन्तसिंहका जन्म विक्रमी १८२५ फाल्गुन शुक्ल ८ [हि॰ ११८२ ता॰ ७ ज़िल्क़ाद = ई॰ १७६९ ता॰ १६ मार्च] को हुआ था, जिनको भीमसिंहने विक्रमी १८५१ [हि॰ १२०८ = ई॰ १७९४] में मरवाडाला; इनके पुत्र सूरसिंहका जन्म विक्रमी १८४१ कार्तिक शुक्ल ३ [हि॰ ११९८ ता॰ २ ज़िल्हिज = ई॰ १७८४ ता॰ १७ ऑक्टोबर] को हुआ; विक्रमी १८५१ [हि॰ १२०८ = ई॰ १७९४] में भीमसिंहने इनको भी मारडाला; ७- पुत्र शेरसिंह थे.

३१ महाराजा भीमसिंह.

भीमसिंहका जन्म विक्रमी १८२३ आषाढ़ शुक्ल १२ [हि॰ ११८० ता॰ ११ सफ़र = ई॰ १७६६ ता॰ १९ जून] को हुआ. महाराजा विजयसिंहका देहान्त होनेके वक्त यह शादी करनेको जयसलमेर गये थे, वहांपर यह ख़बर सुनते ही ठाकुर सवाईसिंहको साथ लेकर विक्रमी १८५० आषाढ़ शुक्ल ९ [हि॰ १२०७ ता॰ ८ ज़िल्हिज = ई॰ १७९३ ता॰ १८ जुलाई] को जोधपुर आये; ज़ालिमसिंह और मानसिंह भी आगये थे, जो इनका आना सुनकर पहिले उदयपुर, और दूसरे जालोर चलेगये. विक्रमी आषाढ़ शुक्ल १२ [हि॰ ता॰ ११ ज़िल्हिज = ई॰ ता॰ २१ जुलाई] को भीमसिंह गद्दीपर बैठे. इसके बाद इन्होंने अपने भाई सावन्तसिंह, शेरसिंह, प्रतापसिंह और सावन्तसिंहके बेटे सूरसिंहको मरवाडाला; लखवा मरहटाकी फ़ौज मारवाड़में आई, जिसे फ़ौज ख़र्च देकर लौटाया.

विक्रमी १८५४ [हि॰ १२११ = ई॰ १७९७] में महाराजा भीमसिंहने बख़्शी अखैराजको बड़ी फ़ौजके साथ जालोर भेजा; उसने महाराज मानसिंहको जा घेरा, लेकिन् उन्हीं दिनोंमें लोगोंके बहकानेसे महाराजा भीमसिंहने अखैराजको पकड़ बुलाया, और क़ैद करके साठ हज़ार रुपया लिया, जिससे लाचार जालोरसे फ़ौज भी लौट आई. इसी वर्षमें महाराजा विजयसिंहके छोटे बेटे ज़ालिमसिंह, जो महाराणा जगत्‌सिंह २ के दोहिते थे, उदयपुरसे फ़ौज लेकर आये; और काछवलीके घाटेपर ठहरकर मारवाड़में शोरिश मचाई. महाराजा भीमसिंहकी तरफ़से सिंघवी बनराजने फ़ौज लेकर शरियारी गांवमें डेरा किया, और ज़ालिमसिंह विक्रमी

१८५५ आषाढ़ कृष्ण ५ [हि० १२१२ ता० १९ ज़िल्हिज = ई० १७९८ ता० ४ जून] को काछबलीमें मरगया. महाराजा विजयसिंहके कुंवर फ़त्हसिंहकी बेटीकी शादी जयपुरके महाराजा प्रतापसिंहसे और महाराजा भीमसिंहकी शादी महाराजा प्रतापसिंहकी बहिनके साथ विक्रमी १८५८ आषाढ़ [हि० १२१६ रबीउल् अव्वल = ई० १८०१ जुलाई] में पुष्कर स्थानपर हुई, जिसमें दोनों राजाओंने बड़ा जल्सह किया.

इसी वर्षमें महाराज मानसिंहने पालीको लूट लिया, सिंघवी चैनकर्ण और बलूंदेका बहादुरसिंह जा पहुंचा, लड़ाई हुई, जिसमें दोनों तरफ़के बहुतसे आदमी मारेगये; और महाराज मानसिंह भागकर जालौर चलेगये. इसी वर्षमें महाराजाकी तरफ़से सिंघवी इन्द्रराजने जालौरमें मानसिंहको जा घेरा, और इसी अर्सेमें मारवाड़के सर्दारोंने सिर उठाया, लेकिन् गांव कालूमें महाराजाकी फ़ौजसे शिकस्त खाकर सब तित्तर बित्तर होगये. सिंघवी जोधराजको विक्रमी १८५९ भाद्रपद कृष्ण २ [हि० १२१७ ता० १६ रबीउस्सानी = ई० १८०२ ता० १४ ऑगस्ट] की रातमें सर्दारोंने मरवाडाला, जिसपर महाराजा सर्दारोंसे नाराज़ हुए, और कुल बाग़ी सर्दारोंको देशसे निकाल देनेका इरादह किया. इसी संवत्के मार्गशीर्ष शुक्ल १२ [हि० ता० ११ शअ्बान = ई० ता० ७ डिसेम्बर] को सिंघवी बनराजने हमलह करके जालौरपर क़ब्ज़ह करलिया; इस लड़ाईमें फ़ौजमुसाहिब सिंघवी बनराज मारागया, और मानसिंहके क़ब्ज़ेमें ख़ाली क़िला रहगया.

विक्रमी १८६० भाद्रपद शुक्ल ६ [हि० १२१८ ता० ५ जमादियुल् अव्वल = ई० १८०३ ता० २४ ऑगस्ट] को जयपुरके महाराजा प्रतापसिंहके मरनेकी ख़बर आई; तब उनकी महाराणी राठौड़, जो जोधपुरमें थी, सती हुई.

इसी संवत्के कार्तिक शुक्ल ४ [हि० ता० ३ रजब = ई० ता० २० ऑक्टोबर] को चार घड़ी दिन चढ़े महाराजा भीमसिंहका देहान्त हुआ; इनकी पीठपर एक फोड़ा हुआ था, जिसको अदीठ कहते हैं. इनके साथ आठ राणियां, उन्नीस ख़वास, पासवान और बांदियां सती हुईं; और एक आदमी चितामें कूदकर जलमरा.

यह महाराजा बड़े फ़य्याज़, बहादुर, दयावान और अपने नौकरोंकी पर्वरिश करनेवाले व इन्साफ़ पसन्द थे; इनको दूसरे ख़राब लोगोंने बहकाकर भाई भतीजोंके मारनेका प्रायश्चित्त लगाया. यह शाहजहांनी कार्रवाई गोत्र हत्या करनेकी महाराजा अजीतसिंहके इन्तिक़ालसे भीमसिंहके समय तक क़ाइम रही. अगर्चि यह महाराजा पढ़े लिखे कुछ भी न थे, लेकिन् ज़ाती अक़्लमन्द होनेके सबब

राज्यका काम दुरुस्तीके साथ करते रहे. इनके कोई पुत्र नहीं था, एक धौंकलसिंह नामी शख़्स दावेदार हुआ, जिसे महाराजा मानसिंहने बनावटी साबित किया.

४० महाराजा मानसिंह.

मानसिंहका जन्म विक्रमी १८३९ माघ शुक्ल ११ [हि० ११९७ ता० १० रबीउल् अव्वल = ई० १७८३ ता० १२ फ़ेब्रुअरी] को हुआ था. महाराजा भीमसिंहके वक्तसे फ़ौज जालौरको घेरे हुए थी, और सिंघवी बनराजके मारेजानेपर महाराजा भीमसिंहने सिंघवी इन्द्रराजको फ़ौज मुसाहिब बनाकर भेज दिया, जिससे महाराज मानसिंहने इक़ार किया, कि हम विक्रमी १८६० कार्तिक कृष्ण ३० [हि० १२२८ ता० २९ जमादियुस्सानी = ई० १८०३ ता० १६ ऑक्टोबर] दीपमालिकाको निकल जावेंगे, तुम हमें ज़ियादह तंग मत करो. इस बातपर सिंघवी इन्द्रराजने लड़ाईकी कार्रवाईको रोका.

जालौरके क़िलेमें जलन्धरनाथका एक मन्दिर था, वहांके पुजारी देवनाथने महाराज मानसिंहसे आकर कहा, कि मुझे जलन्धरनाथने हुक्म दिया है, कि छः रोज़ तक महाराज क़िलेसे न निकलें, तो इनसे यह क़िला नहीं छूटेगा, बल्कि जोधपुरके क़िलेके मालिक भी यही होंगे. परमेश्वरकी इच्छासे उसी अ़र्सेमें महाराजा भीमसिंहके देहान्तकी ख़बर सिंघवी इन्द्रराजके पास इस मत्लबसे आई, कि तुम घेरा बदस्तूर रखना, क्योंकि महाराजा भीमसिंहकी राणीको हमल है, और ठाकुर सवाईसिंहके पोहकरणसे आनेपर पुख़्तह बात चीत कीजायगी; लेकिन् जोधपुरकी फ़ौजी ताक़त कुल सिंघवी इन्द्रराजके पास थी; उसने सोचा, कि जो कोई दूसरा गद्दीपर बिठाया जायगा, तो ठाकुर सवाईसिंह और धाय भाई शंभूदान वग़ैरह ख़ैरख़्वाह बनेंगे; इसलिये महाराज मानसिंहको गद्दीपर बिठानेके विचारसे जोधपुर ले आया, और वह विक्रमी १८६० मार्गशीर्ष कृष्ण ७ [हि० १२१८ ता० २१ शअ़्बान = ई० १८०३ ता० ७ नोवेम्बर] को क़िलेपर चढ़े, जहां सबने नज़्रें दिखलाईं.

महाराजा भीमसिंहकी राणी देरावल मानसिंहके आनेसे पहिले चांपाशनी चलीगई थी, जिनको इस इक़ारपर फिर लेआये, कि इनके गर्भसे बेटा हो, तो वह राज्यका मालिक होगा, और मानसिंह वापस जालौर चले जावेंगे; लेकिन् वह राणी तलहटीके महलोंमें रही. ठाकुर सवाईसिंहने कहा, कि बनियोंका बनाया हुआ राजा नहीं बन सक्ता, रड़मलों अर्थात् राठौड़ोंका किया होसक्ता है, जिससे वह इस कोशिशमें लगा, कि राज्यमें बखेड़ा होकर हमारी मुख़्तारी बनी रहे; इसलिये मश्हूर

है, कि उसने कुछ आदमियोंको बाहर निकालकर कहा, कि महाराजा भीमसिंहके बेटा हुआ, जिसे खेतड़ी ले गये, और थोड़े ही दिनों बाद सवाईसिंह भी पोहकरण चलागया. उस लड़केको धौंकलसिंहके नामसे मश्हूर किया. इसी वर्षमें जशवन्तराव हुल्कर अजमेरके पास आया; तब महाराजाने उससे दोस्ती पैदा करली; हुल्कर अंग्रेज़ोंसे डराहुआ था, इस बातको ग़नीमत जानकर मालवेमें चलागया.

आयस देवनाथने जोधपुरका राज मिलनेकी, जो करामाती बात जालौरमें कही थी, इससे महाराजाने उसे बुलाकर अपना गुरू बनाया; और रियासती कामोंमें भी उसका पूरा दख़्ल हुआ. पहिले महाराजा भीमसिंहने गद्दीपर बैठकर शेरसिंह, सामन्तसिंह, सूरसिंह, और प्रतापसिंहको मरवाडाला था, लेकिन् जिन आदमियोंने मारा, उनको महाराजा मानसिंहने बड़ी बे रहमीसे मरवाया; जैसे कि नग्गा अहीरको सिरमें कील ठुकवाकर मारा. जालौरके घेरेमें जो लोग हाज़िर थे, सबको जागीरें मिलीं; चारण जुग्ता वणसूरको लाख पशाव, ताज़ीम और पारलाऊ गांव दस हज़ार रुपयेकी आमदनीका दिया; और दूसरे आदमियोंको भी जागीरमें गांव दिये, जिनके नाम नीचे लिखेजाते हैं:-

महाराजा भीमसिंहने आउवा सूरजमलोतोंसे छीनकर चिरपटियाके ठाकुरको दिया था, जो महाराजा मानसिंहने चिरपटिया वालोंसे छीनकर माधवसिंहको दिया; इसी तरह आसोप केसरीसिंहको, नींबाज सुल्तानसिंहको, रायपुर जवानसिंहको और लांबियां, रोयट व चंडावलको भी अपने अपने ठिकाने वापस दिये. यह लोग महाराजा भीमसिंहसे नाराज़ होकर हाड़ौतीमें चलेगये थे. आहोरके ठाकुर औनाड़सिंहको जालौरके घेरेकी नौकरीके एवज़ बहुतसी जागीर दी, और आसिया चारण ठाकुर बांकीदासको लाख पशाव, ताज़ीम और जागीर देकर कविराजका ख़िताब दिया; मेड़तिया रत्नसिंहको गांव पीपलाद मिला. चहुवान श्यामसिंहको गांव जोजावर और कुछ अर्से बाद गांव राखीका पट्टा दिया, और भाटी जशवन्तसिंहको सांथीणका पट्टा मिला.

इन्होंने गद्दीपर बैठते ही सिरोहीपर महता ज्ञानमल्लको और घाणेरावपर महता साहिबचन्द्रको फ़ौज देकर रवानह किया; कुछ दिनों बाद लड़ाई करके दोनों फ़ौजोंने दोनों जगह क़ब्ज़ह करलिया. विक्रमी १८६१ [हि० १२१९ = ई० १८०४] में धौंकलसिंहके नामसे खेतड़ी, झूंझनूं, नालगढ़ और सीकर वग़ैरहके शेखावतोंने डीडवाणेपर अमल किया, जिसे महाराजा मानसिंहने फ़ौज भेजकर पीछा छुड़ालिया.

पहिले महाराजा भीमसिंहसे उदयपुरके महाराणा भीमसिंहकी बेटी कृष्णकुंवरकी

सगाईके लिये कुछ ज़िक्र हुआ था, परन्तु महाराजा भीमसिंह मरगये; तब उस राजकुमारीकी सगाई जयपुरके महाराजा जगत्सिंहके साथ ठहरी. इन्हीं दिनोंमें पोहकरणके ठाकुर सवाईसिंहकी पोतीको जयपुर भेजकर महाराजा जगत्सिंहके साथ शादी करदेना क़रार पाया, जिसपर मानसिंहने सवाईसिंहको कहलाया, कि हमारे भाइयोंको जयपुर डोला भेजना शर्मिन्दगीकी बात है. सवाईसिंहने कहला भेजा, कि मेरा भाई जयपुरमें रहता है, और जयपुरकी तरफ़से गीजगढ़ उसकी जागीरमें है, इसलिये हम अपने घरमें लड़कीकी शादी करते हैं; परन्तु बड़े महाराजा श्री भीमसिंहकी सगाई उदयपुर हुई थी, अब वही सगाई जयपुरके महाराजासे होनेकी तय्यारी है, इस बातमें आपको कितनी बड़ी शर्मिन्दगी होगी; इसपर महाराजा मानसिंहने बिना सोचे विचारे विक्रमी १८६२ माघकृष्ण ३० [हि० १२२० ता० २९ शव्वाल = ई० १८०६ ता० २० जैन्युअरी] को एक दम कूच करदिया, और मेड़ते पहुंचकर फ़ौज एकट्ठी कराना शुरू किया, जिसकी तादाद मारवाड़की तवारीख़में एक लाख लिखी है. उधर जयपुरके महाराजा जगत्सिंहने भी फ़ौज एकट्ठी करके शहरके बाहर डेरा किया; लड़ाई होनेमें किसी तरहकी कसूर न रही; लेकिन् जोधपुरके सिंघवी इन्द्रराज और जयपुरके दीवान रायचन्द्रने सलाह करके कहा, कि दोनों राजा उदयपुरमें शादी नहीं करेंगे, और महाराजा जगत्सिंहकी बहिनके साथ मानसिंहकी, और महाराजा मानसिंहकी बेटीके साथ जगत्सिंहकी शादी होना क़रार पाया. जशवन्तराव हुल्कर भी महाराजा मानसिंहकी मददको आ पहुंचा था; लेकिन् सुलहके होजानेसे वापस लौटा दियागया.

विक्रमी १८६३ आश्विन [हि० १२२१ शअ्बान = ई० १८०६ ऑक्टोबर] में महाराजा मानसिंह जोधपुर चलेआये, लेकिन् सिंघवी इन्द्रराज वग़ैरह अह्लकारों को महाराजाने क़ैद करदिया, और दूसरे विरोधी लोगोंने बुझी हुई आगको फिर भड़काकर दोनों महाराजाओंको लड़नेके लिये मुस्तइद किया. महाराजा मानसिंहने मेड़ते आकर फ़ौज एकट्ठी करना शुरू किया, और जशवन्तराव हुल्करको लिखकर बुलाया; वह कृष्णगढ़ तक आकर ख़र्च मांगने लगा, महाराजाके पास ख़ज़ानह कम था, इसलिये देर हुई, और जयपुर वालोंने कुछ रुपया देकर उसे लौटा दिया. नव्वाब अमीरख़ां जयपुरकी तरफ़ होगया; बीकानेरके महाराजा सूरतसिंह भी कछवाहोंके शरीक होगये; पोहकरणके ठाकुर सवाईसिंह मारवाड़ी सर्दारोंको मिलाने लगे. महाराजा जगत्सिंह जयपुरसे रवानह होकर मारोठ पहुंचे, वहांसे नव्वाब अमीरख़ां और ठाकुर सवाईसिंहको फ़ौज देकर आगे भेजा. इधरसे महाराजा

मानसिंह भी चढ़े, गींगोलीके पास दोनों फ़ौजोंका मुक़ावलह हुआ, कितनेही राठौड़ सर्दार महाराजा मानसिंहसे वदलकर जयपुरकी फ़ौजमें जामिले, और जो वाक़ी रहे, उन्होंने महाराजाको भागजानेकी सलाह दी; महाराजा मानसिंह वहुत झुंभलाये, लेकिन् लाचार भागकर जोधपुर आये.

सवाईसिंहका यह विचार था, कि महाराजा जालोर जायंगे, तो धौंकलसिंहको जोधपुरमें गद्दीपर विठाकर अपना इरादह पूरा कर लूंगा, लेकिन् महाराजा मानसिंहने जोधपुर आकर क़िलेको दुरुस्त किया, और जयपुरकी फ़ौजने सामान, तोपख़ानह, डेरा वग़ैरह लूटकर आगेको कूच किया. मारोठ, मेड़ता, पर्वतसर, सोजत और नागोरपर क़ब्ज़ह करनेके वाद महाराजा जगत्सिंहसे दीवान रायचन्द्रने कहा, कि अव उदयपुर चलकर शादी करलेना चाहिये; लेकिन् सवाईसिंह इसके वर्ख़िलाफ़ महाराजाको जोधपुर लेआया, और विक्रमी १८६३ चैत्र कृष्ण ७ [हि० १२२२ ता० २१ मुहर्रम = ई० १८०७ ता० ३१ मार्च] को जोधपुरका क़िला घेरलिया. सिंघवी इन्द्रराज और भंडारी गंगारामको महाराजाने क़ैद करदिया था, सो क़ैदसे निकालकर कहा, कि ख़ैरख़्वाहीका यह वक़्त है. ये दोनों वाहर गये, तव सवाईसिंहने कहा, कि वनियोंका वनाया राजा नहीं रहसक्ता, अव हम धौंकलसिंहको जोधपुरका राजा वनावेंगे. इन्द्रराज वहांसे निकलकर गांव वावरामें पहुंचा, और दौलतराव संधियाके पास एक वकील भेजकर कहलाया, कि हमारी मदद करना चाहिये; और नव्वाव अमीरख़ांको तीस हज़ार रुपये ख़र्चके लिये देकर अपनी तरफ़ किया; वह जयपुरकी फ़ौजसे निकलकर सिंघवी इन्द्रराजके साथ ढूंढाड़को लूटने लगा, और चतुर्भुज उपाध्या, तथा वूढ़सूके ठाकुर प्रतापसिंह वग़ैरहने पर्वतसर व डीडवाणापर क़ब्ज़ह करलिया. नव्वाव अमीरख़ांको एक लाख रुपया पेशगी देकर जयपुरकी तरफ़ रवानह किया, उसने फागी गांवमें शिवलाल वख़्शीके डेरोंपर हमलह किया, जो जयपुरसे फ़ौज लेकर जोधपुर जाता था; शिवलाल तो शिकस्त खाकर भागा, फ़ौजको नव्वाव और राठौड़ोंने लूट लिया. अमीरख़ां और कुचामणके ठाकुर शिवनाथसिंहने जयपुरके पास जाकर शहरपर गोला चलाना शुरू किया; लेकिन् एक दिन लड़ाई करनेके वाद अजमेरकी तरफ़ चलेआये, और गांव हरमाड़ेके डेरे विक्रमी १८६४ भाद्रपद [हि० १२२२ रजव = ई० १८०७ सेप्टेम्वर] में पांच हज़ार फ़ौज लेकर सिंघवी इन्द्रराज नव्वावके शामिल हुआ.

महाराजाके ख़ैरख़्वाह राठौड़ोंने ढूंढाड़के मुल्कको लूट खसोटसे वर्वाद किया; नव्वाव और इन्द्रराजने वड़ी भारी फ़ौज वनाकर दो वारह जयपुरकी तरफ़ कूच

सुनकर महाराजा जगत्सिंह घबराये, ठाकुर सवाईसिंहने बहुत कुछ समझाया, लेकिन् विक्रमी १८६४ भाद्रपद शुक्ल १३ [हि० १२२२ ता० १२ रजब = ई० १८०७ ता० १६ सेप्टेम्बर] को जयपुरकी तरफ़ चलदिये, और महाराजा सूरतसिंह बीकानेर गये; ठाकुर सवाईसिंह वगैरह भागकर नागौरके क़िलेमें जा छिपे, डेरोंमें जो अस्बाब रहगया, वह महाराजा मानसिंहने ज़ब्त किया. महाराजा जगत्सिंहकी फ़ौजके पीछे मारवाड़ी लोगोंने लूट खसोट शुरू की, और जो आदमी क़ाबूमें आया, उसके नाक, कान काट लिये. इस लड़ाईमें दोनों मुल्कोंकी ग़रीब रिआयापर बड़ा ज़ुल्म हुआ, पहिले जयपुरके लोगोंने मारवाड़ी औरतोंको पकड़कर दो दो पैसेमें बेचा; फिर उसी तरह सिंघवी इन्द्रराज और नव्वाब अमीरख़ांकी फ़ौजने ढूंढाड़की औरतोंको पकड़ पकड़कर एक एक पैसेमें बेचा; अमीरख़ां और इन्द्रराजने भी महाराजा जगत्सिंहका पीछा किया, तो एक लाख रुपया देकर दीवान रायचन्द्रने पीछा छुड़ाया.

महाराजा मानसिंह और जगत्सिंहकी दोनों हालतें देखकर मनुष्योंको ईश्वरके चरित्रोंपर ध्यान देना चाहिये. आख़िरकार महाराजा मानसिंहने अपने ख़ैरख़्वाहोंको खुश होकर इज़्ज़त और जागीरें इनायत कीं. अमीरख़ां जोधपुर आया, महाराजाने शुक्रिया अदा करके बराबर गद्दीपर बिठाया. अब नागौरसे धौंकलसिंहका दख़्ल उठाने और ठाकुर सवाईसिंहके मारनेका घाट गढ़ागया; नव्वाब और महाराजाके बीच फ़ौज ख़र्चकी बाबत ज़ाहिरी तक्रार हुई, नव्वाबने जोधपुरके गांवोंको लूटना शुरू किया, जिससे सवाईसिंहने अमीरख़ांके साथ मेल करलिया; पहिले नव्वाब नागौर गया, फिर सवाईसिंह उससे मिलने आया; तब नव्वाबकी फ़ौजने ग़ाफ़िल बैठे हुए राठौड़ोंपर डेरा गिराकर तोप और बन्दूक़ोंकी बाढ़ मारदी, जिससे विक्रमी १८६५ चैत्र शुक्ल ३ [हि० १२२३ ता० २ सफ़र = ई० १८०८ ता० ३० मार्च] को पोहकरणका ठाकुर सवाईसिंह, पालीका ठाकुर ज्ञानसिंह, बगड़ीका ठाकुर केसरीसिंह, चंडावलका ठाकुर बख़्शीराम और इनके साथके चार पांच सौ आदमी मारेगये; इनके सिर ऊंटोंपर लदवाकर महाराजा मानसिंहके पास भेजदिये, और नागौरमें महाराजाका अमल करवा दिया.

इसके बाद कृष्णकुंवर बाईका ज़हरसे मारेजानेका ज़िक्र उदयपुरके महाराणा भीमसिंहके हालमें लिखेंगे. महाराजाने बीकानेरपर बीस हज़ार फ़ौज देकर सिंघवी इन्द्रराजको भेजा, वह फ़ौज ख़र्च लेकर फ़त्हके साथ पीछा आया; कुचामणके ठाकुर शिवनाथसिंह व सिंघवी इन्द्रराज वगैरह महाराजा मानसिंहके ख़ैरख़्वाह और एतिबारी नौकर थे; इन्हीं लोगोंने महाराजा मानसिंह और महाराजा जगत्सिंहका विरोध मिटाकर पहिले इक़ारके मुवाफ़िक़ दोनों शादियां करादेनेका वादा किया;

महाराजा मानसिंह जोधपुरसे कूच करके नागोर आये, आयस देवनाथकी मारिफ़त बीकानेरके महाराजा सूरतसिंहसे मुलाक़ात हुई; सूरतसिंहको विदा करके बरात समेत महाराजा मानसिंह रूपनगर आये; जयपुरसे महाराजा जगत्सिंह भी उसी तरह बड़ी सज धजके साथ अपने इलाक़ेके गांव मरवेमें आ ठहरे; इन दोनों गांवोंमें तीन कोसका फ़ासिलह था. विक्रमी १८७० भाद्रपद शुक्ल ८ [हि० १२२८ ता० ७ रमज़ान = ई० १८१३ ता० ४ सेप्टेम्बर] को महाराजा मानसिंहकी शादी जगत्सिंहकी बहिनसे जयपुरके डेरोंमें हुई, और दूसरे दिन भाद्रपद शुक्ल ९ [हि० ता० ८ रमज़ान = ई० ता० ५ सेप्टेम्बर] को महाराजा मानसिंहकी बेटीकी शादी महाराजा जगत्सिंहके साथ जोधपुरके डेरोंमें हुई; दोनों तरफ़से मुहब्बतका बर्ताव रहा; कृष्णगढ़के महाराजा कल्याणसिंह भी इस जल्सेमें शरीक थे. इसके बाद दोनों महाराजा अपनी अपनी राजधानीको सिधारे. जोधपुरमें कुल कारोबारका मुरुतार आयस देवनाथ और सिंघवी इन्द्रराज था. इनकी शिकायत महाराजा नहीं सुनते थे, इन्द्रराजके डरसे महता अखैचन्द निज मन्दिरमें शरण जा बैठा.

विक्रमी १८७१ [हि० १२२९ = ई० १८१४] में महाराजाने अमीरख़ांकी फ़ौजको तीन लाख रुपया देकर रुख़्सत किया, लेकिन् विक्रमी १८७२ [हि० १२३० = ई० १८१५] में ख़ुद अमीरख़ां फ़ौज लेकर जोधपुर आया, तब महता अखैचन्द और आसोप व आउवा वग़ैरहके सर्दारोंने नव्वाबसे मिलावट करके कहा, कि आयस देवनाथ और सिंघवी इन्द्रराजको मारडालो, तो तुम्हारे फ़ौज ख़र्चके रुपये हम देंगे; इस सट पटसे देवनाथ और इन्द्रराज वाक़िफ़ होगये, जिससे क़िलेके नीचे नहीं आते थे; आख़िरकार अमीरख़ांने २७ आदमी भेज कर क़िलेके भीतर 'ख़ावका' (१) के महलमें दोनोंको मरवाडाला; महाराजाको बहुत रंज हुआ, लेकिन् मिलावट वाले लोगोंने अमीरख़ांका डर दिखलाकर उन २७ सिपाहियोंको ज़िन्दह निकाल दिया. यह मुआमला विक्रमी १८७३ चैत्र शुक्ल ८ [हि० १२३१ ता० ७ जमादिउल् अव्वल = ई० १८१६ ता ५ एप्रिल] को हुआ. नव्वाबको साढ़े नव लाख रुपये फ़ौज ख़र्चके देकर विदाकिया.

कामके मुरुतार- दीवान महता अखैचन्द, आसोपका ठाकुर केसरीसिंह, नींबाजका ठाकुर सुल्तानसिंह, कंटालियाका ठाकुर शंभूसिंह, आउवाका बख़्तावरसिंह और चंडावलका ठाकुर विष्णुसिंह बने; महाराजा इन लोगोंकी कार्रवाईसे वाक़िफ़

---

(१) ख़ावका- अस्लमें ख़्वाबगाह है.

थे, लेकिन् वक्त देखकर चुप रहे. इन्द्रराजका बेटा गुलराज, जो कोटके थानेपर था, महाराजाके इशारेसे दो हज़ार आदमी लेकर जोधपुर आया, जिससे मुख़्तार सर्दार निकल भागे; और महता अखैचन्द स्वामी आत्मारामकी समाधिके शरणमें जा छिपा. इसी संवत्के माघ [हि० १२३२ रबीउ़ल् अव्वल = ई० १८१७ फ़ेब्रुअरी] को गुलराज क़िलेमें आया, और महाराजाने उसे अपना दीवान बनाया.

महाराजाको आयस देवनाथ और सिंघवी इन्द्रराजके मारेजानेका रंज बहुत रहा, यहां तक कि एकान्तमें रहना इख़्तियार करलिया; तब महता अखैचन्दने आयस देवनाथके भाई भीमनाथ, महाराजाके कुंवर छत्रसिंह व उनकी माता महाराणी चावड़ीको मिलाया; और दूसरे भी जोषी मघदत्त, फत्ता, व्यास विनोदीराम, मुन्शी जीतमल्ल, खींची बिहारीदास, धांधल, मूला, जीवा, दाना, वग़ैरहको शामिल करके क़िलेदार देवराजोत बिहारीदास, नथकरण वग़ैरहको भी मिलालिया; और विक्रमी १८७४ वैशाख कृष्ण ३ [हि० १२३२ ता० १७ जमादियुल् अव्वल = ई० १८१७ ता० ५ एप्रिल] को इन सबने सिंघवी गुलराजको क़ैद करके उसी दिन आधी रातके वक्त मरवाडाला. सिंघवियोंके बाल बच्चे सब भागकर कुचामण चलेगये. इसके बाद सब लोगोंने मिलकर ज़बर्दस्ती महाराजा मानसिंहके हाथसे छत्रसिंहको युवराज बनवाया; विक्रमी वैशाख शुक्ल ३ [हि० ता० २ जमादियुस्सानी = ई० ता० २० एप्रिल] को छत्रसिंहका हुक्म जारी हुआ.

छत्रसिंहका जन्म विक्रमी १८५९ फाल्गुन् शुक्ल ९ [हि० १२१७ ता० ८ ज़िल्क़ाद = ई० १८०३ ता० ३ मार्च] को हुआ था. महाराजा मानसिंह सबको एक राय देखकर पागल बनगये, और महता अखैचन्द कुल कामका मुख़्तार बना; पोहकरणके ठाकुर सालिमसिंहको प्रधान बनायागया. चांपाशनीके गुसाइंयोंसे छत्रसिंहको नाम सुनवाया, जिससे भीमनाथ वग़ैरहकी इज़्ज़तमें भी फ़र्क़ आया; तब कविराजा बांकीदासने एक सवैया कहा, जिसका एक पद यह है:-

"मानको नन्द गोविन्द रटे तब गंड फटे कनफट्टनकी"

सिंघवी चैनकरण जो काणोणाकी हवेलीकी पनाहमें था, उसे पकड़कर तोपसे उड़ा दिया. इसी वर्षमें गवर्मेएट अंग्रेज़ीके साथ जोधपुरका अह्दनामह हुआ. कुंवर छत्रसिंह गर्मीकी बीमारीसे विक्रमी १८७४ चैत्र कृष्ण ४ [हि० १२३३ ता० १८ जमादियुल् अव्वल = ई० १८१८ ता० २७ मार्च] को इन्तिक़ाल करगया, जिसपर एक दिन तो मुसाहिबोंने इस बातको छिपा रक्खा, और चाहा, कि उसी शक्लका कोई आदमी हो, तो उसे छत्रसिंह बनालेवें; लेकिन् यह सलाह नहीं चली; तब दूसरे दिन कुंवरकी लाशको मंडोवरमें जलाया; महाराजा और भी पागल बनगये. मुसाहिबोंने ईडरसे कोई

लड़का लाकर गद्दीपर विठानेका विचार किया; लेकिन् गवर्मेंट अंग्रेज़ीसे अह्दनामह होचुका था; इससे गवर्मेण्टने महाराजाका इम्तिहान करनेके लिये मुन्शी वरकतअ़लीको जोधपुर भेजा. वह एक दिन तो सब मुसाहिबोंके साथ महाराजाके पास आया, महाराजा उसी पागलपनेकी हालतसे मिले; दूसरे दिन वरकतअ़ली महाराजाके पास अकेला गया, तब महाराजा मानसिंहने अपनी तक्लीफ़ोंका सारा हाल उससे कहा, और उसने महाराजाकी दिलजमई की; फिर रिपोर्ट होकर गवर्मेण्टका ख़रीतह आया, जिसपर महाराजाने सबको धोखेसे तसल्ली दी: महता अखैचन्द व दूसरे सब मुसाहिबोंसे कहा, कि जैसे काम करते थे. किये जाओ.

विक्रमी १८७५ कार्तिक शुक्ल ५ [हि० १२३४ ता० ४ मुहर्रम = ई० १८१८ ता० ४ नोवेम्बर] को महाराजा हजामत, स्नान व पोशाक करके दो वर्ष सात महीनेमें बाहर निकले. महाराजाने आयस देवनाथ व सिंघवी इन्द्रराजके मारेजानेके दिनसे इस दिन तक एकान्त वास किया. अब महाराजाने सिंघवी मेघराजको फ़ौज बख़्शी बनाया, लेकिन् अखैचन्द वगै़रह लोगोंपर बड़ी मिहर्बानी और सिंघवियोंसे मामूली वर्ताव दिखलाते रहे. विक्रमी १८७७ वैशाख शुक्ल १४ [हि० १२३५ ता० १३ रजब = ई० १८२० ता० २७ एप्रिल] को नीचे लिखे आदमियोंको क़िलेपर बुलाकर क़ैद किया:-

महता अखैचन्दको पहिले परदेशियोंकी फ़ौजने तन्ख़्वाह न चुका देनेके वहानेसे क़ैद किया, इसका वेटा महता लक्ष्मीचन्द, इसका मुकुन्दचन्द और अखैचन्दके काम्दार रामचन्द, क़िलेदार नथकरण, व्यास विनोदीरामको उसके वेटे गुमानीराम, धांधल, मूला, दाना, जीवा, जोशी विट्ठलदास, दामोदर, शिवकरण और चेला दर्ज़ी वगै़रह चौरासी आदमियों समेत क़िलेपर गिरिफ़्तार किया; और खींची विहारीदास भागकर खेजड़ला वालोंके डेरेपर चलागया, जिससे फ़ौज भेजकर खेजड़लाके भाटियोंको मरवाया; परन्तु ठाकुर शक्तिदान ज़ख़्मी होकर भी जीता रहा.

इसी संवत्के ज्येष्ठ शुक्ल १४ [हि० ता० १३ शअ़्बान = ई० ता० २७ मई] को नीचे लिखे आदमी ज़हर देनेसे मारेगये:-

क़िलेदार नथकरण, महता अखैचन्द, व्यास विनोदीराम, पंचोली जीतमल्ल, जोशी फ़तहचन्द; और दाना, जीवा व मूलाको तक्लीफ़ देदेकर मरवाया. इसके बाद द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १३ [हि० ता० १२ रमज़ान = ई० ता० २५ जून] को नीचे लिखेहुए आदमी फिर क़ैद हुए:-

जोशी श्रीकृष्ण, महता सूरजमल्ल भाई बेटे व भतीजों समेत, व्यास

शिवदास, पंचोली गोपालदास. विक्रमी ज्येठ शुक्क १५ [हि० ता० १४ रमज़ान = ई० ता० २७ जून] को नींबाजके ठाकुर सुल्तानसिंहपर सिंघवी फ़तहराज, मेघराज और कुशलराजको फ़ौज सहित भेजा; उन्होंने ठाकुरको घेरलिया; उस वक्त ठाकुर सुल्तानसिंह मए अपने भाई सूरसिंहके हवेलीका दर्वाज़ह खोलकर बहादुरीके साथ मारागया, और पोहकरणका ठाकुर सालिमसिंह पोहकरणको चलागया, जो जीते जी जोधपुर नहीं आया; आसोपका ठाकुर केसरीसिंह आसोप गया था, वहांसे भागकर बीकानेरके ज़िले देष्णोकमें करणी माताके शरणे जा बैठा, और वहीं मरगया; केसरीसिंहके मरने बाद आसोपपर खालिसेका कब्ज़ह होगया. चंडावल, रोहट, खेजड़ला, सांथीण, और नींबाज वगैरह ठिकाने भी खालिसे होगये; ठाकुर लोग उदयपुर चलेगये.

इसी संवत्के भाद्रपद शुक्क ४ [हि० ता० ३ ज़िल्हिज = ई० ता० १२ सेप्टेम्बर] को जोषी श्रीकृष्ण व महता सूरजमल्लको ज़हर देकर मरवाडाला, और कुंवर छत्रसिंहकी मा महाराणी चावड़ीको एक तंग मकानमें बन्द करदिया, जो अन्न जल बगैर मरगई; नाज़िर वृन्दाबनकी नाक कटवा डाली, जती हरखचन्द, कुंवर छत्रसिंहके वैद्यकी भी नाक कटवाई, और बाक़ी बहुतसे आदमियोंको जुर्मानह लेकर छोड़ दिया. आयस देवनाथ व सिंघवी इन्द्रराजके मारने वालों और छत्रसिंहको राज्य दिलाने वालोंको सज़ा दी; खैरख्वाहोंको खैरख्वाहीका बदला मिला. विक्रमी १८७८ [हि० १२३६ = ई० १८२१] में सिंघवी मेघराज बख्शी और धांधल गोवर्धनको इक़ारके मुवाफ़िक़ सवार देकर दिल्लीकी तरफ़ गवर्मेएट अंग्रेज़ीकी तईनाती में भेजा, जो दूसरे वर्ष वापस आये.

आयस देवनाथके भाई भीमनाथ और देवनाथके बेटे लाडूनाथ दोनोंमें विगाड़ हुआ, तो महाराजाने महा मन्दिरमें लाडूनाथको मुख्तार करके भीमनाथके लिये उदय मन्दिर तय्यार करवाया; लेकिन् उन दोनों चचा भतीजोंका फ़साद दूर न हुआ. इसी तरह अह्लकारोंमें दो गिरोह होगये, एक तो सिंघवी फ़त्हराज व भाटी गजसिंहका, दूसरा धांधल गोवर्धन और नाज़िर अमृतरामका था; पहिले गिरोहकी सलाह लाडूनाथके शामिल और दूसरे गिरोहकी भीमनाथके शरीक थी; आपसकी शिकायतें होने लगीं; महाराजाने दोनों तरफ़से बहुतसा जुर्मानह वुसूल किया.

विक्रमी १८८० [हि० १२३८ = ई० १८२३] में, जिन सर्दारोंके ठिकाने महाराजाने छीन लिये थे, उनके वकीलोंने गवर्मेएट अंग्रेज़ीमें नालिश की. पोलिटिकल एजेंट एफ़० वाइल्डर साहिबने उनको हिदायत की, कि तुम

महाराजाके पास जाओ, वे तुम्हारी फ़र्याद सुनेंगे ? उन्होंने कहा, कि महाराजा हमें क़ैद करके मारडालेंगे; साहिबने कहा, ऐसा कभी नहीं होगा. आख़िरकार वे सब, याने आसोपका वकील कूंपावत हरीसिंह, आउवाका पंचोली कान्हकरण, चंडावलका कूंपावत दोलतसिंह और नींबाज वगैरहके वकील महाराजाके पास आये, जिन्हें सलीमकोटमें क़ैद करदिया; लेकिन् गवर्मेण्टने छुड़ादिया, और लाचार महाराजाने लोगोंके ठिकाने वापस दिये.

विक्रमी १८८१ फाल्गुन् कृष्ण ८ [हि॰ १२४० ता॰ २२ जमादियुस्सानी = ई॰ १८२५ ता॰ १० फ़ेब्रुअरी] को महाराजा मानसिंहकी बेटी स्वरूपकुंवरका विवाह बूंदीके महाराव राजा रामसिंहसे हुआ; इसमें दस लाख रुपया ख़र्च पड़ा था. इसी वर्षमें भंडारी भवानीरामने बाघा जालोरीसे लिखवाकर सिंघवी फ़त्हराजके नामकी उसीके अक्षरोंके मुताबिक़ एक अर्ज़ी धोंकलसिंहके नामसे महाराजा मानसिंहके साम्हने पेश की, जिससे महाराजाने नाराज़ होकर सिंघवी फ़त्हराज, मेघराज, कुशलराज, व उम्मेदराजको विक्रमी १८८२ चैत्र शुक्ल १४ [हि॰ १२४० ता॰ १३ शअ्बान = ई॰ १८२५ ता॰ ३ एप्रिल] को क़ैद किया; लेकिन् कुछ अर्सेके बाद यह जाल खुलगया, जिसपर महाराजाने बाघा जालोरीका हाथ कटवाया, और भवानीरामको क़ैद करके दण्ड लिया. इसी संवत्में जोषी शंभूदत्त कामका मुस्तार हुआ. जो आयस लाडूनाथसे नाइत्तिफ़ाक़ी होनेके सबब मौकूफ़ किया गया; और लाडूनाथके कामदार मुसाहिब बने; लेकिन् उन मज़्हबी लुटेरोंसे काम कब चलसक्ता था, खुद किनारा करगये. विक्रमी १८८३ [हि॰ १२४१ = ई॰ १८२६] में फिर शंभूदत्तको काम मिला, और इसने अंजाम दिया; लेकिन् आयस लाडूनाथने अपने आदमियोंके बहकानेसे बखेड़ा उठाया, और महा मन्दिरके अह्लकार उत्तमचन्दको मुसाहिब बनाकर जोषी शंभूदत्तको ख़ारिज किया; उन ना तजिबहकार अह्लकारोंने विक्रमी १८८४ श्रावण [हि॰ १२४३ मुहर्रम = ई॰ १८२७ ऑगस्ट] में आउवाके ठाकुर बख़्तावरसिंहपर फ़ौज भेजी, जिससे नींबाज और रास वगैरहके सर्दारोंने मिलकर डीडवाणेमें धोंकलसिंहका क़ब्ज़ह करवादिया; परन्तु महाराजा बुद्धिमान थे, जिससे सिंघवी फ़ौजराजको फ़ौज देकर डीडवाणेकी तरफ़ भेजा, और नींबाज व रासके ठाकुरोंको अपनी तरफ़ करके आउवासे फ़ौज बुलवा ली.

नागपुरका राजा इसी वर्षमें अंग्रेज़ोंसे डरकर जोधपुरमें आछिपा, उसे महा मन्दिरमें रक्खा, लेकिन् वह कुछ दिनों बाद वहीं मरगया. विक्रमी १८८५ [हि॰ १२४३

= ई० १८२८] में सिंघवी फ़त्हराज प्रधान हुआ, और आयस लाडूनाथ गिरनारकी यात्राको गया; वहांसे आते वक्त बामणवाड़ा गांवमें मरगया. इसका बेटा भैरवनाथ तीन वर्षकी उम्रमें गद्दीपर बैठा, लेकिन् छः महीने बाद वह भी मरगया; तब भीमनाथके बेटे लक्ष्मीनाथको गद्दीपर बिठाया. विक्रमी १८८६ [हि० १२४४ = ई० १८२९] में भीमनाथके उखाड़ पछाड़ करनेसे काम बिगड़ा, कोई दीवान नहीं बनता था; नाम तो अपने सिर नहीं लिया, लेकिन् बख़्शी और दीवानीका काम फ़ौजराज करने लगा. विक्रमी १८८७ [हि० १२४५ = ई० १८३०] में महा मन्दिरके काम्दारोंसे रिश्तहदारी होजानेके सबब फ़त्हराज दीवान हुआ. विक्रमी १८८८ [हि० १२४६ = ई० १८३१] में सिंघवी गंभीरमल्लको दीवान बनाया. विक्रमी १८८९ [हि० १२४७ = ई० १८३२] में इससे भी काम छीनकर भंडारी लक्ष्मीचन्दके सुपुर्द किया. दीवान कोई न रहा, कुल कामका मुस्तार आयस भीमनाथ हुआ.

विक्रमी १८९० [हि० १२४९ = ई० १८३३] में पंचोली कालूराम दीवान बना, लेकिन् छः महीने बाद इससे भी उह्दह छिनकर फ़त्हराजको मिला; उससे भी काम न चला; क्योंकि भीमनाथ कुल जमा हज़्म करजाता, और तन्ख्वाहदारोंकी तन्ख्वाह व अंग्रेजोंका ख़िराज चढ़ता जाता था, जिसका जवाब नहीं देते थे; इससे बड़ी अब्तरी फैली; अंग्रेज़ी सर्कारकी तरफ़से तक़ाज़ह हुआ, बल्कि फ़ौज भेजनेकी धम्की दीगई; तब जोषी शंभूदत्त, सिंघवी फ़ौजराज, धांधल केसर, सिंघवी कुशलराज, कुचामणके ठाकुर रणजीतसिंह और भाद्राजूनके ठाकुर बख़्तावरसिंहको विक्रमी १८९१ भाद्रपद शुक्ल १४ [हि० १२५० ता० १३ जमादियुल् अव्वल = ई० १८३४ ता० १८ सेप्टेम्बर] को अजमेरकी तरफ़ रवानह किया. इन लोगोंने बात चीत करके आगेसे दुरुस्त इन्तिज़ाम रखनेके इक़ारपर गवर्मेण्टको खुश किया; लेकिन् फिर भी नाथोंका हुक्म चलता रहा, और कोई किसीकी नहीं सुनता था. महाराजा भीमनाथके कहनेको ईश्वरका हुक्म समझते थे, यहां तक कि कोई कनफटा योगी जुल्म करता, या किसीकी बहिन बेटियोंकी इज़्ज़तको बट्टा लगाता, तो भी उसे कोई न रोकता.

इसी संवत्में मालाणीके भौमियोंका, जो लूट खसोट करते थे, बन्दोबस्त अंग्रेज़ी सर्कारने अपने हाथमें लेलिया. विक्रमी १८९२ [हि० १२५१ = ई० १८३५] में जोधपुरसे अंग्रेज़ी गवर्मेण्टकी ख़िदमतमें जो फ़ौज भेजनी पड़ती थी, उसके एवज़ रुपया देना ठहरगया. विक्रमी १८९४ [हि० १२५३ = ई० १८३७] में आयस भीमनाथ मरगया, और महा मन्दिरके आयस लक्ष्मीनाथका हुक्म तेज़ हुआ; प्रधानेका काम भंडारी लक्ष्मीचन्दको मिला, लेकिन् काम न

चलनेसे यह आपही छोड़ भागा; तब सब रियासती काम और उह्दे महामन्दिरके आदमियोंने अपने कब्ज़हमें करलिये. आख़िरकार नाथोंके जुलमसे मारवाड़के सर्दारोंने कर्नेल सदरलैन्ड साहिबके पास अजमेर जाकर नालिश की; नाथ लोग ज़ाहिरा मुल्क लूटते थे, और डकैती व चोरी ज़ोर शोरसे फैल रही थी; महाराजाको नाथ लोग दबाते, और जो चाहते करालेते थे.

विक्रमी १८९६ चैत्र शुक्ल ७ [हि० १२५५ ता० ६ मुहर्रम = ई० १८३९ ता० २२ मार्च] को कर्नेल सदरलैन्ड साहिब, एजेंट गवर्नर जेनरल राजपूतानह जोधपुर आये; और उनके कहनेके मुवाफ़िक़ महाराजाने सर्दारोंको जागीरें दीं, लेकिन् नाथोंका बन्दोबस्त कुछ न हुआ; इसलिये सदरलैन्ड साहिबने अजमेर पहुंचकर एक इश्तिहार सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से फ़ौजकशीके लिये विक्रमी श्रावण शुक्ल १५ [हि० ता० १४ जमादियुस्सानी = ई० ता० २५ ऑगस्ट] को जारी किया उसकी नक़्ल नीचे लिखीजाती है :–

इश्तिहारकी नक़्ल.

लॉर्ड गवर्नर जेनरल साहिब बहादुर, मालिक मुल्क हिन्दुस्तानकी तरफ़से मारिफ़त कर्नेल जॉन सदरलैन्ड साहिब बहादुर, जो कि लॉर्ड साहिब बहादुरकी तरफ़से रजवाड़ोंके बन्दोबस्तके वास्ते मुक़र्रर हैं, वास्ते ख़बर देने सारे रईसान और रअय्यत मारवाड़के लिखा हुआ ता० १७ ऑगस्ट सन् १८३९ ई० मक़ाम नसीराबादका :–

कि महाराजा मानसिंहने क़रीब पांच वर्षके अर्सेसे अपने वे अह्द और इक़ार जो सर्कार अंग्रेज़ीके साथ रखते थे, अपनी समझसे एक राह मुक़र्रर करके, तोड़दिये; और जोधपुरके सवाल जवाबका तदारुक और बदला, (जिसके मांगनेमें सर्कारने वक़्पर ग़फ़्लत नहीं की,) उन्होंने नहीं दिया; और सर्कारका कहा न माना.

अव्वल अह्दनामहकी लिखावट मूजिब सर्कारके हक़के रुपये दो लाख तेईस हज़ार बर्सोंदीके मुक़र्रर हैं, जिसके कुल आज तक दस लाख उन्नीस हज़ार एक सौ छयालीस रुपये, दो आने हुए, जो आज तक वुसूल नहीं हुए.

दूसरा ग़ैर इलाक़ोंके रहने वालोंका नुक़्सान मारवाड़के मुल्कमें बद इन्तिज़ामीके वक़्त हुआ, और उसकी तादाद लाखोंपर पहुंची; उस नुक़्सानका एवज़ वुसूल नहीं हुआ.

तीसरे उस बन्दोबस्तका मुक़र्रर करना, कि जो रअय्यतको पसन्द हो, और जिससे

मुल्क मारवाड़में सुख चैन हो; और इलाक़ोंके व व्यापारियोंके मालका, नुक़्सान और मुसाफ़िरोंपर ज़ुल्म और ज़ियादती बन्दोबस्त करने वालोंकी नालाइक़ी और मारवाड़में रहने वालोंकी हरामज़ादगीसे होती है, उसमें बचाव हो, सो नहीं हुआ.

इस सूरतमें लॉर्ड गवर्नर जेनरल साहिब बहादुर हिन्दको यह वाजिब हुआ, कि इस मारवाड़से हक़ और दावा ज़ोरसे लेलेनेका हुक्म देवें.

इस वास्ते सर्कार अंग्रेज़ीकी फ़ौज तीन तरफ़से मारवाड़के मुल्कमें दाख़िल होकर जोधपुर जावेगी; और झगड़ा सर्कार अंग्रेज़ीका महाराजा श्री मानसिंहजी और उनके काम्दारोंसे है, मारवाड़की रऋय्यतसे नहीं; इस वास्ते मुल्क मारवाड़की रऋय्यत दिलजमई रक्खे; और जब तक रऋय्यत मज़्कूर सर्कारकी फ़ौजसे दुश्मनी नहीं करेगी, तब तक सर्कार उस रऋय्यतके जान मालको अपनी रऋय्यतकी तरह रक्खेगी; और हर एक कम्पूमें बन्दोबस्त सर्कारका ऐसी ख़ूबीके साथ होगा, कि रऋय्यतके लोग अपने अपने घरोंमें और अपने अपने कामोंमें ऐसी ख़ूबीके साथ रहेंगे, जैसा कि फ़ौज नहीं आनेके वक़्में खुशीसे रहते हैं- फ़क़त.

कर्नेल सदरलैन्ड साहिब अंग्रेज़ी फ़ौज समेत मारवाड़की तरफ़ रवानह हुए; लेकिन् महाराजा मानसिंहने साम्हने जाकर क़िलेकी कुंजियां साहिबके सुपुर्द करदीं, विक्रमी आश्विन कृष्ण ५ [हि० ता० १९ रजब = ई० ता० २९ सेप्टेम्बर] को क़िलेमें अंग्रेज़ी अफ़्सरोंका क़ब्ज़ह करादिया. महाराजाने ज़नाने वग़ैरह सबको नीचे उतार लिया, जिसपर फिर एक अ़ह्दनामह क़रार पाया- (देखो अ़ह्दनामह नम्बर ४३). रियासती इन्तिज़ामके लिये नीचे लिखे आदमियोंकी कौन्सिल मुक़र्रर हुई :-पोहकरणका ठाकुर विभूतसिंह, आउवाका ठाकुर खुशहालसिंह, नींबाजका ठाकुर सवाईसिंह, रीयांका ठाकुर शिवनाथसिंह, भाद्राजूणका ठाकुर बख़्तावरसिंह, कुचामणका ठाकुर रणजीतसिंह और (आसोपका ठाकुर शिवनाथसिंह बालक था, इसलिये उसके एवज़) कंटालियाका ठाकुर शंभूसिंह, रासका ठाकुर भीमसिंह, धाय भाई देवकरण, दीवान सिंघवी फ़ौजराज, वकील राव रिड्मल व जोषी प्रभूलाल.

इस कौन्सिलको कुल इख़्तियार दियागया; कर्नेल सदरलैन्ड कलकत्ते गये, और पोलिटिकल एजेंट लडलो साहिब सूरसागरपर रहने लगे. थोड़े ही दिनों बाद फाल्गुन् शुक्ल १२ [हि० १२५६ ता० ११ मुहर्रम = ई० १८४० ता० १६ मार्च] को कर्नेल सदरलैन्ड वापस आये, और क़िला महाराजाको देदिया. अब भी नाथ लोगोंका ज़ुल्म नहीं मिटा, इस बारेमें पोलिटिकल एजेंट उनको रोकनेके लिये, जो ख़रीते लिखकर भेजता,

उनका जवाब गोलमाल दियाजाता. इसके बाद विक्रमी १८९७ [हि० १२५६ = ई० १८४०] में भंडारी लक्ष्मीचन्दको दीवान बनाया, और दूसरे वर्ष महता बुद्धमल्लको काम दिया; लेकिन् नाथ लोगोंका कुछ बन्दोबस्त न होनेसे जमा ख़र्च और इन्तिज़ामका ढंग नहीं जमा. सदरलैन्ड साहिबने जोधपुर आकर नाथोंके इन्तिज़ामके लिये महाराजाको समझाया, पर कुछ असर न हुआ; तब महामन्दिर, उदयमन्दिर वगै़रह नाथोंकी जागीरके गांव ज़ब्त कियेगये, इसपर भी महाराजाके इशारेके मुवाफ़िक़ उनके पास जमा पहुंचती रही. अन्तमें एजेन्ट साहिबने तंग होकर नाथोंको समझाया, कि तीन लाख रुपया सालानह आमदनीकी जागीर लेकर किनारा करो, लेकिन् उन्होंने न माना; दिन ब दिन कान फड़वाकर नये नये नाथ बनते थे, जिनकी हिफ़ाज़तके लिये डेरे खड़े करवाकर खाने पीनेकी पूरी संभाल कीजाती थी. जब यह लोग रुपये मांगते और देनेमें देर होती, तो ज़मीनमें ज़िन्दह गड़नेको तय्यार होते; तब महाराजा रुपये देकर उन्हें खुश करते.

विक्रमी १८९९ [हि० १२५८ = ई० १८४२] में महता लक्ष्मीचन्दको प्रधान बनाया, लडलो साहिबका नाकमें दम होगया, और कहते थे, कि जो जमा आती है, नाथोंमें ख़र्च होजाती है, रियासतके हाथी घोड़े, नौकर लोग फ़ाक़ह कशी करते हैं. तो भी साहिबके कहनेका असर न हुआ. विक्रमी १९०० [हि० १२५९ = ई० १८४३] में दो नाथोंने एक ब्राह्मणकी लड़कीको पकड़ लिया, और कहा, कि हमको रुपये दे, तो छोड़ें. यह ख़बर लडलो साहिबके कान तक पहुंची, साहिबने उन दोनोंको गिरिफ़्तार करके अजमेरकी तरफ़ रवानह करदिया. यह सुनकर महाराजा बहुत उदास हुए, और राईके बाग़से सवार होकर साहिबके पास जाने लगे; लोगोंने रोका, और कहा, कि साहिब न मानेंगे. महाराजा गुलाबसागर तालाबपर ठहर गये, और दो दिन तक खाना न खाया.

इसी संवत्के वैशाख कृष्ण ९ [हि० ता० २३ रबीउल्अव्वल = ई० ता० २३ एप्रिल] को महाराजाने बदनपर भस्म रमाई, और फ़क़ीर बनकर मेड़तिया दर्वाज़हके बाहर बावड़ीपर जाबैठे. वहांसे विक्रमी वैशाख शुक्ल ३ [हि० ता० २ रबीउस्सानी = ई० ता० २ मई] को गांव पाल गये, कुछ दिनों तक वहां रहे, फिर जलन्धरनाथके दर्शन करके जालौर जानेका इरादह था, कि पोलिटिकल एजेन्ट लडलो साहिब वहां पहुंचे, और महाराजासे कहा, कि जब तक आप यहां रहेंगे, तब तक आपके जीते जी दूसरा राजा न होगा; और आप मारवाड़से बाहर जायेंगे, तो धौंकलसिंहको गद्दीपर बिठादिया जायगा. इस बातसे महाराजाने गिरनारका इरादह छोड़दिया, और विक्रमी आषाढ़ शुक्ल

४ [हि० ता० ३ जमादियुस्सानी = ई० ता० ३० जून] को जोधपुरके पास राईके बाग़में वापस आये. जिस दिनसे महाराजा फ़क़ीर हुए, उसी दिनसे एक पेड़ा, चंदलोईका शाक और दो तीन रुपये भर दही खाते थे. विक्रमी श्रावण शुक्ल ३ [हि० ता० २ रजब = ई० ता० २९ जुलाई] को महाराजा मंडोवर गये. विक्रमी भाद्रपद शुक्ल ७ [हि० ता० ६ शऋबान = ई० ता० १ सेप्टेम्बर] से एकांतरा ज्वर आने लगा; विक्रमी भाद्रपद शुक्ल ११ [हि० ता० १० शऋबान = ई० ता० ५ सेप्टेम्बर] को महाराजाने एक सिफ़ेद दुपट्टा ओढ़लिया, और सब आदमियोंको वहांसे बाहर निकालकर कहा, कि सुब्हके वक्त ब्राह्मण लोग अन्दर आकर हमें संभालें; और इसी तरह हुआ, कि द्वादशीको महाराजाकी दग्ध क्रिया कीगई. इनके साथ महाराणी देवड़ी और छः ख़वास पर्दायतें सती हुईं.

यह महाराजा जैसे बलन्द हिम्मत, बहादुर, अक़्लमन्द और क़द्रदान थे, वैसे ही घमंडी, हठी, निर्दई वगैरह भी पूरे थे. इनके वक़्तमें दंगा, फ़साद बाहरी और भीतरी होता रहा, रऋय्यत लुटती थी, जब राज्यमें ख़र्च की तंगी हुई, तब रुपये मुल्कसे वुसूल किये; जिस किसीके पास दौलत होती, छीन ली जाती; इसपर भी नाथ लोग ज़बर्दस्तीसे भले आदमियोंके लड़कोंको पकड़ लेते, और चेला बनाते; अच्छे घरानेकी बहू बेटियोंको पकड़कर घरोंमें डाललेते, माल छीनलेते, जिनकी पुकार कोई नहीं सुनता था. इतने ऐबोंपर भी महाराजाकी तारीफ़ राजपूतानहमें अब तक होरही है, और लोग कहते हैं, कि वैसा राजा पैदा होना कठिन है. यह तारीफ़ सिर्फ़ महाराजाकी फ़य्याज़ीसे होरही है, क्योंकि यह एक ही गुण ऐसा है, जिससे मनुष्यके और अवगुणोंकी तरफ़ कोई नज़र नहीं देता. इनके ३ पुत्र हुए, जिनके नाम छत्रसिंह, शिवदानसिंह, और पृथ्वीसिंह रक्खे-गये थे, बाक़ी बे नाम ही मरगये; और दो बेटियां थीं, १- सिरहकुंवर, जिसकी शादी विक्रमी १८७० [हि० १२२८ = ई० १८१३] में जयपुरके महाराजा जगत्सिंहके साथ हुई, और २- स्वरूपकुंवर बूंदीके रावराजा रामसिंहसे विक्रमी १८८१ [हि० १२३९ = ई० १८२४] में ब्याही गई. इनके राणियां १३, पर्दायती १२ और गायणियां १२ थीं. महाराजाकी ख़वासोंके बेटे नीचे लिखे मुवाफ़िक़ थेः-

१- रंगरूपरायके बेटे स्वरूपसिंह, २- हस्तूरायके बेटे शिवनाथसिंह, ३- तुलसीरायके बेटे लालसिंह, ४- रूपजोतके बेटे विभूतसिंह, ५- उदयरायके बेटे सोहनसिंह, ६- सुन्दररायके बेटे तेजसिंह.

११ महाराजा तख्तसिंह

इनका जन्म विक्रमी १८७६ ज्येष्ठ शुक्ल १३ [हि० १२३४ ता० १३ शश्रबान = ई० १८१९ ता० ५ जून] को हुआ था. महाराजा मानसिंहका देहान्त होनेपर धोंकलसिंह को गद्दीपर बिठानेकी कार्रवाइयां होने लगीं, लेकिन् पोलिटिकल एजेन्ट लडलो साहिब ने सबको हुक्म सुनादिया. कि जो कोई धोंकलसिंहको बिठानेका इरादह करेगा, उसे सज़ा दीजायगी; और साहिबने माजी साहिबकी सलाह लेकर ईडरके इलाके अहमद- नगरसे महाराजा तख्तसिंहको लानेका हुक्म दिया; दीवान महता लक्ष्मीचन्दके बेटे मुकुन्दचन्दको दो हज़ार आदमियोंकी भीड़ भाड़के साथ ले आनेके लिये रवानह किया. इस वक्त पोलिटिकल एजेन्ट लडलो साहिबने महाराजा तख्तसिंहके नाम एक ख़रीतह लिखा. जिसकी नक्ल यह है :–

एजेन्ट साहिबके ख़रीतहकी नक्ल.

स्वस्तिश्री सर्वोपमा विराजमान सकल गुण निधान राज राजेश्वर महाराजा धिराज महाराजाजी श्री तख्तसिंहजी बहादुर योग्य, कप्तान जॉन लडलो साहिब बहादुर लिखावतां सलाम बंचावसी, अठाका समाचार भला है, आपका सदा भला चाहिजे, अपरंच– आपको महाराजा साहिब मानसिंहजीके गोद लेनेके वास्ते सब सर्दार, उमराव, मुत्सद्दी, खवास पासवान, ज़नानह, कामदार मिलकर कह्यो, कि महाराजा तख्तसिंह को खोले लेवेगा; सो हमको भी मन्ज़ूर है, सो आप खुशीसे जोधपुर पधारिये. सो तख्तसिंहजी तो राजके पाट बैठेगा, और कुंवर जशवन्तसिंहको भी लार लेते आवना दोनों साहिबोंके यहां पधरावना, सो हम भी नव्वाब गवर्नर जेनरल साहिबको लिखेंगे, सो ज़रूर मन्ज़ूर करलेंगे; और आपके मिज़ाजकी खुशीके समाचार लिखावसी. ता० १४ ऑक्टोबर सन् १८४३ ई० = कार्तिक वदी ६ संवत् १९००.

सब माजी साहिबोंकी तरफ़से जो महाराजा तख्तसिंहके नाम रुक्का लिखागया, उसकी.

नक्ल.

लालजी छोरू श्री तख्तसिंहजी, सोनी जशवन्तसिंह सूं म्हांरा बारणा बांचजो. तथा श्री जी साहबांरो ही फ़ुर्मावणो थांने खोले लेणरो हुओ थो, ने हमारे म्हा-

फ़ुर्मावणो हुआ है, ने सर्दारां उमरावां ने मुत्सद्दी वग़ैरह सारांरे पिण थांने खोले लेनरी ठहरी है; सो थें सिताब आवसो. (इस ख़ास रुक़्केके नीचे छओं माजी साहिबाके दस्तख़त थे.)

सर्दार और अह्लकारोंने महाराजा तख़्तसिंहके नाम जो अर्ज़ी लिखी, उसकी नक़्ल.
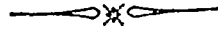
स्वस्ति श्री अनेक सकल शुभ ओपमा विराजमान श्री राज राजेश्वर महाराजाधिराज महाराजाजी श्री श्री १०८ श्री तख़्तसिंहजी, महाराज कुमार श्री जशवन्तसिंहजी री हज़ूरमें समस्त सर्दारां मुत्सद्दियां ख़ास पासबानां री अर्ज मालुम होवे; तथा ख़ास रुक़ा श्री माजी साहबांरी लिखावट मूजब सारा जणारे आपनें खोले लेणा ठहराया है, सो बेगा पधारसी– (इस अर्ज़ीके नीचे सब सर्दारों, मुतसद्दियों और ख़ास पासबानोंके दस्तख़त हुए.)

लक्ष्मीचन्दके बेटे मुकुन्दचन्दके जानेपर महाराज कुमार जशवन्तसिंह समेत महाराज तख़्तसिंह विक्रमी १९०० कार्तिक शुक्ल ७ [हि० १२५९ ता० ६ शव्वाल = ई० १८४३ ता० २९ ऑक्टोबर] को जोधपुरके क़िलेमें दाख़िल हुए, और मार्गशीर्ष शुक्ल १० शुक्रवार [हि० ता० ९ ज़िल्क़ाद = ई० ता० १ डिसेम्बर] को गद्दी बैठनेका जल्सह हुआ. अब हम इन महाराजाके समयमें, जो बड़े बड़े काम हुए, वह लिखते हैं.

विक्रमी १९१० ज्येष्ठ शुक्ल १३ [हि० १२६९ ता० १२ रमज़ान = ई० १८५३ ता० १९ जून] को महाराजाने अपनी बेटी चांदकुंवरका विवाह जयपुरके महाराजा रामसिंहके साथ बड़ी धूम धामसे किया. फिर सर्दीके मौसममें आबू, सिरोही गोढवाड़ और सोजतकी तरफ़ दौरा किया. विक्रमी १९१४ भाद्रपद कृष्ण ५ [हि० १२७३ ता० १९ ज़िल्हिज = ई० १८५७ ता० ९ ऑगस्ट] को जोधपुरके क़िलेमें बारूतके ख़ज़ानेपर बिजली गिरी, जिससे क़िलेकी दीवार और चामुंडा माताका मन्दिर उड़कर शहरमें आपड़ा; उन पत्थरोंसे दो सौ आदमी अपने अपने घरोंमें दबकर मरगये; दीवार और मन्दिर नये सरसे बनवाये गये. विक्रमी भाद्रपद कृष्ण १२ [हि० ता० २६ ज़िल्हिज = ई० ता० १६ ऑगस्ट] को ख़बर मिली, कि ऐरनपुरकी छावनीका रिसालह अंग्रेज़ोंसे बाग़ी होकर आउवेको चला आया, जिसपर महाराजाने क़िलेदार पंवार ओनाड़सिंह, लोढा राव राजमल्ल, सिंघवी कुशलराज और महता विजयसिंह वग़ैरहको फ़ौज देकर आउवापर भेजा. विक्रमी

आश्विन कृष्ण ५ [हि० १२७४ ता० १९ मुहर्रम = ई० ता० ८ सेप्टेम्बर] को आउवाके ठाकुर और बाग़ियोंने राज्यकी फ़ौजसे मुक़ाबलह किया, इस लड़ाईमें राव राजमल्ल और क़िलेदार ओनाड़सिंह मारेगये; और सिंघवी कुशलराज व महता विजयसिंह भागकर सोजत पहुंचे, और मुख़ालिफ़ ग़ालिब रहे, सिर्फ़ आहोरके ठाकुरने महाराजाका तोपख़ानह बचाया, जिससे उसकी कारगुज़ारी समझी गई.

एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके अजमेरसे रवानह होनेकी ख़बर मिली, कि बाग़ियोंको सज़ा देनेके लिये आउवाकी तरफ़ जाते हैं; यह सुनकर मेशन साहिब पोलिटिकल एजेण्ट मारवाड़, बड़े साहिबके शरीक होनेको अजमेरकी तरफ़ चले; सो अपने लश्करके धोखेसे बाग़ियोंके रिसालहमें आउवे पहुंचे; उन लोगोंने पहिचानकर साहिबको मारडाला. एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह भी कम जमइयतके सबब अजमेर लौटगये; और ऐरनपुरका रिसालह, जो आउवेमें था, मारवाड़का मुल्क लूटता हुआ नारनौल पहुंचा, जहां अंग्रेज़ी फ़ौजसे शिकस्त खाई; और बर्बाद होगया. सिंघवी कुशलराज और कुचामण ठाकुर वग़ैरह पांच छः हज़ार फ़ौज राज्यकी लेकर बाग़ियोंके पीछे नारनौल तक गये; लेकिन् लड़ाई करनेकी हिम्मत न हुई, इससे लौटआये, और महाराजाके हुक्मके मुताबिक़ बडलूकी गढ़ीमें आसोपके ठाकुरको घेरलिया, क्योंकि वह महाराजासे बदला हुआ था. आख़िरकार विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १० [हि० ता० २४ रबीउ़ल अव्वल = ई० ता० १३ ऑक्टोबर] को लड़ाई हुई, और आसोपके ठाकुर शिवनाथसिंहको जोधपुर ले आये, विक्रमी माघ कृष्ण ८ [हि० ता० २२ जमादियुल अव्वल = ई० ता० १० डिसेम्बर] को क़िलेमें क़ैद करदिया, जो कुछ अर्सेके बाद क़िलेसे निकल भागा; कहते हैं, कि उसके सर्दार जुझारसिंह कूंपावतने बड़ी मिहनतके साथ उसको क़िलेसे निकाला था. फिर महाराजाने फ़ौज भेजकर आउवा ख़ाली करा लिया; और ठाकुर खुशहालसिंह भाग गया. आउवा, आसोप, और गूलर वग़ैरहके ठाकुर भागकर मेवाड़के उमराव कोठारिया, व भींडर वग़ैरहके पास रहने लगे.

आउवाके ठाकुरने पोलिटिकल एजेण्टके मारे जानेका क़ुसूर अपने ज़िम्मह नहीं बतलाया, और सर्कार अंग्रेज़ीसे सफ़ाई करके उदयपुरमें आरहा; महाराणाने उसके गुज़ारेके लिये एक हज़ार रुपया माहवार मुक़र्रर करदिया था; लेकिन् उसका इन्तिक़ाल उदयपुरमें ही होगया. उसका बेटा देवीसिंह, आसोपका ठाकुर शिवनाथसिंह, गूलरके विष्णुसिंह वग़ैरहके वकील अंग्रेज़ी अफ़्सरोंके पास फ़र्याद करते थे; और सर्दार लोग मारवाड़को लूटते थे; फिर बीकानेरमें ये लोग जारहे. अंग्रेज़ी अफ़्सरोंने इनकी जागीरें वापस देनेकी सिफ़ारिश महाराजाको की; परन्तु मन्ज़ूर न हुई. महाराजा ऐश

इशरत और शराब नोशीमें डूबे हुए थे; बाग़ी सर्दार मुल्क लूटते; महाराजाके महाराज कुमार, जो चाहते, जुल्म करते; ऐसी छीना झपटीमें बद नियत अह्लकार भी मतलब बनाने लगे; इन सबसे, जिस तरह क़ाबू पड़ता, महाराजा भी अपना मतलब सिद्ध करते; लेकिन् महाराजाका ख़ज़ानह लौंडियोंके हाथ था; कभी किसी लौंडीने पचास हज़ार रुपये हज़्म किये, कल दूसरीने अपना काम बनाया; महाराणियों और ख़वास पासबानोंकी हिमायतसे लौंडियां बे फ़िक्र थीं. महाराजा चन्द दिनोंके बाद कुछ मिनटोंके लिये बाहर आते, बल्कि कभी महीनों तक ज़नानेसे नहीं निकलते थे, शराब निकलवानेमें बड़ा ख़र्च होता था. जब पोलिटिकल एजेण्ट अथवा एजेण्ट गवर्नर जेनरलकी मुलाक़ात होती, और वे इन्तिज़ामकी हिदायत करते, तो महाराजा अपने अख़्लाक़ और होश्यारीसे ऐसा जवाब देते, कि उनको यक़ीन होजाता, कि अब ज़रूर मुल्कका इन्तिज़ाम करेंगे; लेकिन् उनके जानेके बाद फिर ऐश इशरत और शराब नोशीमें मश्ग़ूल होजाते. आख़िरकार एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने बहुतेरा समझाया, और महाराजाने इक़ार भी किया, लेकिन् कुछ अमल न हुआ.

विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = ई० १८७२] में दूसरे कुंवर ज़ोरावरसिंह जीवन माताके दर्शनका बहाना करके नागौरके क़िलेपर जा जमे, महाराजा एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहकी मुलाक़ातको आबू गये थे, ज़ोरावरसिंहके नागौर ले लेनेका हाल साहिबने दर्याफ़्त किया, तब महाराजाने कहा, कि मैंने कुछ हुक्म नहीं दिया; उसने यह अपनी मर्ज़ीसे किया है. विक्रमी आषाढ़ शुक्ल १२ [हि० ता० ११ जमादियुल अव्वल = ई० ता० १६ जुलाई] को महाराजा जोधपुर आये, और पोलिटिकल एजेण्ट फ़ौज समेत नागौर गये; ज़ोरावरसिंह समझानेसे पोलिटिकल एजेण्टके पास आगये; तब वह विक्रमी श्रावण शुक्ल १५ [हि० ता० १४ जमादियुस्सानी = ई० ता० १८ ऑगस्ट] को ज़ोरावरसिंहको साथ लेकर जोधपुर आये; और खाटूका ठाकुर व बारहठ भारथदान वग़ैरह, जो ज़ोरावरसिंहके शरीक थे, उनकी जागीरें ज़ब्त हुईं; ज़ोरावरसिंह नाराज़ होकर अजमेर जा रहे; गवर्मेंट अंग्रेज़ीने कामका इख़्तियार बड़े महाराज कुमार जशवन्तसिंहको दिलादिया.

विक्रमी १९२९ माघ शुक्ल १५ [हि० ता० १४ ज़िल्हिज = ई० १८७३ ता० ११ फ़ेब्रुअरी] को महाराजा तख़्तसिंहका देहान्त होगया. इनका छोटा क़द, गोरा रंग, बड़ी आंखें, चौड़ी पेशानी, आदतमें हंस मुख और मिलनसार थे; जब कोई आदमी इनसे मिलता, तो तमाम उम्र यही कहता, कि महाराजा

तख्तसिंहकी मिहर्बानी मुझपर बहुत है; और जब यह मुल्की इन्तिज़ाम और अच्छे बुरे आदमियोंकी चाल चलनके बारेमें बात करते, तब दूसरा उनके बराबरीमें कोई न जंचता; लेकिन् यह सब बर्ताव शराब नोशी और अय्याशीसे पलट दिये थे. महाराजाने २९ वर्ष राज्य किया, जिसमें २२ दीवान बदले गये. इनके ३० राणियां थीं, और १० पुत्र हुए.

१- कुंवर जशवन्तसिंह, २- ज़ोरावरसिंह, इनका जन्म विक्रमी १९०० माघ शुक्ल ६ [हि० १२६० ता० ५ मुहर्रम = ई० १८४४ ता० २५ जैन्युअरी] को हुआ, और फेब्रुअरी सन् १८८८ ई० में मरगये. ३-प्रतापसिंह, विक्रमी १९०२ कार्तिक कृष्ण ६ [हि० १२६१ ता० २० शव्वाल = ई० १८४५ ता० २० ऑक्टोबर] को पैदा हुए. ४- रणजीतसिंह, विक्रमी १९०३ चैत्र कृष्ण ३ [हि० १२६३ ता० १७ रबीउ़ल अव्वल = ई० १८४७ ता० ५ मार्च] को; ५- किशोरसिंह, विक्रमी १९०४ भाद्रपद कृष्ण ९ [हि० १२६३ ता० २३ रमज़ान = ई० १८४७ ता० ३ सेप्टेम्बर] को; ६- बहादुरसिंह, जो विक्रमी १९१० पौष शुक्ल १२ [हि० १२७० ता० ११ रबीउ़स्सानी = ई० १८५४ ता० १० जैन्युअरी] को हुए, और विक्रमी १९३६ पौष शुक्ल ९ [हि० १२९७ ता० ८ सफ़र = ई० १८८० ता० २० जैन्युअरी] को मरगये. इनके एक कुंवर जीवनसिंह हैं, जिनका जन्म विक्रमी १९३२ मार्गशीर्ष शुक्ल ४ [हि० १२९२ ता० ३ ज़िल्क़ाद = ई० १८७५ ता० २ डिसेम्बर] को हुआ; ७-भोपालसिंह, विक्रमी १९११ चैत्र शुक्ल ४ [हि० १२७० ता० ३ रजब = ई० १८५४ ता० २ एप्रिल] को; ८-महाराज माधवसिंहका जन्म विक्रमी १९१३ आषाढ़ शुक्ल ६ [हि० १२७२ ता० ५ ज़िल्क़ाद = ई० १८५६ ता० ८ जुलाई] को हुआ था, यह विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में छब्बीस वर्षकी उ़म्र पाकर मरगये; तब महाराजा साहिबके हुक्मसे भोपालसिंहके कुंवर दौलतसिंह, जिनका जन्म विक्रमी १९३४ वैशाख शुक्ल ११ [हि० १२९४ ता० १० रबीउ़स्सानी = ई० १८७७ ता० २४ एप्रिल] को हुआ था, गोद आये; ९-मुहब्बतसिंह, विक्रमी १९१४ फाल्गुन् कृष्ण २ [हि० १२७४ ता० १६ जमादियुस्सानी = ई० १८५८ ता० ३ फ़ेब्रुअरी] को; १०- ज़ालिमसिंह, विक्रमी १९२२ आषाढ़ कृष्ण ६ [हि० १२८२ ता० २० मुहर्रम = ई० १८६५ ता० १४ जून] को पैदा हुए.

महाराजा तख्तसिंहके ३० राणियोंके सिवा १० ख़वास पासबानोंके जो लड़के हुए, उनके नाम ये हैं- १- मोतीसिंह, २- जवाहिरसिंह, ३- सुल्तानसिंह, ४- सर्दारसिंह, ५- जवानसिंह, ६- सावन्तसिंह, ७- तेजसिंह, ८- कल्याणसिंह ९- मूलसिंह, और १०- भारतसिंह.

४२ महाराजा जशवन्तसिंह २.
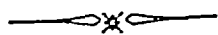
इनका जन्म विक्रमी १८९४ आश्विन शुक्ल ८ [हि० १२५३ ता० ७ रजब = ई० १८३७ ता० ७ ऑक्टोबर] को हुआ. महाराजा मानसिंहने चारण जुगता वणशूरको, तख़्तसिंहने वाघा भाटको, और इन महाराजा धिराजने कविराज मुरारिदानको लाख पशाव और ढींकाई गांव इनायत किया. यह महाराजा बहादुरी और फ़य्याज़ी में अपना सानी नहीं रखते; इन्होंने पिताकी मौजूदगीमें गोढवाड़के मीनोंको तलवारके ज़ोरसे ऐसा सीधा किया, कि अब तक महाराजाके नामसे थर्राते हैं; इसी तरह लोहियाणाके लुटेरे भूमियोंको ग़ारत किया; लेकिन् रियासती इन्तिज़ाम याने माली और मुल्की कामोंकी तरफ़ इनका ध्यान बहुत कम है. इनके छोटे भाई महाराज प्रतापसिंह महाराजाके दिली ख़ैरख़्वाह, बे रू रिआयत और बे तमा शख़्स हैं; रियासतके इन्तिज़ामको बहुत अच्छी तरह चलाते हैं. सच्चाई, ईमान्दारी, और ख़ैरख़्वाहीमें अपना सानी नहीं रखते; इन्होंने अपनी जागीर रियासतमें मिलाकर अपने ख़र्चके लिये नक्द तन्ख़्वाह कराली है; इनके मातहत मुसाहिब कारगुज़ारीके साथ काम करते हैं.

इस रियासतमें सबसे बड़ी अ़दालत महूकमहख़ास है, जिसके हाकिम श्री महाराजा साहिब हैं, यह महूकमह विक्रमी १९३० वैशाख [हि० १२९० रबीउ़ल अव्वल = ई० १८७३ मई] में क़ाइम हुआ; इससे पहिले दीवान और बख़्शी मुसाहिबसे पूछकर ज़बानी काम चलाते थे. इन महाराजाके अ़हूदमें भी क़रीब एक वर्ष तक वही ढंग रहा. इनके अ़हूदमें पहिले मुसाहिब ख़ां बहादुर मय्या मुहम्मद फ़ैज़ुल्लाहख़ां विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७६] तक रहे; इसी संवत्के भाद्रपद [हि० शअ़्बान = ई० ऑगस्ट] में महाराज किशोरसिंह मुसाहिब आला बने, और महूकमहका नाम आ़लियह कौन्सिल रक्खा. विक्रमी १९३५ [हि० १२९५ = ई० १८७८] में किशोरसिंहको तो कमांडर इन् चीफ़ फ़ौज बनाया, और महाराज प्रतापसिंहने इस उ़हूदेपर क़ाइम होने बाद प्राइम-मिनिस्टरीका ख़िताब पाया; और महूकमहका नाम महूकमह आ़लियह प्राइममिनिस्टरी रक्खागया. इसमें दो सीग़े बनाये, एक मुआमलात अन्दरूनी और दूसरा अज़लाए ग़ैर. विक्रमी १९३८ भाद्रपद [हि० १२९८ शव्वाल = ई० १८८१ सेप्टेम्बर] में महाराज प्रतापसिंहने इस्तिअ़्फ़ा दे दिया; तब महूकमहख़ास नाम होकर रियासती मुसाहिबोंके क़ब्ज़हमें आया; लेकिन् विक्रमी आश्विन [हि० ज़िल्क़ाद = ई० ऑक्टोबर]

में महाराज प्रतापसिंहको पूरा इख्तियार और "मुसाहिब आला" का ख़िताब मिला, वह अब तक महक्मह ख़ासके मुसाहिब आला और प्राइममिनिस्टर हैं. जब इनको इख्तियार मिला, तो रियासतकी आमदनी क़रीब तीस लाख सालानहके और जमा व ख़र्च अब्तर था; इसके सिवाय चालीस या पचास लाख क़र्ज़ा था; लेकिन् प्राइम-मिनिस्टर महाराजकी कोशिशसे ख़र्च कम हुआ, और आमदनी बढ़कर विक्रमी १९३९ [हि० १२९९ = ई० १८८२] में उन्तालीस लाख होगई; और सिवाय तीन लाख रुपयेके कुल क़र्ज़ अदा करदिया गया. विक्रमी १९४३ [हि० १३०३ = ई० १८८६] में महाराज प्रतापसिंहको सर्कार अंग्रेज़ीसे "सर, के० सी० एस० आई० " का एज़ाज़ मिला; और दूसरे वर्ष हुज़ूर मलिकह मुअ़ज़्ज़मह क़ैसरह हिन्दके जश्न जूबिलीमें विलायत जानेपर उनको ख़िताब "लेफ्टिनेन्ट कर्नेल, और एड्डि काङ्, टु दि प्रिन्स ऑव वेल्स" (शाहज़ादह साहिब वेल्सका फ़ौजी मुसाहिब) मिला.

मुल्कमें जो डकैती, बटमारी, और ख़ानहजंगी वग़ैरह ज़ियादह थीं, वह दूर होगई; मीना, भील, बावरी, थोरी वग़ैरह फ़सादी क़ौमोंने सीधे होकर खेती वग़ैरहका पेशह इख्तियार करलिया.

अदालतोंका यह हाल था, कि बग़ैर हिमायतके काम चलना दुश्वार था; अब कोई किसीकी हिमायतका नाम नहीं लेता; पहिले कोई क़ाइदह रियासतमें नहीं था, अब वे भी जारी होते जाते हैं; यह सब महाराज प्रतापसिंहकी ईमान्दारी, सच्चाई, ख़ैरख़्वाही, और क़द्रदानीका नतीजह है. इनके मातहत महाराज ज़ालिमसिंह और मुन्शी हरदयालसिंह वग़ैरह अच्छी तरह काम देते हैं. कविराज मुरारिदान, हाकिम अपील बड़े ईमान्दार और साफ़ मुआमलह शख़्स हैं, उनके ज़रीएसे हमको भी मारवाड़की तारीख़का एक बड़ा ज़ख़ीरह हासिल हुआ, जिसकी बाबत जितनी शुक्रगुज़ारी कीजाय, कम है; इसी तरह हम मुन्शी देवीप्रसादको भी बग़ैर शुक्रियह नहीं छोड़ सक्ते, जिनसे अक्सर वक़्त मारवाड़के बाज़ अहवाल दर्याफ़्त करनेमें मदद मिलती रही है.

महक्मह ख़ास मुल्क मारवाड़का सद्र है, और सब हुक्म व अहकाम यहींसे जारी होते हैं. इस महक्महका ख़ास काम यह हैः-

नीचेके महक्मोंकी निगरानी, हिदायत व क़ाइदोंका जारी करना और अमलमें लाना, रियासती इन्तिज़ामके लिये सलाह करना, अदालत अपील व कोर्ट सर्दारानकी अपील सुनना, बजट व जमा ख़र्च तय्यार कराकर कमी बेशी करना, और ठगी, डकैती वग़ैरह मिटानेकी निगरानी और बड़े संगीन मुक़द्दमोंका तदारुक तज्वीज़ करना; लेकिन् ऐसे मुक़द्दमोंमें श्री महाराजाधिराजकी मन्ज़ूरी लेनी पड़ती है.

महाराजाधिराज श्री जशवन्तसिंहके महाराज कुमार सर्दारसिंह विक्रमी १९३६

माघ शुक्ल १ [हि० १२९७ ता० २९ सफ़र = ई० १८८० ता० १० फ़ेब्रुअरी] को पैदा हुए हैं.

कुल अह्लकारोंका नक़्शह विक्रमी १९४० की रिपोर्टके मुवाफ़िक़ नीचे लिखा जाता है:-

नम्बर.	उह्दह.	नाम अह्लकार.	कैफ़ियत.
१	मुसाहिब आला व प्राइम-मिनिस्टर.	कर्नेल महाराज सर प्रतापसिंह, के.सी.एस.आई.	महाराजाके छोटे भाई.
२	कमान्डर-इन्-चीफ़.	महाराज किशोरसिंह.	ऐज़न.
३	असिस्टेंट मुसाहिब आला.	महाराज ज़ालिमसिंह.	ऐज़न.
४	प्रधान.	राठौड़ मंगलसिंह.	ठाकुर पोहकरण.
५	दीवान.	राय महता विजयमल्ल.	ओसवाल.
६	महाराजाके प्राइवेट सेक्रेटरी.	पं० शिवनारायण.	कश्मीरी ब्राह्मण.
७	मुसाहिब आलाके होम सेक्रेटरी.	मुन्शी हरदयालसिंह.	यह पंजाबमें एक्स्ट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर थे.
८	बाउन्डरी अफ़्सर.	कप्तान डब्ल्यू. लॉक साहिब.	यूरोपिअन.
९	सुपरिन्टेन्डेन्ट महकमए सायरात.		महकमह ख़ासके तअ़ल्लुक़में है.
१०	मैनेजर जोधपुर रेल्वे.	मिस्टर होम साहिब.	यूरोपिअन.
११	मुहतमिम् तामीरात रफ़ाह आम.	ऐज़न.	ऐज़न.
१२	अफ़्सर शिफ़ाख़ानहजात.	डॉक्टर एडमन साहिब.	ऐज़न.
१३	ख़ास दवाईख़ानहका मुहतमिम्.	डॉक्टर नवीन चन्द्र.	बंगाली.
१४	सुपरिन्टेन्डेन्ट महकमए कोर्ट-सर्दारान.	मुन्शी हरदयालसिंह.	खत्री.

१५	असिस्टेन्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट मह्कमए मज़्कूर.	पंडित जीवानन्द.	
१६	जज अदालत अपील.	कविराज मुरारिदान.	चारण.
१७	हाकिम सद्र अदालत फ़ौज्दारी.	शैख़ मुहम्मद मख़्दूम.	
१८	हाकिम सद्र अदालत दीवानी.	महता अमृतलाल.	ओसवाल.
१९	अफ़्सर मह्कमए तामील.	ख़ान बहादुर मुहम्मद फ़ैज़ुल्लाहख़ां.	पठान.
२०	सुपरिन्टेन्डेन्ट मह्कमए ज़ब्ती.	सिंघवी बच्छराज.	ओसवाल.
२१	मुन्सरिम मह्कमए वाक़ियात.	महता सर्दारमल्ल.	ओसवाल.
२२	कोतवाल शहर जोधपुर.	राव राजा मोतीसिंह.	महाराजाके ख़वास वाल भाई.
२३	क़िलेदार जोधपुर.	सोभावत केसरी करण.	
२४	दारोगा ख़ास दफ़्तर.	जोषी आशकरण.	ब्राह्मण.
२५	ख़ज़ानची.	सिंघवी हुक्मराज.	ओसवाल.
२६	मुन्शी रियासत.	पंचोली हीरालाल.	कायस्थ.
२७	मीर मुन्शी हिंदी.	पंचोली मोतीलाल.	ऐज़न.
२८	सुपरिन्टेन्डेन्ट मह्कमए नमक.	सिंघवी सूरजमल्ल.	ओसवाल.
२९	मुन्सरिम कारख़ानह जात.	महता कुन्दनमल्ल.	ऐज़न.
३०	सुपरिन्टेन्डेन्ट स्कूल व छापःख़ानह.	पं० गंगाप्रसाद मिश्र, एफ़्० ए०	ब्राह्मण.

३१	दारोग़ह कुतुबख़ानह.	पुरोहित तेजकरण.	ब्राह्मण.
३२	बख़्शी प्याद.	बोहरा आसूलाल.	
३३	दारोग़ह जवाहिरख़ानह व ज़रगरख़ानह.	व्यास देवीलाल.	ब्राह्मण.
३४	दारोग़ह देवस्थान.	व्यास रघुनाथ.	ऐज़न.
३५	दारोग़ह टक्साल.	शैख़ मुम्ताज़अली.	शैख़.
३६	दारोग़ह स्टाम्प.	सिंघवी शिवदानमल्ल.	ओसवाल.
३७	तहसील्दार क़स्बे जोधपुर.	फ़ौज्दार गुलाबख़ां.	
३८	दारोग़ह जेलख़ानह.	बाबू रामसुख.	
३९	मुहतमिम् दूकानात सर्कारी.	सिंघवी खुशहालचन्द.	ओसवाल.
४०	मुहतमिम् मह्कमए अफ़्यून.	महता सर्दारमल्ल.	ओसवाल.
४१	दारोग़ह मह्कमए नमक खारी.	ऐज़न.	ऐज़न.
४२	मकरानेका दारोग़ह.	फ़ौज्दार गुलाबख़ां.	

सद्रके बड़े उह्दह दारोंके सिवा इलाक़हके अह्लकारोंकी फ़िह्रिस्त नहीं दीगई; तेईस पर्गनोंमेंसे हर एकपर एक हाकिम, नाइब हाकिम और दो तीन थानहदार मुक़र्रर रहते हैं. इस रियासतमें ख़ालिसहके सिवा छोटे बड़े जागीरदार भी बहुतसे हैं, जिनमेंसे अव्वल और दूसरे दरजेके सर्दारोंका नक़्शह यहांपर दर्ज किया जाता है.

रियासत जोधपुरके अव्वल और दूसरे दरजहके जागीरदारोंका नक़्शह,
सन् १८८४- ८५ ई० की रिपोर्टके मुवाफ़िक़.

नम्बर.	नाम जागीर.	ज़ात.	गोत्र.	तादाद गांव.	रेख.
१	पोहकरण.	राठौड़.	चांपावत विठ्ठलदासोत.	१००	९४९९१
२	आसोप	ऐज़न्.	कूंपावत मांडणोत.	४॥	३१०००
३	खैरवा	ऐ०	जोधा गोइन्ददासोत.	१०	२७७५०
४	रास .	ऐ०	ऊदावत.	१७	३९२५०
५	नींबाज	ऐ०	ऐ०	१०	३५१००
६	आउवा ..	ऐ०	चांपावत आईदानोत.	१६	१६०००
७	रीयां . . .	ऐ०	मेड़तिया माधवदासोत.	८	३६१०३
८	भाद्राजूण.. .	ऐ०	जोधा रत्नसिंहोत.	२७	३१९५०
९	रायपुर	ऐ०	ऊदावत.	३८॥	४८८००
१०	कुचामण	ऐ०	मेड़तिया गोइन्ददासोत.	१६	४२७५०
११	घाणेराव .	ऐ०	ऐ० गोपीनाथोत.	४२	३७६००
१२	आहोर.	ऐ०	चांपावत आईदानोत.	९॥	२२६२५
१३	दासपां . .	ऐ०	ऐ० विठ्ठलदासोत.	१३	२५५००
१४	रोयट .	ऐ०	ऐ० आईदानोत.	११	१६५२५
१५	कंटालिया. . .	ऐ०	कूंपावत महेशदासोत.	१२	१३८००
१६	लांबियां	ऐ०	ऊदावत.	७	१८५००
१७	गूलर. . . .	ऐ०	मेड़तिया सुरताणोत.	५	२३२५०
१८	भखरी ..	ऐ०	ऐ० सुरताणोत.	५	१९५००
१९	बूडसू .	ऐ०	ऐ० केशवदासोत.	२४	३७५५०
२०	मींढा.	ऐ०	ऐ० चांदावत.	२९	३६३०३
२१	बलूंदा .	ऐ०	ऐ० ऐ०	६	२०२५०

२२	खींवसर........	ऐ०	करमसोत.	३२	११९५०
२३	राखी	चहुवान.	....	२२	२१६००
२४	कांणाणो.....	राठौड़.	कर्णोत.	३	१२०००
२५	मनाणा................	ऐज़न्	मेड़तिया केशवदासोत.	७	१६७००
२६	पालासणी	ऐ०	ऊदावत.	२	१४०००
२७	खींवाड़ा..........	ऐ०	चांपावत विट्ठलदासोत.	१७	१६०२५
२८	वाकरो....	ऐ०	ऐ० ऐ०	७	१७२५०
२९	चंडावल..	ऐ०	कूंपावत ईसरदासोत.	८	२००००
३०	अगेवा.......	ऐ०	ऊदावत.	३	२०७५०
३१	आलणियावास	ऐ०	मेड़तिया माधवदासोत.	४	१३६००
३२	चाणोद........	ऐ०	ऐ० नाथोत.	२४	३१०००
३३	जावला......... . .	ऐ०	ऐ० सुरताणोत.	८॥	३८०००
३४	वडू...	ऐ०	ऐ० केशवदासोत.	१२	३२७५०
३५	मीठड़ी	ऐ०	ऐ० गोइन्ददासोत.	१५	२६४००
३६	लाडणू	ऐ०	जोधा केशरीसिंहोत.	७	२००००
३७	वगड़ी..	ऐ०	जैतावत पृथ्वीराजोत.	७	१५०००
३८	कल्याणपुर.	चहुवान.	. ...	७	९०००
३९	खेजड़ला.	भाटी.	अर्जुनोत.	८	२४८००
४०	झलामंड.....	राणावत.	सूरजमलोत.	८	१४१००
४१	डोडियाणा.......... .	राठौड़.	मेड़तिया गोइन्ददासोत.	९	३२०००

अ़ह्दनामह नम्बर ३६,
राज्य जोधपुर.
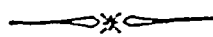
अ़ह्दनामह ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इण्डिया कम्पनी और महाराजाधिराज राजराजेश्वर मानसिंह बहादुरके आपसमें दोस्ती और इत्तिफ़ाक़की बाबत,

तज्वीज़ किया हुआ जेनरल जिरार्डलेक, सिपहसालार फ़ौज अंग्रेज़ी मौजूदह हिन्दुस्तानका, लॉर्ड रिचर्ड मारक्विस वेलेज़्ली, गवर्नर जेनरलके दिये हुए इख़्तियारसे, जो ईस्ट इंडिया कम्पनी और महाराजाधिराज राजराजेश्वर मानसिंह बहादुर और उनके वारिसों और जानशीनोंके तरफ़से हुआ.

शर्त पहिली- दोस्ती और इत्तिफ़ाक़ हमेशहके लिये ऑनरेबल अंग्रेज़ी कम्पनी और महाराजाधिराज मानसिंह बहादुर और उनके वारिसों और जानशीनोंके आपसमें मज़्बूत क़रार पाया है.

शर्त दूसरी- दोनों सर्कारोंमें, जो दोस्ती क़ाइम हुई है, तो एक सर्कारके दोस्त व दुश्मन दोनों सर्कारोंके दोस्त व दुश्मन समझे जायेंगे; और इस शर्तकी तामीलका दोनों सर्कारोंको हमेशह ख़याल रहेगा.

शर्त तीसरी- ऑनरेबल कम्पनी इन्तिज़ाम मुल्कमें, जो अब महाराजाधिराजके क़ब्ज़हमें है, दख़्ल नहीं देगी; और न उनसे ख़िराज मांगेगी.

शर्त चौथी- जिस सूरतमें कि कोई दुश्मन ऑनरेबल कम्पनीका उस मुल्कपर हमलह करनेका इरादह करे, कि जो थोड़े अर्सहसे हिन्दुस्तानमें ऑनरेबल कम्पनीने लिया है, तो महाराजाधिराज अपनी कुल फ़ौज कम्पनीकी फ़ौजकी मददके लिये भेजेंगे; और दुश्मनके ख़ारिज करनेमें खुद भी बहुत कोशिश करेंगे; और दोस्ती व मुहब्बतकी कमी किसी बातमें किसी मौक़हपर नहीं करेंगे.

शर्त पांचवीं- जो कि ब सबब दोस्तीके, जो इस अह्दनामहकी दूसरी शर्तके मुवाफ़िक़ क़रार पाई है, ऑनरेबल कम्पनी महाराजाधिराजकी ज़िम्महवार होती है, कि वह बर्ख़िलाफ़ किसी ग़ैर दुश्मनके मुल्ककी हिफ़ाज़त करेगी, और महाराजाधिराज भी वादह करते हैं, कि उनके और किसी दूसरे रईसके आपसमें झगड़ा पैदा होगा, तो महाराजाधिराज पहिले सर्कार अंग्रेज़ीके हुज़ूरमें उस बखेड़ेके सबबकी कैफ़ियत भेजेंगे, ता कि सर्कार उसका फ़ैसलह वाजिबी करदे, और जो दूसरे फ़रीक़की हठसे वाजिबी शर्त क़रार न पावे, तो महाराजा मददके लिये कम्पनीको दर्ख़्वास्त करसकेंगे; और ऐसी हालतमें मदद भी दी जायगी; और महाराजाधिराज वादह करते हैं, कि हम उस मददका ख़र्च उस शरहके मुवाफ़िक़ देंगे, जो हिन्दुस्तानके दूसरे रईसोंसे क़रार पाई है.

शर्त छठी- महाराजाधिराज बज़रीए इस तहरीरके वादह करते हैं, कि अगर्चि वह दर अस्ल अपनी कुल फ़ौजके मालिक हैं, तो भी लड़ाई या लड़ाईके विचारकी हालतमें साहिब कमाण्डर फ़ौज अंग्रेज़ी (जो उनको मदद देती होगी) की सलाह और कहनेके मुवाफ़िक़ काम करेंगे.

शर्त सातवीं- महाराजा किसी अंग्रेज़ी या फ़ांसीसी रअय्यत या यूरपके और किसी बाशिन्दहको सर्कार कम्पनीकी रज़ामन्दी बग़ैर अपने पास नहीं आने देंगे, और न नौकर रक्खेंगे.

ऊपर लिखा अह्दनामह, जिसमें सात शर्तें दर्ज हैं, दस्तूरके मुवाफ़िक़ जेनरल जिरार्ड लेक साहिब और महाराजाधिराज राजराजेश्वर मानसिंह बहादुरके मुहर व दस्तख़तोंसे मकाम सरहिन्दी सूबह अक्बराबादमें तारीख़ २२ डिसेम्बर सन् १८०३ ई० [ता० ७ रमज़ान सन् १२१८ हि० = मिती पौष शुक्ल ९ संवत् १८६०] को तस्दीक़ हुआ.

जब एक अह्दनामह, जिसमें सात शर्तें ऊपर लिखी हुई दर्ज होंगी, महाराजाधिराजको गवर्नर जेनरलकी मुहर और दस्तख़तके साथ दिया जायगा, तो यह अह्दनामह, जिसमें जिरार्ड लेक साहिबकी मुहर और दस्तख़त हैं, वापस लिया जायगा.

मुहर कम्पनी.

दस्तख़त- वेलेज़्ली.

यह अह्दनामह गवर्नर जेनरलने ता० १५ जैन्युअरी सन् १८०४ ई० को तस्दीक़ किया.

दस्तख़त- जी० एच० बार्लो.
दस्तख़त- जी० अडनी.

अह्दनामह नम्बर ३७.

अह्दनामह आपसमें ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इन्डिया कम्पनी और महाराजा मानसिंह बहादुर राजा जोधपुरके, पेश किया हुआ राज्य अधिकारी कुंवर युवराज महाराज कुमार छत्रसिंह बहादुरका, मंजूर किया हुआ सर चार्ल्स थियोफ़िलस मेटकाफ़ साहिबका कम्पनीकी तरफ़से मार्किस ऑव हेस्टिंग्ज़ के० जी० गवर्नर जेनरलके दिये हुए इख़्तियारके मुवाफ़िक़, और व्यास विष्णुराम और व्यास अभयराम महाराजा मानसिंह बहादुरकी तरफ़से युवराज महाराज कुमार और महाराजाके दिये हुए इख़्तियारसे.

शर्त पहिली- दोस्ती और इत्तिफ़ाक़ और ख़ैरख़्वाही हमेशह आपसमें ऑनरेबल ईस्ट इंडिया कम्पनी और महाराजा मानसिंह बहादुर और उनके वारिसों

और जानशीनोंके काइम रहेगी, और एक सर्कारके दोस्त व दुश्मन दूसरी सर्कारके भी दोस्त व दुश्मन समझे जायेंगे.

शर्त दूसरी- सर्कार अंग्रेज़ी वादह करती है, कि वह रियासत और मुल्क जोधपुरकी निगहबानी करेगी.

शर्त तीसरी- महाराजा मानसिंह और उनके वारिस और जानशीन तावेदारी सर्कार अंग्रेज़ीकी करेंगे, उनकी रियासतका इक्रार है, कि किसी और रईस या सर्दारसे सरोकार नहीं रक्खेंगे.

शर्त चौथी- महाराजा और उनके वारिस और जानशीन किसी रईस या सर्दारसे मेल मिलाप विदून इत्तिला और मंजूरी सर्कार अंग्रेज़ीके नहीं करेंगे, लेकिन् उनके दोस्तानह कागज़ पत्र उनके दोस्तों और रिश्तहदारोंमें जारी रहेंगे.

शर्त पांचवीं- महाराजा और उनके वारिस और जानशीन किसीपर ज़ियादती नहीं करेंगे; जो कभी इत्तिफ़ाकन् किसीसे तक्रार पैदा होगी, तो वह तक्रार होनेकी वजह पचायत और फ़ैसलहके लिये सर्कार अंग्रेज़ीके सुपुर्द करदेंगे.

शर्त छठी- जो ख़िराज अब तक सेंधियाको जोधपुरसे दियाजाता है, और जिसकी तफ़्सील अलहदह लिखीगई है, वही हमेशहके लिये सर्कार अंग्रेज़ीको दिया जायगा; परन्तु ख़िराजकी बाबत सेंधिया और जोधपुरमें जो शर्तें हैं, वे रद्द होंगी.

शर्त सातवीं- महाराजा बयान करते हैं, कि सिवाय उस ख़िराजके, जो जोधपुर वाले सेंधियाको देते हैं, और किसीको नहीं दिया जाता है, और इक्रार करते हैं, कि ख़िराज मज़्कूर वह सर्कार अंग्रेज़ीको देवेंगे. इस वास्ते जो सेंधिया या और कोई ख़िराजका दावा करेगा, तो सर्कार अंग्रेज़ी वादह करती है, कि वह उसके दावेका जवाब देगी.

शर्त आठवीं- ज़ुरूरतके वक़ जोधपुरकी रियासत सर्कार अंग्रेज़ीको पन्द्रह सौ सवार देगी, और ज़ियादह ज़ुरूरतके वक़ कुल फ़ौज जोधपुरकी अंग्रेज़ी फ़ौजके शामिल होगी, सिर्फ़ उतनी रहजायगी, जो मुल्कके अन्दरूनी इन्तिज़ामके लिये दर्कार होगी.

शर्त नवीं- महाराजा और उनके वारिस और जानशीन अपने कुल मुल्कके हाकिम रहेंगे, और हुकूमत अंग्रेज़ी इस रियासतमें दाख़िल न होगी.

शर्त दसवीं- यह अह्दनामह दस शर्तोंका मकाम दिल्लीमें करार पाया, और उसपर मुहर और दस्तख़त मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस् मेट्काफ़ साहिब, और व्यास विष्णुराम और व्यास अभयरामके हुए, और उसकी तस्दीक़ गवर्नर जेनरल और

राजराजेश्वर महाराजा मानसिंह बहादुर और युवराज महाराज कुमार चत्रसिंह बहादुरके दस्तख़तसे होकर इस तारीख़से ६ हफ्तहके अन्दर आपसमें एक दूसरेको दिया जायगा.

मक़ाम दिल्ली, ता० ६ जैन्युअरी सन् १८१८ ई०.

दस्तख़त सी० टी० मेट्काफ़.

मुहर.	मुहर.	मुहर.
	व्यास विष्णुराम.	व्यास अभयराम.

मुहर.		मुहर.
महाराजा मानसिंह बहादुर.		
गवर्नर जेनरलकी छोटी मुहर.	दस्तख़त—हेस्टिंग्ज़.	युवराज महाराज कुमार चत्रसिंह बहादुर.

गवर्नर जेनरलने मक़ाम ऊचरमें, ता० १६ जैन्युअरी, सन् १८१८ ई० को तस्दीक़ किया.

दस्तख़त—जे० ऐडम,
सेक्रेटरी, गवर्नर जेनरल.

तफ़्सील ख़िराजकी, जो जोधपुरसे
दिया जावे.

सिक्के अजमेर.. १८००००
वट्टा रु० २० सैंकड़ेके हिसाबसे................................ ३६०००
बाक़ी सिक्के जोधपुरी.... १४४०००
उसमेंसे आधे नक़द.. ७२०००
आधेका सामान.. ७२०००
कुल.. १४४०००
नुक़्सानी चीज़ें आधेके हिसाबसे.................................. ३६०००
बाक़ी सिक्के जोधपुरी................................ १०८०००

दस्तख़त- सी० टी० मेट्काफ़. | बड़ी मुहर.

| बड़ी मुहर. |

मुहर- भास्कर राव वकील.

बहुक्म गवर्नर जेनरल.

दस्तख़त- जे० ऐडम,
सेक्रेटरी गवर्नर जेनरल.

अह्दनामह नम्बर ३८.

तर्जमह इक्रारनामहका रियासत जोधपुरकी तरफ़से मारवाड़के इलाक़ह मेरवाड़ेकी बाबतः- इस दर्बारको पूरा भरोसा है, कि वह खूब अच्छी पोलिस मेरवाड़ेमें रखसक्ते हैं, और वहांकी हर एक बातके ज़िम्महवार होसक्ते हैं; परन्तु यह ख्वाहिश हमेशह रही है, कि गवर्मेन्ट अंग्रेज़ीकी खुशनूदी हासिल हो, और गवर्मेंएटकी मर्ज़ी यह है, कि उनकी पोलिस उस इलाक़हके इन्तिज़ामके लिये मुकर्रर रहे; इस वास्ते १५००० पन्द्रह हज़ार रुपया सालानह आठ वर्ष तक सिपाहके ख़र्चकी बाबत, जो पोलिसके लिये नौकर रक्खीजायगी, जैसा मिस्टर वाइल्डर साहिबने बयान किया है, दिया जायगा; और चांग चितार और दूसरे गांव खालिसह मारवाड़के, जिनमें कि इस दर्बारके ठाकुर एक अंग्रेज़ी फ़ौजकी मददसे रक्खेगये थे, उन गांवोंको सज़ा देनेके लिये भेजी गई थी, वे उन रुपयोंके शामिल हैं, जो ऊपर लिखी मीआदपर दिये जावेंगे; परन्तु एक मुख़्तारकार इस रियासतकी तरफ़से हिसाबकी रसीदें वगैरह लेनेके लिये और वास्ते मुजरा उस आमदनीके ज़ुरूर है, जो वुसूल हो; और मीआद गुज़र जानेपर रुपया देना मौकूफ़ होगा; और इलाक़ह वापस लिये जायेंगे. ता० ४ रजब सन् १२३९ हि०.

दस्तख़त- व्यास सूरतराम, वकील.

तर्जमह जवाब, साहिब पोलिटिकल एजेण्टकी
तरफ़से.

जो कुछ रुपया मेरवाड़ेके गांवोंसे जो मारवाड़की तरफ़से बतौर ज़मानत सर्कार अंग्रेज़ीके पास हैं, तहसील होगा, रु० १५००० से आठ वर्ष तक मुज्रा होगा; और आठ वर्ष पीछे वह गांव जोधपुरके अह्लकारोंके सुपुर्द होंगे; और

शर्तके मुवाफ़िक़ रुपया देना मौक़ूफ़ होगा. ता० ५ मार्च सन् १८२४ ई० फाल्गुन् शुक्ल ५ संवत् १८८० वि०.

दस्तख़त- एफ़० वाइल्डर,
पोलिटिकल एजेएट.

अ़ह्दनामह नम्बर ३९.

तर्जमह इक़्रारनामह, जो रियासत जोधपुरकी तरफ़से मेरवाड़ेमें मारवाड़की ज़मीनकी बाबत हुआः-

गवर्मेएट अंग्रेज़ीकी रज़ामन्दीकी तामीलके लिये उनके मुख़्तार मिस्टर वाइल्डर साहिबकी नेक सलाहके मुवाफ़िक़ इस सर्कारने आठ वर्ष तक पन्द्रह हज़ार रुपया सालानह सिपाहके (जो नये नौकर मेरवाड़ा इ़लाक़हके इन्तिज़ामके लिये हों,) ख़र्चकी बाबत मन्जूर किया था; और गांव चांग चितार और दूसरे गांव मारवाड़के, जिनमें थाने इस दर्बारकी तरफ़से बज़रीए मदद फ़ौज अंग्रेज़ी, जो उनको सज़ा देनेके लिये भेजी गई थी, मुक़र्रर हुए थे, बतौर ज़मानत गवर्मेएट अंग्रेज़ीके पास ऊपर लिखी मीआ़दके लिये देदिये गये; इस मुरादसे कि एक मोअ़्तबर अहल्कार इस सर्कारकी तरफ़से हाज़िर रहेगा, कि वह तमाम हिसाब किताब ऊपर लिखे गांवोंकी आमदनी देखकर परताल करलिया करे; और जो आमदनी उन गांवोंकी आवेगी, उसको शर्तके मुवाफ़िक़ पन्द्रह हज़ार रुपया, जो गांवोंकी आमदनी समझा गया है, मुजरा देगा; और शर्त मुवाफ़िक़ मीआ़द गुज़रने पीछे रुपया शर्त मूजिब मौक़ूफ़ होगा; और गांव वापस किये जायेंगे.

शर्त दूसरी- और जो वह शर्त फाल्गुन् शुक्ल ५ सम्वत् १८८८ मुताबिक़ ३ रजब सन् १२४७ हि० को गुज़र गई; और इस दर्बारने फिर गवर्मेएट अंग्रेज़ीकी नज़रसे और मेजर आलिवस साहिब, एजेएट गवर्नर जेनरलकी सलाहसे वास्ते रियासतों राजपूतानहके, जो उनके असिस्टेएट लेफ़्टिनेन्ट हिनरी ट्रेविलियन साहिबकी मारिफ़त दीगई थी, वादह करते हैं, कि वह गवर्मेएट अंग्रेज़ीको पंद्रह हज़ार रुपया सालानह ऊपर लिखा हुआ, नव वर्ष तक बाबत ख़र्च ऊपर लिखी सिपाहके आगेको देते रहेंगे; और गांव चांग चितार और दूसरे गांवके लिये उन्हीं पहिली शर्तोंपर ऊपर लिखी मीआ़द मुक़र्रर रक्खेंगे; और यह वादह ता० ६ फाल्गुन् सम्वत् १८८८ मु० ५ रजब सन् १२४७ हि० को शुरू होगा.

शर्त तीसरी- और सिवाय इसके दोस्ती बढ़ानेके लिये, जो अब गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी और इस दर्बारके आपसमें है, वह यह भी इस तहरीरके ज़रीएसे इक़्रार करते हैं, कि वह गवर्मेण्टकी ख़्वाहिशके मुवाफ़िक़ नीचे लिखे सात गांव, कार्तिक शुक्ल २ सम्वत् १८९२ मुताबिक़ २९ जमादियुस्सानी सन् १२५१ हि० से लेकर ऊपर ज़िक्र किये हुए गांवोंकी मीआद गुज़रने तक उन्हीं शर्तोंपर, जिनपर गांव चांग चितार वग़ैरह मुक़र्रर किये गये हैं, सुपुर्द करते हैं.

शर्त चौथी- पहिले ज़िक्र कीहुई मीआद गुज़रनेपर सालानह और गांवोंका पट्टा, जो गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके साथ पहिले कियागया था, और अब कियाजाता है, मौक़ूफ़ होगा; और कुल गांव दर्बारको वापस होंगे. कार्तिक शुक्ल २ सम्वत् १८९२ मु० २९ जमादियुस्सानी सन १२५१ हि०, ता० २३ ऑक्टोबर सन् १८३५ ई० को क़रार पाया.

पहिले ज़िक्र किये हुए गांवोंकी
तफ़्सील.

रतोड़िया, धाल, नौदना, भगूरा, राल. करवारा, चतरजीका गुढ़ा.

दस्तख़त- व्यास सवाईराम, वकील.

राजपूतानहके असिस्टेण्ट एजेण्ट गवर्नर जेनरल, लेफ्टिनेण्ट
ट्रेविलिअनके जवाबका तर्जमह.

मारवाड़ मेरवाड़ाके उन गांवोंके पट्टेकी मीआद, जो गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके पास आठ वर्षके लिये उस इलाक़हका अच्छा इन्तिज़ाम करनेके वास्ते सुपुर्दगीमें इस ग़रज़से रक्खे गये थे, कि जो रुपया उसका वुसूल होगा, वह शर्तके रु० १५००० में मुज्रा दिया जायगा, अब गुज़र गई, और पट्टा नया और नव वर्षका हुआ, और उसमें सात गांव दूसरे नीचे लिखे मुवाफ़िक़ उन्हीं शर्तोंपर गवर्मेन्ट अंग्रेज़ीको कार्तिक शुक्ल २ सम्वत् १८९२ से शामिल किये गये, और इनका पट्टा भी चांग चितार वग़ैरह मारवाड़ मेरवाड़ाके उन गांवोंके साथ, जो पहिले सुपुर्दगीमें लिये गये थे, गुज़रेगा; इन गांवोंकी आमदनी भी उसी तरह सुपुर्द किये हुए गांवोंकी आमदनीके साथ मुज्रा होगी, और ऊपर लिखी तारीख़से नव वर्ष पीछे पहिले मुक़र्रर हुए गांव और यह गांव, जो अब दिये गये हैं, रियासत जोधपुरके अह्लकारोंको वापस कियेजावेंगे; और लेनेका रुपया मौक़ूफ़ होगा. कार्तिक शुक्ल २ सम्वत् १८९२ मुताबिक़ २३ ऑक्टोबर सन् १८३५ ई०.

पहिले ज़िक्र किये हुए ठाकुरोंके नाम.

रतोड़िया, धाल, नौदला, मगरा, गाल, कल्याण, चतरसिंगका गूढ़ा.

दस्तख़त - एच० डब्ल्यू० ट्रेविलियन,
असिस्टेन्ट, एजेन्ट गवर्नर जेनरल.

अह्दनामह नम्बर ४०.

तर्जमह अह्दनामह महाराजा मानसिंह बहादुर राजा जोधपुर, और गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके आपसमें, जो मारिफ़त लेफ़्टिनेन्ट हेनरी ट्रेविलियन, असिस्टेन्ट एजेन्ट गवर्नर जेनरल बहादुर बाबत रियासतहाय राजपूतानहके क़रार पाया.

जो कि महाराजा मानसिंह बहादुर, राजा जोधपुरने इक़रार किया, कि रु० ११५००० कल्दार सालानह मिती पौष शुक्ल १५ सम्वत् १८९२ से, बाबत फ़ौज कन्टिन्जेण्ट पन्द्रह सौ सवारके, जिसका इक़रार जोधपुरके राजाने ज़रूरतके वक्त देनेका किया था, जिसका बयान उस अह्दनामहकी आठवीं शर्तमें, कि जो सर्कार अंग्रेज़ीके साथ ब मक़ाम दिल्ली ता० ६ जेन्युअरी सन् १८१८ ई० को हुआ दर्ज है, दिया करेंगे. यह काग़ज़ इक़रारनामहके तौरपर लिखागया; और इसकी रूसे नीचे लिखी बातें ऊपर लिखे अह्दनामहकी आठवीं शर्तके लिये सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से मन्सूख़ हुईं, याने "जोधपुरकी रियासत ज़रूरतके वक्त पन्द्रह सौ सवार देगी," और नीचे लिखा फ़िक्रह उसके एवज़ क़ाइम हुआ, याने "रियासत जोधपुर ऊपर लिखे मुवाफ़िक़ अजमेर मक़ाममें एक लाख पन्द्रह हज़ार रुपया कल्दार हर साल दिया करेगी." पहिली बार रु० ११५००० कल्दार मिती पौष कृष्ण १ सम्वत् १८९३ को अदा होगा, और उतना ही उसी तारीख़को हर वर्ष अदा होता रहेगा.

मक़ाम जोधपुर मिती पौष कृष्ण २ सम्वत् १८९२ मु० ता० ५ डिसेम्बर सन् १८३५ ई०.

दस्तख़त - एच० डब्ल्यू० ट्रेविलियन,
असिस्टेन्ट एजेन्ट गवर्नर जेनरल.

गवर्नर जेनरलने तस्दीक़ किया. ता० ८ फ़ेब्रुअरी, सन् १८३६ ई०.

अह्दनामह नम्बर ४१.

तर्जमह ख़त वकील जोधपुरकी तरफ़से, साहिब पोलिटिकल एजेन्ट जोधपुरके नाम तारीख़ १५ मई सन् १८२७ ई०.

मैंने आपकी चिट्ठी मुवर्रिख़ह ६ मार्च गुज़िश्तह बाबत इत्तिला इस बातके, कि ऊ़मरकोटके एवज़ रु० ११५००० सवार ख़र्चमेंसे रु० १००० सालानह हर साल कम किये जायेंगे, महाराजा साहिबके हुज़ूरमें गुज़रानी. महाराजा फ़र्माते हैं, कि ऊ़मरकोट हमारा है, और हमारा दावा ऊ़मरकोटपर साफ़ और सहीह है, इसको साहिब बहादुर भी खूब जानते हैं, जब तक ऊ़मरकोट गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके क़ब्ज़हमें रहेगा, उस वक्तमें भी हम ऊ़मरकोटको अपना समझेंगे, और जब गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी उसको अ़लह्दह करना चाहेगी, तो हम जानते हैं, कि वह हमको देगी, और किसी दूसरेको न देगी; इस वास्ते कि ऊ़मरकोट हमारा है, और हमको मिलना चाहिये. राजस्थानमें ज़मीनका हक़ बहुत बड़ा समझा जाता है, और जिस रोज़ ऊ़मरकोट हमको वापस दियाजायगा, वह दिन बहुत मुबारिक और खुश समझा जायगा; और यह भी फ़र्माते हैं, कि अगर रु० १०००० सालानह रु० १०८००० मेंसे, जो गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीको ब तौर ख़िराज दियाजाता है, मुज्रा दियाजायगा, तो यह रुपया ज़मीनके एवज़ है; और ख़िराज भी ज़मीनकी बाबत दियाजाता है, इस वास्ते यह रुपया ख़िराजके रुपयोंमेंसे मुज्रा होना चाहिये.

तर्जमह सहीह है.
दस्तख़त– एच० एच० ग्रेटहेड,
पोलिटिकल एजेण्ट.

गवर्नर जेनरलने मन्ज़ूर और तस्दीक़ किया, ता० १७ जून सन् १८४७ ई०.

अ़ह्दनामह नम्बर ४२.

तर्जमह इक़ारनामह रियासत जोधपुरकी तरफ़से जिलावतन ठाकुरोंकी बाबत.

ठाकुर बूढ़सू व ठाकुर चंदावलकी ख्वाहिश नहीं है, कि उनपर मिहर्बानीकी नज़र कीजाये, मगर सर्दार आउवा, आसोप, नीबाज और रास, रहम करनेके लाइक़ नहीं हैं, परन्तु गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी खुशीकी नज़रसे जो इलाक़ह महाराजा बख्त-सिंहके वक्तमें उनके पास था, वह उनको छः महीनेमें वापस दिया जायगा. एक ख़रीतह गवर्नर जेनरल बहादुरका महाराजाके नाम रज़ामन्दीके लिये इस मज़्मूनका आया, कि जो यह ठाकुर अपनी कारगुज़ारी या फ़र्माबर्दारीमें कमी करें, या किसी जुर्मके मुज्रिम हों, या दर्बार जैसी चाहें, वैसी कार्रवाई न करें, तो महाराजाको इख्तियार है, कि जो मुनासिब जानें, सो करें.

इसीके पीछे गवर्मेएट अंग्रेज़ीके सवव इस वक्त इक़ार किया गया, लेकिन् अब जो यह सर्दार दर्बारकी फ़र्मांबर्दारी और ख़िझतमें राज़ी रहें, तो उनको इसके सिवाय कुछ इन्ऋाम भी दिया जायगा; और दूसरे जिलावतन ठाकुरोंकी बाबत यही बात है, कि जो वह महाराजाकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ काम करेंगे, तो उनपर भी मिह्वानीकी नज़र रक्खी जायगी; इस शर्तपर कि गवर्मेएट अंग्रेज़ी उनकी निस्वत कुछ एतिराज़ बीचमें न लावे.

फाल्गुन् कृष्ण ११ सम्वत् १८००.

दस्तख़त- फ़तहराज, दीवान.

तर्जमह जवाव साहिव पोलिटिकल एजेएट.

महाराजा मानसिंहने जो यह इक़ार किया, कि उन ठाकुरोंको, जो पहिले कुसूरोंकी बाबत निकाले गये हैं, गवर्मेएट अंग्रेज़ीकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ जिन्होंने मुझको इस कामके वास्ते यहां मुक़र्रर किया है, दुबारह उनके क़दीमी इलाक़ोंपर दख़्ल करादेंगे; इस वास्ते इन ठाकुरोंमेंसे पीछे कोई किसी जुर्मका मुज्रिम होगा, या महाराजाकी मर्ज़ीके बर्ख़िलाफ़ कोई काम करेगा, तो अह्दनामहमें लिखाजाता है, कि महाराजा हाकिम हैं, जो चाहें, सो करें; गवर्मेएट अंग्रेज़ी फिर उनकी जानिवसे दख़्ल नहीं देगी, और महाराजाकी खुशनूदीके लिये एक ख़त भी इस मज़्मूनका गवर्नर जेनरल बहादुरकी तरफ़से लिखा जायगा. ता० २५ फ़ेब्रुअरी सन् १८२४ ई०.

दस्तख़त- एफ़० वाइल्डर,
पोलिटिकल एजेएट.

अह्दनामह नम्बर ४३.

इक़ारनामह सर्कार अंग्रेज़ी और महाराजा मानसिंहके आपसमें.

सर्कार अंग्रेज़ी और सर्कार जोधपुरके आपसमें मुद्दतसे दोस्ती जारी है, और सम्वत् १८७५ वि० मुताबिक़ सन् १८१८ का अह्दनामह होनेसे यह दोस्ती ज़ियादह मज़्बूतीके साथ क़ाइम हुई, इस तरह अब तक दोनों सर्कारोंके आपसमें दोस्ती क़ाइम है, और आगेकोभी रहेगी.

अब अह्दनामहकी नीचे लिखी शर्तें सर्कार अंग्रेज़ी और महाराजा मानसिंह

बहादुर महाराजा जोधपुरके आपसमें मारिफ़त कर्नेल जॉन सदरलैण्ड साहिबके क़रार पाई हैं.

शर्त १- अब मुल्की इन्तिज़ामकी बाबत दोनों तरफ़से आपसमें गौर होकर यह क़रार पाया, कि महाराजा और कर्नेल सदरलैण्ड साहिब और राज्यके सर्दार व अह्लकार और ख़वास पासवान एकठे होकर मुल्की इन्तिज़ामके क़ाइदह बनावें, जिनकी तामील अब और आगेको हुआ करे; और यह सभा तै करके अक्सर सर्दारों और गवर्मेण्टके अफ़्सरों और दूसरे सम्बन्ध रखने वालोंके हक़ क़दीमी दस्तूरके मुवाफ़िक़ क़ाइम करेगी.

शर्त २- पोलिटिकल एजेण्ट अंग्रेज़ी और राज्य जोधपुरके अह्लकारोंने आपसमें सलाह की है, कि वे रियासती कामोंका इन्तिज़ाम इन क़ाइदोंके मुवाफ़िक़ आपसमें सलाह करके किया करेंगे, और महाराजासे भी सलाह लेलिया करेंगे.

शर्त ३- उक्त पंचायत रियासती कामोंका बन्दोबस्त क़दीमी दस्तूरके मुवाफ़िक़ किया करेगी.

शर्त ४- कर्नेल साहिबने कहा, कि कुछ अंग्रेज़ी फ़ौज जोधपुरके क़िलेमें रहेगी, और महाराजाने उसको मंज़ूर किया. राजस्थानकी दूसरी रियासतोंमें जहां साहिब पोलिटिकल एजेण्ट रहते हैं, वहां वह शहरके बाहर रहते हैं, क़िलेके आस पास मकान बने हैं, और जगह भी तंग है, इस सबबसे इसमें दिक़्क़त मालूम होती है, परन्तु सर्कारकी खुशीकी नज़रसे यह बात (फ़ौजके क़िलेमें ठहरनेकी) मंज़ूर हुई है, और एक अच्छी जगह तज्वीज़ होकर मुक़र्रर होगी. दर्बारको सर्कारकी तरफ़से किसी तरहका डर नहीं है.

शर्त ५- श्रीजीका मन्दिर याने नाथ साहिबका मन्दिर और स्वरूपका याने लक्ष्मी-नाथ व प्रयागनाथके दूसरे मन्दिरों और जोगेश्वरों याने नाथ फ़क़ीरोंके मन्दिर, जो इस मुल्कके हों, तथा दूसरे मुल्कके हों, उनके चेलों और ब्राह्मणों समेत और उमरावों याने भीतरी ठाकुरों और कीका याने महाराजाकी गैर अस्ली औलाद और मुतसद्दियों याने कुशलराज, फ़ौजराज वगैरह, और ख़वास पासबान वगैरह के मर्तबह और इज़्ज़त और काम काजमें कमी न होगी, जैसे अब हैं, उसी मुवाफ़िक़ रहेंगे.

शर्त ६- कारबारी अपना अपना काम (मुक़र्ररह क़ाइदहके मुवाफ़िक़) करते रहेंगे, परन्तु जब किसीकी तरफ़से किसी तरहकी ग़फ़लत और सुस्ती काममें मालूम हो, तो महाराजाकी सलाह लेकर उसके एवज़ लाइक़ आदमी मुक़र्रर किया जाये.

शर्त ७-जिनके हक़ छीनेगये हैं, उनको इन्साफ़के साथ उनके हक़ वापस मिलेंगे, और वे लोग दर्बारकी फ़र्मांबर्दारी व तावेदारी किया करेंगे.

शर्त ८- सर्कार अंग्रेज़ीकी नज़र इस बातपर है, कि महाराजाका हाकिमानह हक़, इज़त और नाम्वरी, और मारवाड़की खैरख्वाही जारी रहे, इस वास्ते सर्कारके हाथसे इनमें कमी न होगी, और वह न किसी दूसरेसे इसमें कमी होने देगी, इसकी बाबत सर्कारसे साफ़ वादह होगया है.

शर्त ९ - साहिब एजेण्ट और मारवाड़के अह्लकारोंने आपसमें सलाह की, कि वे महाराजाकी सलाह और जो क़ाइदह मुक़र्रर किये जावेंगे, उनके मुवाफ़िक़ अंग्रेज़ी ख़िराज और सवार ख़र्च, जो बाक़ी है, उसके देनेके लिये अच्छा वन्दोवस्त करेंगे, उसी तरह आगेको भी ऊपर लिखा रुपया अदा होनेमें फ़र्क़ न होगा, और नुक़्सानका एवज़ वह फ़रीक़ देंगे, जिनकी निस्वत सुबूत हो, और दूसरे रईसोंकी निस्बत मारवाड़का दावा मुक़द्दमोंके सुबूतपर अदा होगा.

शर्त १०- महाराजाने जागीरें सर्दारोंको दीं, और उनके एवज़ मुवाफ़क़त हासिल की, और पहिले कुसूर उनके मुआफ़ किये; इसी तरह सर्कार अंग्रेज़ी भी उनके ख़यालके मुवाफ़िक़ करती है, जिनकी निस्वत उनको पहिले उज़ था, जैसे स्वरूप याने लक्ष्मीनाथ वग़ैरह जोगेश्वर और उमराव और अह्लकार.

शर्त ११- जो कि एक एजेण्ट रियासतकी राजधानीमें मुक़र्रर हुआ है, इस वास्ते जुल्म और ज़ियादती किसी शख़्सपर न होगी, और किसी तरहका दख़्ल मज़्हबी छः फ़िर्क़ों (षट दर्शन) की बाबत भी न होगा; और कोई जानवर, जो मारवाड़में धर्मके अनुसार पवित्र और उसका मारना मना है, नहीं मारा जायगा.

शर्त १२- जो कुल काम सर्कार जोधपुरके छः महीने या एक वर्ष या डेढ़ वर्षमें फ़ैसलह पा जायेंगे, तो साहिब एजेण्ट और फ़ौज अंग्रेज़ी जोधपुरके क़िलेसे उठ जायेगी, और जो इस मीआदसे पहिले तै पा जायेंगे, तो सर्कार अंग्रेज़ीकी खुशी और रियासत जोधपुरकी लियाक़त और ज़ियादह भरोसेका सबब ख़याल होगा.

शर्त १३- ऊपर लिखा अह्दनामह पहिले ज़िक्रके मुवाफ़िक़ मक़ाम जोधपुरमें तारीख़ २४ सेप्टेम्बर सन् १८३९ ई० को क़रार पाया, और लेफ्टिनेण्ट कर्नेल सदरलैण्ड साहिबकी मारिफ़त मंज़ूरी और तमीमके लिये राइट ऑनरेबल गवर्नर जेनरल हिन्दकी ख़िझतमें भेजा जायेगा; और एक ख़रीतह महाराजाके नाम ऊपर लिखे अह्दनामहके मज़्मूनके मुवाफ़िक़ लॉर्ड साहिब बहादुरकी पेशगाहसे जारी होगा.

ऊपर लिखा अह्दनामह मारिफ़त कर्नेल सर जॉन सदरलैण्ड साहिबके मुवाफ़िक़

इख्तियार दिये हुए राइट ऑनरेब्ल लॉर्ड जार्ज आकलैंड, जी० सी० बी०, गवर्नर जेनरल हिन्दके क़रार पाया.

दस्तख़त - रिड़मल्ल, वकील. दस्तख़त - फ़ौजमल्ल.

मुहर दफ्तर रिड़मल्ल.	मुहर दफ्तर फ़ौजमल्ल.

याद्दाश्त लेफ्टिनेएट कर्नेल सदरलैण्ड साहिब.

शर्त चौथी- अस्ल मुसव्वदेमें सिर्फ़ यह लिखा है, कि फ़ौज क़िलेमें रहेगी, और उसपर महाराजाकी यह लिखावट है, कि अच्छा मक़ाम तज्वीज़ होगा; इससे मुराद यह है, कि हमारी फ़ौज महलात और ज़नाने महल और मन्दिरोंमें न रहेगी.

शर्त पांचवीं- ज़मींदारीके हक़ और दूसरे हक़ लोगोंके पहिली शर्तके मुवाफ़िक़ ते पावेंगे.

शर्त दूसरी और छठी, इसमें यह ज़िक्र करना था, कि नाथ लोग रियासती कामोंमें दख़्ल न रक्खेंगे, परन्तु खुद मानसिंहने यह बयान किया, कि वे इन शर्तोंसे अच्छी तरह निकाल दिये गये हैं, क्योंकि वे लोग न तो अह्लकार हैं, न रियासतके कारबारियोंमें हैं.

शर्त नवीं- यह भी तज्वीज़ थी, कि फ़ौज ख़र्चका ज़िक्र भी किया जावे, याने जो फ़ौज अब रहेगी, उसका ख़र्च जोधपुरके ज़िम्मह रहेगा; लेकिन् मानसिंहने बयान किया, कि अल्बत्तह ख़र्च तो दिया ही जायेगा, परन्तु उसका ज़िक्र हमेशहके अह्दनामहमें, जो सदैव ख़िराज और आगेको रियासतके इन्तिज़ामकी बाबत है, होना कुछ ज़रूर नहीं है.

शर्त ग्यारहवीं- सींगवाले चौपाये, मोर और कबूतर पवित्र समझे गये हैं, और इनके मारनेकी मनाही क़रार पाई है.

शर्त तेरहवीं- लेफ्टिनेएट कर्नेल सदरलैण्ड साहिबकी मारिफ़त गवर्नर जेनरलके दिये हुए इख्तियारसे इस अह्दनामहके क़रार पानेका ज़िक्र अस्ल मुसव्वदहमें पहिले था, परन्तु महाराजाने उसको पीछे रक्खा.

अहृदनामह नम्बर ११.

अहृदनामह दर्मियान महाराजा तख्तसिंह, जी० सी० एस० आई०, व लेफ्टिनेएट कर्नेल आर० एच० कीटिंग, सी० एस० आई०, और वी० सी०, एजेएट गवर्नर जेनरल, रियासतहाय राजपूतानह, बमूजिब हिदायत चिट्ठी फ़ॉरेन सेक्रेटरी, नम्बरी १३९५, मुवर्रख़ह ३ डिसेम्बर, सन् १८६८ ई०.

शर्त १- महाराजा साहिब नीचे लिखे वज़ीरोंको रियासतका काम चलाने के लिये मुक़र्रर करते हैंः-

जोषी हंसराज, ख़ास दीवान; महता विजयसिंह, अदालत फ़ौज्दारी; महता हरजीवन, दफ़्तर माल; सिंघवी समर्थराज, अदालत दीवानी; पंडित शिवनारायण; और चूं कि आजकल राज्यका ख़ज़ानह ख़ाली है, इसलिये १५ लाख रुपया उनके इख़्तियारमें वास्ते ख़र्च आमके रखनेका वादह करते हैं. वज़ीरोंको अपने काम बाला बाला महाराजाके हुक्मोंके मुवाफ़िक़ करने चाहियें; वे कोई नसीहत महलके नौकरों या ज़नानेके आदमियोंकी मारिफ़त न लेवें; और उनको महाराजा और पोलिटिकल एजेएटकी शामिलात बिदून अपने पैग़ाम औरोंको भेजनेकी आज़ादी न होगी.

शर्त २- अगर महाराजा या पोलिटिकल एजेएट किसी दीवानका चाल चलन ऐसा देखें, कि उसकी मौक़ूफ़ीकी ज़ुरूरत हो, या किसी दूसरे सबबसे कोई जगह ख़ाली हो, तो तरफ़ैनकी रज़ामन्दीसे उसकी जगह दूसरा आदमी मुक़र्रर होना चाहिये. अगर इस बातपर रज़ामन्दी मुमकिन् न हो, तो इसका फ़ैसलह एजेएट गवर्नर जेनरलको करना चाहिये, जो कि महाराजाकी ख़्वाहिशोंपर पूरा ग़ौर करेंगे.

शर्त ३- ता वक़्ते कि गवर्मेएट इन्डियाका हुक्म न हो, कोई तब्दीली उमरावोंके बंधे हुए अमल दरामदमें बमीआद इस अहृदनामहके न होनी चाहिये.

शर्त ४- कुल इन्तिज़ाम रियासती ख़ालिसहका और उसके दीवानी व फ़ौज्दारी अमल दरामदका मारिफ़त वज़ीरोंके महाराजाके हुक्मसे होना चाहिये; और उसका एक हिस्सह भी बिला मर्ज़ी पोलिटिकल एजेएटके न तो ख़ारिज कियाजावे, न बदलकर किसी दूसरेको दियाजावे.

शर्त ५- ज़नानहके किसी गांवमें अमल दरामद किसी ख़ूनके मुक़द्दमह और डकैती या सख़्त जुर्ममें न होना चाहिये.

शर्त ६- अगर महाराजाका कोई बेटा या रिश्तहदार या ज़ाती नौकर या ज़नानेका कोई आदमी महलोंकी हदके बाहर कोई सख़्त जुर्म करे, तो महाराजा

उस मुआमलेको तै करेंगे; और अगर पोलिटिकल एजेएट दर्याफ़्त करें, तो उस मुक़द्दमहकी इत्तिला मए हुक्म मस्तूरहके उनको देदेवें.

शर्त ७– वज़ीरोंको महलोंके इहातेमें हुकूमत न करना चाहिये.

शर्त ८– महाराजा साहिब, पोलिटिकल एजेएटके हर एक बन्दोबस्तकी तामील करनेपर, जो कि महाराज कुमार जशवन्तसिंहजी और छोटे बेटोंके वास्ते मुस्तक़िल तज्वीज़ हुआ है, पाबन्द होते हैं. पोलिटिकल एजेएटको इस काममें तीन ठाकुरों और तीन मुतसद्दियोंकी कमेटीसे मदद मिलनी चाहिये, जो कि एजेएट गवर्नर जेनरलकी तरफ़से नामज़द की जावे. कोई दावा, कि जिसपर इस कमेटीके चार मेम्बरोंकी राय पोलिटिकल एजेएटसे मिलजाय, उसको मिस्ल फ़ैसलह किये हुएके समझना चाहिये.

शर्त ९– महाराजा इस बातका इक़ार करते हैं, कि कोई बन्दोबस्त, जो पोलिटिकल एजेएट अकेले या किसी और सलाहकारकी रायसे करेंगे, और एजेएट गवर्नर जेनरल नीचे लिखी हुई दो बातोंपर उसको मज्बूत करदेवेंगे, तो वह उसकी तामील करेंगे–

अव्वल– हुक्मनामहके सवालका, या मारवाड़के ठाकुर, जो तलवार बंधाईका रुपया देते हैं, उसका मुस्तक़िल इन्तिज़ाम.

दूसरे– कुल झगड़ोंका बन्दोबस्त, जो कि दर्बार और आउवा, गूलर, बाजावास, आसोप, और आलणियावासके ठाकुरोंमें हों.

दर्बार इन दो बातोंपर एजेएट गवर्नर जेनरलके फ़ैसलहके मुक़ाबलहमें बिलादेर अपील करनेका इख्तियार रखते हैं, लेकिन् वे बिला तअम्मुल गवर्मेएट हिन्दके फ़ैसलहपर क़ाइम रहेंगे.

शर्त १०– दीवान छः माहीकी क़िस्तसे बराबर एक लाख अस्सी हज़ारसे दो लाख पचास हज़ार रुपये तक हैसियतके मुवाफ़िक़ महलोंके ख़ानगी ख़र्चके वास्ते, जिसको महाराजा मुक़र्रर कर देवेंगे दियाकरे, यह रुपया महाराजा और एजेएट गवर्नर जेनरलकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ पोशीदह तख़मीनह होनेपर तै हुआ है. किसी दीवानको बिला मर्ज़ी पोलिटिकल एजेएटके न तो महलमें कोई ओहदह मन्ज़ूर करना चाहिये, और न कोई नई नौकरी करना चाहिये.

शर्त ११– रियासतकी आमदनीका रुपया बिला मर्ज़ी पोलिटिकल एजेएटके ख़ास ख़ज़ानहसे न बदला जाये, और न किसी जगह भेजाजावे, और हिसाब इस तौरसे रक्खाजावे, कि रियासतकी मालगुज़ारीकी हालत बड़ी ईमानदारी दिखलाई जावे, और उससे साफ़ साफ़ समझा जासके; रियासतके कुल हि

उस आदमीके मुलाहज़हको खुले रहने चाहियें, जिसको कि एजेण्ट गवर्नर जेनरल मुक़र्रर करें.

शर्त १२- इस अह्दनामहपर चार वर्ष तक अमल रहे, ता वक्ते कि उस अर्सेमें मारवाड़की हुकूमतमें कम्ज़ोरी और बद इन्तिज़ामी शुरू न हो, जो कि गवर्मेण्ट हिन्दको जल्द दरूल करनेको मजबूर करे.

अह्दनामह नम्बर ४५.

तर्जमह ख़रीतह महाराजा जोधपुर, जी० सी० एस० आई०, ब नाम एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह, मुवर्रख़ह २९ जुलाई, सन् १८६६ ई०.

आपका ख़रीतह मुवर्रख़ह २९ फ़ेब्रुअरी गुज़श्तहका, इस मज़्मूनसे आया, कि गवर्मेण्ट उन क़ौल व क़रारोंको, जो कि मेरी पहिली चिट्ठीमें लिखे थे, रेल बननेके बारेमें इस दर्बारकी तरफ़से अस्ली इन्कार समझती है. मैं आपको ज़ाहिर करना चाहता हूं, कि मैंने रेल्वेको कभी ना मंजूर नहीं करना चाहा, दर हक़ीक़तमें जानता हूं, कि उससे मारवाड़को कितने फ़ाइदे होंगे; जो कुछ कि मैंने पहिले दरबारे नुक़्सान महसूल सायरके लिखा था, उसकी बुन्याद यह थी, कि बाहरका बहुत कम माल मारवाड़में ख़र्च होता है; और यह कि सिवाय नमकके और कोई ऐसी चीज़ मारवाड़में नहीं पैदा होती, जो बाहर भेजीजावे; इसलिये ख़ास आमदनी उन रवानगीकी चीज़ोंके महसूलसे हासिल होती है, जो कि उसकी मारिफ़त होकर जाती हैं याने बिकनेके वास्ते इस इलाक़हमें खोली नहीं जाती, और इस रक़मके नुक़्सानसे बेशक मेरी मालगुज़ारीमें बहुत कमी होगी. ताहम ब लिहाज़ आपकी चिट्ठीके, जो बनाम मेरे थी, और ब्रिटिश गवर्मेन्टकी मर्ज़ीके और मेरी कुल रअय्यतके फ़ाइदहके, मैं रेल्वेका मारवाड़में होकर निकलना नीचे लिखी हुई शर्तोंपर मंजूर करता हूं:-

शर्त १- क़रीब २०० फ़ीटके रक़बहमें ज़मीन सड़क या स्टेशनोंके लिये मुफ़्त दीजावेगी, और जो कुछ नुक्सान इस मुल्कके गांवों, कूओं या बाग़ोंमें उसके भीतर चलनेसे होगा, दर्बार सहेंगे.

शर्त २- मिल्कियतका हक़ इस ज़मीनपर इस दर्बारका रहेगा, लेकिन् और तमाम हक़ गवर्मेण्टको देदिये जायेंगे, और कोई मुज्रिम इस रियासतका इस ज़मीनमें आश्रय न ले सकेगा, और इस ज़मीनमें कोई आश्रय ले, तो इस रियासतके अह्लकारोंके सपुर्दकर दिया जायेगा; कोई मुज्रिम दूसरी रियासतका बाशिन्दह होकर इस ज़मीनमें आश्रय लेवे, तो वह वास्ते तहक़ीक़ातके इस रियासतके पोलिटिकल एजेण्टके सुपुर्द किया जावेगा.

शर्त ३- तमाम अस्बाब, बे खोले हुए इस रियासतमें होकर बिना किसे महसूलके चले जायेंगे, लेकिन् जो अस्बाब कि बाहरसे आकर मारवाड़में खोला जावे, या जो अस्बाब कि मारवाड़में लादा जावे, और वहांसे आगेको जाता होवे, तो क़ाबिल अदा करने महसूल इस रियासतके होगा.

शर्त ४- जो कि लकड़ी मारवाड़में कम है, इसलिये, रेल, जो उसमें होकर गुज़रेगी, उसके वास्ते लकड़ी नहीं दी जासक्ती है. जब कि किसी रेलकी सड़कका मारवाड़में होकर निकलना तै होजावे, तो उसके बनानेमें हर एक मुम्किन मदद दी जायेगी.

अ़ह्दनामह नम्बर १६.

अ़ह्दनामह आपसमें बृटिश गवर्मेएट और श्रीमान् तख़्तसिंह, जी० सी० एस० आई०, महाराजा जोधपुर व उनके वारिसों और जानशीनोंके, एक तरफ़से कप्तान यूजेनी क्टरबक इम्पी, पोलिटिकल एजेएट मारवाड़, और पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेन्ट मल्लानीने ब इजाज़त लेफ़्टिनेएट कर्नेल रिचर्ड हार्ट कीटिंग, सी० एस० आई०, और वी० सी०, एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके उन कुल इख़्तियारोंके मुवाफ़िक़, जो कि उनको राइट ऑनरेबूल सर जॉन लेयर्ड मेयर लॉरेन्स, बेरोनेट, जी० सी० बी० और जी० सी० एस० आई०, वॉइसराय और गवर्नर जेनरल हिन्दुस्तानने दिये थे, और दूसरी तरफ़से जोषी शिवराज, मुसाहिब जोधपुरने उक्त महाराजा तख़्तसिंहके दिये हुए इख़्तियारोंसे जारी किया.

शर्त १- कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी इलाक़हमें बड़ा जुर्म करे, और मारवाड़की राज्य सीमामें आश्रय लेना चाहे, तो मारवाड़की सर्कार उसको गिरिफ़्तार करेगी; और दस्तूरके मुवाफ़िक़ उसके मांगे जानेपर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी.

शर्त २- कोई आदमी मारवाड़के राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमामें कोई बड़ा जुर्म करे, और अंग्रेज़ी मुल्कमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुज्रिम जोधपुरके राज्यको क़ाइदहके मुवाफ़िक़ सुपुर्द करदेवेगी.

शर्त ३- कोई आदमी जो, मारवाड़के राज्यकी रआय्यत न हो, और मारवाड़की राज्यसीमामें कोई बड़ा जुर्म करके फिर अंग्रेज़ी सीमामें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ़्तार करेगी; और उसके मुक़द्दमहकी तहक़ीक़ात सर्कार अंग्रेज़ीकी बनलाई हुई अदालतमें होगी. अक्सर क़ाइदह यह है, कि ऐसे [illegible]

इमोंका फ़ैसलह उस पोलिटिकल अफ्सरके इजलासमें होता है, जिसके तह्तमें वारदात होनेके वक्पर मारवाड़की मुल्की निगहबानी रहे.

शर्त ४- किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जो बड़ा मुज्रिम ठहरा हो, दे देनेके लिये पाबन्द नहीं है, जब तक कि दस्तूरके मुताबिक़ खुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाक़हमें कि जुर्म हुआ हो; और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जैसा कि उस इलाक़हके मुताबिक़ सहीह समझी जावे, जिसमें कि मुज्रिम पाया जावे, उसका गिरिफ्तार करना दुरुस्त ठहरेगा; और वह मुज्रिम क़रार दिया जायेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है.

शर्त ५- नीचे लिखे हुए काम बड़े जुर्म समझे जावेंगेः-

१ खून- २ खून करनेकी कोशिश- ३ वहशियानह क़त्ल- ४ ठगी- ५ ज़हर देना- ६ ज़िनाबजब्र- (ज़बर्दस्ती व्यभिचार)- ७ ज़ियादह ज़ख्मी करना- ८ लड़का बाला चुरा लेजाना- ९ औरतोंका बेचना-१० डकैती- ११ लूट- १२ सेंध (नक़ब) लगाना- १३ चौपाये चुराना- १४ मकान जलादेना- १५ जालसाज़ी करना- १६ झूठा सिक्कः चलाना- १७ धोखा देकर जुर्म करना- १८ माल अस्बाब चुरालेना- १९ ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमें मदद देना, या वग़ैरह (बहकाना).

शर्त ६- ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ मुज्रिमोंको गिरिफ्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमें, जो ख़र्च लगे, वह उसी सर्कारको देना पड़ेगा, जिसके कहनेके मुताबिक़ ये बातें कीजावें.

शर्त ७- ऊपर लिखा हुआ अ़ह्दनामह उस वक़ तक बर्क़रार रहेगा, जब तक कि अ़ह्दनामह करने वाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई उसके रद्द होनेका इश्तिहार न देवे.

शर्त ८- इस अ़ह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अ़ह्दनामहपर, जो दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवाय ऐसे अ़ह्दनामहके, जो कि इस अ़ह्दनामहकी शर्तोंके बर्ख़िलाफ़ हो.

मक़ाम आबू, राजपूतानह. तारीख़ ६ ऑगस्ट सन् १८६८ ई०.

दस्तख़त- ई० सी० इम्पी,
पोलिटिकल एजेएट.

दस्तख़त-जोषी शिवराज, मुसाहिब,
महाराजा जोधपुर, जी० सी० एस० आई०.

दस्तख़त- जॉन लॉरेन्स,
वॉइसराय, गवर्नर जेनरल हिन्द.

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ श्री मान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने मक़ाम शिमलेपर तारीख़ २६ ऑगस्ट, सन् १८६८ ई० को की.

दस्तख़त- डब्ल्यू० एस० सेटन कार, सेक्रेटरी, सर्कार हिन्द.

अह्दनामह नम्बर १७.

अह्दनामह आपसमें सर्कार अंग्रेज़ी और श्री मान् महाराजा तख़्तसिंह, जी० सी० एस० आई०, महाराजा जोधपुर व उनके वारिसों और जानशीनोंके, जो एक तरफ़ कर्नेल जॉन सी० ब्रुक, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेएट, जोधपुरने व हुक्म लेफ्टिनेएट कर्नेल रिचर्ड हार्ट कीटिंग, सी० एस० आई० और वी० सी०, एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके, जिनको पूरा इख़्तियार श्री मान् राइट ऑनरेब्ल रिचर्ड साउथवेल वर्क, अर्ल मेओ, वाइसरॉय, गवर्नर जेनरल हिन्दने दिया था; और दूसरी तरफ़ जोषी हंसराज, मुसाहिब मारवाड़के साथ किया, जिसको उक्त महाराजा तख़्तसिंहसे पूरा इख़्तियार मिला था.

शर्त १- नीचे लिखे हुए अह्दनामहकी शर्तोंके मुताबिक़ जोधपुरकी सर्कार सांभर झीलके किनारेकी ज़मीनकी हद्दके भीतर (जैसा कि चौथी शर्तमें लिखा है) नमक बनाने और बेचने तथा इस हद्दके दर्मियान पैदा होनेवाले नमकपर महसूल लगानेका हक़ सर्कार अंग्रेज़ीको दे देवेगी.

शर्त २- यह पट्टा उस वक़ तक क़ाइम रहेगा, जब तक कि सर्कार अंग्रेज़ी इसको छोड़नेकी ख़्वाहिश न करे, इस शर्तपर कि सर्कार अंग्रेज़ी जोधपुरकी सर्कारको उस तारीख़से दो वर्ष पहिले इस बन्दोबस्तके ख़त्म करनेका इरादह ज़ाहिर करे, जिससे कि पट्टा ख़त्म होनेका इरादह रखती है.

शर्त ३- सांभर झीलपर नमक बनाने और बेचनेका काम चलानेके वास्ते सर्कार अंग्रेज़ीको लाइक़ करनेके लिये सर्कार जोधपुर, सर्कार अंग्रेज़ीको और उसके मुक़र्रर किये हुए अफ़्सरोंको पूरा इख़्तियार देवेगी, कि शुब्हेकी हालतमें नीचे लिखी हुई हद्दके भीतर मकान और दूसरी जगह, जो खुली या बन्द हो, उसके भीतर जावें और तलाशी लेवें; और अगर कोई शख़्स उस हद्दके भीतर नमक बनाने, बेचने, हटाने; या बग़ैर लाइसेन्सके बनाने वा दूसरे देशसे लेआनेकी मनाहीके निस्बत सर्कार अंग्रेज़ीके मुक़र्रर किये हुए क़ाइदहके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई करते हुए गिरिफ़्तार हो, तो उसको गिरिफ़्तार करें, जुर्मानह करें, जेलख़ानह भेजें, माल अस्बाब ज़ब्त करें, या और किसी तरहसे सज़ा देवें.

शर्त ४- झीलके किनारेकी ज़मीन, जिसमें सांभरका क़स्बह और बारह दूसरे खेड़े, और वह बिल्कुल इलाक़ह जिसपर कि अब जोधपुर और जयपुर दोनोंका क़ब्ज़ह है, शामिल है; उसका निशान किया जायगा; और निशानकी लाइनके भीतरकी बिल्कुल ज़मीन तथा झीलका या उसके सूखे तलेका हिस्सह, जो ऊपर कही हुई दोनों रियासतोंके मातहत है, वही हद समझी जायगी, जिसके भीतर सर्कार अंग्रेज़ी और उसके अफ्सरोंको तीसरी शर्तके इख्तियार रहेंगे.

शर्त ५- कही हुई हद्दोंके भीतर और इस अह्दनामहकी तीसरी शर्तके मुताबिक़ क़ाइदोंकी कार्रवाई करानेके लिये और नमकके बनाने, बेचने, हटाने और बग़ैर इजाज़तके लानेसे रोकनेके लिये जहां तक ज़रूरत हो, सर्कार अंग्रेज़ी या उसकी तरफ़से इख्तियार पाये हुए अफ़्सरोंको इख्तियार होगा, कि इमारतों या दूसरे मत्लबोंके लिये ज़मीन लेलेवें और सड़क, आड़, झाड़ी या मकान बनावें और इमारतें या दूसरा सामान हटा देवें. ऊपर लिखे हुए किसी मत्लबके लिये जोधपुर सर्कारकी ख़िराज देनेवाली ज़मीनपर सर्कार अंग्रेज़ीका दख़्ल करलिया जावे, तो वह सर्कार जोधपुरको उस ख़िराजके बराबर सालानह किरायह दिया करेगी. जब कभी किसी शख़्सकी जायदादको सर्कार अंग्रेज़ी या उसके अफ़्सर किसी तरह इस शर्तके मुताबिक़ नुक़्सान पहुंचावेंगे, तो जोधपुरकी सर्कारको एक महीने पेश्तरसे इत्तिला दी जायगी; और सर्कार अंग्रेज़ी उस नुक़्सानका बदला मुनासिब तौरसे चुकादेवेगी. जब किसी हालतमें सर्कार अंग्रेज़ी या उसके अफ्सर और मालिक जायदादके दर्मियान नुक़्सानकी तादादके बारेमें बह्स होगी, तो तादाद पंचायतसे ठहराई जायेगी.

ऊपर लिखी हुई हद्दोंके भीतर इमारतोंके बनानेसे सर्कार अंग्रेज़ीका कोई मालिकानह हक़ ज़मीनपर न होगा, जो कि पट्टेकी मीआद ख़त्म होनेपर सर्कार जोधपुरके क़ब्ज़हमें वापस चली जायेगी, मए उन इमारतों और सामानके जो कि सर्कार अंग्रेज़ी वहांपर छोड़ देवे. किसी मन्दिर या मज़्हबी पूजाके मकानमें दख़्ल नहीं दिया जायेगा.

शर्त ६- जोधपुर सर्कारकी मंजूरीसे सर्कार अंग्रेज़ी एक कचहरी क़ाइम करेगी, जिसका इख्तियार एक लाइक़ अफ़्सरको रहेगा, जो ऊपर बयान की हुई हद्दोंके भीतर अक्सर इज्लास करेगा, इस ग़रज़से कि उन मुक़द्दमोंकी रूबकारी कीजावे, जो कि शर्त तीसरीमें लिखे हुए क़ाइदोंके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाईके सबब दाइर होवें, और तमाम मुजिमोंको सज़ा दीजावे; और सर्कार अंग्रेज़ीको इख्तियार है, कि जिन

मुज्रिमोंको जेलखानह होवे, उनको चाहे उक्त हद्दोंके भीतर या अपनेही इलाक़हमें जहां मुनासिब हो क़ैद करे.

शर्त ७- पट्टेके शुरू होनेकी तारीख़से और उसके पीछे गवर्मेएट अंग्रेज़ी वक्त वक्तपर क़ीमतका निर्ख़ मुक़र्रर करेगी, जिसके मुताबिक़ वह नमक बेचा जावेगा, जो कि उक्त हद्दोंके भीतर बनाया जावे, और जो जोधपुर व जयपुरकी हद्दोंके बाहर भेजा जावे.

शर्त ८- वह नमक, जिसपर कि सर्कार जोधपुर और जयपुर दोनोंकी मिल्कियत हो, और पट्टा शुरू होनेके वक्त उन हद्दोंके भीतर मौजूद रहे, जोधपुर सर्कारका हिस्सह ऊपर लिखी हुई मिक़्दारका आधा नीचे लिखी हुई शर्तोंपर जोधपुर सर्कारकी तरफ़से सर्कार अंग्रेज़ीको दे दिया जावेगा:-

जोधपुरकी सर्कार अपना हिस्सह पांच लाख दस हज़ार मन अंग्रेज़ी तोलके नमकमेंसे सर्कार अंग्रेज़ीको बिला क़ीमत देवेगी. लिखी हुई मिक़्दारके बाक़ीमेंसे जोधपुर सर्कारका जो हिस्सह है, उसकी क़ीमत साढ़े छः आने मन अंग्रेज़ी तोलके हिसाबसे गिनी जायेगी; और उसी निर्ख़से सर्कार अंग्रेज़ी जोधपुरकी सर्कारको क़ीमत अदा करेगी, इस शर्तपर कि यह साढ़े छः आने मन जोधपुर सर्कारको उसी हालतमें दिया जावेगा, जब किसी सालमें आठ लाख पच्चीस हज़ार अंग्रेज़ी मनसे ज़ियादह नमक सर्कार अंग्रेज़ी बेचे, या बाहरको भेजे, और उस हालतमें भी बढ़तीके उसी हिस्सहपर जो सर्कार जोधपुरका है, और जब तक इस सालानह बढ़तीकी कुल मिक़्दार नमककी पूरी मिक़्दारके बराबर न हो, जो पांच लाख दस हज़ार अंग्रेज़ी मनसे ज़ियादह और उसके अलावह है, अंग्रेज़ी सर्कार उस बढ़तीको बेचावकी क़ीमतपर बीस रुपये सैकड़ेका रसूम न अदा करेगी, जो कि बारहवीं शर्तमें लिखा है.

शर्त ९- कोई महसूल, चुंगी, राहदारी या और किसी तरहका जोधपुर सर्कार खुद नहीं जारी करेगी, न किसी दूसरे शरूसको इजाज़त देवेगी, कि वह उस नमकपर जारी करे, जो कही हुई हद्दोंके भीतर सर्कार अंग्रेज़ी बनावे या बेचे, या जिस वक्त कि अंग्रेज़ी पर्वानहके ज़रीएसे वह जोधपुरके इलाक़हमें होकर जोधपुरके बाहर किसी जगह जाता हो.

शर्त १०- इस अह्दनामहकी किसी बातसे कही हुई हद्दोंके भीतर दीवानी व फ़ौज्दारी वग़ैरह सब मुआमलातमें सर्कार जोधपुरके अधिकारमें खलल न आवेगा, सिवाय उन मुआमलोंके जो नमकके बनाने, बेचने या हटाने या बग़ैर लाइसेन्सके बनाने या दूसरे देशसे लानेकी रोकसे तअल्लुक़ रखते हों.

शर्त ११- नमकके बनाने, बेचने और हटाने तथा बग़ैर लाइसेन्सके

बनाने या बगैर इजाज़तके कही हुई हद्दोंके भीतर बाहरसे लानेके रोकनेमें जो कुछ खर्च पड़ेगा, उस सबसे सर्कार जोधपुर मह्फूज़ रहेगी; और सर्कार अंग्रेज़ी को, जो पट्टा मिला है, उसके एवज़में जोधपुर सर्कारको एक लाख पच्चीस हज़ार रुपये कल्दार सालानह ख़िराज दो छ:माही क़िस्तोंमें, कही हुई हद्दके भीतर, जो नमक बेचा जाता है, उसमें सर्कार जोधपुरके हिस्सहके लिये, देनेका वादह करती है; और यह सालानह ख़िराज जिसकी तादाद एक लाख पच्चीस हज़ार रुपया अंग्रेज़ी सिक्कः है, नमक, जो कि कही हुई हद्दोंके भीतर बेचाजावे, या उससे बाहर चालान किया जावे, उसपर बगैर लिहाज़के लिया जायेगा.

शर्त १२- अगर किसी सालमें कही हुई हद्दोंके भीतर आठ लाख पच्चीस हज़ार अंग्रेज़ी मनके ब निस्बत ज़ियादह नमक सर्कार अंग्रेज़ीसे बेचाजावे, या उस हद्दके बाहर चालान कियाजावे, तो सर्कार अंग्रेज़ी जोधपुरकी सर्कारको उस बढ़तीपर (आठवीं शर्तमें जो मिक्दार लिखी है, उसके खर्च होजानेके पीछे) बीस रुपये सैकड़ेके हिसाबसे एक महसूल फ़ी मनके उस दामपर देगी, जो कि सातवीं शर्तके पहिले जुमलेके मुताबिक़ बिकनेका निर्ख़ मुक़र्रर किया गया है.

जब कभी इस बारेमें सन्देह हो, कि किस सालमें कितने नमकपर महसूल लेना है, तो जो हिसाब सर्कार अंग्रेज़ीके ख़ास अफ़्सरकी तरफ़से पेश किया जावे, जो सांभरका मुख़्तार है, इस बातकी क़तई गवाही समझी जायेगी, कि दर अस्ल कितना नमक सर्कार अंग्रेज़ीने उस वक़्में बेचा, या बाहर चालान किया है, जिसका ज़िक्र हिसाबमें है; शर्त यह है, कि जोधपुर सर्कार अपना एक अफ़्सर फ़रोख़्तका हिसाब रखनेको अपनी तसल्लीके वास्ते रखनेसे न रोकीजावे.

शर्त १३- सर्कार अंग्रेज़ी वादह करती है, कि हर साल सात हज़ार मन अंग्रेज़ी तोलका नमक बगैर कुछ क़ीमत वगैरहके जोधपुर दर्बारके वास्ते दिया करेगी; यह नमक उस जगहपर दियाजायेगा, जहां कि बनता है, और उस अफ़्सरको दियाजावेगा, जिसको जोधपुर सर्कारकी तरफ़से लेनेका इख़्तियार मिला हो.

शर्त १४- सर्कार अंग्रेज़ीका कोई दावा किसी ज़मीनके या दूसरे ख़िराजपर नहीं होगा, जो नमकसे सरोकार नहीं रखता, और सांभरके क़स्बे या दूसरे गांवों या ज़मीनोंसे दियाजाता है, जो कही हुई हद्दोंके भीतर शामिल है.

शर्त १५- अंग्रेज़ी सर्कार जोधपुरके इलाक़हमें उस हद्दके बाहर नमक नहीं बेचेगी, जो कि इस अह्दनामहके या किसी दूसरेके मुताबिक़ मुक़र्रर कीगई हो.

शर्त १६- अगर कोई शख़्स, जिसको सर्कार अंग्रेज़ीने कही हुई हद्दोंके भीतर

मुकर्रर किया हो, कोई जुर्म करके भागगया हो, या कोई शख़्स इस अह्दनामहकी तीसरी शर्तके क़ाइदोंके बख़िलाफ़ कोई काम करके भागगया हो, तो जोधपुरकी सर्कार जुर्मकी पुख़्तह गवाही होनेपर हरएक तरह उसको गिरिफ़्तार करने और कही हुई हद्दोंके भीतर अंग्रेज़ी हाकिमोंको सुपुर्द करनेकी कोशिश करेगी, जिस हालतमें कि वह शख़्स जोधपुरके इलाक़हके किसी हिस्सहमें होकर गुज़रा हो, या कहीं आश्रय लिया हो.

शर्त १७- इस अह्दनामहकी कोई शर्त अमल दरामदके लाइक़ नहीं होगी, जब तक कि सर्कार अंग्रेज़ी दर अस्ल कही हुई हद्दोंके भीतर नमकके कारख़ानहका काम अपने हाथमें न लेवे. काम लेनेकी तारीख़ सर्कार अंग्रेज़ी मुक़र्रर करसक्ती है, इस शर्तसे कि अगर पहिली मई सन् १८७१ ई० को या उसके पेश्तर चार्ज न लियाजावे, तो इस अह्दनामहकी शर्तें मन्सूख़ होजावेंगी.

शर्त १८- इस अह्दनामहकी कोई शर्तें बग़ैर दोनों सर्कारोंकी पेश्तर रज़ामन्दी होनेके न बदली जायेंगी, न मन्सूख़् की जायेंगी, और अगर कोई फ़रीक़ इन शर्तोंके मुताबिक़ चलनेमें कसूर, या बेपर्वाई करे, तो दूसरा फ़रीक़ इस अह्दनामहकी पाबन्दीसे छूट जावेगा.

दस्तख़त कियागया, मुहर हुई, और आपसमें तबादला हुआ, ब मक़ाम जोधपुर, तारीख़ २७ जैन्युअरी सन् १८७० ईसवी, मुताबिक़ माघ कृष्ण ११, सम्वत् १९२६.

फ़ार्सीमें मुहर.	जोधपुर एजेंसी दफ़्तर.

दस्तख़त-जे० सी० ब्रुक, कर्नेल, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेएट, मारवाड़.

दफ़्तरकी मुहर
रियासत जोधपुर.

मुहर.

दस्तख़त-मेओ.

दस्तख़त- जोषी हंसराजके, हिन्दीमें.

गवर्मेएटकी मुहर.

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने ब मक़ाम फ़ोर्ट विलिअम तारीख़ १५ फ़ेब्रुअरी सन् १८७० ईसवीको की.

मुहर.

दस्तख़त- सी० यू० एचिसन्,
काइम मक़ाम सेक्रेटरी, गवर्मेण्ट हिन्द,
फ़ॉरेन डिपार्टमेण्ट.

अ़ह्दनामह नम्बर ४८.

अ़ह्दनामह दर्मियान अंग्रेज़ी गवर्मेण्ट और श्रीमान् तख़्तसिंह, जी० सी० एस० आई०, महाराजा जोधपुर व उनके वारिसों और जानशीनोंके, जिसको एक तरफ़ कर्नेल जॉन चीप ब्रुक, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट, जोधपुरने लेफ़्टिनेण्ट कर्नेल रिचर्ड् हार्ट कीटिंग, सी० एस० आई०, और वी० सी०, एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानाके हुक्मसे किया, जिनको पूरा इख़्तियार श्रीमान् राइट ऑनरेब्ल रिचर्ड साउथवेल बर्क, अर्ल ऑव मेओ, वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दकी तरफ़से मिला था, और दूसरी तरफ़ जोपी हंसराज, मुसाहिब मारवाड़ने मज़्कूर महाराजा तख़्तसिंहसे पूरे इख़्तियारात पाकर किया.

शर्त १- नीचे लिखे हुए अ़ह्दनामहकी शर्तोंके मुताबिक़ सर्कार जोधपुर सर्कार अंग्रेज़ीको सांभरकी झीलके किनारेके इलाक़हकी हद्दोंके भीतर (जैसा कि चौथी शर्तमें बतलाया गया है) नमक बनाने और बेचने और उन हद्दोंके भीतर, जो नमक बनता है, उसपर महसूल लगानेका हक़ पट्टा करके दे देवेगी.

शर्त २- यह पट्टा उस वक़्त तक जारी रहेगा, जब तक कि सर्कार अंग्रेज़ी इसको छोड़नेकी ख़्वाहिश न करे, शर्त यह है, कि सर्कार अंग्रेज़ी इस बन्दोबस्तके ख़त्म करनेके इरादहकी इत्तिला सर्कार जोधपुरको उस तारीख़से दो वर्ष पेश्तर देवे, जिससे कि वह पट्टा ख़त्म करनेकी ख़्वाहिश रखती हो.

शर्त ३- सर्कार अंग्रेज़ीको सांभरझीलके पास नमक बनाने और बेचनेके लाइक़ करनेके लिये, जोधपुर सर्कार, सर्कार अंग्रेज़ी और उसके अफ़्सरोंको, जो इस कामके वास्ते सर्कार अंग्रेज़ीसे मुक़र्रर कियेगये हों, इख़्तियार देवेगी, कि शुब्हेकी हालतमें लिखी हुई हद्दोंके भीतर मकानों और तमाम दूसरी जगहों (घिरी हों या नहीं) के भीतर जावें, और तलाश करें, और गिरिफ़्तार करके जुर्मानह, जेलख़ानह, माल ज़ब्त करके, या दूसरी तरहसे सज़ा देवें, उन तमाम शख़्सोंको या अकेले शख़्सको, जो उन हद्दोंके भीतर, नमक बनाने, बेचने, व हटाने या वग़ैर लाइसेन्सके बनाने या बाहरसे लेआनेकी मनाहीके निस्बत, जो क़ाइदे सर्कार अंग्रेज़ी मुक़र्रर करे, उनमेंसे किसीके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई करनेके लिये गिरिफ़्तार हो.

शर्त ४- ज़मीनका एक हिस्सह, जो कि बराबर झीलके किनारेपर है, जिसपर अलग इख़्तियार जोधपुरका है, जिसमें नावां, गुढ़ा, और दूसरे गांव व खेड़े शामिल हैं, और औसतसे जो चौड़ाईमें, झीलके पानीकी सबसे ऊंची सत्हसे नापे जानेपर दो मील हो, उसका निशान कियाजावेगा; और इस निशानके भीतरकी तमाम जगह और खुद झील या उसके सूखे तलेके वे हिस्से, जिनपर अब जोधपुरका अकेला और अलह्दह अमल है, उस हद्दमें समझे जावेंगे, जिसके भीतर सर्कार अंग्रेज़ी व उसके अफ्सरोंको तीसरी शर्तमें लिखे हुए इख़्तियारात रहेंगे.

शर्त ५- कही हुई हद्दोंके भीतर, और नमकके बनाने, बेचने, व हटानेकी मदद व हिफ़ाज़त, या बाहरसे लाना रोकनेके लिये, जहां तक ज़रूरत हो, और इस अह्दनामहकी तीसरी शर्तके मुताबिक़ मुक़र्रर किये हुए क़ाइदोंका अमल दरामद करनेके लिये, सर्कार अंग्रेज़ी व उसकी तरफ़से मुख़्तार किये हुए अफ़्सरोंको इख़्तियार होगा, कि मकान बनाने या दूसरे मत्लबोंके लिये ज़मीन लेवें, सड़क, आड़, झाड़ी या इमारतें बनावें, और इमारतें या दूसरी जायदाद हटादेवें. अगर कोई ज़मीन, जिससे सर्कार जोधपुरको ख़िराज मिलता है, ऊपर कहे हुए किसी मत्लबोंके लिये सर्कार अंग्रेज़ीके तह्तमें रखलीजावे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उस ख़िराजके बराबर सालानह महसूल सर्कार जोधपुरको देवेगी.

हर एक हालतमें, जिसमें कि किसी तरह किसी शख़्सकी जायदादको नुक़्सान पहुंचानेवाला कोई काम सर्कार अंग्रेज़ी या उसके अफ़्सर इस शर्तके मुताबिक़ करेंगे, तो जोधपुर सर्कारको एक महीने पेश्तरसे इत्तिला दी जायेगी; और ऐसी तमाम हालतोंमें सर्कार अंग्रेज़ी उस नुक्सानका बदला मुनासिब तौरपर चुका देवेगी. अगर सर्कार अंग्रेज़ी या उसके अफ़्सरों और जायदादके मालिकके दर्मियान नुक्सानकी रक़मके बारेमें बह्स होगी, तो यह रक़म पंचायतसे ठहराई जावेगी.

कही हुई हद्दोंके भीतर कोई इमारत बनानेसे ज़मीनपर सर्कार अंग्रेज़ीका मालिकानह हक़ किसी तरह न होगा, लेकिन् पट्टेकी मीआद ख़त्म होनेपर ज़मीन जोधपुर सर्कारको वापस मिलेगी, मए तमाम इमारतों या सामानके, जो सर्कार अंग्रेज़ी वहांपर छोड़देवे. किसी मन्दिर या मज़्हबी पूजाकी जगहमें दख़्ल न दिया जायेगा.

शर्त ६- जोधपुर सर्कारकी मन्ज़ूरीसे सर्कार अंग्रेज़ी एक लाइक़ अफ्सरके मातह्त एक अदालत क़ाइम करेगी, इस मत्लबसे कि तीसरी शर्तमें लिखे हुए क़ाइदोंके बर्ख़िलाफ़ चलनेवाले तमाम शख़्सोंकी रूबकारी कीजावे, और उनको

सज़ा दीजावे, जब कि वे मुज्रिम साबित होजावें; और सर्कार अंग्रेज़ीको इख्तियार है, कि जिन मुज्रिमोंको जेलख़ानहका हुक्म हुआ है, उनको कही हुई हद्दोंके भीतर या और कहीं, जहां मुनासिब समझें, क़ैद करें.

शर्त ७- पट्टा शुरू होनेकी तारीख़से और उसके बाद सर्कार अंग्रेज़ी वक्त़ वक्त़ पर निर्ख़ मुक़र्रर करेगी, जिसके मुताबिक़ वह नमक बेचा जावेगा, जो कि कही हुई हद्दोंके भीतर बनाया जावे.

शर्त ८- पट्टा शुरू होनेके वक्त़पर, जितना नमक कही हुई हद्दोंके भीतर मौजूद रहेगा, वह तमाम सर्कार जोधपुरकी तरफ़से सर्कार अंग्रेज़ीको नीचे लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ देदिया जावेगा :-

सर्कार जोधपुर छः लाख मन अंग्रेज़ी तौलका नमक अंग्रेज़ी सर्कारको बिला क़ीमत पूंजीके तौरपर कारख़ानह शुरू करनेके लिये देवेगी. उस पूंजीके बाक़ी हिस्सहकी क़ीमत जोधपुर सर्कारको साढ़े छः आने मन अंग्रेज़ी तौलके हिसाबसे दीजावेगी, और इसी निर्ख़से सर्कार अंग्रेज़ी जोधपुरकी सर्कारको क़ीमत अदा करेगी, इस शर्तपर कि यह साढ़े छः आने मनकी निर्ख़ सर्कार जोधपुरको दिया जाना उसी हालतमें शुरू हो, जब किसी सालमें सर्कार अंग्रेज़ी नौ लाख मन नमकसे ज़ियादह बेचे, या बाहर भेजे; और जब तक कि ऊपर कहे हुए छः लाख अंग्रेज़ी मनसे ज़ियादह सालानह बढ़ती दिये हुए नमककी पूंजीके बराबर न होजावे, अंग्रेज़ी सर्कार उस बढ़तीपर चालीस रुपये सैकड़ेका रुसूम, जैसा कि शर्त बारहवींमें लिखा है, नहीं देवेगी.

शर्त ९- जोधपुर सर्कार उस नमकपर, जो कि कही हुई हद्दोंके भीतर सर्कार अंग्रेज़ी बनावे, या बेचे, या जब कि वह जोधपुरके इलाक़हमें होकर अंग्रेज़ी पासके ज़रीएसे जोधपुरके बाहर किसी दूसरी जगहको जाता हो, किसी तरहका महसूल चुंगी, राहदारी या और कोई महसूल न तो ख़ुद लगावेगी, या किसी दूसरे शख़्सको लगाने देगी; शर्त यह है, कि जोधपुरके इलाक़हके भीतर ख़र्चके लिये जितना नमक बेचाजावे, उस तमाम नमकपर उस रियासतकी सर्कार जो महसूल चाहे, लगावे.

शर्त १०- इस अह्दनामहकी किसी बातसे कही हुई हद्दोंके भीतर दीवानी व फ़ौज्दारीके तमाम मुआमलातपर, जो नमकके बनाने, बेचने, व हटाने या बग़ैर लाइसेन्स बनाने, या बाहरसे लानेकी मनाहीसे निस्बत रखते हों, जोधपुर सर्कारका इख्तियार किसी तरह ख़ारिज नहीं किया जायेगा.

शर्त ११- कही हुई हद्दोंके भीतर नमकके बनाने, बेचने व हटाने, और बग़ैर लाइसेन्स बनाना और बाहरसे लाना रोकनेके तमाम ख़र्चसे सर्कार जोधपुर महफ़ूज़

रहेगी, और इस अह्दनामहके मुताबिक् उसकी तरफ़से, जो पट्टा और दूसरे हुकूक् सर्कार अंग्रेज़ीको मिले हैं, उसके एवज़में सर्कार अंग्रेज़ी वादह करती है, कि जोधपुर सर्कारको सालानह किराया तीन लाख रुपया सिक्के अंग्रेज़ी दो (छःमाही) क़िस्तोंमें दिया करेगी; और इस सालानह किराये तीन लाख रुपये सिक्के अंग्रेज़ीके अदा करनेमें इस बातपर कुछ लिहाज़ नहीं किया जायेगा, कि दर अस्ल कितना नमक कही हुई हद्दोंके भीतर बेचागया, या उसके बाहर चालान कियागया. ऊपर लिखे हुए तीन लाख रुपयोंकी जमामें भूम, राहदारीका महसूल, और हर तरहके हक् कुचामनके ठाकुर और दूसरोंके शामिल हैं, जो सर्कार जोधपुर अदा करनेका वादह करती है.

शर्त १२- अगर कही हुई हद्दोंके भीतर किसी सालमें नव लाख मन अंग्रेज़ी तोलसे ज़ियादह नमक सर्कार अंग्रेज़ी बेचे, या बाहर भेजे, तो वह उस बढ़ती (आठवीं शर्तमें कही हुई पूंजीके ख़र्च होने बाद) पर जोधपुर सर्कारको चालीस रुपये सैकड़ेके हिसाबसे एक महसूल फ़ी मनकी क़ीमतपर देगी, जो सातवीं शर्तके मुताबिक् बिक्रीका निर्ख़ बांधागया हो.

अगर कभी इस बारेमें सन्देह होवे, कि किसी सालमें कितने नमक़पर रुसूम लेना है, तो जो हिसाब सांभरका मुख़्तार ख़ास अंग्रेज़ी अफ़्सर पेश करेगा, इस बातकी पुख़्तह गवाही समझी जावेगी, कि दर अस्ल सर्कार अंग्रेज़ीने कितना नमक उस वक़्तमें, जिसके बाबत कि हिसाब है, बेचा या भेजा है; शर्त यह है, कि सर्कार जोधपुर अपनी तसल्लीके लिये फ़रोख़्तका हिसाब रखनेके वास्ते अपना एक अफ़्सर भेजनेसे बाज़ न रक्खी जावे.

शर्त १३- जोधपुर दर्बारके ख़र्चके लिये सात हज़ार मन अंग्रेज़ी तोलका अच्छा नमक बगैर कुछ लिये हुए हर साल देनेका वादह सर्कार अंग्रेज़ी करती है; और यह नमक बननेकी जगहपर उस अफ़्सरको सौंप दिया जावेगा, जिसको जोधपुर सर्कारकी तरफ़से लेनेका इख़्तियार मिला हो.

शर्त १४- नावां और गुढ़ाके क़स्बों या कही हुई हद्दोंके भीतरके दूसरे गांवों या ज़मीनोंसे, जो ज़मीनका या दूसरा ख़िराज मिलता है, और जो नमकसे निस्बत नहीं रखता, उसपर सर्कार अंग्रेज़ीका कुछ दावा नहीं होगा.

शर्त १५- इस अह्दनामह या किसी दूसरे अह्दनामोंके मुताबिक् मुक़र्रर कीहुई ऐसे इख़्तियारातकी हद्दके बाहर, जोधपुरके इलाक़हके भीतर कुछ भी नमक सर्कार अंग्रेज़ी नहीं बेचेगी.

शर्त १६- अगर कही हुई हद्दोंके भीतर सर्कार अंग्रेज़ीका मुक़र्रर किया हुआ

कोई शख़्स कोई जुर्म करके भागजावे, या कोई शख़्स तीसरी शर्तमें लिखे हुए क़ाइदों के बर्ख़िलाफ़ कोई क़ुसूर करके भागजावे, तो जोधपुरकी सर्कार उसके जुर्मकी काफ़ी गवाही पहुंचनेपर, उसको गिरिफ़्तार करने और कही हुई हद्दोंके भीतर अंग्रेज़ी हाकिमोंके सुपुर्द करनेके लिये हर तरह कोशिश करेगी, जिस हालतमें कि वह जोधपुरके इलाक़हके किसी हिस्सहमें होकर गुज़रा हो, या कहीं आश्रय लिया हो.

शर्त १७- इस अह्दनामहकी कोई शर्त कामिल नहीं समझी जावेगी, जबतक कि सर्कार अंग्रेज़ी कही हुई हद्दोंके भीतर नमकके कारख़ानहका काम दरहक़ीक़त न संभाल लेवे.

काम संभालनेकी तारीख़ सर्कार अंग्रेज़ी मुक़र्रर करसक्ती है; शर्त यह है, कि अगर तारीख़ १ मई सन् १८७१ ई० को या उसके पेश्तर काम न संभाला जावे, तो इस अह्दनामहकी शर्तें मन्सूख़ होजावेंगी.

शर्त १८- इस अह्दनामहकी कोई शर्त किसी तरहपर न तो अलग की जायेगी, न बदली जायेगी, जबतक कि दोनों सर्कार पेश्तरसे राज़ी न होजावें; और अगर कोई फ़रीक़ इन शर्तोंके पूरा करनेमें कसूर या बेपर्वाई करेगा, तो दूसरा फ़रीक़ भी इस अह्दनामहका पाबन्द नहीं रहेगा.

मक़ाम जोधपुरमें दस्तख़त हुए, ता० १८ एप्रिल, १८७० ई०.

दस्तख़त- जे० सी० ब्रुक, कर्नेल,
क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट, मारवाड़,

मुहर,

रियासत जोधपुर.

दस्तख़त- जोषी हंसराज. मुहर,

दस्तख़त- मेओ. मुहर.

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान् वाइसरॉय गवर्नर जेनरल हिन्दने मक़ाम शिम्लेपर ता० १६ जुलाई, सन् १८७० ई० को की.

दस्तख़त- सी० यू० एचिसन,
क़ाइम मक़ाम सेक्रेटरी, गवर्मेण्ट हिन्द,
फ़ॉरेन डिपार्टमेण्ट.

इश्तिहार.

फ़ॉरेन डिपार्टमेण्ट ता० ३० नोवेम्बर, सन् १८७० ई.

जो कि तारीख़ १८ एप्रिल सन् १८७० ई० के अह्दनामहसे, जो सर्कार अंग्रेज़ी

और श्रीमान् महाराजा जोधपुरके आपसमें सांभर झीलपर नमक बनाने और बेचनेका कारखानह चलानेके लिये सर्कार अंग्रेज़ीको लाइक़ करनेके लिये किया गया था, (और बातोंके अलावह) यह इक़्रार हुआ था, कि सर्कार जोधपुर, सर्कार अंग्रेज़ीको और इस कामके लिये सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से मुक़र्रर किये हुए तमाम अफ़्सरोंको इख्तियार देवेगी, कि नीचे लिखी हुई हद्दोंके भीतर मकानों और तमाम दूसरी जगहों (खुली हों या नहीं) के अन्दर शुब्हेकी हालतमें जावें, और तलाश करें, और नमकके बनाने, बेचने व हटाने, और बगैर लाइसेन्सके बनाना या बाहरसे लाना रोकनेके लिये सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से मुकर्रर किये हुए क़ाइदोंमेंसे किसीके बर्ख़िलाफ़ चलनेवाले तमाम शख्सोंको या अकेलेको, जो कि उन हद्दोंके भीतर ज़ाहिर हो, गिरिफ्तार करें, और जुर्माने, जेलख़ानह, माल अस्बाब ज़ब्त करनेसे, या दूसरी तरहसे सज़ा देवें; और सर्कार जोधपुरकी मन्ज़ूरीसे सर्कार अंग्रेज़ी एक लाइक़ अफ्सरके मातह्त एक इज्लास इस मुरादसे क़ाइम करेगी, कि कहे हुए क़ाइदोंके तोड़ने वाले या उनसे निस्वत रखने वाले जुर्म करने वाले तमाम शख्सोंकी रूबकारी कीजावे; और जुर्म साबित होनेपर सज़ा दीजावे; और सर्कार अंग्रेज़ीको यह भी इख्तियार मिला था, कि ऐसे मुज्रिमोंको जिन्हें जेलख़ानहका हुक्म हुआ हो, या तो पेश्तर कही हुई हद्दोंके भीतर, या और कहीं, जहां मुनासिब हो, क़ैद करें.

ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ और कही हुई मन्ज़ूरीके मुवाफ़िक़ वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्द ज़ाहिर करते हैं कि :-

अव्वल - सांभर झीलकी कचहरी, जो इश्तिहार नम्बर ५०५ पी० मुवर्रख़ह १८ मार्चके मुताबिक़ क़ाइम कीगई थी, अबसे कहे हुए मत्लबोंके लिये अदालत क़रार दीगई.

दुवुम - सांभर झीलकी कचहरीके इख्तियारकी हद्द इस तौरसे फैलाईजाती है, कि इसमें सांभर झीलके या उसके सूखे तलेके वे हिस्से शामिल होवें, जिनपर जोधपुरका अकेला और अलग इख्तियार है; तथा ज़मीनका वह टुकड़ा, जो झीलके किनारोंपर फैला हुआ है, जिसपर जोधपुरका अलग अमल है, जिसमें नावां, गुढ़ा, और दूसरे गांव व खेड़े शामिल हैं, और जिसकी चौड़ाई झीलके पानीकी सबसे ऊंची सतहसे मापी जानेपर औसत दो मील है, और जो कि ऊपर लिखे अह्दनामहके मुताबिक़ निशान कीजायेगी.

सिवुम- इश्तिहार नम्बर ५०५ पी० मुवर्रख़ह १८ मार्चकी दफ़ा तीनसे लेकर

सात तकमें, जो बातें लिखी हैं, जिनका बयान पहिले होचुका है, इस बढ़ाये हुए इख्तियारके चलानेके लिये कचहरी मज्कूरसे तऋल्लुक़ रक्खेगी.

अह्दनामह नम्बर ४९.

तर्जमह ख़रीतह अज़ तरफ़ श्रीमान् महाराजा जोधपुर, बनाम पोलिटिकल एजेंट, जोधपुर, मुवर्रख़ह ७ मार्च सन् १८६९ ई०.

यह आपको मालूम है, कि बहुत दिनोंसे श्रीजी हुजूरकी मन्शा है, कि आम फ़ाइदहके लिये शाही रास्तह एक पुख्तह सड़कका पालीके रास्ते होकर ऐरनपुरासे बड़ तक बनाया जावे, जो मारवाड़में है. पहिले मेजर निक्सन व कप्तान इम्पी साहिबके वक्तमें दर्बारकी तरफ़से हुक्म हुआ था, और जहां तहां सड़क शुरू हुई भी थी; लेकिन् श्रीजी हुजूरने रीयां, आगरा, और सीरोलीकी तरफ़ सफ़र किया, उसके ख़र्चके सबब उन कामोंको मुल्तवी रखना पड़ा.

आपने मुझको इत्तिला दी है, कि गवर्मेंट हिन्द बड़के घाटेमें होकर एक शाही सड़क ज़िले अजमेरमें नयानगरसे बड़तक बनानेका इरादह रखती है, और बड़के घाटेमें काम भी शुरू करदियागया है, और आपने तज्वीज़ की है, कि बड़से ऐरन-पुरातक मारवाड़में होकर सड़क मेरी तरफ़से बनाईजावे, और आपने यह भी लिखा है, कि अगर उसके बनानेके लिये दर्बार राज़ी हों, तो सर्कार अंग्रेज़ी ख़र्चका कुछ हिस्सह देकर मदद करेगी. इस बातसे दर्बारको मालूम हुआ, कि उनकी ख्वाहिश पूरी होनेवाली है. मैंने इस बातपर अच्छी तरह ग़ौर किया, और बड़से ऐरनपुरा तक अपने इलाक़हमेंसे सड़क बनानेका और उसके लिये हुक्म जारी करनेका पुख्तह इरादह करलिया. इसके अलावह जोधपुरसे पाली तक एक अल्हदह सड़क भी बनाई जायेगी, और उसका ख़र्च, जो ख़र्च सर्कार अंग्रेज़ी देवेगी, उससे अल्हदह रियासत मारवाड़से दियाजायेगा; और सब काम उसीकी मारिफ़त बनाया जावेगा, और दाम उसीकी मारिफ़त चुकाया जायेगा. जो कि इस बातकी इत्तिला आपको देना ज़रूर था, इसलिये इत्तिलाअन यह पेश कियाजाता है. मैंने इन दोनों सड़कोंके बनानेके बारेमें आपकी राय व आपके ख़यालात हासिल करनेके लिये आपको लिखा है, और जिस बातका फ़ैसलह होजावे, वह आपकी सलाहसे कीजावेगी.

बन्दोबस्त, जो श्रीमान् तख्तसिंह महाराजा जोधपुर और कर्नेल जे० सी० ब्रुक, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेंट, मारवाड़के दर्मियान, बड़से ऐरनपुरा तक मारवाड़की रियासतके बीचसे एक शाही सड़क बनानेके वास्ते क़रार पाया.

जिन सड़कोंकी मन्ज़ूरी महाराजाने अब दी है, वे मह्कमए तामीरात राजपूतानहकी मारिफ़त बनाई जावेंगी. श्री हुजूर वादह करते हैं, कि उनके लिये एक लाख रुपया सिक्कए अंग्रेज़ी सालानहके हिसाबसे दियाकरेंगे, लेकिन् गवर्मेण्ट, जितनी तेज़ीसे चाहे, इस कामको चलावे; इसे देखकर खुश होंगे; लेकिन् यह साफ़ साफ़ समभ्कलिया गया है, कि सालानह लाख रुपयेमेंसे कामके लिये, जो जमा पेश्गी दीजायेगी, उसपर उनको व्याज देना नहीं पड़ेगा.

२- बिल्कुल कामका ख़र्च इस हिसाबसे होगा, कि मारवाड़की सर्कार अस्सी रुपये सैकड़ा और गवर्मेण्ट इंडिया बीस रुपये सैकड़ा देवे.

सड़क उसी क़िस्मकी बनाई जावे, जैसी कि रियासत कृष्णगढ़ और ज़िले अजमेरके वास्ते मन्ज़ूर हुई है, और बग़ैर रज़ामन्दी दर्बारके कोई ज़ियादह ख़र्च नहीं मन्ज़ूर होगा.

मौजूदह डाक बंगलोंकी मरम्मत मह्कमए तामीरातकी मारिफ़त अच्छी तरह कीजावेगी; और एक नया डाक बंगला बरमें बनाया जायेगा.

मौजूदह डाक बंगला, जो बरमें है, उसकी मरम्मत होकर मुआइनहकी चौकीके काममें लाया जायेगा, और तीन बंगले नये इसी मत्लबके लिये इसके और ऐरनपुराके दर्मियान बनाये जायेंगे.

मारवाड़ सर्कारके तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ उतनी ही संभाल रहेगी, जितनी कि इन कामोंके करनेके लिये अलग हल्के मुक़र्रर किये जावेंगे, लेकिन् बिल्कुल कारख़ानहपर निगहबानी रखने वाले मुलाज़िमोंसे कुछ तअ़ल्लुक़ नहीं रहेगा.

३- कोई पुल, जिसका तख़्मीनन ख़र्च बीस हज़ार रुपयेसे ज़ियादह होगा, वह बग़ैर साफ़ मन्ज़ूरी महाराजाके नहीं बनाया जायेगा.

४- कामके ख़र्च व तरक़्क़ीकी इत्तिला दर्बारको होती रहे, इस मत्लबसे इन कामोंके वास्ते, जो ठेके होते हैं, उनकी नक़ दर्बारमें भेजी जायेगी; और मज़्दूरीमें, जो ख़र्च लगेगा, उसका माहवारी नक़्शह पेश किया जायेगा.

दर्बार जिन हिसाबोंकी नक़ मांगेंगे, वे इस शर्तपर दिये जायेंगे, कि दर्बार नक़ करानेका बन्दोबस्त करानेको राज़ी हों.

५- दर्बारकी तरफ़से एक एजेण्ट मुक़र्रर होकर उन एग्ज़िक्यूटिव इंजिनिअरसे मुलाक़ात करेगा, जो साहिब सड़ककी दाग़बेल लगावेंगे. वह एजेण्ट उनके साथ रहेगा, और तमाम मुआमलातमें उनकी मदद करेगा, जिनमें कि मुल्कके लोगोंका तअ़ल्लुक़ हो. लाइनके मुक़र्रर करनेमें रबीअ़की खेतीका, जहां तक मुम्किन हो, कम नुक्सान कि-

जायेगा; और ज़मीन सुपुर्द करनेका सब बन्दोबस्त दर्बारका एजेण्ट करेगा.

कोई दिक़्क़त दर्पेश आनेकी सूरतमें एग्ज़िक्यूटिव इंजिनिअर, पोलिटिकल एजेण्टको लिखेंगे, जो दर्बारसे राय लेंगे. सड़कके जितने हिस्से बन चुकेंगे, जहांतक मुमकिन् हो, काममें लाये जावेंगे.

मुहर.	दस्तख़त - महाराजा तख़्तसिंह.
	दस्तख़त - जे० सी० ब्रुक,
मक़ाम जोधपुर.	क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट, मारवाड़.

ता० ८ एप्रिल, सन् १८६९ ई०. [वि० १९२६ प्रथम वैशाख कृष्ण १२ = हि० १२८५ ता० २६ ज़िल्हिज].

अबुन्नस्र, कुतुबुद्दीन मुहम्मद, मुअज़्ज़म, शाह आलम, बहादुर शाह, बादशाह ग़ाज़ी.

ابوالنصر قطب الدین محمد معظم شاه عالم بهادر شاه بادشاه غازی
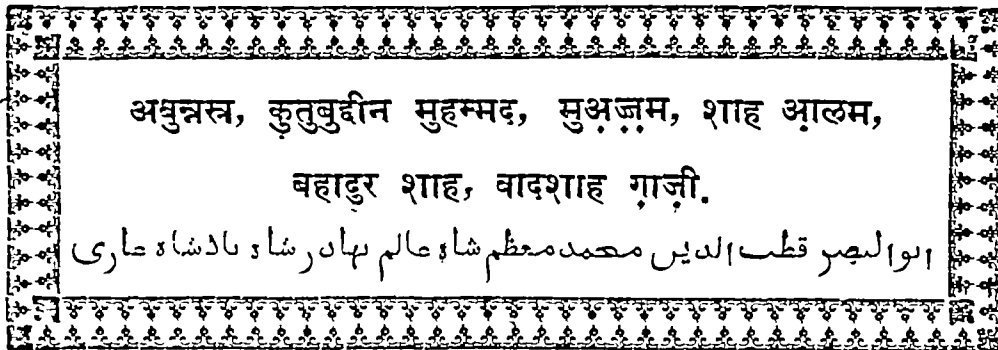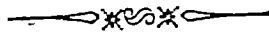
इस बादशाहका हाल बहुत है, पर मुझे मुख़्तसर लिखना है, इसलिये लुब्बुत्तवारीख़, जगजीवनदास गुजराती मुलाज़िम बहादुरशाही, और मुन्तख़बुल्लुबाब ख़फ़ीख़ांको मुक़द्दम रखकर मिराति आफ़्ताबनुमा शाहनवाज़ख़ांकी, सैरुलमुतअख़्ख़िरीन सय्यद गुलामहुसैनकी, चहार गुल्शन चतुरसनराय कायस्थकी, व मिराति अह्मदी शैख़ अहमद गुजराती, व जंगनामह निअ्मतख़ानआली, वग़ैरह किताबोंसे कुछ कुछ मत्लब दर्ज करनेके लाइक़ चुन लिया है.

इस बादशाहका जन्म हिज्री १०५३ ता० आख़िर रजब [वि० १७०० कार्तिक शुक्ल १ = ई० १६४३ ता० १३ ऑक्टोबर] को हुआ था; शाहज़ादगीका तज़्किरह बादशाह आलमगीरके हालमें लिखा गया है; परन्तु जब दक्षिणसे काबुलकी तरफ़ उनको बादशाहने रवानह किया था, वहांसे शुरू किया जाता है:-

सन् ११०५ हि०, जुलूसी ३८ आलमगीरी तारीख़ ५ शव्वाल [वि० १७५१ ज्येष्ठ शुक्ल ७ = ई० १६९४ ता० ३१ मई] को आलमगीरने बहादुरशाहको बीजापुरसे राजधानीकी तरफ़ रवानह किया, क्योंकि शाहज़ादह आज़मसे इनकी अदावत होगई थी; जब इनको बादशाहने क़ैद किया, तब आज़मको तख़्तके दाहिनी तरफ़ बैठक मिली: फिर यह क़ैदसे छूटे, तो बादशाहने इनको उसी जगह बिठाया; आज़म शाहने धक्का देकर इनकी जगह बैठना चाहा, लेकिन् आलमगीरने उसे हाथ पकड़कर बाईं तरफ़ बिठादिया; और आगे बखेड़ा न बढ़नेके ख़यालसे शाहआलम बहादुरशाहको इन्तिज़ाम करनेके लिये भेजदिया. हिज्री ११०६, जुलूसी सन् ३९ आलमगीरी ता० ९ शव्वाल [वि० १७५२ ज्येष्ठ शुक्ल ११ = ई० १६९५ ता० २४ मई] को वह आगरे पहुंचे; और हिज्री ११०७, जुलूसी सन् ४० आलमगीरी ता० १५ ज़िल्हिज [वि० १७५३ श्रावण कृष्ण १ = ई० १६९६ ता० १४ जुलाई] को आगरेसे इसलिये रवानह हुए, कि शाहज़ादह अक्बरके ईरानसे कन्धारकी तरफ़ आनेकी ख़बर मिली: तब ये दिल्ली पहुंचे, और वहांसे हिज्री ११०८, जुलूसी सन् ४० ता० ११ मुहर्रम [वि० श्रावण शुक्ल १३ = ई० ता० १० ऑगस्ट] को रवानह होकर ता० २ रबीउ़ल अव्वल [वि० आश्विन शुक्ल ४ = ई० ता० ३० सेप्टेम्बर] को लाहौर पहुंचे; ता० ९ रबीउ़स्सानी [वि० कार्तिक शुक्ल ११ = ई० ता० ५ नोवेम्बर] को मुल्तान दाख़िल हुए. फिर वहांसे १७ ता० रबीउ़स्सानी [वि० मार्गशीर्ष कृष्ण ३ = ई० ता० १३ नोवेम्बर] को रवानह होकर ता० २३ जमादियुल अव्वल [वि० पौष कृष्ण ९ = ई० ता० १७ डिसेम्बर] को ओज पहुंचे; और ता० २७ जमादियुस्सानी [वि० माघ कृष्ण १३ = ई० १६९७ ता० २० जैन्युअरी] को रावी नदीपर छांवनी डाली. हिज्री ११०९, जुलूसी सन् ४१ ता० ११ रबीउ़ल अव्वल [वि० १७५४ आश्विन शुक्ल १३ = ई० १६९७ ता० २९ सेप्टेम्बर] को फिर मुल्तान गये; वहां ख़बर मिली, कि काबुलका सूबहदार अमीरख़ां मरगया; तब ता० ५ ज़िल्हिज, ४२ जुलूसी [वि० १७५५ द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ७ = ई० १६९८ ता० १७ जून] को काबुलकी तरफ़ कूच किया.

हिज्री १११० ता० २३ रबीउ़ल अव्वल [वि० १७५५ आश्विन कृष्ण ९ = ई० १६९८ ता० ३० सेप्टेम्बर] को अटक नदीपर पहुंचे; वहांसे ता० १४ रबीउ़स्सानी [वि० आश्विन शुक्ल १५ = ई० ता० २१ ऑक्टोबर] को पेशावर, और ता० २ जमादियुल अव्वल [वि० कार्तिक शुक्ल ४ = ई० ता० ८ नोवेम्बर] को ख़ैबरके रास्तेसे ता० ३ जमादियुस्सानी [वि० मार्गशीर्ष शुक्ल ५ = ई० ता० ९ डिसेम्बर] को जलालाबाद पहुंचे; जुलूसी सन् ४३ ता० १७ शव्वाल [वि० १७५६

वैशाख कृष्ण ३ = ई० १६९९ ता० १८ एप्रिल] को वहांसे कूच करके ता० ४ ज़िल्हिज [वि० ज्येष्ठ शुक्ल ६ = ई० ता० ४ जून] को काबुल दाख़िल हुए; और आठ वर्ष तक वहां रहे; हर एक ज़िलेका दौरह करके इन्तिज़ाम दुरुस्त किया.

हि० १११८, जुलूसी सन् ५० तारीख़ १८ शश्र्वान [वि० १७६३ मार्गशीर्ष कृष्ण ४ = ई० १७०६ ता० २५ नोवेम्बर] को जम्रोद आये. इसी वर्षकी ता० २७ ज़िल्हिज सन् ५१ जुलूसी [वि० चैत्र कृष्ण १३ = ई० १७०७ ता० ३१ मार्च] को बादशाह आलमगीरके इन्तिक़ालकी ख़बर पाई, कि २८ ज़िल्क़ाद [वि० फाल्गुन् कृष्ण १४ = ई० ता० २ मार्च] को यह हादिसह हुआ; तब सन् १११९ हि० ता० ४ मुहर्रम [वि० १७६४ चैत्र शुक्ल ६ = ई० १७०७ ता० ८ एप्रिल] को वहांसे कूच करके ता० ११ [वि० चैत्र शुक्ल १३ = ई० ता० १५ एप्रिल] को अटक उतरे, और तारीख़ ३ सफ़र (१) [वि० वैशाख शुक्ल ५ = ई० ता० ७ मई] को लाहौर पहुंचे; वहांसे रवानह होकर मंज़िल दर मंज़िल आगे बढ़े; रास्तहमेंसे ता० २५ सफ़र [वि० ज्येष्ठ कृष्ण ११ = ई० ता० २९ मई] को दिल्लीके बन्दोबस्तके लिये मुनइमख़ांको रवानह किया, और ता० २७ सफ़र [वि० ज्येष्ठ कृष्ण १३ = ई० ता० ३१ मई] को बादशाह खुद भी पहुंचगये. ख़फ़ीख़ां लाहौर पहुंचनेका बयान तूल तवील लिखता है, कि "अपने साथियोंको बहादुरशाहने ख़िल्अ़त, ख़िताब और मन्सब देकर शाहानह जश्नके बाद ख़ुत्बह और सिक्कह अपने नामका जारी किया;" (२) और मुनइमख़ांने चालीस लाख रुपया, बहुतसे सामान और बार्बर्दारी समेत नज़ किया; सरहिन्दमें वज़ीरख़ांने २८ लाख रुपये पेश किये; फिर दिल्ली पहुंचे. शाहज़ादह अ़ज़ीमुश्शान, जो बंगालहकी तरफ़ था, शाहज़ादपुरमें आलमगीरकी मौतका हाल सुनकर बड़ी फ़ौजसे आगरे आया, और अपने बापको दिल्लीसे बुलाया; बड़ा शाहज़ादह मुइज़्ज़ुद्दीन, जो मुल्तानकी सूबहदारीपर था, लाहौरसे ही बापके साथ होगया था. बादशाह बहादुरशाह दिल्लीके ख़ज़ानहसे तीस लाख रुपया लेकर आगरे पहुंचा, और आगरेका क़िलेदार बाक़ीख़ां, जो अ़ज़ीमुश्शानसे क़िला देनेमें टालाटूली

---

(१) ख़फ़ीख़ां मुन्तख़बुल्लुबाबमें आख़िर मुहर्रम लिखता है, और यही सैरुलमुतअख़्ख़िरीनका बयान है, परन्तु जगजीवनदासका लिखना सहीह मालूम होता है; क्योंकि वह बहादुरशाहके साथ था.

(२) जगजीवनदास लाहौरसे १२ कोस पश्चिमकी तरफ़ पुले शाहदौलहमें जुलूसी जश्न होना लिखता है, उसने तारीख़ नहीं लिखी, परन्तु तीसरी तारीख़ सफ़रको लाहौर पहुंचना लिखा है, इससे क़ियास किया जाता है, हिज्री १११९ ता० ३० मुहर्रम [वि० १७६४ वैशाख शुक्ल १ = ई० १७०७ ता० ४ मई] को जश्न हुआ होगा; जैसा कि सैरुलमुतअख़्ख़िरीन वग़ैरहका बयान है.

करता था, बादशाहके पास ख़ज़ानह और क़िलेकी कुंजियां लेकर हाज़िर होगया. ख़फ़ीख़ांका बयान है, कि आगरेके क़िलेमें ९ करोड़ रुपये (१) की अश्रफ़ी और रुपयेके अलावह सोना चांदी बे सिक्केके बहादुरशाहको मिला; ये उनमेंके सिक्के हैं, जो शाहजहां बादशाहने चौबीस करोड़ रुपयेकी जमा आगरेके ख़ज़ानहमें डाली थी, उनमेंसे कुछ बादशाह आलमगीरने दक्षिणकी लड़ाइयोंमें ख़र्च किये, और बाक़ी रहे हुए इस वक्त बहादुरशाहके हाथलगे. उनमेंसे चार करोड़ रुपये निकलवाकर बादशाहने अपने शाहज़ादों, सर्दारों, सिपाहियों, बेगमों वग़ैरह नये और पुराने नौकरोंको इन्आम, और फ़क़ीर और लावारिसोंको ख़ैरातमें बांटे. इसमें दो करोड़ उठगये. दो बाक़ी रहे.

मुन्इमख़ांने वज़ीर आज़मका उह्दह और पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब और "साहिबुस्सैफ़ वल क़लम, वज़ीरि बाफ़र्हंग, ज़ुम्दतुल्मुल्क बहादुर, ज़फ़रजंग" का ख़िताब पाया; और हरावल फ़ौजमें अफ़्सर बनायागया (२). बहादुर शाही फ़ौजकी तादाद लुब्बुत्तवारीख़में जगजीवनदास गुजरातीने दो लाख, ख़फ़ीख़ांने अस्सी हज़ार सवार, और मिराति आफ़्ताबनुमामें शाहनवाज़ख़ांने एक लाख सवार लिखी है; बूंदीकी तवारीख़ वंशभास्करमें सवा लाख सवार हैं. हमें मालूम नहीं कि किसका लिखना सहीह है; क्योंकि उसी ज़मानहके आदमी ख़फ़ीख़ां और जगजीवन-दासमें ही इख़्तिलाफ़ है, तो अब क्या इन्साफ़ करसक्ते हैं.

अब हम शाहज़ादह आज़मका हाल लिखते हैं, बादशाह आलमगीरने

---

(१) ख़फ़ीख़ांने यह भी लिखा है, कि "ऐसा भी सुननेमें आया, कि अक्बर बादशाहके समयमें सौ तोलेसे पांच सौ तोले तकका रुपया और १२ माशेसे १३ माशे तककी मुहरें, जो एलची वग़ैरहको देनेके लिये एकट्ठी कीगई थीं, वे सब मिलनेसे १३ करोड़ नक़्दकी जमा बहादुरशाहको मिली;" और वह यह भी लिखता है, कि "बहादुरशाहने अपनी ज़िन्दगीमें यह ख़ज़ानह तमाम उड़ादिया, कुछ भी बाक़ी न रक्खा."

(२) बूंदीकी तवारीख़ वंशभास्करमें बूंदीके राव बुद्धसिंहको कुल फ़ौजका अफ़्सर व उन्हींकी तज्वीज़ और बहादुरीसे बहादुरशाहकी फ़तह होना तवालतके साथ लिखा है; परन्तु हमको राव बुद्धसिंहका ज़िक्र फ़ार्सी तवारीख़ोंमें कहीं नहीं मिला, फ़क़त् एक तवारीख़में है, जिसका कोई नाम नहीं, सिर्फ़ बहादुरशाहके शुरू अह्दसे दूसरे शाहआलमके वक्त तकका हाल उसमें है. उसमें राव बुद्धसिंह और कछवाहा राजा विजयसिंहको बहादुरशाहकी हरावलके शामिल होना लिखा है, और एक ख़रीतह महाराणा अमरसिंहका बुद्धसिंहके नामका हमें मिला, उसकी नक़्ल बूंदीकी तवारीख़ (पृष्ठ ११०) में लिखी गई है, जिससे मालूम होता है, कि बुद्धसिंहने इस लड़ाईमें अच्छी बहादुरी दिखलाई होगी, लेकिन् कुल फ़ौजका दारोमदार मुन्इमख़ांपर था.

अपनी बीमारीकी हालत देखकर विचार किया था, कि उत्तरी हिन्दुस्तानकी सल्तनतपर बड़ा शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़म रहे, दक्षिण व गुजरातका देश आज़मकी जागीरमें शुमार हो, और बीजापुर कामबख़्शको मिले; इसी विचारके अनुसार कामबख़्शको बीजापुर की तरफ़ रवानह करदिया, और मुहम्मद आज़मको मालवेकी तरफ़ भेजा. परमेश्वर की इच्छासे हि० १११८ ता० २८ ज़िल्क़ाद [वि० १७६३ फाल्गुन् कृष्ण १४ = ई० १७०७ ता० २ मार्च] को बादशाहका इन्तिक़ाल होगया; शाहज़ादह आज़म बीस कोसके क़रीब जाने पाया था, कि बादशाहके इन्तिक़ालकी ख़बर ज़ेबुन्निसा बेगमके काग़ज़से पाई, जिससे दूसरे ही दिन वह अहमदनगर लौट आया; और अपने बापकी लाशको दस्तूरके मुवाफ़िक़ कन्धा देकर औरंगाबाद पहुंचाया, जिसको ख़ुल्दाबादमें दफ़्न किया. हि० ता० १० ज़िल्हिज् [वि० फाल्गुन् शुक्ल १२ = ई० ता० १४ मार्च] को आज़मशाह तख़्तपर बैठा, और सिक्कह व ख़ुत्बह जारी किया. इसने सिक्केमें यह शिअ़्र ख़ुदवाया थाः-

सिक्कः ज़द दर जहां व दौलतु जाह,
बादशाहे ममालिकाज़म शाह.

سکه زد در جهان بدولت وجاه *
بادشاه ممالك اعظم شاه *

अर्थ- मुल्कोंके बादशाह आज़म शाहने मर्तबे और दब्दबेके साथ दुन्यामें सिक्कह जमाया.

इसके बाद बहुतसे अमीरोंको ख़िल्अ़त, मन्सब वग़ैरह दिये गये; और वज़ीरुल्मुल्क असदख़ांको उसके ओ़ह्दहपर क़ाइम रक्खा; सिपहसालार ज़ुल्फ़िक़ारख़ां, मिर्ज़ा सद्रुद्दीन मुहम्मदख़ां सफ़वी, तर्बियतख़ां, मीर आतिश, चीनक़िलीचख़ां बहादुर, मुहम्मद अमीरख़ां, ख़ानेआ़लम, व मुनव्वरख़ां, वग़ैरह मुसल्मान सर्दार थे.

आंबेरका राजा सवाई जयसिंह, कोटाका राव रामसिंह हाड़ा, दतियाका राव दलपतसिंह बुंदेला, रतलामका राठोड़ शत्रुशाल वग़ैरह सब लोगों समेत हि० ता० १५ ज़िल्हिज् [वि० चैत्र कृष्ण १ = ई० १९ मार्च] को आज़मशाह अहमदनगरसे रवानह हुआ; लेकिन् आज़मशाहकी कम ख़र्ची और बदमिज़ाजीके सबब बुर्हानपुरसे चीनक़िलीचख़ां (१) और मुहम्मद अमीनख़ां वग़ैरह कई सर्दार दक्षिणको लौटगये. आज़मशाहके हंडिया नदी उतरने बाद ज़ुल्फ़िक़ारख़ांने राजा शम्भाके बेटे साहूको दक्षिणमें जानेकी छुट्टी दिलवादी, जो क़रीब १८ वर्षसे बादशाही निगरानीमें

(१) यह ग़ाज़िउद्दीनख़ांका बेटा था, जिनकी औलादमें अब हैदराबादके निज़ाम हैं.

था: साहूने दक्षिणमें पहुंचकर बीस हज़ार सवार एकट्ठे करने बाद अपने मौरूसी क़िलोंपर क़ब्ज़ह करलिया.

हि० ११११९ ता० ११ रबीउल्अव्वल [वि० १७६४ ज्येष्ठ शुक्ल १३ = ई० १७०७ ता० १४ जून] को आज़मशाह ग्वालियर पहुंचा, बहुतसे लोग उसको छोड़कर बहादुरशाहसे जामिले; क्योंकि बहादुरशाहकी फ़य्याज़ी मश्हूर थी. आज़मशाहने अपनी बहिन ज़ेबुन्निसा बेगम वग़ैरह ज़नानख़ानहको असदख़ां वज़ीर और इनायतुल्लाहख़ां वग़ैरह समेत ग्वालियरमें छोड़ा, और कुछ ज़नानह और थोड़ासा ख़ज़ानह लेकर आगरेकी तरफ़ रवानह हुआ. फिर फ़ौजको मदद ख़र्च बांटकर शाहज़ादह बेदारबख़्तको हरावलका अफ़्सर किया, जिसके साथ ज़ुल्फ़िक़ारख़ां, ख़ानेआलम, मुनव्वरख़ां, राव दलपत बुंदेला, राव रामसिंह हाड़ा, राजा जयसिंह कछवाहा वग़ैरहको दिया; और आप मए शाहज़ादह वालाजाह, मिर्ज़ा सद्रुद्दीन मुहम्मदख़ां, तर्बियतख़ां, अमानुल्लाहख़ां, मुत्तलिबख़ां, सलाबतख़ां, आक़िलख़ां, सफ़-शिकनख़ां बख़्शी, सय्यद शजाअतख़ां, इब्राहीमबेग तब्रेज़ी व उस्मानख़ां वग़ैरह अमीर और राजपूतोंके चला. ख़फ़ीख़ां दक्षिणसे चलनेके वक़्त अस्सी नव्वे हज़ार सवार लिखता है, लेकिन् ग्वालियरसे रवानह होनेके वक़्त उसने लिखा है, कि आज़मशाहके साथ पचास हज़ार सवार थे; ख़र्चकी तंगी और सख़्त मंज़िलोंके सबब इस वक़्त सिर्फ़ पञ्चीस हज़ार सवार रहगये थे, तो भी आज़मकी दिलेरी बढ़ती जाती थी.

आज़मशाहके ग्वालियर पहुंचनेकी ख़बर सुनकर बहादुरशाहने नसीहतके तौरपर एक ख़त लिख भेजा, कि "अपने बुज़ुर्ग बापने ख़ास दस्तख़तोंसे वसिय्यत-नामह मुल्कके लिये लिखदिया है, जिसमें चार सूबे दक्षिण और अहमदाबाद वग़ैरह तुम्हें दिये, इसके सिवाय एक दो सूबे और भी मैं तुमको देता हूं, मुसल्मानोंकी ख़ूंरेज़ी नहीं चाहता, क्योंकि एक ईमान्दार मुसल्मानके ख़ूनके बदले मुल्क भरका हासिल भी दियाजाये, तो बराबर नहीं होसक्ता; तुम्हें चाहिये, कि ख़ुदाकी दी हुई दौलत व बापकी वसिय्यतके मुवाफ़िक़ ख़ुश रहकर फ़सादको रोको; अगर बेइन्साफ़ीसे अलग नहीं होना चाहते, और ख़ुदाके हुक्म और बापकी फ़र्माइशसे राज़ी नहीं होते, और अपनी बहादुरीके भरोसेपर तलवार निकाली है, तो क्या ज़ुरूर है, कि नाशवान देशके लिये आपसकी अदावतसे हज़ारों जीव मारेजावें; इससे बिह्तर है, कि हम तुम दोनों अकेले मुक़ाबलह करलेवें, फिर देखना चाहिये, कि ख़ुदा किसकी मदद करता है." यह पैग़ाम देकर ख़ानेज़मांख़ां अस्फ़हानीको भेजा था, जिसे पढ़कर आज़मशाह ख़फ़ा हुआ, और कहा, कि उस कम अक़्ल (बहादुरशाह) ने गुलिस्तां भी नहीं पढ़ी है, जिसमें शैख़ सअ्दीका क़ौल है:-

दो बादशाह दर इक़्लीमे न गुन्जन्द, व दह दर्वेश दर गिलीमे बु खुसपन्द.

دو بادشاه در اقلیمی نگنجند * و ده درویش در گلیمی بخسپند *

अर्थ- दो बादशाह एक विलायतमें नहीं समाते, और दस फ़क़ीर एक कम्लीमें सो जाते हैं.

फिर आस्तीन चढ़ाकर शाहनामहका यह शिअ्र पढ़ा:-

शिअ्र.

चु फ़र्दा बरायद बलन्द आफ़्ताब,
मनो गुर्ज़ मैदानु अफ़्रासियाब (१).

چو فردا برآید بلند آفتاب *
من و گرز و میدان و افراسیاب *

अर्थ- कल सूर्य निकले, तो मैं हूंगा, और गुर्ज़, मैदान और अफ़्रासियाब होगा. खानेज़मांको सख़्त कलाम कहकर निकलवा दिया, और कहा, कि इसे ज़िन्दह न छोड़ो; तब ज़ुल्फ़िक़ारख़ांने कहा, कि एल्चीको मारना मना है. इस तरह ख़ानेज़मां वापस आया. बहादुर शाहने भी अपना पेशख़ेमह जाजवमें खड़ा किया, और रुस्तमदिलख़ांको थोड़े अमीर और तोपख़ानह साथ देकर आप शिकारके लिये गया; क्योंकि लड़ाई करनेका विचार बीस तारीख़को था; लेकिन् आज़मशाहने दो दिन पहिले यानी हि० ता० १८ रबीउ़लअव्वल [वि० १७६४ श्रावण कृष्ण ४ = ई० १७०७ ता० १९ जुलाई] को हमलह करदिया. पेशख़ेमहका अफ़्सर शाहज़ादह अज़ीमुश्शानको मुक़र्रर किया, और उसका मददगार मुनइ़मख़ांके बेटे ख़ानेज़मांको बनाया; शाहज़ादह मुइ़ज़ुद्दीन वग़ैरह तीनों शाहज़ादोंके साथ चग़त्ताख़ां बहादुर फ़तहजंग, हसनअ़लीख़ां, हुसैनअ़लीख़ां वग़ैरह सय्यद बारहके और बहादुरअ़लीख़ां, इलाहवर्दीख़ां, हिज़ब्रख़ां, तहव्वुरख़ां, रुस्तमदिलख़ां, सादातख़ां, सैफ़ख़ां, शहामतख़ां, इनायतख़ां सादुल्लाहख़ां वज़ीरका पोता, मक़्सूदख़ां, फ़तहमुहम्मदख़ां, जांनिसारख़ां, आतिशख़ां, मिर्ज़ा राजा विजयसिंह (२) कछवाहा, राजा अनूपसिंह, बाज़ख़ां वग़ैरहको हुक्म दिया, कि मुक़ाबलहको तय्यार रहें.

(१) यह रुस्तमके मुक़ाबिल तूरानका एक बादशाह था.

(२) यह आंबेरके महाराजा सवाई जयसिंहका छोटा भाई था, परन्तु जयसिंहके आज़मकी तरफ़ होनेसे बहादुरशाहने विजयसिंहको मिर्ज़ा राजाका ख़िताब देकर आंबेरका मालिक क़रार दिया था.

आज़मशाहने भी अपनी फ़ौजकी तर्तीब की, शाहज़ादह मुहम्मद बेदारबख़्तको हरावल बनाया, जिसके साथ ज़ुल्फ़िक़ारख़ां बहादुर नुस्रतजंग, ख़ानेआलम मुनव्वरख़ां दक्षिणी, अमानुल्लाहख़ां, ख़ुदाबन्दहख़ां, राव दलपत बुंदेला, राव रामसिंह हाड़ा, रतलामका शत्रुशाल राठौड़ व मुर्शिदकुलीख़ां वगैरह बहुतसे नामी बहादुर मए तोपख़ानहके मुक़र्रर कियेगये. शाहज़ादह वालाजाहको बाईं तरफ़ तईनात करके अमानुल्लाहख़ां, अब्दुल्लाहख़ां, हसनबेग वगैरहको साथ दिया; और दूसरी तरफ़ शाहज़ादह वालातबारको अफ़्सर बनाया, जिसके साथ सुलेमानख़ां पन्नी, उमरख़ां, उस्मानख़ां. अब्दुल्लाहख़ां, सलाबतख़ां, आक़िलख़ां, हमीदुद्दीनख़ां, अमीरख़ां, मुत्तलिबख़ां, मिर्ज़ा सद्रुद्दीन मुहम्मदख़ां सफ़वी, और सफ़वीख़ां वगैरह बहुतसे बहादुरोंको दिया.

आज़मशाह मुक़ाबिल फ़ौजकी ज़ियादतीका कुछ ख़याल न करके शेरके मानन्द बढ़ता था, जिसकी हरावल बहादुरशाहके पेशख़ेमोंपर जागिरी, और तोपख़ानह लूटकर डेरे जलादिये; डेरोंके मुहाफ़िज़ कितने ही भागगये, और मारेगये. इससे बहादुरशाही फ़ौजमें तहलका मचगया; ज़ुल्फ़िक़ारख़ां वगैरहने आज़मशाहसे अर्ज़ किया, कि आज फ़त्हका शादियानह बजाकर लड़ाई मौकूफ़ रक्खी जावे, क्योंकि इस फ़त्हयाबीसे दूसरी तरफ़के बहुतसे लोग इधर आमिलेंगे; लेकिन् इस बातको आज़मशाहने क़ुबूल न किया, और फ़ौजको तेज़ीसे बढ़नेका हुक्म दिया. उधरसे अज़ीमुश्शान अपनी फ़ौजको बढ़ाकर मुक़ाबलहको आया, और बहादुरशाहके पास शिकारगाहमें लड़ाईकी ख़बर पहुंचाई, कि आप जल्दी तशरीफ़ लावें.

दोनों तरफ़से तोप और बाण चलने लगे; और मस्त हाथी, जिनकी पीठपर पाखरें और सूंडोंमें तीन तीन मनकी ज़ंजीरें थीं, दोनों तरफ़से बढ़ाये गये; ख़ूब लड़ाई होरही थी; और तरफ़ैनसे बहादुर बढ़ते जाते थे; ऐसी भारी लड़ाई हुई कि जिसको बर्बादीका नमूना कहना चाहिये. इसमें राव दलपत बुंदेला और राव रामसिंह हाड़ा, जो आज़मशाहकी फ़ौजमें शामिल थे, लड़ाईमें बहादुरीसे काम आये; और बहादुरशाहकी फ़ौजका हरावली अफ़्सर बाज़ख़ां भी मारा गया. फिर मुनव्वरख़ां और ख़ानेआलम दक्षिणी, जो बहादुर थे, आज़मशाहकी फ़ौजसे आगे बढ़े; और लड़ते भिड़ते अज़ीमुश्शानके हाथी तक पहुंचगये; उस शाहज़ादहपर मुनव्वरख़ांने बर्छा चलाया, जिससे अज़ीमुश्शान तो बचगया, पर जलालख़ां क़रावल ज़ख़्मी हुआ, जो उसकी ख़वासीमें बैठा था; मुहम्मद अज़ीमने तीरसे मुनव्वरख़ांको मारलिया. इसी तरह ख़ानेआलमने शाहज़ादहपर बर्छा चलाया, जिससे भी शाहज़ादह बचगया, और

जलालखांने गोलीसे खानेआलमको मारलिया. इसी अर्सेमें रफ़ीउल्क़द्र और मुइज़्ज़ुद्दीन मए फ़ौजके आपहुंचे; शाहज़ादह बेदारबख़्त मस्त हाथीके मानन्द अज़ीमुश्शानपर चला; हसनअलीखां और हुसैनअलीखां सवारियोंको छोड़कर बेदारबख़्तपर टूट पड़े, और रुस्तमअलीखां, नूरुद्दीनखां, हफ़ीज़ुल्लाहखां वग़ैरह पांच सर्दार हुसैनअलीखां और हसनअलीखांकी मददपर जापहुंचे; उधर बेदारबख़्तकी तरफ़से शजाअतखां और मस्तअलीखांने भी सवारियोंको छोड़कर सय्यदोंसे मुक़ावलह किया, और मुनइमखां खानेज़मां मए अपने बेटेके ज़रूमी हुआ. मुन्तख़बुल्लुबाबमें ख़फ़ीखांने इतना ही लिखा है, कि उस तरफ़ शाहज़ादह बेदारबख़्त मारागया; ऐसा ही बयान जगजीवनदासका है; लेकिन् एक किताबसे, जिसमें शाहआलम बहादुरशाहके समयसे दूसरे शाहआलमके ३० जुलूस तकका बयान है, और जिसके मुसन्निफ़का या किताबका नाम कुछ नहीं है, और हमने उसका नाम 'खानदानिआलमगीरी' रक्खा है, इस तरहपर ज़ाहिर होता है, कि बेदारबख़्त अज़ीमुश्शानके हाथी तक पहुंच गया, तब अज़ीमुश्शानने कहा, कि ऐ भाई! क्यों नाहक़ ज़िन्दगी खोता है, यह दोबारह न आवेगी; बेदारबख़्त बोला, कि हमारी तुम्हारी यही मुलाक़ात है, और एक तीर मारा, जिससे अज़ीमुश्शान तो बचगया, पर उसके खवासीवालेकी बाज़ूपर जा लगा, तब अज़ीमुश्शानने बेदारबख़्तकी छातीमें बन्दूक़ मारी, जिससे उसका काम तमाम हुआ. यह ख़बर आज़मशाहने सुनते ही बड़े दर्दके साथ आह खेंची, और मस्त हाथीकी तरह बहादुरशाहकी फ़ौजपर टूट पड़ा; मुहम्मद इब्राहीमबेग तब्रेज़ी घोड़ा कुदाकर आज़मशाहके पास आ बोला, कि आप नौकरोंका हमलह देखिये, वह सवारी छोड़कर खूब लड़ा, और मारागया. इसी अर्सेमें एक जंबूरेका गोला शाहज़ादह वालाजाहके लगा, और वह मरगया; दूसरे गोलेने वालाजाहकी बीबीका काम तमाम किया, जो हाथीकी अंबारीमें सवार थी.

आज़मशाह दर्दे फ़र्ज़न्दसे बेताब लड़रहा था, इसी अर्सेमें एक तेज़ आंधी बहादुरशाहके लश्करकी तरफ़से आज़मशाहके साम्हने आई, जिसका यह असर था, कि गर्द और गुबारसे आंखें मिचने लगीं, और तीर बन्दूक़ वग़ैरह हथियार बेकार होगये, दोनों तरफ़के तोपखानोंका धूआं आज़मशाहकी फ़ौजपर गिरनेसे अंधेरा छागया. तर्बियतखांने आज़मशाहकी तरफ़से बढ़कर दो बन्दूक़ चलाई, परन्तु खाली गई, और दूसरी तरफ़की बन्दूक़से वह मारागया. आज़मशाह बढ़ बढ़कर हमलह करता था, जिससे इनायतखां सादुल्लाहखांका पोता, सुल्तानखां, तहव्वुरखां वग़ैरह १४ पन्द्रह नामी सर्दार बहादुरशाहकी तरफ़के मारेगये; आज़मशाहकी तरफ़से

सफ़वीख़ां, मुर्शिदकुलीख़ां, कोकलताशख़ां, सय्यद यूसुफ़ख़ां, मस्तअलीख़ां, शजाअ़तख़ां, अशरफ़ख़ां, शरीफ़ख़ां, ज़ियाउल्लाहख़ां, उस्मानख़ां, वग़ैरह ५२ के क़रीब नामी आदमी मारेगये. ज़ुल्फ़िक़ारख़ांके होंटपर ज़ख़्म लगा, तब उसने आज़मशाहके पास पहुंचकर कहा, कि आपके बाप दादों व और भी बादशाहोंपर ऐसा वक्त आगया था, कि वह लश्करसे अलग होगये, और जानें बचाईं, फिर वक्त आनेपर अपनी मुराद पूरी की; अब आपको भी वैसा ही करना चाहिये. आज़मशाहने गुस्सह होकर कहा. कि "बहादुरजी आप अपनी जानको, जहां चाहें, सलामतीसे लेजावें, (१) हमको तो इस ज़मीनसे हिलना मुश्किल है, बादशाहोंको तख़्त मिले, या तख़्तह (मुर्दोंको निल्हानेका तख़्तह)", तब ज़ुल्फ़िक़ारख़ां मए हमीदुद्दीनख़ांके ग्वालियर चला गया.

आज़मशाह ज़ख़्मी शेरके मानन्द चारों तरफ़ भटकता था, और कहता था, कि बहादुरशाह नहीं लड़ता, ख़ुदा मुझ कम्बख़्तसे फिरगया है; उसने अपने शाहज़ादह आलीतबारको बच्चा होनेके सबब अपने पास हौदेमें बिठाया था, जिसे तीर वग़ैरहकी चोटसे बचाता रहा: पर वह बच्चा शेर बच्चेकी तरह ख़ुद लड़ाई करना चाहता था, आज़मशाह उसे रोकता था: इस लड़ाईमें ख़ास आज़मशाहके कई हाथीवान मारेगये थे, और ज़ख़्मी होनेसे हाथी भी चिल्ला रहाथा; लेकिन् वह ज़ख़्मी शेर हौदेसे पैर निकालकर हाथीको भी रोकता था; उसी हालतमें आज़मशाहकी पेशानीमें एक गोली लगी, जिससे वह दुन्यासे कूच करगया. ख़ानदानिआलमगीरीमें शाहज़ादह मुइज़्ज़ुद्दीनके हाथकी गोली लगनेसे उसका माराजाना लिखा है.

सन १११९ हि० ता० १८ रबीउल्अव्वल [वि० १७६४ आषाढ़ कृष्ण ४ = ई० १७०७ ता० १३ जून] को दो घड़ी दिन रहे आज़मशाह मारागया; रुस्तमअलीख़ां हाथीपर चढ़कर उसका सिर काट लाया, और बहादुरशाहके साम्हने डाला; बहादुरशाहकी आंखोंमें आँसू भरआये. इसी अर्सेमें अज़ीमुश्शान वग़ैरह चारों शाहज़ादों व कुल सर्दारोंने आकर मुबारकबाद दी, और आज़मशाहके शाहज़ादह आलीतबार व बेदारबख़्तके बेटे बेदारदिल और सईदबख़्तको हाज़िर किया; और लूटनेसे जो सामान बचा, वह बहादुरशाहके क़ब्ज़हमें आया. बहादुरशाहने उन यतीम शाहज़ादोंको बग़लमें लेकर तसल्ली दी, और पास रक्खा; आज़मशाह, बेदारबख़्त और वालाजाहकी लाशोंको दफ़्न करनेका हुक्म दिया. आगरे पहुंचकर बादशाह दूसरे दिन

(१) ख़ानदानिआलमगीरीमें लिखा है, कि आज़मशाहने गुस्सहमें आकर ज़ुल्फ़िक़ारख़ांपर तीर मारा, पर छोटा तीर होनेसे उसके दो दांत गिरगये.

मुनइमख़ांके घरपर गये; उसकी ख़िद्मतोंके एवज़ "ख़ानख़ानां बहादुर, ज़फ़रजंग, यार वफ़ादार" का ख़िताब व सात हज़ारी ज़ात व सवार जिनमें पांच हज़ार सवार दो अस्पह सिह अस्पह थे, और एक करोड़ रुपया नक़द व सामान इनायत करके विज़ारतका उहदह सौंपा; उसके बड़े बेटे नईमख़ांको "ख़ानेज़मां बहादुर" का ख़िताब, पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब देकर तीसरे दरजहका बख़्शी बनाया; उसके छोटे बेटेको "ख़ानह-ज़ादख़ां" का ख़िताब और चार हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब और चारों शाह-ज़ादोंको तीस तीस हज़ारी ज़ात व बीस बीस हज़ार सवारका मन्सब और बड़े शाहज़ादह मुइज़्ज़ुद्दीनको "जहांदारशाह बहादुर" का ख़िताब, मुहम्मद अज़ीमको "अज़ीमुश्शान बहादुर", और रफ़ीउल्क़द्रको "रफ़ीउश्शान बहादुर" और ख़ुजिस्तह अख़्तरको "जहांशाह बहादुर" का ख़िताब दिया. इन चारों शाहज़ादोंको हुज़ूरमें नौबत बजाने व पालकीमें सवार होनेका हुक्म दिया. अरसलाख़ांको "चग़त्ताख़ां फ़त्हजंग" का ख़िताब, सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब दिया, बूंदीके बुधसिंह को "राव राजा" का ख़िताब व पांच हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब, नौबत और कई पर्गने दिये (१).

इनके सिवाय बहुतसे लोगोंको इन्आम, ख़िताब और मन्सब मिला. यह बादशाह फ़य्याज़ी और रह्म दिलीमें अपने ख़ानदान वालोंसे बढ़कर था, लेकिन् बादशाहोंको बे मौक़ा रह्म दिली करनेसे नुक्सान होता है; नेक दिल होना तो अच्छा है, लेकिन डरानेको बनावटी गुस्सह भी रखना चाहिये. इस बादशाहकी नेक मिज़ाजी और रह्म दिलीमें नौकर ग़ालिब होगये; मसल मश्हूर है, कि "ऐसा कड़वा भी न हो, कि थूक देवें, और ऐसा मीठा भी न हो, जो निगल जावें." राजा बादशाहोंके लिये यह कहावत बहुत ठीक है. अन्तमें बहादुरशाहकी रह्म दिलीका नतीजह यह हुआ, कि इसके बाद बादशाहतको ख़लल पहुंचा. बादशाहने ग्वालियरसे असदख़ां वज़ीरको और शाहज़ादी ज़ेबुन्निसा वग़ैरह बेगमातको बुलाया; असदख़ां अपने बेटे ज़ुल्फ़िक़ारख़ां समेत हाथ बांधकर हाज़िर हुआ; बादशाहने बहुत ख़ातिर की, और शाहज़ादी ज़ेबुन्निसा बेगमको बादशाह बेगमका ख़िताब और दूनी तनख़्वाह करदी.

---

(१) यह ज़िक्र फ़ार्सी मुवर्रिख़ोंने छोड़दिया है, इनका लड़ाईमें शामिल होना भी सिर्फ़ ख़ाफ़ीख़ानि-आलमगीरीमें ही लिखा है; इसी तरह दूसरे हिन्दू राजाओंका भी हाल कम लिखा गया है, परन्तु रावराजा बुधसिंहको ख़िताब, मन्सब, व नौबत मिलना उस ख़रीतहसे भी साबित है, जो महाराणा अमरसिंह २ ने बुधसिंहके नाम लिखा-(देखो पृष्ठ ११०).

अमीरुल्उमरा असदखांको "निज़ामुलमुल्क आसिफ़ुद्दौलह" का ख़िताब और वकील मुल्क़ (मुसाहिब आला) बनाकर ख़िल्अ़त वग़ैरह बहुतसा सामान दिया. कई पास वालोंने बादशाहसे कहा, कि यह आज़मशाहके शरीक था, जिसपर बादशाहने जवाब दिया, कि यह दक्षिणमें था, अगर हमारे बेटे भी वहां मौजूद होते, तो उनको भी लाचार ऐसा ही करना पड़ता. ज़ुल्फ़िक़ारख़ांको सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब और "सम्सामुद्दौलह, अमीरुल्उमरा बहादुर, नुस्रत-जंग" का ख़िताब, और मीरबख़्शीका उह्दह दिया; मिर्ज़ा सद्रुद्दीन मुहम्मदख़ां सफ़वीको पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब, और "हिसामुद्दौलह मिर्ज़ा शाहनवाज़ख़ां" का ख़िताब दिया.

निदान बहादुरशाहने सब अपने बेगाने, छोटे बड़े नौकरोंको इन्आ़म जागीरें देकर खुश किया; असदख़ांको कहा, कि तुम दिल्ली जाकर आराम करो, और वकालतका काम तुम्हारा बेटा ज़ुल्फ़िक़ारख़ां देता रहेगा. कुल कामका मुख़्तार वज़ीरुल्मुल्क मुनइमख़ां था, जिसने बड़ी ईमानदारी और नेकनामीसे काम किया. बहादुरशाहने सिक्कहमें शिअ़्र व तारीफ़ वग़ैरह कुछ न रक्खी, सिर्फ़ एक तरफ़ शहरका नाम और दूसरी तरफ़ बादशाहका नाम था.

इन्हीं दिनोंमें बादशाहको यह ख़बर मिली, कि महाराणा अमरसिंहकी मदद और आंबेरके राजा जयसिंहकी मिलावटसे महाराजा अजीतसिंहने जोधपुर और मारवाड़पर क़ब्ज़ह करके गायका मारना, आज़ान (बांग) का देना बन्द किया; और बादशाह आलमगीरने जिन मन्दिरोंको तुड़वाकर मस्जिदें बनवाई थीं, उन्हें गिरवाकर मन्दिर बनवा लिये; इसपर बादशाहने राजपूतानहकी तरफ़ कूचका झंडा खड़ा किया, और हिज्री ता० ७ शअ़्बान [वि० कार्तिक शुक्ल ९ = ई० ता० ४ नोवेम्बर] को रवानह होकर आंबेरके रास्तेसे अजमेरके पास पहुंचा; शाहज़ादह अज़ीमुश्शानको ख़ानख़ानां मुनइमख़ां वग़ैरह कई सर्दारोंके साथ फ़ौज देकर मारवाड़की तरफ़ भेजा; और आप भी जोधपुरसे छः कोसपर जा ठहरा. वहां फ़ौजने बर्बादी करना, रअ़य्यतको लूटना शुरू किया; तब मुनासिब समझकर महाराजा अजीतसिंह, महाराजा जयसिंह समेत वज़ीर मुनइमख़ांकी मारिफ़त बादशाहके पास हाज़िर होगये. जोधपुर व आंबेरपर बादशाही क़ब्ज़ह होगया; ये दोनों राजा राठौड़ दुर्गदास समेत बादशाहके पास रहे, और बहादुरशाह पीछा अजमेर होकर राजधानीको लौटा.

इसी अ़र्सेमें दक्षिणसे ख़बर मिली, कि मुहम्मद कामबख़्शने बादशाह बनकर फ़साद उठाया है; तब बहादुरशाहने अपने भाईके नाम लिखभेजा, कि अपने बापने तुमको बीजापुरकी हुकूमत दी है, परंतु हम हैदराबादकी हुकूमत सिवाय देकर यह लिखते हैं, कि सिक्कह व ख़ुत्बह हमारे नामका रक्खाजावे; और जो ख़िराज व तुहफ़ह

वहांके हाकिम बादशाही सर्कारमें पहुंचाते थे, तुमसे न लिया जायेगा. यह फ़र्मान् हाफ़िज़ अह्मद मोतबरखां मुफ़्तीके हाथ ख़िल्अ़त, जवाहिर, हाथी, घोड़ों समेत भेजा; मुहम्मद कामबख़्श बिल्कुल कम अ़क़्ल था, तक़र्रुबखां व इहतिदाखांके बहकानेसे बड़े बड़े पुराने सर्दार रुस्तमदिलखां, अहसनखां, सैफ़खां और अहमदखांको बेरहमीसे मरवाडाला, और उनके बाल बच्चों व नौकरोंपर भी सख़्तियां हुईं. बहादुरशाहका भेजाहुआ, एल्ची हाफ़िज़ अहमद मोतबरखां मुफ़्ती (१) फ़र्मान लेकर हैदराबाद पहुंचा, चन्द बदमआ़शोंने कामबख़्शसे कहा, कि एल्चीके साथी मौक़ा पाकर आपको गिरिफ़्तार करने आये हैं. उस बे अ़क़्लने एल्चीके साथी ७५ आदमियोंको दावतके बहानेसे बुलाकर गिरिफ़्तार करलिया, जिनमें चन्द आदमी हैदराबादके रहनेवाले भी थे, जो एल्चीकी दोस्तीसे दावत खानेमें शरीक हुए थे; वे पूछे ताछे इन बे गुनाहोंके सिर कटवाडाले, और एल्चीको सख़्त जवाब लिखकर रवानह किया; कामबख़्शके ज़ुल्मसे बहुतसे इ़ज़्ज़तदार लोग हैदराबाद छोड़गये. ये सब बातें बहादुरशाहके पास पहुंचती थी.

बहादुरशाह आगरेसे ता० आख़िर ज़िल्हिज [वि० चैत्र कृष्ण ऽऽ = ई० १७०८ ता० २२ मार्च] को रवानह हुआ, महाराजा जयसिंह और अजीतसिंह बादशाहके साथ थे, जो नर्मदाके किनारेसे वे इत्तिला लौट आये; क्योंकि इनको आंबेर और जोधपुर बख़्शनेका जो इक़्रार था, वह पूरा न हुआ. इनका मुफ़स्सल हाल महाराणा अमरसिंह २ और महाराजा अजीतसिंहके बयानमें लिख आये हैं. बादशाहने बुर्हानपुर, बिदर होते हुए हैदराबादसे चार कोसपर हिज्री ११२० ता० १ ज़िल्क़ाद [वि० १७६५ माघ शुक्र ३ = ई० १७०९ तारीख़ १५ जैन्युअरी] को पहुंचकर डेरा किया, और अपने सब साथियोंको होश्यार करके मोर्चा बन्दी करली. दूसरे दिन प्रभातही शाहज़ादह रफ़ीउ़श्शान और जुम्दतुलमुल्क मदारुल्-महाम ख़ानख़ानां मुनइ़मखां बहादुर ज़फ़रजंग, अमीरुल्उमरा ज़ुल्फ़िक़ारखां बहादुर नुस्रतजंग, दाऊदखांपन्नी, हमीदुद्दीनखां बहादुर, इस्लामखां दारोग़ह तोपख़ानहको कामबख़्शकी तरफ़ जानेका हुक्म दिया, और कहा, कि उसको समझाओ, अगर मुक़ाबलहसे पेश आवे, तो लड़ाईका ऐसा ढंग डालो, कि वह ज़िन्दह गिरिफ़्तार हो, मारा न जाय; शाहज़ादह जहांशाह अपने लश्करको लिये हुए अगली फ़ौजका मददगार रहे.

हिज्री ता० ३ ज़िल्क़ाद [वि० माघ शुक्र ५ = ई० ता० १७ जैन्युअरी] को काम-

(१) ख़ानदानि आ़लमगीरीमें इस एल्चीका नाम ख़ानेज़मांखां इस्फ़हानी लिखा है.

बख़्श हाथीपर सवार होकर दूसरे हाथीपर अपने तीन बेटे मुहय्युस्सुन्नह वग़ैरह और तीसरे हाथीपर अपनी बेगमको सवार करके मए तोपख़ानहके मुक़ाबलहको आया. तोप, बन्दूक़ और तीर तेज़ीके साथ चलानेका हुक्म दिया. इस वक़ इसके साथ सिर्फ़ तीन सौ या चार सौ सवारोंका होना ख़ाफ़ीख़ांने लिखा है; क्योंकि इसके ज़ुल्म, बदमिज़ाजी और कम अक़्लीसे कुल फ़ौज बिगड़कर चलीगई थी; लुच्चे शुह्दे और चुग़लख़ोर भी काफ़ूर हुए. बहादुरशाहके अस्सी हज़ार सवारोंके साम्हने क्या करसक्ता था. ज़ख़्मी होकर दाऊदख़ां पन्नीकी क़ैदमें आया; और जब वह बादशाही डेरेमें लायागया, तो बहादुरशाहने हुक्म दिया, कि हिफ़ाज़त और इज़्ज़तके साथ लायाजावे: उसके इलाजके लिये जर्राह यूनानी और फ़रंगी तइनात कियेगये; कामबख़्श इलाज करानेसे इन्कारी हुआ, और शोरबह भी नहीं खाया. रातको बहादुरशाह उसके पास गये, और अपने कन्धेसे चादर लेकर उसपर डाली, बहुत प्यारके साथ ख़बर पूछकर आंखोंमें आंसू भरलाये, कहा कि हम तुमको इस हालमें देखना नहीं चाहते थे ? कामबख़्शने जवाब दिया, कि मैं भी नहीं चाहता था (१), कि तीमूरकी औलाद बेइज़्ज़तीसे गिरिफ़्तार हो. बादशाह बहुत कुछ कह सुनकर दो तीन चमचे शोरबहके पिलाकर बड़े रंजके साथ अपने डेरेमें आये; तीन चार पहरके बाद कामबख़्श और शाहज़ादह फ़ीरोज़मन्द, जो उसीके साथ ज़ख़्मी हुआ था, मरगया; और कामबख़्शकी लाश मए शाहज़ादह और एक बीबीकी लाशके दिल्लीमें हुमायूंके मक़्बरेमें दफ़्न करने को भेजीगई.

---

(१) मुन्तख़बुल्लुबाबमें ख़ाफ़ीख़ां लिखता है. कि जब बादशाहने कहा, कि मैं तुम्हें इस हालतमें देखना नहीं चाहता था. तब कामबख़्शने भी वैसाही जवाब दिया, इस बातसे लोग यह अर्थ करते हैं. कि उसने यह कहा. कि मैं भी तुमको बादशाही हालतमें नहीं देखना चाहता था; लेकिन यह बात मुन्तख़बुल्लुबाबमें नहीं है. सियरुल मुतअख़्ख़िरीनमें मुसव्विर गुलामहुसैन लिखता है. कि जब बादशाहने कहा, कि मैं तुम्हें इस हालतमें देखना नहीं चाहता था. तब कामबख़्शने भी वैसाही जवाब दिया, बहादुरशाहके साथ मौजूद था. और उसका लेख हम मूलमें लिख आये हैं. जगजीवनदास लुब्बुत्तवारीख़में जो लिखता है, उसके लेखसे दोनों भाइयोंका स्नेह अधिक पाया जाता है. वह लिखता है. कि कामबख़्श मए अपने ज़नाने और शाहज़ादोंके चार घड़ी दिन रहे बादशाही डेरेमें इज़्ज़तके साथ लाया गया, और दर्बारख़ां नाज़िरकी हिफ़ाज़तमें रक्खा गया. रातके वक़ ख़ुद बादशाह अपने चारों शाहज़ादों और अमीरुल्उमरा व हमीदुद्दीनख़ां वग़ैरह समेत गये. और कामबख़्शका सिर अपने घुटनोंपर रक्खा, तब कामबख़्शने अज़ीमुश्शानसे कहा. कि क्या हज़रत हमारे सिरपर सायह डालते हैं. मेरे पास कोई ऐसी चीज़ नहीं, जो पेश करूं; यह अर्ज़ करो. कि दो कुरआन शरीफ़, जो मैंने हुजूरख़ानहमें ख़ुश ख़त हैं, वह क़बूल फ़र्मावें. तब बादशाहने कहा. मैंने क़बूल किया. फिर बहादुरशाहने कहा. कि हरचंद मैंने लिखा, पर कुछ फ़ाइदह न हुआ. नहीं तो तुमको इस हालमें क्यों देखता; अब भी मेरी ज़िन्दगी अपने कर

बहादुरशाहने तीन दिन तक मातम रक्खा, चौथे दिन सब अपने सर्दारोंको ख़िताब इन्आम, इक्राम देकर हैदराबादका नाम "खुजिस्तह बुन्याद" रक्खा. इन्आम और ख़िताबके साथ यहां तक अपने सर्दारोंकी इज़्ज़त बढ़ाई, कि अपने साम्हने बड़े बड़े सर्दारोंको नौबत बजानेकी इजाज़त दी; तब जुल्फ़िक़ारख़ांने अर्ज़ किया, कि हुज़ूरने हमको सब तरहसे इज़्ज़त और इन्आम बख़्शा, और कोई आर्ज़ू बाक़ी न रही; परन्तु अदब आदाबके लिहाज़ और नौकर व मालिकका फ़र्क़ दिखानेको हुज़ूरके रूबरू मुआफ़ रहे. बादशाह कुछ अर्से तक उसी मुल्कमें रहकर हिज्री ११२१ ता० शुरू रबीउल अव्वल [वि० १७६६ द्वितीय वैशाख शुक्ल २ = ई० १७०९ ता० १३ मई] को दिल्लीकी तरफ़ रवानह हुआ, और सारे दक्षिणकी सूबहदारी अमीरुल्उमरा जुल्फ़िक़ारख़ांको दी; उसने अपनी तरफ़से दाऊदख़ां पन्नीको दी, और आप बादशाहके साथ चला.

इसी बर्षके शव्वाल [वि० मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष = ई० डिसेम्बर] में नर्मदा उतरा, वहां पंजाबकी तरफ़से सिक्खोंके फ़सादकी ख़बर मिली; तब राजपूतानहकी तरफ़ चढ़ाई करनेका इरादह मौकूफ़ रखकर मुकन्दराकी तरफ़ हाड़ौती होता हुआ अजमेर पहुंचा; वहां जयपुर और जोधपुरके महाराजाओंकी दिलजमईके वास्ते महाराणा अमरसिंह २ ने उदयपुरसे वकील भेजे, जिनकी मारिफ़त राजा अजीतसिंह व राजा जयसिंहका फ़ैसलह होकर उनके मुल्क उनको मिलगये; क्योंकि बहादुरशाह इस वक़्त पंजाबके फ़सादसे बिल्कुल दबा हुआ था, महाराणा अमरसिंह और महाराजा अजीतसिंहके हालमें, जो उस समयके काग़ज़ोंकी नक़्लें दर्ज की हैं, उनसे ज़ाहिर है. ख़फ़ीख़ां वगैरह फ़ार्सी तवारीख़ वालोंने इस हालको कम लिखा है, सिर्फ़ बादशाहकी बड़ाईकी तरफ़ निगाह रक्खी है. चौथे जुलूसका जश्न बादशाहने अजमेरमें किया (१). यह जश्न हिज्री ११२१ ता० १८ ज़िल्हिज [वि० १७६६

ज़ियादहसे ज़ियादह समझो. बादशाहने पूछा, कि तुम्हारे पास कितने सवार थे, उसने जवाब दिया, कि सौ. बादशाह बोले, कि मैं एक हज़ार सवार सुनता था; तब कामबख़्शने कहा, कि इतने होते, तो मैं अपने इरादेको पहुंचता; फिर भी खुदाका शुक्र है, कि मैं अपनी मुरादको पहुंचा, मैं चाहता था, कि तख़्त पाऊं, खुदाने वैसा ही किया, कि मेरा सिर आपके घुटनेपर, जो तख़्तसे भी बढ़कर है, पहुंचाया. ऐसी बातें कहनेके बाद कामबख़्श बेहोश होगया, और बादशाह भी उठकर डेरोंमें आये.

(१) ख़फ़ीख़ां १८ ज़िल्हिजको तख़्तनशीनीका जश्न लिखता है, और सैरुल मुतअख़्ख़िरीन ता० ३० ज़िल्हिज और मिराति आफ़्तावनुमामें शाहनिवाज़ख़ां ता० १ ज़िल्हिज लिखता है. इसी तरह सब किताबोंमें जुलूसका इख़्तिलाफ़ है; ख़फ़ीख़ांका लिखना झूठ नहीं होसक्ता,

फाल्गुन कृष्ण ४ = ई० १७१० ता० १९ फेब्रुअरी]गढ़के नाम, जो उसके पास
अजमेरसे कूच करके दिल्लीको १२ कोस दाहिनी तरफ़ छोड़ा,
चला; मुहम्मद अमीनखां. रुस्तमदिलखां और चूड़ामन जाटको हुए, और अज़ीजुद्दीन,
भेजा.

हि० ११२२ ता० १० शव्वाल [वि० १७६७ मार्गशीर्ष शुक्ल १२ हुमायूंबख्त.
१७१० ता० ४ डिसेम्बर] को बादशाह पंजाबमें शाह दौलहके पास पहुंचा,
सिक्खोंके बड़े बड़े हमले होने लगे; खानखानां मुनइमखां, हमीदुद्दीनखां बहादुर, र.
रुस्तमदिलखां, राजा छत्रशाल बुंदेला, फ़ीरोज़खां मेवाती और चूड़ामन जाट वगैरह
बड़े बड़े सर्दार साथ देकर शाहज़ादह रफ़ीउश्शानको सिक्खोंपर भेजा. यह लोग
खूब लड़े. और दोनों तरफ़के बहुतसे आदमी मारेगये; सिक्खोंने वलवागढ़का
सहारा लिया. जो कठिन पहाड़ोंमें था; बादशाही लश्करने वहां भी जा घेरा,
खूब लड़ाई होने और हज़ारों आदमी मरनेके बाद सिक्खोंका गुरू निकलकर
हिमालयकी तरफ़ चलागया, और उसके एवज़ एक गुलाबू खत्री गिरिफ्तार हुआ.
यह धोखा होजानेके रंजसे खानखानां मुनइमखां मरगया. खानदानि आलमगीरीमें
खानखानांका मरना बहादुरशाहकी वफ़ातके रंजसे लिखा है, परन्तु खफ़ीखांका
लिखना सहीह है, क्योंकि यह उस वक्तका आदमी है.

अब विज़ारत देनेमें बड़ा पसोपेश होने लगा, शाहज़ादह अज़ीमुश्शानकी यह
राय थी. कि ज़ुल्फ़िक़ारखांको विज़ारतका उहदह, और खानखानां मुनइमखांके बेटेको
दक्षिणकी सूबहदारी व बख्शीगरी मिले, जो ज़ुल्फ़िक़ारखांकी सुपुर्दगीमें थी; ज़ुल्फ़ि-

---

क्योंकि वह उनके साथ रहकर हरसालका जश्न लिखता रहा. हमारे विचारसे इस इख्तिलाफ़का यह सबब मालूम होता है. कि बहादुरशाहको हि० १११८ ता० २७ ज़िल्हिज् [वि० १७६३ चैत्र कृष्ण १२ = ई० १७०७ ता० ३० मार्च] को आलमगीरके मरनेकी खबर मिली, तब उसने हि० ता० ३० ज़िल्हिज् [वि० चैत्र कृष्ण ३० = ई० ता० २ एप्रिल] को जमरोदमें जश्न किया, और अटक उतरनेके बाद नाज़िर मुबारक तख्त व छत्र लाया, तब फिर हि० १११९ ता० १५ मुहर्रम [वि० १७६४ वैशाख कृष्ण १ = ई० ता० १८ एप्रिल] को जश्न किया; तीसरी बार लाहोरसे पश्चिम १२ कोस पुले शाहदौलहमें हि० ता० ३ सफ़र [वि० वैशाख शुक्ल ४ = ई० ता० ६ मई] को जश्न करने बाद अपने नामका सिक्कह और खुत्बह जारी किया; चौथा आगरेमें आज़मपर फ़त्ह पाकर हि० ता० १९ रबीउल् अव्वल [वि० आषाढ़ कृष्ण ५ = ई० ता० २१ जून] को किया; तब विचारा होगा, कि किस तारीखको जश्न मानकर सन् जुलूस जारी किया जावे; इसपर बहादुरशाहने सबको छोड़ा, और अपने बापके मरनेसे बीस दिन मातमके समझकर ता० १८ ज़िल्हिज्को क़ाइम रक्खा होगा; इस सबब कई जश्न होनेसे किताबोंमें इख्तिलाफ़ होगया.

बहादुरशाहने तीन [illegible] मेरे बाप असदख़ांको विज़ारत मिले, और मैं अपने दोनों ख़िताब इन्ऋाम, इक्राम [illegible] ऋाम और ख़िताबके [illegible] जुल्फ़िक़ारख़ां कुल बादशाहत अपने हाथमें रखना चाहता था, बड़े बड़े सर्दारों [illegible] अज़ीमुश्शान उसके पेचको टालता था. इस नाइत्तिफ़ाक़ीसे बादशाहने हुज़ूरने हमको [illegible] दिया, और यह कहा, कि जब तक वज़ीर क़ाइम न हो, शाहज़ादह रही; [illegible] शान काम चलावे, और इनायतुल्लाहख़ांका बेटा सादुल्लाहख़ां ख़ालिसहका दीवान हुज़ [illegible] नाइब रहे. हि० ११२३ ता० आख़िर जमादियुल अव्वल [वि० १७६८ श्रावण शुक्ल १ = ई० १७११ ता० १७ जुलाई] को बादशाह लाहौर पहुंचे. इन्हीं दिनोंमें ग़ाज़ियुद्दीनख़ां बहादुरके मरनेकी ख़बर पहुंची, जो अहमदाबादका सूबहदार और हैदराबादके निज़ामका मूल पुरुष (मूरिसि आला) था. यह आलमगीरके शुरू अह्दमें अक्लमन्दी और बहादुरीके सबब छोटे दरजेसे बड़े मन्सब तक पहुंचा था.

बहादुरशाह बादशाह एक दम बीमार होकर हि० ११२४ ता० २० मुहर्रम [वि० १७६८ फाल्गुन कृष्ण ६ = ई० १७१२ ता० २८ फेब्रुअरी] को इस दुन्याको छोड़गया (१). यह बादशाह बहुत आलिम, नेकदिल, नेक मिज़ाज, सुलह पसन्द, रहमदिल, फ़य्याज़ और अपने मज़्हबका पाबन्द था, लेकिन् सख़्ती, या तअस्सुब नहीं रखता था. इसने दक्षिणसे लौटते वक्त अजमेर मक़ामपर हुक्म दिया था, कि शीअह मज़्हबके तरीक़हसे ख़ुत्बहमें हज़रतअली चौथे ख़लीफ़हके नामपर "वसी" (नबीका नाइब) का लफ़्ज़ पढ़ाजावे; यह बात सुन्नियोंको बहुत बुरी लगी, यहां तक कि शाहज़ादह और बड़े बड़े सर्दार भी फ़साद बढ़ानेमें शरीक होगये; आख़िर-कार बादशाहको लाहौरके मक़ामपर अपना हुक्म मन्सूख़ करना पड़ा.

हिन्दुस्तानकी सल्तनत मुग़लियह ख़ानदानसे निकल जानेका सामान आलम-गीरने करलिया था, परन्तु बहादुरशाहकी नर्म मिज़ाजी और बेरोबीसे नौकर बेख़ौफ़ होकर ऐसे बढ़गये, कि आपसके झगड़ोंसे बादशाहतका नुक्सान किया, और यह बादशाह सल्तनतको अपने साथ लेगया. इसकी लाश लाहौरसे रवानह करके क़ुतुब साहिबकी लाटके पास दिल्लीमें दफ़्न कीगई, जिसपर सिफ़ेद पत्थरका मक़्बरह बनाया गया.

---

(१) ख़फ़ीख़ांका बयान है, कि मिज़ाजमें ख़लल आकर सात आठ पहरमें मरा; मिराति आफ़्ताबनुमा और ख़ानदानिआलमगीरीमें एक दम पेटके दर्दसे मरना दर्ज है, और सैरुलमुत-अख़्ख़िरीनमें दो चार दिन पहिलेसे होश और मिज़ाजमें फ़र्क़ आने बाद फिर आरिज़हसे मरना लिखा है.

कर्नेल टॉड लिखता है, कि वह ज़हर देनेसे मरा. उसके एक दम मरजाने और शाहज़ादों व नौकरोंके आपसकी अदावतसे शायद यह बयान भी सहीह हो.

बादशाह बहादुरशाह और उसके भाइयोंकी औलादके नाम, जो उसके पास मौजूद थी, लिखे जाते हैं:-

१- मुइज़ुद्दीन जहांदारशाह, और उसके तीन बेटे अअ़ज़ुद्दीन, और अज़ीज़ुद्दीन, तीसरेका नाम मालूम नहीं.

२- अज़ीमुश्शान, और उसके तीन बेटे मुहम्मद करीम, फ़र्रुख़सियर व हुमायूंबख़्त.

३- रफ़ीउश्शान, और उसके दो बेटे रफ़ीउद्दरजात व रफ़ीउद्दौलह.

४- ख़ुजिस्तह अख़्तर जहांशाह, और उसके दो बेटे फ़र्ख़ुन्दह अख़्तर व रौशन अख़्तर.

आज़मशाहका बेटा बेदारबख़्त, और उसके बेटे बेदारदिल और सईदबख़्त.

आज़मशाहका दूसरा बेटा आलीतबार.

कामबख़्शका बेटा मुह्युस्सुन्नह.

बहादुरशाहकी दो बेटियां थीं.

१- दह्र अफ़रोज़बानू बेगम.
२- दौलत अफ़रोज़बानू बेगम.

बादशाहके वक्तमें ३५००००००० रुपये सालानह आमदनी थी.

नीलछन्द.

— ० —

श्री जयसिंह नरेश गए शिवलोक जवैं ।
भाखिय छन्द विचित्र वली अमरेश तवैं ॥
शाहलिये बधनोर पुरादिक प्रान्तपुरा ।
लेन तिन्हें तरफ़ेन करी तहरीर तुरा ॥ १ ॥
ऐश चितौर रु शेवक शाहनके दलजे ।
नीतिरु प्रीतिरु भीतिभरे कलने चलजे ॥
लें चहुवाननतें बरजोर शिरोहि रु ।
ख्वाहिशके अनुसार [illegible]

बग्गुर कंठल रामपुरा पति आन नये ।
तीन सुजानक बंधज प्रान्तन छोर गये ॥
कृष्ण, जुझार रु कर्ण यथान्वय लेख भयो ।
बीरनके इतिहासहि वीरविनोद छयो ॥ ३ ॥
शाह बहादुरतें जयसिंह अजीत फिरे ।
बोल तिन्हैं उदयापुरमें मेहमानकरे ॥
रानसुता जयसिंह बिवाह भयो जव ही ।
राजनकी धरपै मरहट्ट गिरे तवही ॥ ४ ॥
रान लये बल संग दुहूं महिपाल चले ।
ख्वाहिशके अनुसार जिन्हैं निज राज मिले ॥
राज प्रबंध अनन्य जबे अमरेश रचे ।
ऊमरके पकवान सबै वहि ठोर पचे ॥ ५ ॥
यैं अमरेश नरेश जितेक प्रबंध किये ।
ताहि मगे उदयापुर आजहु जात किये ॥
मारव जोधपुरेशहिको इतिहास लिख्यो ।
शाह बहादुर वृत्त यथाविधि देख दिख्यो ॥ ६ ॥
सज्जन रान अपेक्षितके हित हौंन हितैं ।
शासन श्री फतमाल नृपालहि सिद्ध चितैं ॥
श्यामलदास कियो अमरेश जुखंड यहै ।
वीरविनोद महा इतिहास अखंड रहै ॥ ७ ॥

महाराणा अमरसिंह दूसरे.

दसवां प्रकरण समाप्त.